

द्रव्य सदायक—

श्रीसुखसागर ज्ञानप्रचारक सभा.

श्री भगवतीजी सूत्रकि पूजा
तथा सुपनोंकि आमदनीसे.

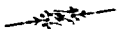
भाषागण—श्री आनंद प्रीतदीप देवसे शाह पुस्तकालय
लखनऊभाइय छाप्पु.

इन पुस्तकोंकी आमदनीमे और भी
ज्ञानप्रचार बढाया जावेगा ।

श्री रत्नप्रमदुरीश्वर सदगुरुभ्यो नमः

त्रय श्री

शीघ्रबोध भाग ३ जा.



द्रव्य सहायक रु. २५०)

शाह हजारीमलजी कुंवरलालजी पारख.

मुः लोहावट-जायवाम (नारवाड).

श्रीमद् भगवतीजी सूत्र कि वाचना ।

पूज्यपाद प्रातःस्मरणिय मुनिभी ज्ञानसुन्दरजी महारा-
जसाहिब कि अनुग्रह कृपासे हमारे लोहाचट जैसे ग्राममें श्री
श्रीमद् भगवतीजीसूत्र कि वाचना मेषत् १९७९ का चैत्र वद्य
६ से प्रारंभ हुई थी जिसके दरम्यान हमे बहुत लाभ हुआ है
जैसे श्री भगवतीजीसूत्रका आद्योपास्त भवण कर ज्ञानपूजाका
करना जिसके द्रष्ट्यसे ।

५००० श्री द्रष्ट्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका ।

५००० श्री शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५ वां हजार हजार प्रती
एकही जिसमें बन्धाई गई है जिसमे तीसरा भाग
शा. हजारीमलजी कुंवरलाली पारख कि तर्फसे ।

१००० श्री भावप्रकरण शा. जमनालालजी इन्द्रचन्द्रजी
पारख कि तर्फसे ।

१००० श्री स्तवन संग्रह भाग ४ था शा आरुदानजी अरर-
चन्द्रजी पारख कि तर्फसे ।

इनके सिवाय ज्ञानध्यान कंटस्य करना तथा श्री सुख-
सागर ज्ञानप्रचारक सभा और श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल
कि स्थापना होनेमे अच्छा उपकार हुआ है ।

अधिक हयें इस बातका है कि जीम उत्साहा से श्री
भगवतीजी सूत्र प्रारंभ हुआया उनसे ही बढ़ते उत्साहासे श्री
ज्ञानपंचमिको पूजा प्रभावना परबोडाके साथ निविज्ञतासे
समाप्त हुआ है हम इस सुअवसर कि वास्तव अनुमोदन
करते है अन्य मज्जनोंकी भी अनुमादन कर अपना जन्म
परित्र करना चाहिये किप्रधिकम । भवदीय ।

जमनालाल यांधरा राजमन्वाला,

मेम्बर श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल

मु. लोहाचट-मार्वाड

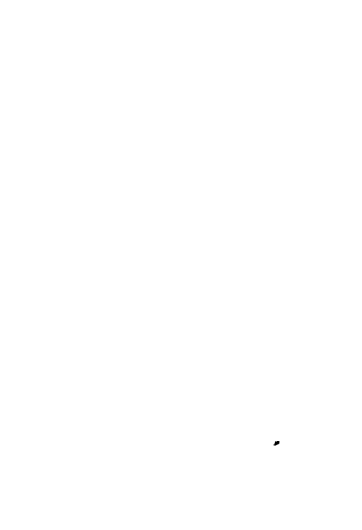
जन्म सं. १९३२



बुद्धक सीमा सं. १९४२

स्वमेयाम १९७७

मूर्ति महागज धा रत्नविजयजा महागज





ज्ञान परिचय ।

पूज्यपाद प्रातःस्मरणिय शान्त्यादि अनेक गुणालंकृत श्री
श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब ।
आपत्रीका जन्म मागवाड ओसवंत वैद मुत्ता शानीमे सं. १६३७
जय दशमिकों हुवा था. बचपने से ही आपका ज्ञानपर बहुत प्रेम
स्वल्पावस्थामें ही आप मंत्राग व्यवहार वाणिज्य व्यापारमें अच्छे
विशाल धे सं. १६६४ मागशा वद १० कों आपका विवाह हुवा
था. देशादन भी आपका बहुत हुवा था. विशाल कुदुम्य मातापिता
भाइ काका बि आदि कों त्याग कर २६ वर्ष कि युवान वयमें
सं. १६६३ चेत वद ६ कों आपने स्थानरुवालीयों में दीक्षा ली थी.
दशागम और ३०० थोकडा कंठस्थ कर ३० सूत्रों की वाचना
की थी तपश्चर्या एकान्त रह हठ हठ, मात नामणा आदि करनेमें भी
आप सुर्वीर धे आपका व्याख्यान भी बडाही मधुर रोचक और
अनारकारी था शास्त्र अवलोकन करने से ज्ञान हुवा कि यह मूर्ति
व्यापक के क पत्न्य स्वर्णोक्त रूपीन समुत्सम पंडा हुवा है
व्यपञ्चन मय करने के मयके दुटके क त्याग कर आप भीमान
रुवावमा, क त्याग कर मय, क पत्न्य अक्षयने सोध पर दीक्षा से
कर आदि म मयके क त्याग कर अनंत मयके ३२७

कीया स्वल्प समय में ही आपने वीर्य्य पुरुषार्थ द्वारा जैन समाजपर बड़ा भारी उपकार कीया आपश्रीकों ज्ञानका तो आपने वज्रका प्रेम है जहा पधारते है वना ही ज्ञानका पद्योन करने है.

ओशीयों तीर्थ पर पाठशाला बोर्डिंग कक क्रन्ति लायप्रेगी, श्री रत्न प्रभाकर ज्ञान भंडार आदि में आप श्रीने मदद करी है फलोधी में श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाजा संस्न-ईम्की दुमगी माग्या ओशीयोंमें स्थापन करी जिन संस्थावों द्वारा जैन आगमों का नत्त्व-ज्ञानमय आज ७१ पुष्प नीकन चुके है जिम्की कीनाये ११३००० करीजन हिन्दुस्तान के सय विभागमे जनना कि सेवा' वजा गही है इनके सिवाय जैनपाठशाला जैन लायप्रेगी आदि भी स्थापन करवाइ गइ थी हम शान्त देवनायोसे यह प्रार्थना करने है कि एमे पुरुषार्थी महात्मा चीम्काल शासन कि सेवा करते हमारे मन्मथ्यन देशमें विद्वां कर हम ओगोंपर सदैव उपकार करे । शम्

आपधीके: चरणोपासक

इन्द्रचंद्र पाख

जोइन्ट सेक्रेटरी,

श्री जैन नवयुवक मित्र मण्डल

ऑफीस - लोहावट (मारवाट)

प्रस्तावना.

प्यारे सज्जन गण !

यह बात तो आपलोग बस्तुची जानते हैं कि हरेक धर्मका महत्व धर्म साहित्य के ही अन्तर्गत रहा हुआ है जिस धर्मका धर्म साहित्य विशाल क्षेत्रमें विकसित होता है उसी धर्मका धर्म महत्व भी विशाल भूमिपर प्रकाश किया करता है अर्थात् ज्यों ज्यों धर्मसाहित्य प्रकाशित होता है त्यों त्यों धर्मका प्रचार बढ़ा हुआ करता है।

आज सुधरे हुये जमानेके हरेक विद्वान प्रत्येक धर्म साहित्य अपक्षपात दृष्टिसे अवलोकन कर जिस जिस साहित्यके अन्दर ताब बस्तु होती है उसे गुणग्राही सज्जन नेक दृष्टिसे प्रचन किया करते हैं अतएव धर्म साहित्य प्रकाश करने कि अत्यावश्यकता की समय संसार एक दृष्टिसे स्वीकार करते हैं।

धर्म साहित्य प्रकाशित करने में प्रथम उत्साही महाशयजी और साथमें लिखे पढ़े सहनशील निःस्पृही पुरुषार्थी तथा तन मन धनसे मदद करनेवाली कि आवश्यकता है।

प्रत्येक धर्मके नेता लोग अपने अपने धर्म साहित्य प्रकाशित करने में तन धन मनसे उत्साही बन अपने अपने धर्म साहित्यकी जगन्मय बनाने कि कोशीस कर रहे हैं।

इसके साहित्य प्रेमियों कि अपेक्षा हमारे जैनधर्मके उच्च कक्षाके पंडितों की विशाल साहित्य अपेक्षा कि ही सेवा कर रहे हैं। जैन धर्मके उच्च कक्षाके पंडितों के साहित्य का महत्व हीन अर्थवादी के अर्थसे ही समझा जाये। इस अर्थवित्त विचारोंमें हमारे धर्म साहित्य की कक्षा हीन अर्थवादी के अर्थसे ही समझा जाये।

नेताओं को अब मालूम होने लगी है कि साहित्य प्रकाश में हम लोग कितने पछाड़ी रहे हैं ।

हमारे धर्म साहित्य लिखनेवाले और प्रकाशित करनेवाले पूर्वाचार्य हमारे पर बड़ा भारी उपकार कर गये हैं परन्तु इस बरत पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय न्यायाभोगनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वरजी (आत्मारामजी) महाराज का हम परमोपकार मानते हैं कि आपधीने ज्ञानभण्डारोंके नेताओं को थड़े ही जोर सौरसे उपदेश देकर जेसलमेर पाटण खभात अमहापाद आदिके ज्ञानभण्डारों में सटते हुवे धर्म साहित्यका उद्धार करवाया था आपधी को साहित्य प्रकाशित करवानेका इतना तो प्रेमथा कि स्थान स्थान पर ज्ञानभण्डारों, लायब्रेरीयों, पुस्तक प्रचार मंडलों, संस्थायों आदि स्थापित करवाके ज्ञानप्रचार बढ़ाने में प्रेरणा करी थी। आपके उपदेशसे स्कूलों पाठशालाओं गुरुकुल-यासादि स्थापित होनेसे समाज में ज्ञान कि वृद्धि हुई है। इतना ही नहीं बल्के यूरोप तक भी जैनधर्म साहित्यका प्रचार करने में आपधीने अच्छी सफलता प्राप्त करी थी उन धर्म साहित्य प्रचार कि बढोलत आज हमारी स्वरूप संख्या होने परभो सर्व धर्मों में उच्च स्थानको प्राप्त कीया है अच्छे अच्छे विद्वान लोगोंका मत है कि जैनधर्म एक उच्च कोटीका धर्म है ।

साहित्य प्रचारके लिये धायक भीमसी माणक धंधाई जैन धर्म प्रसारक सभा-जैन आत्मानंद सभा भावनगर श्रीयशोविजय जी ग्रन्थमाला भावनगर, श्री जैन श्रेयस्कर मडल मेमाणा मेघजी हीरजी बचाई अध्यात्म ज्ञान प्रकाश-बुद्धिमागर ग्रन्थमाला श्री हेमचन्द्र ग्रन्थमाला जैन ग्रन्थ प्रकाश मडल जैन ग्रन्थमाला - रायचन्द्र ग्रन्थमाला राजेंद्रकाश कार्यालय श्री ग्गन प्रभाकर ज्ञान पुरषमाला. फलोंधी श्री जैन आत्मानंद पुस्तक प्रचार मडल आग्रा—दिन्ही व्याख्यान साहित्य आफिस जैन साहित्य मशा

जन-पुना. श्री सागमोदय समिति अन्यभी छोटी बड़ी समायानि साहित्य प्रकाशित करने में अच्छी सफलता प्राप्त करी है—मनुष्य मात्रवा फर्ज है कि अपनी २ यदाशक्ति तन मन धनसे धर्म साहित्य प्रकाशमें सघर्य मदद देना चादिदे ।

साहित्यप्रेमी परम् योगिराज मुनि श्री रत्नयिजयजी महा- राज साहित्य के मधुपदेशसे संघत् १९७३ का आमाड शुद्ध ६ के रोज मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज द्वारा फलोंधी नगरके उत्साहो भाषक वर्ग कि प्रेरणासे श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला नामकि संस्था स्थापित की गई थी. संस्थाका पास उद्देश छोटे छोटे ट्रेक्टद्वारा जनता में जैनधर्म साहित्य प्रसिद्ध करनेका रण गया था.

दरेश स्थानपर लम्बी चौड़ी पातों बनानेवाले या पर उ देश देनेवाले बहुत मीलते हैं किन्तु जीस जगह रूपये का न साता है तय कितनेक लोग धनास्य होनेपर भी भायाके म उन्नतिके मेदान से पीछे हठ जाते हैं परन्तु मुनिश्रीके पय दिनके उपदेशसे फलोंधी भी संघने ज्ञानवृद्धिके लिये का २०००) का चन्द्राकर श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला में ए छपानेके लिये जमा करवाके इस संस्थाकि नीयकी मजयुत की श्री मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहित्यका १९७३ का च फलोंधी में हुवा भाषकीने पक ही चनुमांमा मे ११ पुष्प प्र करवा दाय चनुमांमके वाइ भाषकीका पधारणा भीसीय कि श्री रत्नप्रभाकर महाराजने उपदेश राजा आदि । राजपुत्रोका प्रथमह अश्वत्थ वनक अश्वत्थप्रभुके विषय करवाइए उन महानुरथके स्मरणके दुमरी शश्व रूप नाशव वादपर श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला नय निष्क काम मुनिम नृतिवाचक इव सुप्रन किया गय जमान अश्वत्थ वाद नय इन मन्थकि अच्छे से

कीतावोंके भरिये तीर्थकी प्रसिद्धि और आषादि भी अच्छी हुई थी। शुभ्रिलालभाइ स्वर्गवास होनेके बाद मैं पुस्तकोंके व्यवस्था टीक न रहेनेसे तमुनाके तीरपर पुस्तकों ओशीयी रमके शेष सब पुस्तकों फलोधी मगवा लि गई थी अथ इन सेव्याका कार्य बहुत ही उत्साह से चलता है स्वल्प ही समयमें ७२ पुस्तकें करीबन १५३००० पुस्तके छप चुकी है जिसमें प्रतिमाहसीमी, गयपरशियाम, दानछत्तीसी, अनुकम्पाछत्तीसी, प्रश्नमाला, चर्चाका पच्छिक नांटीम, लिगनिर्णय, सिद्धप्रतिमा, मुक्तायली, यत्तीममूर्त्तदर्पण, हंकेपर थोट, आगमनिर्णय और व्यवहार चूलिकाकि समालोचना यह बारहा पुस्तके ती मूर्तिउत्थापक कृष्ठीये तरेपस्वीयोके बारे में लिखी गई है जिसमें सप्रमाण मूर्ति और दया दानका प्रतिपादन किया गया है और स्तवन संग्रह भाग १-२-३-४, दादासाहिब कि पूजा, देवगुह बन्दनमाला, जैन नियमाथला, धोरामी आशातना, शैव्यबन्दनादि, जिनस्तुति, सुबोधनियमाथली, प्रभु पूजा, जैन हीशा, तीर्थयात्रास्तवन, आनन्दवन शीथोसी, मज्जाय, गहुंलीयी, राइदेवमि प्रतिक्रमण, उपकेशगच्छ पट्टायली इन १८ पुस्तकों में देवगुहकी भक्तिमाधक स्तवन, स्तुतियों, शैव्यबन्दनी आदि है। व्याख्याविलाम भाग १-२-३-४, मेहरनामी, तीन कितनामा लिखीका उत्तर, ओशीयी तीर्थके ज्ञान भेदाकि लीट, अमे माधु शा माटे यया, विनती शनक, कडायलीमा, वसेमाला, तीन बन्धुमांकोका दिग्दर्शन और कितनाशा यह १३ पुस्तकों में बन्दनस्तवन निरूपण या उपदेशका विषय है वसुधैव कुटुम्बक मन्त्रविशाल य और मन्दा य पय नान यथाका मन्त्र पाठ है शांतिवध भाग १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

आठ आना सहज ही में निकल जायेंगे और यहां रूपैये जमा होंगे उनों से और भी ज्ञान वृद्धि होगी. सिर्फ धारदा मृत्योके भाषान्तरके किंमत कुछ अधिक रखी गई है इसका कारण यह है कि इसमें चार छेदसूत्रोंका भाषान्तर भी साथ में है जो कि जिनोंको खास आवश्यकता होगी वह ही मंगावेगा। तथापि महेनत देवतो किंमत ज्यादा नहीं है शेष किताबोंकी किंमत हमारे उद्देश भाषीक ही रखी गई है. पाठकगण किंमत तर्फ ध्यान न दे किन्तु ज्ञान तर्फ दे कि जिन सूत्रोंका दर्शन होना भी दुर्लभ थे वह आज आपके करकमलों में मौजूद हैं इसका ही अनुमोदन करे। अस्तु।

वि. संवत् १९७९ का फागण वद २ के रोज धीमान्मुनि महाराजधी श्रीहरिभागरजी तथा धीमान् ज्ञानसुन्दरजी महाराज टाणे ४ का शुभागमन लोहाघट ग्राम में हुआ. श्रोतागणकी दीर्घ काल से अभिलाषा थी कि मुनि श्रीज्ञानसुन्दरजी महाराज पधारे तो आपधीके मुग्धादिद से भी भगवतीजी सूत्र सुने. तीन वर्षों से धिनती करते करते आप धीमानोंका पधारना होनेपर यहांके धायकोने आप्ते से अर्ज करनेपर परम दयालु मुनि श्रीने हमारी अर्ज स्वीकार कर मीती चैत वद ६ के रोज भी भगवतीजी सूत्र सुने व्याख्यानमें फरमाना प्रारंभ किया जिसका महोत्सव घरघोडा रात्रीजागराणादि शा रत्नचंद्रजी छोगमलजी पारख कि तर्फसे हुआ था इस शुभ अवसर पर फलोधीमे धाजेन नवयुवक प्रेम भंडल तथा अन्यभी धायकवर्ग पधारे थे घरघोडा का दर्श-अंग्रजोवाजा ग्यानभंडलीवी और सरकारी कर्मचरियों पालीम आदिमे बड़ा ही प्रभावशाली दीर्घाई देने थे श्री भगवतीजी सूत्रके पृजांभ अठारा मानामादरी मीलाक करीबन रु २०००० की प्रायादानी हुई थी जिसका भी संघमें यह उगाय हुआ कि इन प्रायादानोंस न व ज्ञानमय पुस्तक छपा देना चाहिये

खुश खबर लिजिये.

सूत्रधी भगवतीजी, प्रहापनाजी, जीषाभिगमजी, समघायां-
 गजी, अनुयोगप्रारजी. दशैकालिकजी आदि से उद्धरीत किये
 हुये मालावबोध हिन्दी भाषा में यह द्वितीयावृत्ति अच्छा सुधारा
 और खुलासाके साथ पढीये कागद, अच्छा टैप, सुन्दर कपडेके
 एक ही.

जल्द में यह ग्रन्थ एक प्रबन्धानुयोगका खजाना रूप तैयार
 करवाया गया है. किमत मात्र रु. १।।

जल्दी लिजिये खलाम हो जानेपर मीलना असेभव है.

शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५ वां
 जिम्की संक्षम
 विषयानुक्रमिका.

१. प्रथम भाग
२. मूलतन्त्र
३. अष्टादश
४. प्रथम भाग
५. अष्टादश
६. प्रथम भाग
७. अष्टादश
८. प्रथम भाग
९. अष्टादश
१०. प्रथम भाग
११. अष्टादश
१२. प्रथम भाग
१३. अष्टादश
१४. प्रथम भाग
१५. अष्टादश
१६. प्रथम भाग
१७. अष्टादश
१८. प्रथम भाग
१९. अष्टादश
२०. प्रथम भाग
२१. अष्टादश
२२. प्रथम भाग
२३. अष्टादश
२४. प्रथम भाग
२५. अष्टादश
२६. प्रथम भाग
२७. अष्टादश
२८. प्रथम भाग
२९. अष्टादश
३०. प्रथम भाग
३१. अष्टादश
३२. प्रथम भाग
३३. अष्टादश
३४. प्रथम भाग
३५. अष्टादश
३६. प्रथम भाग
३७. अष्टादश
३८. प्रथम भाग
३९. अष्टादश
४०. प्रथम भाग
४१. अष्टादश
४२. प्रथम भाग
४३. अष्टादश
४४. प्रथम भाग
४५. अष्टादश
४६. प्रथम भाग
४७. अष्टादश
४८. प्रथम भाग
४९. अष्टादश
५०. प्रथम भाग
५१. अष्टादश
५२. प्रथम भाग
५३. अष्टादश
५४. प्रथम भाग
५५. अष्टादश
५६. प्रथम भाग
५७. अष्टादश
५८. प्रथम भाग
५९. अष्टादश
६०. प्रथम भाग
६१. अष्टादश
६२. प्रथम भाग
६३. अष्टादश
६४. प्रथम भाग
६५. अष्टादश
६६. प्रथम भाग
६७. अष्टादश
६८. प्रथम भाग
६९. अष्टादश
७०. प्रथम भाग
७१. अष्टादश
७२. प्रथम भाग
७३. अष्टादश
७४. प्रथम भाग
७५. अष्टादश
७६. प्रथम भाग
७७. अष्टादश
७८. प्रथम भाग
७९. अष्टादश
८०. प्रथम भाग
८१. अष्टादश
८२. प्रथम भाग
८३. अष्टादश
८४. प्रथम भाग
८५. अष्टादश
८६. प्रथम भाग
८७. अष्टादश
८८. प्रथम भाग
८९. अष्टादश
९०. प्रथम भाग
९१. अष्टादश
९२. प्रथम भाग
९३. अष्टादश
९४. प्रथम भाग
९५. अष्टादश
९६. प्रथम भाग
९७. अष्टादश
९८. प्रथम भाग
९९. अष्टादश
१००. प्रथम भाग

संख्या.	विषय	पृष्ठ.	संख्या.	विषय	पृष्ठ.
९	रूपी अरूपीके १०६ बोल	४५	३५	एकेन्द्रियके भेद	८३
१०	दिसानुवाह दिमाधिकार	४६	३६	प्रत्येक वनस्पति १२ प्रकारकी	८४
११	छे कायाके छे द्वार	४९	३७	साधारण वन० के भेद	८८
१२	उपयोगाधिकार	५०	३८	वनस्पतिके लक्षण	८९
१३	देवोत्पातके १४ बोल	५१	३९	बैहन्द्रियादिके भेद	९०
१४	तीर्थकार नामके २० बोल	५२	४०	पनिन्द्रियके चार भेद	९०
१५	जलही भोक्ष जानेके २३ बोल	५४	४१	मनुष्यके ३०३ भेदका वर्णन	९२
१६	परम कल्याणके ४० बोल	५५	४२	आयक्षेत्र २५॥ का वर्णन	९५
१७	निर्दोषिक अन्वाचदूत	५९	४३	दश प्रकारके रूची	९६
१८	छे आरोग्य अधिकार	६०	४४	देवताके १९८ भेद	९७
१९	पहेला आराधिकार	६१	४५	अजीवताके लक्षण	१००
२०	दुसरा आराधिकार	६३	४६	अरूपी अजीवके ३० भेद	१०१
२१	तीसरा आराधिकार	६४	४७	रूपी अजीवके ५३० भेद	१०२
२२	चौथा आराधिकार	६८	४८	पृथ्वीके लक्षण	१०३
२३	पाचवां आराधिकार	६९	४९	पृथ्वी की प्रकृति से पृथ्वी है	१०४
२४	छठवां आराधिकार	७४	५०	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०५
२५	उत्सर्पिणी		५१	पृथ्वीके लक्षण	१०६
	गोघ्ननाथ नाम २ वं.		५२	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
२६	नववां आराधिकार	७७	५३	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
२७	दसवां आराधिकार	७९	५४	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
२८	ग्यारहवां आराधिकार		५५	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
२९	बारहवां आराधिकार		५६	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३०	तेरहवां आराधिकार		५७	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३१	चौदहवां आराधिकार		५८	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३२	पंद्रहवां आराधिकार		५९	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३३	सोलहवां आराधिकार		६०	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३४	असह्य आराधिकार		६१	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३५	असह्य आराधिकार		६२	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३६	असह्य आराधिकार		६३	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३७	असह्य आराधिकार		६४	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३८	असह्य आराधिकार		६५	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
३९	असह्य आराधिकार		६६	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४०	असह्य आराधिकार		६७	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४१	असह्य आराधिकार		६८	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४२	असह्य आराधिकार		६९	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४३	असह्य आराधिकार		७०	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४४	असह्य आराधिकार		७१	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४५	असह्य आराधिकार		७२	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४६	असह्य आराधिकार		७३	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४७	असह्य आराधिकार		७४	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४८	असह्य आराधिकार		७५	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
४९	असह्य आराधिकार		७६	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६
५०	असह्य आराधिकार		७७	पृथ्वी के प्रकारसे भागवे	१०६

क्र.	विषय	पृ.
१	अनन्य तप	१३७
२	उपोद्री तप	१३८
३	भिक्षापात्री तप	१३९
४	वस्त्राभ्यास तप	१३९
५	वायु वलेज तप	१३९
६	प्रतिमंतेजना तप	१४१
७	प्रायश्चित्त तप	१४१
८	विनय तप	१४१
९	पैदास्य तप	१४१
१०	स्वाध्याय तप	१४२
११	वाचनादि विद्यादि	१४२
१२	अन्याध्याय	१४२
१३	ध्यातये	१४२
१४	शिउसता तप	१४२
१५	दग्धतास्ये लक्षण	१४२
१६	आट कर्मिके दग्ध का.	१४२
१७	माक्षतास्ये लक्षण	१४२
१८	मिडोका अन्या	१४२
१९	अन्या	१४२
२०	अन्या	१४२
२१	अन्या	१४२
२२	अन्या	१४२
२३	अन्या	१४२
२४	अन्या	१४२
२५	अन्या	१४२
२६	अन्या	१४२
२७	अन्या	१४२
२८	अन्या	१४२
२९	अन्या	१४२
३०	अन्या	१४२
३१	अन्या	१४२
३२	अन्या	१४२
३३	अन्या	१४२
३४	अन्या	१४२
३५	अन्या	१४२
३६	अन्या	१४२
३७	अन्या	१४२
३८	अन्या	१४२
३९	अन्या	१४२
४०	अन्या	१४२
४१	अन्या	१४२
४२	अन्या	१४२
४३	अन्या	१४२
४४	अन्या	१४२
४५	अन्या	१४२
४६	अन्या	१४२
४७	अन्या	१४२
४८	अन्या	१४२
४९	अन्या	१४२
५०	अन्या	१४२
५१	अन्या	१४२
५२	अन्या	१४२
५३	अन्या	१४२
५४	अन्या	१४२
५५	अन्या	१४२
५६	अन्या	१४२
५७	अन्या	१४२
५८	अन्या	१४२
५९	अन्या	१४२
६०	अन्या	१४२
६१	अन्या	१४२
६२	अन्या	१४२
६३	अन्या	१४२
६४	अन्या	१४२
६५	अन्या	१४२
६६	अन्या	१४२
६७	अन्या	१४२
६८	अन्या	१४२
६९	अन्या	१४२
७०	अन्या	१४२
७१	अन्या	१४२
७२	अन्या	१४२
७३	अन्या	१४२
७४	अन्या	१४२
७५	अन्या	१४२
७६	अन्या	१४२
७७	अन्या	१४२
७८	अन्या	१४२
७९	अन्या	१४२
८०	अन्या	१४२
८१	अन्या	१४२
८२	अन्या	१४२
८३	अन्या	१४२
८४	अन्या	१४२
८५	अन्या	१४२
८६	अन्या	१४२
८७	अन्या	१४२
८८	अन्या	१४२
८९	अन्या	१४२
९०	अन्या	१४२
९१	अन्या	१४२
९२	अन्या	१४२
९३	अन्या	१४२
९४	अन्या	१४२
९५	अन्या	१४२
९६	अन्या	१४२
९७	अन्या	१४२
९८	अन्या	१४२
९९	अन्या	१४२
१००	अन्या	१४२
१०१	अन्या	१४२
१०२	अन्या	१४२
१०३	अन्या	१४२
१०४	अन्या	१४२
१०५	अन्या	१४२
१०६	अन्या	१४२
१०७	अन्या	१४२
१०८	अन्या	१४२
१०९	अन्या	१४२
११०	अन्या	१४२

संख्या.	विषय.	पृष्ठ.	संख्या.	विषय.	पृष्ठ.
१०९.	सात अंघे और हस्तीका दृष्टान्त	१५१	१३७	प्रत्येक प्रमाण	१७६
११०	नयका लक्षण	१५३	१३८	आगम प्रमाण	१७६
१११	नैगमनयका लक्षण	१५४	१३९	अनुमान प्रमाण	१७६
११२	संग्रह नय लक्षण	१५५	१४०	ओपमा प्रमाण	१७८
११३	व्यथहारनय	१५६	१४१	सामान्य विशेष	१७९
११४	ऋतुसूचनय	१५७	१४२	गुण और गुणी	१८०
११५	साहुकारका दृष्टान्त	१५७	१४३	ज्ञेय ज्ञान ज्ञानी	१८०
११६	शब्द समभीरूढ-पद्यमूल	१५८	१४४	उपमने वा विघ्ने वा ध्रुयेवा	१८०
११७	वसतीका दृष्टान्त	१५९	१४५	अध्यय आधार	१८१
११८	पायलीका दृष्टान्त	१६०	१४६	आधिर्भाव तिरोभाव	१८१
११९	प्रदेशका दृष्टान्त	१६१	१४७	गौणता मौल्यता	१८१
१२०	जीवपरसातनय	१६२	१४८	उत्सर्गोपवाद	१८२
१२१	सामायिकपर सात नय	१६३	१४९	आत्मातीन	१८३
१२२	धर्मपर सात नय	१६३	१५०	ध्यान च्यार	१८३
१२३	वाणपर सात नय	१६३	१५१	अनुयोग च्यार	१८४
१२४	राजापर सात नय	१६४	१५२	जागरण तीन	१८४
१२५	निक्षेपाधिकार	१६४	१५३	व्याख्या नौप्रकार	१८४
१२६	नामनिक्षेपा	१६५	१५४	अष्ट पक्ष	१८५
१२७	स्यापना निक्षेपा	१६५	१५५	समर्भगी	१८५
१२८	द्रव्यनिक्षेपा	१६७	१५६	निर्गोद स्वरूप	१८७
१२९	भावनिक्षेपा	१७०	१५७	पद्द्रव्य अधिकार	१९०
१३०	द्रव्यगुणपर्याय	१७२	१५८	पद्द्रव्यक आदि	१९०
१३१	द्रव्य क्षेत्रकाल भाव	१७२	१५९	पद्द्रव्यका संस्थान	१९०
१३२	द्रव्य और भाव	७३	१६०	पद्द्रव्यमे सामान्य गुण	१९१
१३३	कारण कार्य	१७३	१६१	पद्द्रव्यमे विशेष स्व भाव	१९५
१३४	निश्चय व्यथहार	१७४	१६२	पद्द्रव्यके क्षेत्र	१९०
१३५	उपादान निमित्त	७५	१६३	पद्द्रव्यक काल	१९३
१३६	प्रमाण च्यार प्रकारके	७५			

संख्या	विषय.	पृ.	संख्या.	विषय	पृ.
११३	भाषासमिति	२२८	२३७	देव अतिशय ३४	२५४
११४	षष्ठासमिति	२२८	२३८	देव पाणी ३५ गुण	२५४
११५	गौचरीके ४२ दोष	२२९	२३९	उत्तराध्ययनके ३६ अ-	
११६	गौचरीके ६४ दोष कुल १०६ दोष.	२३३		ध्ययन	२५५
११७	आम दोष १२ प्रकारका	२३८	२४०	छे निग्रन्थोंके ३६ द्वार	२५५
११८	घोषी समिति	२३९	२४१	पांच संयतिके ३६ द्वार	२६६
११९	मुनियोंके १४ उपकरण महेतु	२३९	२४२	अनाचार ५२	२७६
१२०	प्रतिलेखन २५ प्रकारकी	२४०	२४३	संयमतयुके १७८ त-	
१२१	प्रतिलेखनके ८ भागा	२४२		णावा	२७९
१२२	पांचघी समिति	२४२	२४४	आराधना तीन प्रकार	२८२
१२३	दश बॉल परिठनेका	२४२	२४५	साधु समाचारी १०	२८४
१२४	तीनगुप्ति	२४३	२४६	मुनि दिनकृत्य	२८५
१२५	पगोम सजाके ३३ धो- लोंके अर्थ	२४४	२४७	पटावश्यक	२८९
१२६	एकबॉलसे दश बॉल	२४४	२४८	साधु रात्री कृत्य	२९०
१२७	ध्यात प्रतिमा	२४६	२४९	पौरमी पौणपोरसीका मान	२९०
१२८	भ्रमण प्रतिमा	२४६		र्गाधवांध भाग ५ वां.	
१२९	तेरहसे बीस बॉलका अर्थ भ्रममाधि स्थान	२४६	२५१	जड नैतम्यका संवन्ध	२९३
१३०	एकबॉल मयला श्राव	४८	२५२	कर्म क्या बन्तु है ?	२९४
१३१	बाबाम परिमह	४८	२५३	आठ कर्मोंके १५८ उ त्तर प्रकृति	२९६
१३२	नेत्रोमसे गुणतामवाट	४८	२५४	आठ कर्मोंके संवन्ध कारण	३०९
१३३	महा मोहनिके स्थान	४८	२५५	संवेधानो दश घाती प्र ३ ६	
१३४	सिद्धांत / गुण	४८	२५६	विपाक उदय प्र०	३१७
१३५	गामसप्रह बर्तमान	४८	२५७	पराधनेता पराधनेत प्र ३ ८	
१३६	गुरुक ३ आशावना	४८	२५८	चांद्रा गुणस्थानपर वन्ध	९

विषय.	पृ.	अध्या.	दिना.	पृ.
बीदा गुण० पर उदय	३०२		यद् आयुष्य कदांका यन्धे	३७६
दिरणा प्रकृति		२७७	यद् भय्याभय्य होते	३७०
बीदा गु० पर सत्ता प्र-	३२४	२७८	समौमरण भणन्तर	३७१
कृति	३७	२७९	हे लेइया	३७१
अपाधाकालाधिकार	३३४	२८०	लेइयाका पर्ण	३७२
कर्मविचार	३३६	२८१	लेइयाका गन्ध	३७२
कर्म बान्धतो यान्धे	३४०	२८२	लेइयाका रस	३७२
कर्म बान्धतो चेदे	३४१	२८३	लेइयाका स्पर्श	३७२
कर्म चेदतो यान्धे	३४५	२८४	लेइयाका परिणाम	३७३
कर्म चेदतो चेदे	३४७	२८५	कृष्ण लेइयाका लक्षण	३७३
६६ ५० गोलीकी यन्धी	३४८	२८६	निह लेइयाका लक्षण	३७३
६६ ५० इर्यायहि कर्म यन्ध	३५३	२८७	फापोत लेइयाका लक्षण	३७३
६८ सम्प्राय कर्म यन्ध	३५४	२८८	तेजस लेइयाका लक्षण	३७३
६९ ४७ गोलीकी यन्धी	३५५	२८९	पद्म लेइयाका लक्षण	३७३
७० प्रत्येक दंडकपर यन्धी	३५६	२९०	शुक्ल लेइयाका लक्षण	३७३
के गोले		२९१	लेइयाका स्थान	३७३
७१ प्रत्येक गोलीपर यन्धी	३५६	२९२	लेइयाकी गति	३७३
के भाग		२९३	लेइयाका घयन	३७३
७२ अनतरीषवसगादि उ	३६१	२९४	सचिठण काल	३७३
दंडा		२९५	सुन्य काल	३७३
७३ पापकर्म वगैरे कदा भा	३६८	२९६	अनन्य काल	३७३
गम	३७०	२९७	मिश्र काल	३७३
७४ पापकर्मके भाग	३७०	२९८	सचिठन	३७३
७५ समौमरणाधिकार	३७०	२९९	अन्या अनन्य	३७३
७६ प्रत्येक दंडकके काल			बन्धकाल	३७३
७७ आर गोलीके समौमरण			२०० यन्धक उदे बी	३७३

श्रीशौचबोध भाग १-२-३-४-५ वां के थोकडोंकि नामावली.

किंमत मात्र रु. १॥

सख्या. थोकडेके नाम. कौन कौनसे सूत्रोंसे उद्धृत किये हैं.

१ धर्मके सम्मुख होनेवालों में

१५ गुण

पूर्वाचार्य कृत

- | | | |
|----|----------------------------|------------------------------|
| १ | मातांनुस्यारणे ३२ वाळ | " " |
| २ | व्यवहार सम्यक्त्वके ६७ वाळ | " " |
| ३ | पैतीभ वाळ मंगल | बहुतसूत्रों मंगल |
| ४ | लघुसूत्रक वाळावबोध | सूत्रधी जीवात्मिगमर्तो |
| ५ | शौचोम सूत्रकके मंगल | पूर्वाचार्य कृत |
| ६ | महासूत्रक ९८ वाळका | सूत्रधी पञ्चवर्णात्री पत्र ३ |
| ७ | विरहशा [वामशीया] | " " पत्र ६ |
| ८ | हारी अहमीके १ ६ | सूत्रधी अमननीत्री श० २ ३ ५ |
| ९ | दिशागुहादिशाधिकार | सूत्रधी पञ्चवर्णात्री पत्र ३ |
| १० | छे कावाधिकार | सूत्रधी व्यासाचार्यिता टा. ६ |
| ११ | धी उपयोगाधिकार | सूत्रधी अमननीत्री श० ३ ३-० |
| १२ | बोदा वाळ देवाभ्यास | " " श २ ३ |
| १३ | सीरीकर नाम बंध कारण | सूत्रधी ज्ञानात्री अंग ८ |
| १४ | माथ्य ज्ञानक वाळ | पूर्वाचार्य कृत |
| १५ | रसकल्पनाक २ वाळ | बहुत सूत्रों मंगल |
| १६ | सिद्धांत मंगलवर्ण | " " " " " " |
| १७ | १० वाळ | धी अहमीकर |
| १८ | ३ ४ वाळ | धी मन्वृत्तवर्णनाम |

- १८) बड़ी नवताय
- १९) पचवीस क्रियाधिकार
- (२०) नय निक्षेपादि २५ द्वार
- (२१) प्रत्यक्षादि च्यार प्रमाण
- (२२) षट्द्रव्यकं. द्वार ३१
- (२३) भाषाधिकार
- (२४) आहाराधिकार
- (२५) श्वासोश्वासमाधिकार
- (२६) संज्ञाधिकार
- (२७) योनि अधिकार
- (२८) आरंभादि चौबीस दंडक.
- (२९) अल्पायहुम्य
- (३०) अल्पायहुम्य षोड
- (३१) अल्पायहुम्य
- (३२) अष्टमयषनाधिकार
- (३३) छत्तीस षोड संग्रह
- (३४) पांच निद्रंशकं. ३६ द्वार
- (३५) पांच सदतिवें ३६ द्वार
- ३६ बायन अनाघार
- ७ पांच महापतादि । ७

श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र
 बहुतसे सूत्रोंसे संग्रह
 श्री अनुयोगद्वारादि सूत्र
 श्री अनुयोगद्वार सूत्र
 बहुत सूत्रोंसे संग्रह
 सूत्रश्री पातवजाजी पद ११
 " " पद २८ उ० १
 " " पद ७
 " " पद ८
 " " पद ९
 " " पद ११
 सूत्रश्री भगवतीजी श० १ १
 पूर्वाचार्य कृत
 " "
 " "
 सूत्रश्री उत्तराध्ययनादि
 सूत्रश्री ज्ञायदपकजी
 सूत्रश्री भगवती श० २५
 " "
 सूत्रश्री दशैशान्तिक.
 " "
 " "
 " "
 " "
 " "

(४५)	कर्मप्रकृतिका उदय	"	"	"
(४६)	कर्मप्रकृतिकि सत्ता	"	"	"
(४७)	अथाधाकालाधिकार	श्री पद्मवर्णनाजी सूत्रपद	२३	
(४८)	कर्म विचार	श्री भगवतीजी सूत्र श.	८ उ. १०	
(४९)	कर्मयाम्धतो याम्धे	श्री पद्मवर्णनाजी सूत्रपद	२३	
(५०)	कर्म याम्धतो वेदे	"	"	" पद २४
(५१)	कर्म वेदतो याम्धे	"	"	" पद २५
(५२)	कर्म वेदतो वेदे	"	"	" पद २६
(५३)	पद्यास षोडशोकी यम्धी	श्री भगवतीजी श.	६ उ. ३	
(५४)	इर्यायदि संप्रायकर्म	श्री भगवतीजी श.	८ उ. ८	
(५५)	४७ षोडशोकी यम्धी	"	"	" ६ उ. ३
(५६)	४७ षोडशोके अणंतरादि	"	"	" २६ उ. ८
(५७)	करीमु शतक	"	"	" २७-२१
(५८)	४७ षोडशपर आठ भागा	"	"	" २८-२१
(५९)	सप्त भागवतादि	"	"	" २९-३१
(६०)	सप्तोत्तरनाधिकार	"	"	" ३० ११
(६१)	लेख्यादि ११ द्वार	श्री उत्तराख्ययनजी अ०	३४	
(६२)	संविष्टुण काण्ड	श्री भगवतीजी श.	७ उ. २	
(६३)	वन्धकाण्ड वोट ३३	श्री कर्मवैद्य चौद		

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानप्रदासना

मु. कृतो मी. न. र. .

श्री गुरुनागर ज्ञानप्रचारक. न.भा.

मु. लोहायट. मारा .

शुद्धिपत्र.

—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२९	८	दा	दो
२९	२०	अत्तन्ती	अमंती
३३	१	सागरोप	पल्योपम
३८	१७	१० भु०	१० औदारोक
३८	१९	१३ येप्रय	१३ देवता
७८	११	नपताषया	नषताषमे
८१	१	सिद्धि	सिद्धो
८२	२	परस्पर	परम्परा
८२	६	तीर्थ	तीर्थघ
८४	१७	समथ	समर्थ
८४	२०	ख्याते	ख्याते जीव
८६	८	मलता	मालती
१०७	२०	"	नेन्द्रिय जा
१०८	७	"	वत् ८ १०-
१०६	१५	"	वामवा
१०७	१८	"	अत्रा
१०८	१८	"	"
१०९	१८	"	"
११०	१८	"	"
१११	१८	"	"
११२	१८	"	"
११३	१८	"	"
११४	१८	"	"
११५	१८	"	"
११६	१८	"	"
११७	१८	"	"
११८	१८	"	"
११९	१८	"	"
१२०	१८	"	"
१२१	१८	"	"
१२२	१८	"	"
१२३	१८	"	"
१२४	१८	"	"
१२५	१८	"	"
१२६	१८	"	"
१२७	१८	"	"
१२८	१८	"	"
१२९	१८	"	"
१३०	१८	"	"
१३१	१८	"	"
१३२	१८	"	"
१३३	१८	"	"
१३४	१८	"	"
१३५	१८	"	"
१३६	१८	"	"
१३७	१८	"	"
१३८	१८	"	"
१३९	१८	"	"
१४०	१८	"	"
१४१	१८	"	"
१४२	१८	"	"
१४३	१८	"	"
१४४	१८	"	"
१४५	१८	"	"
१४६	१८	"	"
१४७	१८	"	"
१४८	१८	"	"
१४९	१८	"	"
१५०	१८	"	"

१८२	२	पर्याय	शुभ	
२३५	१४	ज्ञान	ज्ञान	
२४०	२	रथ	रक्षा	
२४४	२०	समिति	समिति	
२६५	१०	॥ स्नातकमें एक	केवली समु०	पावे
२८५	७	इच्छार	इच्छाकार	
२८५	१०	इच्छार	इच्छाकार	
२८६	१७	३-८	२-८	
२८३	१७	२-८	३-८	
३०६	६	लोग	लोग	
३०९	४	५६	५७	
३१७	१	१३२	१२२	

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं २६

॥ श्री रत्नप्रभाकरिसद्गुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्री

शीघ्रबोध ज्ञानपहेला.

—❀❀❀—

धर्मके सन्मुख होनेवालोंमें १५ गुण होना चाहिये ।

—❀❀❀—

- १ नितीघन हो, कारण निती धर्मकी माता है ।
- २ हीममत बाहादुर हो, कारण कापरोसे धर्म नहीं होता है ।
- ३ धैर्यवान् हो, हरेक कार्योंमें आतुरता न करे ।
- ४ बुद्धियान् हो, हरेक कार्य स्वमति विचारके करे ।
- ५ असत्यको धोकारनेवाला हो, और सत्य बचन धोले ।
- ६ निष्कपटी हो, हृदय साफ स्फटिकरत्न माफिक हो ।
- ७ विनयवान्, और मधुर भाषाका बोलनेवाला हो ।
- ८ गुणप्राप्ती हो और म्यात्मभ्रष्टा न करे ।
- ९ प्रतिज्ञा पालक हो, कीये हुने नियमोंको घराघर पाले ।
- १० दयावान् हो, और पनीपकार कि बुद्धि हो ।
- ११ सम्य धर्मका अर्थ हो, सम्यकाही पक्ष रक्खता ।
- १२ जितेन्द्रिय हो, प्रतापकी मइता हो ।
- १३ साम्य प्रत्याज कि इह इच्छा हो ।

१७ मन्व विचारधर्म निरूपण हो। मन्वजे उन्नतता करे।

१८ त्रिपरीके नाम धर्म काया हो उन्नीका उन्नतता करी
मुनता मदी परम्पु मन्ववर्गके पनि उन्नतता करे।

— २३ —

धोकाडा नम्बर १

(मातागुणारीके ३४ वीं)

(१) श्यावमंगल विभन-श्यावने शून्य उपासने करना परम्पु विध्यामवान श्याविसारी विवशारी, श्रीरी, कृष्ट मीष्ट, कृष्ट माय भादि न करे। त्रिपरीकी मायन न हम्पु मीष्ट लेन न पभाये महान भादमवाये कर्तव्यतादि न करे। अर्थात् मीष्ट विरुद्ध कार्य न करे।

(२) शिशावार-धार्मीक नैतिक और अनेक कृतिकि म-
योदा माहिक भाषार उन्नतता हम्पु। अर्थात् आचारवाणीक
मैग और सार्थक करना।

(३) मरिचि धर्म और भाषार उन्नततावाये अन्व मी-
थीके माय अनेक वशीका विवाह (यज्ञ) करना, दम्पतिके
आयुष्यवादिता अन्वय विचार करना अर्थात् वाक्यनर दृष्टम
न वनन और दम्पतीका अन्व मायन माध्याय धर्मो ही मूल
पथक होना है। वाक्य माध्याय अन्व अन्वय देना।

४ मायय काय न करना अर्थात् उन्नत विध्यामवादि
विद्यन उन्नतता होय अन्व उन्नतता और उन्नत
महा मा उन्नत देना।

(५) वीरि उन्नतता माहिकि उन्नत उन्नत उन्नत उन्नत

सरचा न करना ताके भविष्यमें समाधि रहै। आषा-
माफीक सरचा रखना।

(६) कीसीका भी अशुनवाद न बोलना जो अशुन-
वा हो तो उन्हीके संगत न करना तारीफ भी न करना प-
अशुन बोलके अपनि आत्माको मलीन न करे।

(७) जिस मकानके आसपासमें अच्छे लोगोंका मकान
और दरपाजे अपने फर्जेमें हों, मन्दिर, उपासरा या साधर्म
गाइयो नजीक हो एते मकानमें निवास करना चाहिये। ताके
सुनसे धर्मनाथन कर सकै।

(८) धर्म, निमि, आचारवन्त और अच्छी सलाहके देने-
वालीकी संगत करना चाहिये तांके वित्तमें हमेशा समाधी
लौन घनी रहै।

(९) नानापिता तथा वृद्ध सज्जनोंके सेवाभक्ति धिनय
करना, तथा कोई आपसे छोटा भी होतो उनका भी आदर करना
मदमें माधुर बच्चनोंमें बोलना।

१०। उपद्रववाले देश, ग्राम या मकान हो उनका
परिभ्रमण करना चाहिये। रोग मरकी, दुष्काल आदिमें भक्-
तांके हाथमें देना नहै।

११। उपद्रववाले देश, ग्राम या मकान हो उनका
परिभ्रमण करना चाहिये। रोग मरकी, दुष्काल आदिमें भक्-
तांके हाथमें देना नहै।

१२। उपद्रववाले देश, ग्राम या मकान हो उनका
परिभ्रमण करना चाहिये। रोग मरकी, दुष्काल आदिमें भक्-
तांके हाथमें देना नहै।

१३। उपद्रववाले देश, ग्राम या मकान हो उनका
परिभ्रमण करना चाहिये। रोग मरकी, दुष्काल आदिमें भक्-
तांके हाथमें देना नहै।

(१३) अपने पूर्वजोंका चलाइ इह अच्छी मयांशकों या शेषकों ठीक तरहसे पालन करना कीमीके देखादेख प्रवृत्ति या शेष नहीं बदलना ।

(१४) आठ प्रकारके गुणोंकी प्रतिदिन सेवन करते रहना यथा (१) धर्मशास्त्र भवण करनेके इच्छा रखना (२) योग मीलनेपर शास्त्र भवणमें प्रमाद न करना (३) सुने हुये शास्त्रके अर्थको समझना (४) समझे हुये अर्थको याद करना (५) उसमें भी तर्क करना (६) तर्कका समाधान करना (७) अनुपेक्षा उप-योगमें लेना या उपयोग लगाना (८) तावज्ञानमें तलाशीन हो-जाना शुद्ध भद्रा रखना दूसरेको भी तावज्ञानमें प्रवेश करा देना ।

(१५) प्रतिदिन करने योग्य धर्मकार्यको संभालते रहना, अर्थात् दार्शनिक धर्मक्रिया करते रहना । धर्महीकी सार समझना ।

(१६) पहिले कियेहुये भोजनके पचनानेसे फिर भोजन करना इसीसे शरीर आरोग्य रहता है और विगमें समाधी रहती है ।

(१७) अपना अजिर्ण आदि रोग होनेपर तुरत आहारको त्याग करना, अर्थात् खरी मूल्य लगनेपर ही आहार करना परन्तु न्योप्यता हांके भोजन करलेजेके याद मीशानादि न माना और प्रकृतिसे प्रतिकूल भोजन भी नहीं करना, रोग आनेपर औषधीके लिये प्रमाद न करना ।

(१८) सेवामें धर्म, भयं, कामको साधने हुये भी मोक्ष-बनकी मूल्यता न चाहिये । सावधरन्तु धर्म ही समझना । और समय पाकर धर्मकार्यमें पुरुषार्थ भी करना ।

(१९) अतिथी अभ्यागत मरीच राक्ष आदिकी दृष्टी

नार्गानुमार्गी.

देखके करुणाभाव लाना यथाशक्ति. उन्हींकी समाधीका उपाय करना ।

(२०) कीमीका पराजय करनेके इरादेसे अनितिका कार्य आरंभ नही करना, बिना अपराध विमीकों तकलीफ न पहुंचाना ।

(२१) गुणीजनोका पक्षपात करना उन्हींका सहमान करना सेवाभक्ति करना ।

(२२) अपने फायदेकारी भी क्यों न हो परन्तु लोग त राजा नियोज कीये कार्यमें प्रवृत्ति न करना ।

(२३) अपनी शक्ति देखके कार्यका प्रारंभ करना प्रा दिये ह्ये कार्यको पार पहुंचा देना ।

(२४) अपने आश्रितमें रहे ह्ये मानापिता, मि, नोकरादिका पोषण ठीक तरहसे करना । कीमीको भी त न हो पसा बर्ताव रखना ।

(२५) जो पुरुष वत तथा ज्ञानमें अपनेसे बढा हो पृथ्व तरोके सहमान देना, और विनय करना । तथा गुण वार्शाम करना ।

(२६) शीघ्रदशा जो काय करना हो उन्हींमें परि दशम अविशयक लाभका भवा विचार करना चाहिये

... विशासक वा... म... वस्तु पदार्थ या कार्य ... कानमा... न... है कि जो मरी आत्मका ... उन्हाका विचार पहले करना चा... उपन उ... जिम्हा उपकार है ... प्रसिउपकार क...

(२९) लोकप्रीय-मदाचारसे पत्नी प्रवृत्ति अपनी रखती चाहिये कि वह सब लोगोंको प्रीय हो अर्थात् परोपकारके लिये अपना कार्य छोड़के दूसरेके कार्यको पहले करदेना चाहिये ।

(३०) लज्जायन्त-लौकीक और लाकोत्तर दोनों प्रकारकी लज्जा रखना चाहिये कारण लज्जा है तो नितिकि माता है लज्जायन्तकी लोक तारीफ करते हैं बहुतमो वचन अकार्यसे बच जाते हैं ।

(३१) दयालुहो-सब जीवोंपर दयाभाव रखना अपने प्राण के माफीक सब आत्माओंकी समझके कीमीकी भी नुकसान न पहुँचाना ।

(३२) सुन्दर आकृतियाला अर्थात् आप हमेशा हस्तबदन आनन्दमे रहना अर्थात् क्रूर प्रकृति या शीण शीण प्रत्ये क्रोधमानादिकि वृत्ति न रखना । शास्त्र प्रकृति रखनेमे अनेक गुणोंकि प्राप्ती होती है ।

(३३) उरुमार्गं ज्ञाते हृये जीवोंको हितबोध देने अच्छे रहस्नेका बोध करना उरुमार्गका फल कहते हृये मधुर वचनोंमे समझाना ।

३४ । अन्तरंग वैरी क्रोध, मान, माया, लोभ, द्वेष, शोक इन्होंने पराजय करनेका उपाय या माध्यमी तैयार करनेहये वे शीघ्रोंकी अपने कष्टने करना ।

३५ । चौपक अर्थिक समन करानवाले विषय (पदार्थ) य और वषाय है उतका दमन करना अन्त समनमापीके समन करने रहना अर्थात् समनमे यनेजानवाले महा मा द्वाक है समनकरा प्रथम उपाय समन है

यह वैताम धाक समनमे ही लिखा है कारण कटुप्य करमया

व्यवहार सन्धकत्वके ६७ बोल.

लोको अधिक विस्तार कीतनी दगत योजारूप हो जाता है वास्ते
यह ३५ बोल प्रत्यक्ष करके फीर विद्वानोंसे विस्तारपूर्वक समझके
अपनी आमाका करवाण अवश्य करना चाहिये । राम ।

~~—————~~
धोकडा नं० २.

(व्यवहार सन्धकत्वके ६७ बोल)

इन सटसठ बोलोको पारह द्वार करके कहेंगे- १) सददण
४ (२) लिग ३ (३) विनय १० प्रकार ४ शुद्धता ३ (४) लक्षण
(६) भूपण ५ (७) होपण ५ (८) प्रभाषना ८ (९) आमार ६ (१०)
जयणा ६ (११) स्थानक ६ (१२) भाषना ६ इति ।

(१) सददण चार प्रकारकी- १) पर तीर्थीका अधिक
स्वमतवा पावग्या. उमता और कृत्तिगादिकी संगत न करे
तीनोंवा परिचय करनसे इच्छ तापकी प्राप्ति नहीं हो सकत
परमायेवा प्राप्तिनवाले सविद गतायवा उपासना कर
बडावा धारण करे

राप कस
पुत्र दसग
ताका म
ता १००
गया १

(३) विनयका दश भेद- (१) अरिहस्तोंका विनय करे (२) मित्रोंका विनय (३) भाषायंका वि० (४) उपाध्यायका वि० (५) स्वामीका वि० (६) गण, बहुत भाषायोके समुह)का वि० (७) कुल (बहुत भाषायोके शिष्यसमुह)का वि० (८) स्वाधर्मीका वि० (९) संघका वि० (१०) संभोगीका विनय करे. इन दशोंका बहुमान-पूर्वक विनय करे। जैन शासनमें 'विनय मूल धर्म है'। विनय करनेसे अनेक सद्गुणोंकी प्राप्ति हो सकती है।

(४) शुद्धताके तीन भेद-(१) मनशुद्धता-मन करके अरिहस्तद्वेष ३४ अतिशय, ३५ वाणी, ८ महाप्रातिहायं मद्धित, १८ दुष्चण रहित*१२ गुण सहित हमारे देव है। इनके सिवाय हजारों कष्ट पढ़ने पर भी सरागी देवोंका स्मरण न करे (२) वचन शुद्धता वचनसे गुण कीसंन अरिहस्तोंके सिवाय दूसरे सरागी देवोंका न करे (३) काय शुद्धता-कायसे नमस्कार भी अरिहस्तोंके सिवाय अन्य सरागी देवोंको न करे।

(५) लक्षणके पांच भेद- १। मम-शत्रु मित्र पर सम परिणाम रक्षना । २। सेवेग-वैराग भाव रक्षना याने संसार असार है विषय और कषायसे अनन्तकाल भय भ्रमण करने हुये इस भय अच्छी सामग्री मिली है इत्यादि विचार करना। ३ निर्बग-शरीर और संसारका अतिम्यपणा चिन्तन करना। चने जहा तक इस मोहमय जगत्से अलग रहना और जगत्कारक सिनराज्ज-की दीक्षा ले कर शत्रुओंको जौनके सिद्धपद्धका प्राप्त करनेकी हमेशा अभिलाषा रखना । ४ अनुकम्पा स्वात्मा, परात्माकी

* इनन्तरय उमानन्तरय नम्यान्तरय उमानान्तरय वाउत्तरय इत्ये

नये इत्ये दुर्गम रति, अरति न प ३, चरति चरन, राय इत्ये नर, माइ
५२ १ २६ न ७ न चरिद ।

व्यवहार सम्यक्त्वके ६७ बोल.

कम्पा करनी अर्थात् दुःखी जीवको सुखी करना (५) आ-
श्रैलोक्य पूजनीय श्री धीतरागके वचनोपर दृढ भक्ता रखनी,
ताहितका विचार, अर्थात् अस्तित्व भावमें रमण करना। यह
व्यवहार सम्यक्त्वका लक्षण है। जिस घातकी न्युनता हो उसे
री करना।

(६) मूषणके पांच भेद- १. जिन शासनमें धैर्यवंत हो।
शासनका हर एक कार्य धैर्यतासे करें। (२) शासनमें भक्तिवान
हो। (३) शासनमें क्रियावान हो (४) शासनमें चातुर्य हो। हर एक
कार्य पैसी चतुरताके साथ करे ताके निर्विघ्नतासे हो (५)
शासनमें चतुर्विध संघकी भक्ति और बहुमान करनेवाला हो। इन
पांच मूषणोंसे शासनकी शोभा हांती है।

(७) दूषण पांच प्रकारका- (१) जिन वचनमें शंका कर-
नी (२) शंका-दूसरे मतोंका आढम्बर देखके उनकी पांछला कर-
नी (३) विनिगिच्छा-धर्म करणीके फलमें संदेह करना कि इसका
फल कुछ होगा या नहीं। अभीतक तो कुछ नहीं हुआ इस्यादि
४ पर पासंडीसे हमेशा परिषय रखना ५ पर पासंडीकी प्र-
शंसा करना ये पांच सम्यक्त्वके दूषण हैं। इसे टालने चाहिये

(१) प्रभाषना आठ प्रकारकी है जिस कालमें जि-
मूत्रादि ह' उनकी गुरुगममें प्राणें यह शासनका प्रभाविक
है न बड़े आढम्बरके साथ धर्म कथाका व्याख्यान करके श-
नकी प्रभाषना करे २ विकृत तपस्या करके शासनकी प्रभा-
करे ३ तीन काल और तीन मतका जाणकार ह' न तर्क
तर्क, हेतु वाद, युक्ति व्याय अर विद्यादि बलमें धारि-
शास्त्राद्यमें पराजय करके शासनकी प्रभाषना करे ४ पु-
नक शासनकी प्रभाषना करे ५) वृत्तिना

शक्ति हो तो कथिता करके शासनकी प्रभावना करे (८) ब्रह्म-
र्यादि कोई बडा व्रत लेना हो तो प्रगट बहुतसे आदमियोंके बीच
में ले। इसीसे लोगोंको शासन पर भद्रा और व्रत लेनेकी रुची
बढती है अथवा दुर्यंज स्वधर्म भाइयोंकी सहायता करनी यह
भी प्रभावना है परन्तु आजकल चौमासेमें अभक्ष वस्तुओंकी प्र-
भावना या लड्डु आदि बांटने है दीर्घदृष्टिसे विचारीये इस बांटने
से शासनकी क्या प्रभावना होती है ? और कितना लाभ है इस
को बुद्धिमान स्वयं विचार कर सके है अगर प्रभावनासे
आपका सखा प्रेम हो तो छोटे छोटे तापज्ञानमय द्रष्टक प्रभाव-
ना करिये तांके आपके भाइयोंको आत्मज्ञानकि प्राप्ती हो।

(९) आगार छे हैं-सम्यक्त्वके अंदर छे आगार हैं (१)
राजाका आगार । २) देवताया० । ३) न्यातका० । ४) माता पिता
गुरुजनोका० । ५) बलवंतका० । ६) दुष्कालमें सुखसे आजीविका
न चलती हो, इन छे आगारोंमें सम्यक्त्वमें अनुचित कार्य भी
करना पड़े तो सम्यक्त्व दुपित नहीं होता है।

(१०) जयणा छे प्रकारकी- १) आलाप-स्वधर्म भाइयोंसे
एक वार बोलना । २) मलाप-स्वधर्म भाइयोंसे वार २ बोलना।
३) मृनिका दान देना और स्वधर्म चान्मल्य करना ४) प्रति-
दिन वार २ करना ५) गुणीजनोका गुण प्रगट करना ६) और
बन्दन नमस्कार बहुमान करना।

(११) स्थान छे है १) धर्मरूपी नगर और सम्यक्त्व रूपी
दरवाजा २) धर्मरूप वृक्ष और सम्यक्त्वरूपी जड ३) धर्मरूपी
प्रासाद और सम्यक्त्वरूपी नाथ ४) धर्मरूपी भोजन और सम्य-
क्त्वरूपी शाल ५) धर्मरूपी माल और सम्यक्त्वरूपी दुकान ६)
धर्मरूपी रत्न और सम्यक्त्वरूपी मिजुरी०

(४) इन्द्रिय पाँच-धोनेन्द्रिय, बभ्रुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय ।

(५) पचासि द्वे-आहार पचासि, शरीर पचासि, इन्द्रिय पचासि, आत्माआत्म पचासि, माना पचासि, और मनःपचासि.

(६) प्राणदश-धोनेन्द्रिय बलप्राण, बभ्रुइन्द्रिय बलप्राण, घ्राणेन्द्रिय बलप्राण, रसेन्द्रिय बलप्राण, स्पर्शेन्द्रिय बलप्राण, मनबलप्राण, बधन बलप्राण, काय बलप्राण, आत्मोआत्म बलप्राण आयुष्य बलप्राण.

(७) शरीर पाँच-भौतिक शरीर, केविक शरीर, आहारिक शरीर, तेजस शरीर, वाहमान शरीर ।

(८) योग पंद्रह-स्वात मनक स्वात बधनक, मान कायक, यथा स्वयमनयात अस्वयमनयात मिथमनयात स्वयवहार मनयात स्व-वभाषा, अस्व-वभाषा मिथभाषा स्ववहार भाषा, भौतिक काययात भौतिक मिथ काययात शैक्य काययात शैक्य मिथकाययात आहारक काययात आहारक मिथ काययात और काययात काययात ।

(९) उपयाम चारठा-पाच ज्ञान, ज्ञान अज्ञान, स्वात दर्शन यथा मतिज्ञान, अज्ञान अर्वाधिज्ञान, मन पयवज्ञान, पयवज्ञान मतिअज्ञान अज्ञान विमगज्ञान बभ्रुदर्शन, अ बभ्रुदर्शन अर्वाधिदर्शन, कय दर्शन

(१०) कर्म आठ ज्ञानावणाय जैस घाणिका वेद । दर्शनावणाय । जैस राजाका पोलाया बहुराय कर्म जैस मनु लिय हुरी माहनाय कर्म (मद्रिहा पान काय हूय मनुष्य ।

पैतीम बोल.

युष्यकर्म (जैसे कारागृह) नामकर्म (जैसे खीतारों) गोत्र-
कर्म (कुंभार) अंतरायकर्म (जैसे राजाका खजांची) ।

(११) गुणस्थानक- चौदा— मिथ्यावगुणस्थानक,
सास्वादत गु० मिथ्य गु० अव्रतसम्यग्दृष्टि गु० देशव्रती भावक-
कागु० प्रमत्त साधुका गु० अप्रमत्त साधु गु० निवृत्तियादर गु०
अनिवृत्तियादर गु० सुभ्रम संपराय गु० उपशान्त मोह गु० क्षीण-
मोह गु० तयोगि गु० अयोगि गु० ।

(१२) पांच इन्द्रियोंका-२३ विषय. भोजेन्द्रियकि
तीन विषय-जीवशब्द. अजीवशब्द मिथ्यशब्द, बहुरिन्द्रियकी
पांच विषय. कालारंग, निलारंग, राती (लाल), पीलोरंग,
स्फेदरंग, घ्राणेन्द्रियकी दोय विषय. सुगन्ध, दुर्गन्ध, रसेन्द्रियकी
पांच विषय तीक कटुक, कषाय आविल, मधुर, स्पर्शेन्द्रि-
यकी आठ विषय. कर्कश, मृदुल, गुरु, लघु, सीत. उष्ण, स्निग्ध
रूक्ष.

(१३) मिथ्यात्वदश-जीवकीं अजीव भेदे यह मिथ्य
त्व, अजबकीं जीव भेदे यह मिथ्यात्व, धर्मकीं अधर्म भेदे, अ-
र्थकीं धर्म भेदे. साधुकीं असाधु भेदे: असाधुकीं साधु भेदे.
कर्मकीं मुक्तकीं अमुक्त भेदे. अष्टकर्मकीं अमुक्तकीं मुक्त भेदे.
सारवं मार्गकीं मोक्षका मार्ग भेदे. मोक्षके मार्गकीं संस-
र्ग भेदे यह मिथ्यात्व है विशेष मिथ्यात्व २२ प्रकारका
गुणस्थानद्वारा ।

(१४) छोटी नवतत्त्वके १५ बोल विस्तार
है नवतत्त्वसे नवतत्त्वके नाम जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व
तत्त्व पापतत्त्व, आश्रयतत्त्व, संयमनतत्त्व, निज्जगत
तत्त्व, मोक्षतत्त्व । जिममे ।

(क) जीवतत्त्व के चौदा भेद हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय, वा-
ह्य एकेन्द्रिय, घेन्द्रिय तेन्द्रिय चोर्द्विन्द्रिय, अमंज्ञी पंचेन्द्रिय,
मंज्ञीपंचेन्द्रिय एवं सातोंके पर्याया. सातोंके अपर्याया मोला-
नेसे १४ भेद जीवका हैं ।

(ख) अजीवतत्त्वके चौद्वे भेद हैं यथा-धर्मास्तिका-
यके तीन भेद हैं धर्मास्तिकायके स्कन्ध, देश, प्रदेश, एवं अ-
धर्मास्तिकायके स्कन्ध, देश, प्रदेश. एवं आकाशास्तिकायके
स्कन्ध, देश, प्रदेश. एवं नौ. और दशरा काल तथा पुद्गला-
स्तिकायके चार भेद स्कन्ध. स्कन्धदेश स्कन्धप्रदेश, परमाणु
पुद्गल एवं चौद्वे भेद अजीवका हैं ।

(ग) पुन्यतत्त्वके नौ भेद हैं । अन्न देना पुन्य, पाणी
देना पुन्य, मकान देना पुन्य, पाटपाटला शय्या देना पुन्य-
षष्ठ देना पुन्य मनपुन्य, पचनपुन्य, कायपुन्य, नमस्कारपुन्य.

(घ) पापतत्त्वके अठारह भेद । प्राणातिपात (जीव-
हिमा करना) मृषावाद (झुठ बोलना) अज्ञतादान (धोरी
करना) मैथुन परिग्रह क्रोध, मान, माया, लोभ, राग द्वेष,
कलह, अन्यायदान, पशुन. परपरीवाद, रति अरति, माया-
मृषावाद, मिथ्याव्यसन्य एव १८ पाप

च) आश्रयतत्त्वके २० भेद हैं यथा-मिथ्याव्याधय
अज्ञताश्रय, प्रमादाश्रय कवायाश्रय अशुभयोगाश्रय, प्राणाति-
पाताश्रय, मृषावादाश्रय अज्ञतादानाश्रय, मैथुनाश्रय, परि-
ग्रहाश्रय आश्रयिन्द्रियकी अर्पणे कर्तृत्वे न रत्नताश्रय एव चक्षु
इन्द्रिय घ्राणन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शन्द्रिय एव मन-पचन-
काय-अन्न यन्त्रे न रत्ने बहोरक्षण अथ तासे लेना, अथ-

यन्नामे रग्ना. सूचीकुश अर्थात् नृणमात्र अयन्नासे लेना-रग्नासे
 मे आधव होता है ।

(छ) संवरतत्त्व—के २० भेद हैं यथा ममकित संवर,
 मृतप्रस्थान्यायान संवर अप्रमादसंवर, अकण्ठसंवर, शुभयोगसंवर,
 जीपट्टिस्था न करे, जुट न घोले, खोरी न करे, मधुन न सेये, प-
 रिग्रह न रग्ने, धौंरेन्द्रिय अपने कर्जमे रग्ने, यक्षु इन्द्रिय० घ्राणे-
 ण्ड्रिय० रसेन्द्रिय० स्पर्शेन्द्रिय, मन, यजन, पाया अपने कर्जमे
 रग्ने, भेडोपकरण यन्नासे प्रहन करे, यन्नासे रग्ने, एवं सूचीकुश अ-
 र्थात् नृणमात्र यन्नासे उठाये यन्नासे रग्ने एवं २० भेद मयश्का है ।

(ज) निर्जरातत्त्व के १२ भेद हैं यथा अनसन, उजो-
 दरी, वृत्तिमंक्षेप, रग (पिगह) या त्याग, पायाकलेम, प्रतिमंले-
 पना, मायभित्त, विनय, धैर्यादय, स्वध्याय ध्यान, पायोगरने
 एवं १२ भेद.

झ) बन्धतत्त्व के चार भेद हैं प्रकृतिबन्ध, स्थिति
 बन्ध अनुभागबन्ध और प्रहंशबन्ध.

(ट) संज्ञातत्त्व के चार भेद हैं ज्ञान दर्शन धारिष्य
 और धारिष्य

१. ज्ञानमिच्छा २. ज्ञानमिच्छा ३. ज्ञानमिच्छा ४. ज्ञानमिच्छा

५. ज्ञानमिच्छा ६. ज्ञानमिच्छा ७. ज्ञानमिच्छा ८. ज्ञानमिच्छा

९. ज्ञानमिच्छा १०. ज्ञानमिच्छा ११. ज्ञानमिच्छा १२. ज्ञानमिच्छा

१३. ज्ञानमिच्छा १४. ज्ञानमिच्छा १५. ज्ञानमिच्छा १६. ज्ञानमिच्छा

कुमार, विशुक्कुमार, अग्निकुमार, त्रिपकुमार, विशाकुमार, उद्-
धिकुमार, वायुकुमार, स्तनीतकुमार एवं ११ दंडक हुआ। वृक्षी-
कायका दंडक, अशकायका, तेंडुकायका, वायुकायका, वनस्पति-
कायका, वेदग्निकादंडक तेंदुग्निका, शौरिग्निका, तिर्यकवनेग्निका
वका, मनुष्यका, व्यंतरदेवताका, उयोनीपीदेवीका और शौचीमवा
वैमानिकदेवताका दंडक है।

(१७) लेश्या छे-वृषलेश्या, मिललेश्या, कापोतलेश्या,
तेंदुसलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्रभेश्या।

(१८) दृष्टि तीन-मध्यदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिथदृष्टि।

(१९) ध्यान चार-आतंष्यान, रीत्रष्यान, धर्मष्यान,
शुक्रष्यान।

(२०) पद् द्रव्य के जान पनेक ३० भेद, यथा पद् द्र-
व्यके नाम, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय,
जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय और काल।

(१) धर्मास्तिकाय- पांच बालोंसे जानी जाती है, जैसे
द्रव्यसे धर्मास्तिकाय एक द्रव्य है क्षेत्रसे संपूर्ण लोक परिमाण
है, कालसे अनादिअन्त है, भावसे अरूपी है जिसमें वर्ण, गन्ध,
रस स्पर्श कुछ भी नहीं है और गुणसे धर्मास्तिकायका चलन
गुण है जैसे जलके सहायतासे मछली चलती है इसी माफिक धर्मा-
स्तिकायकि सहायतासे जीव और पुद्गल चलन क्रिया करते हैं

(२) अधर्मास्तिकाय पांच बालोंसे जानी जाती है
द्रव्यसे अधर्मा० एक द्रव्य है क्षेत्रसे संपूर्ण लोक परिमाण है
कालसे आदि अन्त रहित है भावसे अरूपी है वर्ण गन्ध रस

स्पर्श कुच्छभी नहीं है गुणसे स्थिर गुण है जैसे चाका हुआ मु-
साफरकी घृक्षकी छायाका दृष्टान्त ।

(३) आकाशास्तिकाय-पांच बोलोंसे जानी जाती है द्रव्यसे आकाशास्तिकाय एक द्रव्य है क्षेत्रसे लोकालोक परिमाण है कालसे आदि अंत रहित है भावसे वर्ण गन्ध रस स्पर्श र-
होत है गुणसे आकाशमें चिकाशका गुण है जैसे भीतमें खुंटी
तया पाणीमें पत्तासाका दृष्टान्त है ।

(४) जीवास्तिकाय-पांच बोलोंसे जानी जाती है द्र-
व्यसे जीव अनंत द्रव्य है क्षेत्रसे लोक परिमाण है. कालसे आ-
दिअंत रहित है भावसे वर्ण गन्ध रस स्पर्श रहित है गुणसे जी-
वका उपयोग गुण है जैसे चन्द्रके कलाका दृष्टान्त.

(५) पुद्गलास्तिकाय-पांच बोलोंसे जानी जाती है.
द्रव्यमें पुद्गलद्रव्य अनंत है क्षेत्रमें संपूर्ण लोक परिमाण है. काल-
से आदि अंत रहित है भावसे रूपी है वर्ण है गन्ध है रस है स्पर्-
श है गुणमें सदन पदन विध्वंस गुण है । जैसे घादलोक दृष्टान्त ।

(६) कालद्रव्य-पांच बोलोंसे जाने जाते हैं. द्रव्यसे
अनंत द्रव्य-कारण अनंत जीव पुद्गललोक स्थितिकी पूर्ण कार-
रदा है । क्षेत्रमें कालद्रव्य अट्टाई द्वीप में है (कारण साधारण
चन्द्र सूर्य स्थिर है कालसे आदि अंत रहित है भावसे वर्ण
गन्ध रस स्पर्श रहित है गुणमें नई वस्तुकी पुरानी वस्तु पुरानी
वस्तुका क्षय वर वपदा वस्तुका क्षय)

.....
.....
.....
.....

करे। २) रात्रिद्वे लोक भेदे यथा बह्वा शून्यं यानि मही (३) रात्रिद्वे लोक भेदे यथा बह्वा शून्यं यानि मही (४) परस्त्री म प्रवृत्तौ त्याग करे श्वशुरादि मर्त्या करे (५) परिग्रहका परि-
 माण करे (६) विद्याका परिमाण करे (७) प्रवृत्तौ त्याग करे परत्रे कर्मादान स्वाभाविका त्याग करे (८) अनर्थद्वे पापीका त्याग करे (९) सामायिक करे (१०) विद्यावतामी मन्त्र करे (११) योगव प्रवृत्त करे (१२) अनीचीर्नविनाम भवति मुनि महाशक्तिं कामुक पण्यीक अशक्ति भावार्थ द्वे।

(२३) सुनिप्रदायज्ञोंके योग सदायत—(१) सर्वथा

प्रकारे भावद्वेया करे नहीं, कराने नहीं, कराने हुयेको अथवा मन्त्र नहीं, मन्त्रे, मन्त्रे, कायादि, (२) सर्वथा प्रकारे मन्त्र काय नहीं, कायादि नहीं, कायको अथवा मन्त्रे नहीं मन्त्रे, मन्त्रे, कायादि, (३) सर्वथा प्रकारे शरीर करे नहीं, कराने नहीं, कराने अथवा मन्त्रे नहीं मन्त्रे, मन्त्रे, कायादि, (४) सर्वथा प्रकारे मन्त्र मन्त्रे नहीं, मन्त्रे नहीं मन्त्रे अथवा मन्त्रे नहीं मन्त्रे, मन्त्रे, कायादि, (५) सर्वथा प्रकारे परिग्रह मन्त्रे नहीं मन्त्रे नहीं, मन्त्रे हुयेको मन्त्रे मन्त्रे नहीं मन्त्रे, मन्त्रे, कायादि, (६) सर्वथा प्रकारे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे, कायादि, (७) सर्वथा प्रकारे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे, कायादि, (८) सर्वथा प्रकारे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे, कायादि, (९) सर्वथा प्रकारे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे, कायादि, (१०) सर्वथा प्रकारे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे, कायादि, (११) सर्वथा प्रकारे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे, कायादि, (१२) सर्वथा प्रकारे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे नहीं, मन्त्रे मन्त्रे, कायादि ।

१ ३८, प्र-वास्तव्यादि द्वे योगा अथ ३३ भाग ९, ३३ ३३ ३३ ३३ ३३

३३ ३३ ३३ ३३	३३ ३३ ३३ ३३
३३ ३३ ३३ ३३	३३ ३३ ३३ ३३
३३ ३३ ३३ ३३	३३ ३३ ३३ ३३
३३ ३३ ३३ ३३	३३ ३३ ३३ ३३
३३ ३३ ३३ ३३	३३ ३३ ३३ ३३

अंक १२ भाग २

एक करण दो योगसे
करं नहीं मनसे वचनसे
" " मनसे कायासे
" " वचनसे कायासे
करावुं नहीं मनसे वचनसे
" " मनसे कायासे
" " वचनसे कायासे
अनुमोदुं नहीं मनसे वचनसे
" " मनसे कायासे
" " वचनसे कायासे

अंक १३ भाग ३

एक करण तीन योगसे
करं नहीं मनसे वचनसे कायासे
करावुं नहीं " " "
अनु० नहीं " " "

अंक २१ भाग २

दो करण एक योगसे
करं नहीं करावुं नहीं मनसे
" " वचनसे
" " कायासे
रं नहीं अनुमोदुं नहीं मनसे
" " वचनसे
" " कायासे
" " अनु० नहीं मनसे
" " वचनसे
" " कायासे

अंक २२ भाग २

एक करण दो योगसे

करं न. करावुं न. मनसे व
" " " मनसे का
" " " वचनसे का
करं न. अनुमोदुं न. मनसे वच
" " " मनसे काया
" " " वचनसे काया
करावुं न. अनु. न. मनसे वच
" " " मनसे काया
" " " वचनसे काया

अंक २३ भाग ३

दो करण तीन योगसे
करं न. करावुं न. मन. वच. काया
" अनु० न. " " "
करावुं न. अ० न. " " "

अंक ३१ भाग ३

तीन करण तीन योगसे
करं न. करा. न. अनु. न. मनसे
" " " वचनसे
" " " कायासे

अंक ३२ भाग ३

तीन करण दो योगसे
करं न. करावुं न. अनु. न. मन वचनसे
" " " मनसे कायासे
" " " वचन. काया.

अंक ३३ भाग १

तीन करण तीन योगसे
करं नहीं करावुं न अनु० नहीं
मनसे वचनसे कायासे

(२५) चारित्र्य पात्र - सामाजिक चारित्र्य, ऐश्वर्यवश
वरीय चारित्र्य, परिहारविशुद्धि चारित्र्य, सूक्ष्मलेखराय चारित्र्य
वशात्प्राप्त चारित्र्य ।

(२६) नव गान - भैरवगण, संमहलग, वनवहार नव
भूतसूत्रनव गाननव संविहृदलग, पर्वसूत्रलग ।

(२७) निष्पत्त्याचार नामनिर्देश, स्वयंपत्त्यानिर्देश,
ब्रह्मनिर्देश, भागनिर्देश,

(२८) समकित पात्र श्रीगणेशिक समकित, अर्थात्
शाम ल० आगिहल० गेहूँ ल० माहवाहन समकित ।

(२९) इति नौ - कुलावरण, कीर्तन, कृतगान, शास्त्र-
रत्न, शीघ्ररत्न, अनामकृतन, प्रदुभूतन विमानन, शास्त्रिनन

(३०) अमृत ३२ यथा - अमृतकेपीतु, पीपलकेपीतु,
पीपलकेपीतु, कुम्भकपुत्रकेपीतु, अमृतकेपीतु, शाल, मन्दि-
रामृत अमृतकेपीतु, विषमामृत अमृतकेपीतु, अर्थात् शालीनीमृतन,
अमृतकेपीतु, अर्थात् अमृतकेपीतु चारित्र्या अर्थात्, अर्थात् शाली-
नीमृतकेपीतु अर्थात् अमृतकेपीतु अर्थात् अमृतकेपीतु अर्थात्
अमृतकेपीतु अर्थात् अमृतकेपीतु अर्थात् अमृतकेपीतु अर्थात्

३१ अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु

३२ अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु
अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु
अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु
अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु अमृतकेपीतु

(३४)पाखंडमतके ३६३ भेद यथा—क्रियावादीके १८० मत, अक्रियावादी के ८५ मत, अज्ञानवादी के ६७ मत. यिनय-वादीके ३२ मत.

(३५) श्रावकोंके २१ गुण—(१) क्षुद्र मतिवाला न हो याने गंभीर चित्तवाला हो (२) रूपयंत सर्धाग सुन्दरऽकार यांनं शायकयतकों सर्धाग पालनेमें सुन्दर हो (३) सौम्य (शांत) प्रकृतिवाला हो (४) लोक प्रियहो यांने हरेककार्य प्रशंसनियकरे (५) फूर न हो, (६) इदलोक परलोकके अपयशसे डरे [७] शाद्वता न करे धोखावाजीकर दुसरोको ठगे नही (८) दुसरोकि प्रार्थनाका भंग न करे (९) लौकीक लोकोत्तर लज्जा गुणसंयुक्त हो (१०) दयालु हो यांने सर्धजीवीका अच्छा यांच्छे (११) सम्यग्द्रष्टि हो यांने सत्यविचारमें निपुण हो राग द्वेषका संग न करता हुआ मध्यस्थ भाषमें रहै (१२) गुण गृहीपनारखे (१३) सन्य घातनिःशंकपणे कहै (१४) अपनेपरिवारको सुशील बनाये अपने अनुकूल रखे (१५) दीर्घदर्शी अच्छा कार्यभी खुब विचारके करे (१६) पक्षपात रहित गुण अयगुणोंको जानने वाला हो (१७) तत्पज्ञ वृद्ध सज्जनोकि उपासना करे (१८) यिन-यवान हो यांने घतुर्विध संघकायिनयकरे (१९) कृतज्ञ अपने उपर कीसीने भी उपकार कीया हो उनोका उपकार भूले नही समयपाके प्रत्युपकारकरे (२०) संसारको असार समजे ममत्त्व नाथ कम करे निर्दामता रखे २१) लब्धिलक्ष धर्मानुष्ठान धर्म-व्यहार करनेमें दक्ष हो यांने संसारमें एक धर्म ही स्वारपदाध है

अवधारणा अवगाहना दुसरी उत्तर वैक्रिय, जो अस्तली शरीरसे न्युनाधिक बनाना ।

(३) संहनन-हाडकि मज्जयुतीसे ताकत-शक्तिको संहनन कहते हैं जिसके छे भेद हैं षड्भ्रूपभनाराच, भ्रूपभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, किल्का. और छेघटा संहनन ।

(४) संस्थान-शरीरकि आकृति, जिसके छे भेद-समच-नुरक, न्यग्रोध परिमंडल, सादोया, बांधना, कुब्ज, हुंडकसंस्थान.

(५) संज्ञा-जीवोकि इच्छा-जिस्के च्यार भेद. आहार-संज्ञा भयसंज्ञा भैयुनसंज्ञा परिग्रहसंज्ञा.

(६) कषाय-जिनसे संसारकि वृद्धि होती है जिसके च्यार भेद हैं क्रोध, मान, माया, लोभ.

(७) लेइया-जीवोके अभ्यवसायसे शुभाशुभ पुद्गलोंको ग्रहण करना जिसके छे भेद हैं कृष्ण० निल० कापोत० तैत्तस० पद्म० शुद्धलेइया ।

(८) इन्द्रिय-जिनसे प्रत्यक्षज्ञान होता है जिसके पांच भेद. श्रोत्रेन्द्रिय, घभूरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय ।

(९) समुद्धान-समग्रदेशोकि घानकर विपन्न बनाना जिम्का सात भेद हैं वेदनि कषाय० मरणांतिक० वैक्रिय० ते-कमः आहारक० केवली समुद्धान०

(१०) मज्ञी जिस्के मनहो बह मज्ञी मन न हो बह असंज्ञी

११) वेद बोधक विकार हो भैयुनवि अभिलाषा करना उससे वेद कहत हैं जिम्के तीन भेद हैं अवेद पुरपण्ड ननुमण्डे

१२) पदोको ज्ञाष पानिसे उपज्ञ हो पुद्गलोको ग्रहणकर अभिप्रेत किसे अज्ञा अज्ञान स्थान बनाने हैं जिम्के भेद न आहारः आहारः इन्द्रियः आमाप्यमः अपः मनपदोमः

(१३) दृष्टि-तत्त्व पदार्थकी धृष्टा, जिसके तीन भेद. स्व-
स्व्यदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिथ्यदृष्टि,

(१४) दर्शन-वस्तुका अवलोकन करना-जिसके चार भेद
चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केशलदर्शन.

(१५) ज्ञान-तत्त्वयस्तु हो यद्यार्थ ज्ञानता जिसके पाँच भेद
है मतिज्ञान, धृतिज्ञान, अयधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केशलज्ञान।

(१६) अज्ञान-वस्तु तत्त्वको विप्रोत ज्ञानता जिसके तीन
भेद है मतिअज्ञान, धृतिअज्ञान, विभग अज्ञान।

(१७) योग-शुभाशुभ योगोंका व्यापार जिसका भेद १५
देसो षोडश ८ था। (पैंतीस बोलोंमें)

(१८) उपयोग-माकारोपयोग (विशेष) अनाकारोपयोग
(सामान्य)

(१९) आहार-रोमाहार, केशलाहार लेने है उन्होंका दो
भेद है व्याघात जो लोकके चरम प्रदेशपर जीव आहार लेते है
उनोंको कीसी दीशामें अलोककि व्याघात होती है तथा अथर्व
प्रदेशपर जीव आहार लेता है यह निव्याघात लेता है।

(२०) उत्पात-एक समयमें कानसे स्थानमें कितने जीव
उत्पन्न होते है।

(२१) स्थिति-एक योनिके अन्दर एक भवमें कितने काल
रह सके।

(२२) मरण-समुद्घात कर तांजवेजाकि माफीक मरे.
विगर समुद्घात गोलीके घडाकाकी माफीक मरे।

(२३) चयन एक समयमें कानसी योनिके कितने जीव चये.

(२४) गति आगति-कानसी गतिके जाके कीम योनिके
जीव उत्पन्न होना है और कानसी योनिके चयके जीव कानसी
गतिके जाना है। इति।

लघुदंडक पढनेवालोंको पहले पैंतीसबोल बंठस्थ कर लेना चाहिये । अथ यह चौबीसद्वार चौबीसदंडकपर उतारा जाते हैं ।

(१) शरीर—नारकी देयताओं में तीन शरीर—धैकीय शरीर ० तेजस ० कारमण ० पृथ्वीकाय, अप ० तेज ० धनास्पति ये इन्द्रिय नेन्द्रिय घोरिन्द्रिय, असंज्ञी तीर्थच पंचेन्द्रिय, असंज्ञी मनुष्य और युगल मनुष्य इन षोडशोंमें शरीर तीन पावे, औदारीक शरीर तेजस ० कारमण ० । वायुकाय और संज्ञी तीर्थच में शरीर चार पावे, औदारीक, धैकीय तेजस, कारमण, । संज्ञीमनुष्यमें शरीर पांचोपाय, सिद्धोंमें शरीर नहीं.

(२) अथगाहना—जघन्य-भवधारणी अंगुलके असंख्यात में भाग हैं और उत्तर धैक्रिय करते हैं उनोंके जघन्य अंगुलके संख्यातमें भागहोती हैं अथ भवधारणि तथा उत्तर धैक्रिय कि उत्कृष्ट अथगाहना कहते हैं

नाम.	उत्कृष्ट भवधारिणि		उत्कृष्ट उत्तरवैक्रिय	
	धनुष्य	आगुल	धनुष्य	मांगुल
पहली नारकी	७॥	६	१५॥	१२
दूसरी	१-	१२	३१।	०
तीसरी	३१।	०	६०	०
चौथी	६०	०	१००	०
पाचमी ..	१००	०	१५०	०
छठी ..	२००	०	२००	०
सातमी	५०		१०००	०

{ १० भुवनपति धाणव्यन्तर जोतीषी पहला दुसरा देवलोक	{ ७ द्वायकी }	लाख जोजन
३-४ या देवलोक	६ द्वाय	"
५-६ ठा "	५ द्वाय	"
७-८ वा "	४ द्वाय	"
९-१०-११-१२-दे. नौश्रवोपक	३ द्वाय	"
चार अनुत्तर विमान	२ द्वाय	उत्तर वैक्रिय नहीं करे
सर्वार्थसिद्ध वि० पृथ्वी, अप्, तेज,	१ द्वाय	"
	{ आंगुलके अंस- ख्यातमो भाग }	"
वायुकाय... ..	" " "	आंगु० संख्या० भाग
वनस्पतिकाय	१००० जोजन-सा- धिक (कमल)	उत्तर वैक्रिय नहीं
वे इन्द्रिय	१२ जोजन	"
ते इन्द्रिय	३ गाउ	"
चौ इन्द्रिय	४ गाउ	"
तिर्यध पंचेन्द्रिय	१००० जोजन	१०० जोजन
जलधर मही	१००० जोजन	"

थलघर	संज्ञी	६ गाउ	१०० जोजन
खेघर	..	प्रत्येक धनुष्य	"
उरपरिसर्प	..	१००० जोजन	"
भुजपरिसर्प	..	प्रत्येक गाउ	"
जलघर अमंज्ञी		१००० जोजन	पैधिय नहीं करे
थलघर	..	प्रत्येक गाउ	"
खेघर	..	प्र० धनुष्य	"
उरपरिसर्प	..	प्र० जोजन	"
भुजपरिसर्प	..	प्र० धनुष्य	"
मनुष्य		३ गाउ	लास जोजन साहेरी
असज्ञी मनुष्य		आंगु० अस० भाग	उत्तर पैधिय करे नहि
देवकुह, उत्तरकुह		३ गाउ	"
हरिनास, रम्यवावास		२ गाउ	"
हेमवय, पेरणवय		१ गाउ	"
५६ अंतरद्वीप		८०० धनुष्य	"
महाविदेहद्वीप		५०० धनुष्य	लास जोजन साधिक
मनुष्य सुमनार		लास गाउ ३ गाउ	उत्तरसे ० गाउ
मनुष्य सुमनार		५ गाउ	१ गाउ
मनुष्य सुमनार		१ गाउ	५०० धनुष्य
मनुष्य सुमनार		५ गाउ	५ गाउ
मनुष्य सुमनार		५ गाउ	५ गाउ
मनुष्य सुमनार		५ गाउ	५ गाउ
मनुष्य सुमनार		५ गाउ	५ गाउ

यह अयमपिणी कालकी अयगाहना है इसमें उलटो उत्स विणीकी समप्रता । निद्रोके शरीरकी अयगाहना नहीं है परंतु आग्म प्रदेशने आकाश प्रदेशकी अयगाहना (रोकाहै) इम अपेक्षा जघप्य १ हाथ ८ आंगुल, मध्यम ४ हाथ १६ आंगुल, उरुष्ट ३३३ धनुष्य ३२ आंगुल, इति.

(३) संघयण—नारकी और देवतामें संघयण नहीं है किंतु नारकीमें अशुभ पुद्गल और देवतामें शुभ पुद्गल संघयणपणे मण-मते है. पांच स्थायर, तीन विकलेंद्रिय, असत्री तिर्यच, अमत्री मनुष्यमें संघयण एक छेवट्टे पाये. सत्री मनुष्य और सत्री तिर्य-चमें छ संघयण पाये युगलोआमें एक वधमृषभनारायसंघयण और निद्रोमें संघयण नहीं है. इति

(४) मंडाण—[६] नारकी, पांच स्थायर तीन विकलें-द्रिय अमत्री तिर्यच और अमत्री मनुष्यमें मंडाण एक ट्टक पाये नया देवता और युगलोआमें समथोरम मंडाण पाये सत्री तिर्यच और सत्री मनुष्यमें छ संस्थान पाये. निद्रोमें संस्थान नहीं है.

(५) कपाय—[४]-चाथीमां ट्टकमें कपाय च्यारी पाये और सिद्ध अकथाई है ।

६) मंत्रा [४]-चाथीमां ट्टकमें मंत्रा च्यारी पाये निद्रोमें मंत्रा नहीं है

(७) मंत्र्या पशुला दूता नारकीमें क्रायान केउया ।
 नारकीमें क्रायान और नारकीमें च्याथीमां नारकीमें पाच्यमांमें नील
 और क्रायान के उदाय क्रायान के मन्त्रमांमें महाकृष्ण के १०
 नारकीमें उदाय क्रायान के मन्त्रमांमें युगलोआमें केउया
 चार पांच क्रायान नारकीमें क्रायान के मन्त्रमांमें नरकाय वायुकाय,

२ पुरुषवेद और स्त्रीवेद । तीजा देखलोकमें सर्वार्थसिद्ध विमानतक पुरुषवेद है सत्री मनुष्य औ सत्रीतिर्यचमें वेद पावे तीन, सिद्ध अघेदी है ।

(१२) पर्याप्ती—नारकी देखतामें पर्याप्ती पांच (मन और भावा मायमें थांधे) पांच स्थावरमें पर्याप्ती पावे चार क्रमसे, तीन विकलेंद्रिय और असत्री तिर्यचमें पर्याप्ती पावे पांच क्रमसे, असत्री मनुष्यमें चारमें कृच्छ उणी क्रमसे; सत्री मनुष्य सत्री तिर्यच और युगलीआमें पर्याप्ती पावे छ. सिद्धोंमें पर्याप्ती नहीं है ।

(१३) दिष्टी-नारकी, भुवनपति, स्वतर उद्योतिपी, यारहा देखलोक, सत्रीतिर्यच और सत्री मनुष्यमें दृष्टि पावे तीनों, नथप्रैयेषकमें दो (सम्यक० मिथ्या०) अथवा तीन पावे. पांच अनुत्तर विमानमें एक सम्यकदृष्टि, पांच स्थावर, असत्री मनुष्य और ५६ अंतरद्वीपके युगलीआमें एक मिथ्या-दृष्टि, तीन विकलेंद्रिय असत्री तिर्यच और ३० अकारभूमि युगलीआमें दृष्टि पावे दो (१. सम्यकदृष्टि २. मिथ्यादृष्टि. सिद्धोंमें सम्यकदृष्टि है

(१४) दर्शन-नारकी देखता और सत्रीतिर्यचमें दर्शन पावे तीन क्रमसे पांच स्थावर वेदद्रिय तैदद्रियमें दर्शन पावे एक अचक्षु चोरेन्द्रिय असत्रीतिर्यच असत्री मनुष्य और युगलीआमें दर्शन पावे दो क्रमसे । सत्री मनुष्यमें दर्शन पावे चार सिद्धोंमें कथल दर्शन है

(१५) नाण नारकी देखता और सत्रीतिर्यचमें ज्ञान पावे तीन क्रमसे । पांच स्थावर, असत्री मनुष्य और ५६ अंतरद्वीपका युगलीआमें नाण नहीं है तीन विकलेंद्रिय, असत्री तिर्य-

च और ३० अक्षरभूमि युगलीयामें नाण पायेदो क्रमसे तथा सती मनुष्यमें ज्ञान पाये पांच सिद्धीमें फेयल ज्ञान है.

(१६) अनाण—नारकी. देवतामें नक्षत्रवयक तक, तिर्यंघ पंचेद्री और सती मनुष्यमें अनाण पाये तीन, पांच स्थावर तीन विकलेंद्रिय असती तिर्यंघ असती मनुष्य और युगली-आमे अनाण पाये दो क्रमसे पांच अनुत्तर विमान और सिद्धीमें अनाण नहीं हैं।

(१७) जोग—नारकी और देवतामें जोग पाये ११ (४) मनके (४) वचनके, वैश्विक १, वैश्विकका मिश्र १, कार्मणकीय योग, पृथ्वि, अप, तेज, धनरूपति, असती मनुष्यमें याग पाये तीन (औदारिक १ औदारिकका मिश्र १ ९ कार्मण काययोग १) वायुकायमें पांच पाये (पृथ्वत् ३ और वैश्विक, वैश्विकका मिश्र ज्ञादा) तीन विकलेंद्रिय, असती तिर्यंघमें योग पाये चार औदारिक १, औदारिकका मिश्र १, कार्मणकाय योग १. (और व्यवहार भाषा १) सती तिर्यंघमें योग पाये १३ (आहारिक और आहारिकका मिश्र वर्जके) सती मनुष्यमें योग पाये पहरा । युगलीआये योग पाये अमीआरा (४ मनका ४ वचनका औदारिक १, औदारिक मिश्र १, कार्मण काय योग १. सिद्धीमें याग नहीं हैं

१८ । उपयोग मन रक्षण दा दा पाये और जो उप दाग धारदा गजना दा ना उपर दिव्या पांच ज्ञान. तीन अज्ञान और नाउ इहानमें समझ जना

१९ आहार—आहार व्यापार नसोक. आध्रया पांच स्थावर स्थाव ज्ञान दिशि. स्थाव चार दिशि स्थान पांच

दिशि, निर्व्याधाताश्रयी शोधीस दंडकफा-जीवनियमा छ दि-
शिका आदार लेवं । सिद्ध अनाहारिक.

(२०) उत्पात-(१) नारकी, १० भुवनपतियोसे ८ वां
देवलोक तक, तथा चार स्थावर (धनस्पति षड्रंके) तीन धि-
कलेंद्रिय, सत्री या असत्री तिर्यच, और असत्री मनुष्य एक
समयमें १-२-३ जाय संख्याता असंख्याता उपजे, धनस्पति
एक समयमें १-२-३ जाय अनंता उपजे, नधमा देवलोकसे स-
र्यायसिद्ध तक तथा सत्री मनुष्य और युगलीआ एक समयमें
१-२-३ जाय संख्याता उपजे, सिद्ध एक समयमें १-२-३ जाय
१०८ उपजे

(२१) ठीइ-स्थिति यंत्रसे जाणना.

नारकी जघन्य उत्कृष्ट

१ ली नारकी	.	१०००० वर्ष	१ सागरापम
२ जी	"	१ सागरापम	...	३ सागरापम
३ जी	"	३	"	७
४ घी	"	७	"	१०
५ मी	"	१०	"	१७
६ ठो	"	१७	"	२०
७ मी	.	२२		३३

देवता.

x समरेड दक्षिण तर्फ १०००० वर्ष १ सागरापम

१. १०००० वर्ष २. १०००० वर्ष ३. १०००० वर्ष ४. १०००० वर्ष ५. १०००० वर्ष ६. १०००० वर्ष ७. १०००० वर्ष ८. १०००० वर्ष ९. १०००० वर्ष १०. १०००० वर्ष

तम्सदेयी	२०००० थर्ग	३॥ सागरीपम
नागादि नौ इन्द्र दक्षिण तर्फके	॥	१॥ पल्योपम
तम्सदेयी	॥	०॥ ॥
यल्लेन्द्र उत्तर तर्फके देय	॥	१॥ सागरीपम झाझरा
तम्सदेयी	॥	३॥ पल्योपम
नागादि नय उत्तर तर्फ	॥	देहाउणी २ पल्योपम
तम्सदेयी	॥	॥ १ ॥
ध्यतर देयता	॥	१॥ पल्योपम
तम्सदेयी	॥	०॥ ॥
धंद्र विमानशामी देय	०॥ पल्योपम	१॥ पल्योपम+लाय वर्याधिक
तम्सदेयी	॥	०॥ ५०+२,०००० थर्ग
सूर्य विमानशामी देय	॥	१॥ ५०+ हजार थर्ग
तम्सदेयी	॥	०॥ ५०+५,०० ॥
घट विमानशामी देय	॥	१॥ पल्योपम
तम्सदेयी	॥	०॥ ॥
नक्षत्र विमा० देय	॥	०॥ ॥
तम्सदेयी	०॥ पल्योपम	०॥ ॥ झाझरी
नाग विमा देय	॥	०॥ ॥
तम्सदेयी	॥	॥ ॥ साधिक
पुनः पुनः पुनः पुनः देय	१॥ पल्योपम	१॥ सागरीपम
पुनः पुनः पुनः पुनः देय	१॥ पल्योपम	१॥ पल्योपम
पुनः पुनः पुनः पुनः देय	१॥ पल्योपम	१॥
पुनः पुनः पुनः पुनः देय	१॥ पल्योपम झाझरा	१॥ सागरीपम
तम्सदेयी	१॥ पल्योपम	१॥ पल्योपम
तम्सदेयी	१॥	१॥
तम्सदेयी	१॥ सागरीपम	१॥ सागरीपम

बोधा त्रेत्रलोकके देव	२ मा० मासैरा	७ " मासैरा
पंचमा	७ मासरोपम	१० सागररोपम
छद्मा	१० " "	१४ " "
सातमा	१४ " "	१७ " "
आठमा	१७ " "	१८ " "
नवमा	१८ " "	१९ " "
दशमा	१९ " "	२० " "
अगीआठमा ..	२० " "	२१ " "
पारहमा	२१ " "	२२ " "
नीचशी विष्ट	२२ " "	२५ " "
विषयी	२५ " "	२८ " "
दशमी	२८ " "	३१ " "
बार अनुत्तर विमान	३१ " "	३३ " "
अर्वागविष्ट ..	३३ " "	३३ " "
गृह्यशास्त्र	अंगमुद्रुते	२२००० वर्षे
अनुष्टाय	" "	३००० " "
नेष्टाय	" "	३ अहीगत्रि
अनुष्टाय	" "	३००० वर्षे
अनुष्टाय	" "	१०००० ..
अनुष्टाय	" "	१२
अनुष्टाय	" "	६० दिन
अनुष्टाय	" "	३ घण्टा
अनुष्टाय	" "	अनुष्टाय
अनुष्टाय	" "	१०००० वर्षे
अनुष्टाय	" "	३००००
अनुष्टाय	" "	१०००
अनुष्टाय	" "	६० " "

८ मा देवलोक तक दो गतिसे आये, दो गतिमें जाय। दंडकाधयी दो दंडक (मनुष्य और तिर्यक्ष) के आये और दो दंडकमें जाये। मातमी नारकी दो गतिसे (मनुष्य, तिर्यक्ष) आये, एक गतिमें जाये (तिर्यक्षमें), दंडकाधयी २ दंडकको (मनुष्य, तिर्यक्ष) आये, एक दंडक तिर्यक्षमें जाये। दश भुवनपति, स्यंतर, जोतिषी, १-२ देवलोक दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) से आये, और दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में जाये, और दंडकाधयी २ दंडक (मनुष्य, तिर्यक्ष) को आये, और पांच दंडकमें जाये (मनुष्य, तिर्यक्ष, पृथ्वि, पाणी, वनस्पति)। ९ वा देवलोकसे मर्षायैनिष्ठ विमानके देव, एक गति (मनुष्य) में आये एक गतिमें जाये दंडकाधयी एक दंडक (मनुष्य) को आये और एक दंडकमें जाये (मनुष्यमें)।

पृथ्वि, पाणी, वनस्पति, तीस गति (मनुष्य, तिर्यक्ष, देवता) से आये, और २ गतिमें जाये (मनुष्य, तिर्यक्ष), दंडकाधयी २३ दंडक (नारकी वर्ती) का आये, और १० दंडकमें जाये ५ स्याथर ३ विकल्पेद्रिय, मनुष्य, तिर्यक्ष) तेउ वायु दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में आये और एक गति तिर्यक्ष में जाये, दंडकाधयी दश दंडक पर्यन्त को आये और ० दंडक (मनुष्य वनस्पति) में जाये। सोन विकल्पेद्रिय दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में आये और दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में जाये। दंडकाधयी दश दंडक पर्यन्त को आये और ० दंडक (मनुष्य वनस्पति) में जाये। सोन विकल्पेद्रिय दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में आये और दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में जाये। दंडकाधयी दश दंडक पर्यन्त को आये और ० दंडक (मनुष्य वनस्पति) में जाये। सोन विकल्पेद्रिय दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में आये और दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में जाये। दंडकाधयी दश दंडक पर्यन्त को आये और ० दंडक (मनुष्य वनस्पति) में जाये। सोन विकल्पेद्रिय दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में आये और दो गति (मनुष्य, तिर्यक्ष) में जाये।

विकलेंद्रिय, मनुष्य, तिर्यंघ) को आवे और दशमें जावे (दश पुर्यंघत्)

मति मनुष्य- चार गतिमेंसे आवे और चार गतिमें जावे अथवा सिद्ध गतिमें जावे, दंडकाधयी २२ (तेउ, वायु, वर्जा) में से आवे और २४ में जावे तथा सिद्धमें जावे. । ३० अकमंभूमि युग-लिया दोगति (मनुष्य तिर्यंघ)मेंसे जावे एक गति (देयता) में जावे दंडकाधयी हो दंडकमें आवे और १३ दंडक (देयतामें) जावे. । ५६ अंतर द्वीप हो गतिमेंसे आवे एक गतिमें जावे. दंडकाधयी हो दंडकको आवे और ११ दंडक (१० भुवनपति, प्यंतर)में जावे.

मिद्धीमें आगत एक मनुष्यकी गति नहीं दंडकाधयी मनुष्य दंडकमें आवे. इति.

२५ प्राण- अन्य स्थानसे लीयते हैं प्राण दश हैं (१) भौतेंद्रिय बलप्राण (२) पञ्च इंद्रियबलप्राण (३) प्राणेंद्रिय० (४) रसेन्द्रिय० (५) स्पर्शेंद्रिय० (६) मन० (७) वचन० (८) वाय० (९) श्वासोश्वास० १० आयु०

नाशकी देयता मति मनुष्य, मति तिर्यंघ और युग-जामें प्राण पावे दस प्राण स्थानमें प्राण पावे चार (१) स्पर्श वायु श्वासोश्वास ४ आयु इंद्रियमें प्राण पावे ५ वचन इंद्रियमें प्राण पावे ५ पञ्च इंद्रियमें प्राण पावे ५ मन १

प्राणेंद्रिय १ रसेन्द्रिय १ स्पर्शेंद्रिय १ मन १ वचन १ वायु १ श्वासोश्वास १ आयु १ इति दश प्राणः

अथ मनसः चतस्रः चतस्रः चतस्रः चतस्रः चतस्रः

थोकडा नम्बर ५

चोवीस दंडकमेंसे कितने दंडक किस स्थानपर मिलते हैं.

दंडक

स्थान

- (प्रश्न) { एक दंडक किस जगह पाये } नारकीमें पाये
- (प्र) दो दंडक ,, (उ) प्रायकमें पाये-२०+२१ मां
- (प्र) तीन दंडक ,, (उ) तिनविकलेन्द्रियमें पाये-१७+१८+१९ मां
- (प्र) चार दंडक ,, (उ) साथमें पाये १२+१३+१४+१५ मां
- (प्र) पांच दंडक ,, (उ) एकेंद्रियमें .. १२+१३+१४+१५+१६
- (प्र) छ दंडक ,, (उ) तेजोलेश्याका अलक्षिआमें यानि जीस दंडकमें तेजोलेश्या न मले-१-१४-१५-१७-१८-१९ था
- (प्र) सात दंडक ,, (उ) वैक्रियका अलक्षिआमें ४ स्थावर ३ वि०
- (प्र) आठ दंडक ,, (उ) असमीमें ५ स्थावर ३ वि०
- (प्र) नव दंडक ,, (उ) तिर्यचमें ५ स्थावर ४ प्रम
- (प्र) दश दंडक ,, (उ) भुवनपतिमें
- (प्र) अगीआर दंडक ,, (उ) नपुंसकमें १० औदारिक १ नारकी
- (प्र) बारहा ,, (उ) तीच्छालोकमें १० भु० व्यंतर श्योतिषी
- (प्र) तेरहा ,, (उ) देखतामें
- (प्र) चौद ,, (उ) एकल वैक्रिय शरीरमें १३ वैक्रिय १ नारकी
- (प्र) पंद्र ,, ,, (उ) श्री वेदमें
- (प्र) सोलह ,, ,, (उ) मग्नि तथा मनयागम
- (प्र) सतरा ,, (उ) समुच्चय वैक्रिय शरीरमें
- (प्र) अठार ,, (उ) तेजालेश्यामें ६ यज्ञक
- (प्र) भोगणाम ,, (उ) प्रमकायमें ५ स्थावर ४ यज्ञक
- (प्र) सोम ,, (उ) जन्म-य उ-३७ अवगाहनावाडा जोषामें
- (प्र) पक्याम ,, (उ) नाचा लकाम ३ देखता यज्ञक
- (प्र) बार्थाम ,, (उ) ज्वालेश्यामें जानीवी वि० यज्ञक

- प्र. तृतीयसूक्त " " (उ) भगवानका समोत्तरणमें १ नारकी वर्जके
 प्र. चौथीसूक्त " " (उ) समुच्चय जीवमें

सर्वं भंते सर्वं भंते तमेव सच्चम्.

धोकडा नम्बर. ६

सूत्र श्री पद्मवर्णाजी पद नीजा. (महादंडक)

श्लोका.	भागिका १८ श्लो.	श्लोका सं.	गणक्यास सं.	योग सं.	प्रयोग सं.	श्लोका सं.
१	मंत्रस्तोक गर्भज मनुष्य.	२	१७	१५	१२	६
२	मनुष्यजी संख्यात सुजी.	२	१७	१३	१२	६
३	यादर तेउकायके परांसा अमं० युज०	१	१	१	३	३
४	पांच अष्टुत्तर ईमानके द्वेष	२	१	११	६	१
५	ईमेदक उपरशी त्रिकके द्वेष संख्या० यु.	२	२३	११	९	१
६	मध्यमकी	२	२३	११	९	१
७	मं०के	२	२३	११	९	१
८	मं०के	२	२	११	९	१
९	मं०के	२	२	११	९	१
१०	मं०के	२	२	११	९	१
११	मं०के	२	२	११	९	१
१२	मं०के	२	२	११	९	१
१३	मं०के	२	२	११	९	१
१४	मं०के	२	२	११	९	१
१५	मं०के	२	२	११	९	१
१६	मं०के	२	२	११	९	१
१७	मं०के	२	२	११	९	१
१८	मं०के	२	२	११	९	१
१९	मं०के	२	२	११	९	१
२०	मं०के	२	२	११	९	१

१५	मातया देवलोकाके देव अस० गु०	२	४	११	९	१
१६	पांचवी नरकाके नैरिया	२	४	११	९	२
१७	छठे देवलोकाके देव	२	४	११	९	१
१८	साथी नरकाके नैरिया	२	४	११	९	१
१९	साथी देवलोकाके देव	२	४	११	९	१
२०	तीस्री नरकाके नैरिया	२	४	११	९	२
२१	साथे देवलोकाके देव	२	४	११	९	१
२२	दुस्री नरकाके नैरिया	२	४	११	९	१
२३	तीस्रा देवलोकाके देव	२	४	११	९	१
२४	अधुम्मम अनुभव	१	१	३	४	३
२५	दृशा देवलोकाके देव	२	४	११	९	१
२६	की देवी समया० गु०	२	४	११	९	१
२७	पहले देवलोकाके देव अस० गु०	२	४	११	९	१
२८	की देवी सम० गु०	२	४	१	९	१
२९	मुचमर्षि देव अस० गु०	३	४		९	५
३०	दुस्री समया		४		९	५
३१	पहला नरकाके नैरिया अस० गु०	३	४			
३२	दुसरा नरकाके नैरिया			१३		
३३	४ नरकाके नैरिया			१३		
३४	५ नरकाके नैरिया			१३		
३५	६ नरकाके नैरिया			१३		
३६	७ नरकाके नैरिया			१३		
३७	८ नरकाके नैरिया			१३		
३८	९ नरकाके नैरिया			१३		
३९	१० नरकाके नैरिया			१३		

३९	व्यंतर देधी संख्या० गु०	
४०	जोतीषी देघ	"
४१	" देधी	"
४२	खेचर नपुंसक	"
४३	थलचर	"
४४	जलचर	"
४५	चौरिन्द्रियका पर्यामा सं० गु०	
४६	पंचेन्द्रियका	" विशेषा
४७	घेइन्द्रियका	" "
४८	तेइन्द्रियका	" "
४९	पंचेन्द्रियका अपर्यामा सं० गु०	
५०	चौरिन्द्रियका	" विशेषा
५१	तेइन्द्रिय	" "
५२	घेइन्द्रिय	" "
५३	प्रत्येक शरीरी यादर	यनकादिद्वारा पर्यामा सं० गु०
५४	यादर निगादका	
५५	यादर पुं० या०	
५६	अप०	
५७	यादर	
५८	अप०	अप० यादर
५९	यादर निगादका	
६०	यादर निगादका	
६१	पुं० या० अथ	"
६२	अप० यादर	

६३	वाद्दर वाउकायका अप० अमं०	गृ	१	१	१	१	१	१
६४	सुक्ष्म तेउकायका अप०	"	१	१	१	१	१	१
६५	सुक्ष्म पृथ्विकायका अप० विशेषाः		१	१	१	१	१	१
६६	सुक्ष्म अप्कायका अप० वि०	..	१	१	१	१	१	१
६७	सुक्ष्म वायुकायका अप० वि०	.	१	१	१	१	१	१
६८	सुक्ष्म तेउकायका पर्यासा म० गु०		१	१	१	१	१	१
६९	सुक्ष्म पृथ्विकायका पर्यासा वि०..		१	१	१	१	१	१
७०	सुक्ष्म अप्कायका पर्यासा वि०	...	१	१	१	१	१	१
७१	सुक्ष्म वायुकायका पर्यासा वि०	..	१	१	१	१	१	१
७२	सुक्ष्म निगोदका अपर्यासा अम० गु०		१	१	१	१	१	१
७३	सुक्ष्म निगोदका पर्यासा म० गु०	..	१	१	१	१	१	१
७४	अभक्ष्य ज्ञीय अनंत गु०	...	१४	१	१४	१	१	१
७५	पद्म्याइ मम्मदिहीअनंत गु०	...	१४	१४	१४	१४	१४	१४
७६	मिद्ध भगवान अनंत गु०	...	०	०	०	०	०	०
७७	वाद्दर वनस्पति० पर्यासा अनंत गु०		१	१	१	१	१	१
७८	वाद्दर पर्यासा वि०	..	६	१४	१४	१४	१४	६
७९	वाद्दर वनस्पति अपर्यासा अम० गु०		१	१	३	३	३	३
८०	वाद्दर अपर्यासा वि०		६	३	६	६	६	६
८१	ममृष्य वाद्दर० वि०		१०	१४	१०	१०	१०	६
८२	सु-म वनस्पति अपर्यासा अम० गु०				३	३	३	३
८३	सु-म अपर्यासा वि०				३	३	३	३
८४	सु-म वनस्पति पर्यासा म० गु०					३	३	३
८५	सु-म पर्यासा० वि०		१			६	६	६
८६	ममृष्य सु-म वि०		६		३	३	३	३

विरहद्वार.

(४३)

- ८७ भवसिद्धि जीष वि०
- ८८ निगोदका जीष वि०
- ८९ यनस्यति जीष वि०
- ९० पक्वद्रिय जीष वि०
- ९१ निर्यंच जीष वि०
- ९२ मिथ्यात्व जीष वि०
- ९३ अग्रतो जीष वि०
- ९४ सकपायो जीष वि०
- ९५ दृष्टस्य जीष वि०
- ९६ सयोगी जीष वि०
- ९७ संसारी जीष वि०
- ९८ समुच्चय जीष वि०

१४	१४	१५	१२	६
५	१	३	३	५
५	१	५	३	५
५	१	५	३	५
१४	६	१३	९	६
१४	१	१३	९	६
१४	५	१३	९	६
१४	१०	१५	१०	६
१४	१२	१५	१०	६
१४	१३	१५	१२	६
१४	१५	१५	१२	६
१४	१५	१५	१२	६

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम्

—ॐ०—

धाकडा नम्बर ७

सूत्रश्री पन्नवर्गाजी पद ६.

विरहद्वार .
 ...
 ...
 ...

(१) मनुष्य च्यार गति संज्ञीमनुष्य और संज्ञी तीर्यधमें उत्कृष्ट विरह १२ मुहुर्तका है.

(२) पहली नरक दश भुवनपति, व्यंतर, जोतीपी, मौधमंशान देव और असंज्ञी मनुष्यमें २४ मुहुर्त. दुजी नरकमें सात दिन, तीजी नरकमें पंद्रा दिन, चौथी नरकमें एक मास, पांचवी नरकमें दो मास, छठी नरकमें च्यार मास, सातवी नरक मिदुगति और चौसठ इन्द्रोंमें विरह छे मासका है.

(३) तीजा देवलोकमें नौदिन थीस मुहुर्त, चौथा देवलोक में बारहा दिन दश मुहुर्त, पांचवा देवलोकमें सादायाथीस दिन, छटा देवलोकमें पैनालीस दिन, सातवा देवलोकमें पसी दिन, आठवा देवलोकमें सौ दिन नौवा दशवा देवलोकमें सेकड़ो मास, इग्यारवा बारहा देवलोकमें सेकड़ो वर्षोका, बीसवेंवक पहले श्रीकमें सख्याते सेकड़ो वर्ष. दुसरी श्रीकमें सख्याते हजारों वर्ष, तीसरी श्रीकमें सख्याते लाखों वर्ष, च्यारानुत्तर यैमानमें पनयोपमके असंख्यातमे भाग, सर्पार्थमिदु यैमानमें पर्योपमके संख्यातमे भाग ।

(४) पांच स्थावरोंमें विरह नहीं है. तीन विकलेन्द्रिय. असंज्ञी तीर्यधमें अंतरमुहुर्त.

(५) चन्द्र सूर्यके घटनाधयी विरह पड़े तों जघन्य छे मास उत्कृष्ट चन्द्रके वैवालीस मास. सूर्यके अदनालीस वर्ष ।

। ६ । भस्तेरथनक्षेत्रापेशा माधु. माधवी ध्रायक ध्रायिका ध्राधयी जघन्यतां ६३ ०० वर्ष और अग्निदल, चक्रवर्ती, यल्लदेव. धामदेव ध्राधया जघन्य ८८० ० वर्ष उत्कृष्ट सबकी देशान अटा रा कादाकाह मागनापम हा । इति ।

थोकडा नखर ८

सूत्रश्री भगवतीजी शतक १२ वा उद्देशा ५ वां.

(रूपी अरूपीके १०६ बोल.)

रूपी पदार्थ दो प्रकारके होते हैं एक अष्ट स्पर्शवाले जीनसे कीतनेक पदार्थोंको चरम चक्षुष्याले देख सके, दुसरे च्यार स्पर्शवाले रूपी जीनोंको चरम चक्षुष्याले देख नही सके. अतिशय शानी ही जाने । अरूपी-जीनोंको कैयलशानी अपने कैयलशान-द्वारा ही जाने-देखे.

(१) आठ स्पर्शवाले रूपीके संक्षिप्तसे १५ बोल हैं यथा-छे द्रव्यलेश्या (कृष्ण, निल कापोत, तेजस, पद्म, शुक्ल) औदारिक शरीर, धैकियशरीर, आहारकशरीर, तेजसशरीर पर्यं १० तथा समुच्चय, घणोदधि, घणवायु, तणवायु, वादर पुद्गलोंका स्कन्ध और वायाका योग पर्यं १५ बोलमें घणादि २० बोल पाये । ३००

(२) च्यार स्पर्शवाले रूपीके ३० बोल हैं. अठारा पाप, आठ कर्म, मन योग, वचन योग लक्ष्मपुद्गलोंका स्कन्ध, और चारमणशरीर पर्यं ३० बोलमें घणादि १६ बोल पाये । ४८० बोल.

३ अरूपीके ६१ बोल हैं अठारा पापका त्याग करना चारका उपयोग कृष्णादि छे भाषलेख्या, च्यार संज्ञा (आहार भय० ई० मन परिघण० च्यार मतिज्ञानके भागा) उग्गह ईहां आपाग, धारणा न्यायवृद्धि उपातिवा चिनयकी कर्मकी पारिणातिवा तावति मन्यः पि मित्रा पि मिश्रदृष्टि पांच दृष्टि अर्थात् चि अर्थात् चि आकाशमिन् जीवामिन्, और कालक म पांच प्रकारसे जीवकी शक्ति " उपाति कर्म बल नाय परपाय पयः वाट नरुपाय है । इति.

। सेव भवे सेव भवे तमेव समम् ॥

उनसे पूर्वमें विशेषाः कारण सूर्य चन्द्रका द्वीप पृथ्वीमय हैं।
उनसे पश्चिममें विशेषाः कारण गौतम द्वीप पृथ्वीमय हैं।

तेउकाय, मनुष्य, और सिद्ध सयसे स्तोत्र दक्षिण उत्तरमें
कारण भरतादि क्षेत्र छोटा है। उनसे पूर्व दिशा सेख्यातगुणा
कारण महाविदेह क्षेत्र बड़ा है। उनसे पश्चिम दिशा विशेषाः
कारण सलीलायती विजया १००० जोजनकी ऊँची है। जिसमें
मनुष्य घणा, तेउकाय घणी और सिद्ध भी यहाँ होते हैं।

वायुकाय, और व्यंतरदेय सयसे स्तोत्र पूर्व दिशामें कारण
धरतीका कठणपणा है। उनसे पश्चिम दिशा विशेषाः कारण सली-
लायती विजया है। उनसे उत्तर दिशा विशेषाः कारण भुवनप-
तियोका ३ फ़ोड और ६६ लाख भुवन है। उनसे दक्षिण दिशा
विशेषाः कारण भुवनपतिका ४ फ़ोड और ६ लाख भुवन है
(पालारकी अपेक्षा)

भुवनपति सयसे स्तोत्र पूर्व पश्चिममें कारण भुवन नहीं है
आना जानासे लाधे। उनसे उत्तरमें असेख्यात गुणा कारण ३
फ़ोड और ६६ लाख भुवन है उनसे दक्षिणमें असेख्यात गुणा
कारण ४ फ़ोड और ६६ लाख भुवन है। भुवनमें देव उद्यादा है।

जाम्बीपीदेश सयसे योडा पूर्व पश्चिममें कारण उत्पन्न होनेका
स्थान नहीं है उनसे दक्षिणमें विशेषा उत्पन्न होनेका स्थान है।
उनसे उत्तरमें विशेषा कारण मानसराषर तलाष जम्पुद्वीप
व' जगतिसे उत्तरक' मरुप असेख्याता द्वीप समुद्र जाये तब अ-
रणाधर नामका द्वीप आयें जिसके उत्तरमें २००० जोजन जाये
तब मानसराषर तलाष आने के बह तलाष बड़ा शोभनीक और
खणन पाने पाये हैं और समुद्र अद्भुतहातसे मच्छ फरार
जलधर जातापीकी दम्ब निआणा कर मरुके जोनीया हाने
हसलिये उत्तरदिशामें जाम्बीपीदेश उद्यादा है

पहला, दुआ, तीजा. और चौथा देवलोकका देवता सपसे स्तोत्र पूर्य पश्चिममें कारण पूर्णान्तरणीय विमान ज्यादा है. और पंक्तिबंध क्रम है। उनसे उत्तरमें असेख्यातगुणा कारण पंक्ति बंध विशेष है उनसे दक्षिणमें विशेषा कारण देवता विशेष उपजे.

पांचमा, छटा, सातमा, आठमा देवलोकका देवता सपसे स्तोत्र पूर्य, पश्चिम, उत्तरमें उनसे दक्षिणमें असे० गु.

नवमासे सवार्थमिद्ध विमान तक धारे दिशामें समतुल्य है पहली नारकीका नैरह्या सपसे स्तोत्र पूर्य, पश्चिम उत्तरमें उनसे दक्षिणमें असेख्यातगुणा कारण कृष्णपक्षी शीघ्र घणा उपजे हमी माफक माताही नारकीमें समझ लेता.

अल्पायुधुर्य—सर्वस्तोत्र सातवी नरकके पूर्य पश्चिम उत्तरके नैरिया. उनसे दक्षिणके नैरिये असेख्यातगुण. सातवी नरकके दक्षिणके नैरियेसे छटी नरकके पूर्य पश्चिम उत्तरके नैरिये असे० गु० उनसे दक्षिणके नैरिये असे० गु०। छटी नरकके दक्षिणके नैरियोसे पांचवी नरकके पूर्य पश्चिम उत्तरके नैरिये असे० गु० उनसे दक्षिणके नैरिये असे० गु० उनसे चौथी नरकके पूर्य पश्चिम उत्तरके नैरिये असे० गु० उनसे दक्षिणके नै० असे० गु० उनसे तीजी नरकके पूर्य पश्चिम उत्तरके नैरिये असे० गु० उनसे दक्षिणसे असे० गु० उनसे द्विती नरकके पूर्य पश्चिम उत्तरके नैरिये असे० गु० उनसे दक्षिणके असे० गु० द्विती नरकके दक्षिणके नैरियासे पहली नरकके पूर्य पश्चिम उत्तरके नैरिये असे० गु० उनसे दक्षिणके नैरिये असे० गु० इति।

सेव भवे सेव भवे नमो गये।

—(३३३) १—

श्रीकंडा नं० १०

—१००१—

द्वे कायको श्लोकौ.

नामकार	गायकार	पर्याकार	संज्ञाकार	एकमदृतेभ्य	अन्वयायदृश्य
इन्द्रोऽथ्यापरकाय	पुंयोकाय	पीठो	चन्द्र मगुरुकीकाण्ड	१२८२५	६
बभ्रुव्यापरकाय	अपकाय	सपेद्र	पाणीका परपोडा	१२८२५	३ यिद्योगाः ४ यिद्योगाः २ असंख्यातगुणा
सपारथापरकाय	तत्रकाय	प्लान्ड	गुरुकाण्ड (भारो)	१२८२५	
समर्पिन्थ्यापरकाय	वायुकाय	नीलो	पताका	१२८२५	५ यिद्योगाः
पीयूषस्तथा	पनस्पति	नाना प्रका	नाना प्रकारका	३२०:० प्रत्येक	६ अनंतगुणा
परकाय	काय २	रको		६५३६ साधारण	
सयमकाय	१ प्र २ सा. नागा प्रका-	नागा प्रका-	नागा प्रकारका	०८०×६०×५०	१ मयमे घोडा
	प्रसकाय	रको		×२४×१	

नामकार गायकार पर्याकार संज्ञाकार एकमदृतेभ्य अन्वयायदृश्य

संयं भेने सेयं भेने-तमेय सख्य

संयं भेने सेयं भेने-तमेय सख्य

६० तीर्थं, ६६ अग्री पंचे १ मनी पंचिद्वि.

थोकडा नम्बर ११

सूत्रश्री भगवतीजी शतक १३ उद्देशो १-२.

(उपयोगाधिकार.)

उपयोग पारह है जिम्मे कीम गतिमें जाता हुआ जीव की-
तने उपयोग भावमें ले जाते हैं और कीम गति से आता हुआ
जीव सायमें कीतने उपयोग ले आते हैं वह सब इन थोकडे द्वारा
बतलाया जाता है ।

(१) पहली, दुमरी, तीसरी नरकमें जाते समय आठ उ-
पयोग लेके जाते हैं यथा-तीनज्ञान (मतिज्ञान, धुतिज्ञान अथ-
धिज्ञान) तीन अज्ञान (मति, धुति, विभंगज्ञान) दोय दर्शन
(अघधु, अघधिदर्शन) और सात उपयोग लेके पीछड़ा निकले-
एक विभंगज्ञान बर्झके। चौथी, पांचमी, छठी नरकमें पूर्ववत् आठ
उपयोग लेके जावे, और पांच उपयोग लेके निकले अर्थात् इन
तीनों नरकमें निकलनेवाला अघधिज्ञान अघधिदर्शन नहीं लाता
है, सातवीं नरकमें पांचज्ञान तीन अज्ञान-दो दर्शन) लेके जावे
और तीन उपयोग लेके निकले दो अज्ञान एक दर्शन ।

(२) भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी देव आठ उपयोग लेके
जावे पूर्ववत् और पांच उपयोग लेके निकले दो ज्ञान दो अ-
ज्ञान एक दर्शन । बारहा देवटाऊ नाथरयकन आठ उपयोग
(पूर्ववत् लेके जावे ओ. सात उपयोग लेके निकले) तीनज्ञान
दो अज्ञान दो दर्शन । अनन्तर यमानमें पांच उपयोग लेके
जावे तीन ज्ञान दो दर्शन । एव पांच उपयोग लेके निकले ।

३. पांच कक्षापर्यंत तीन उपयोग लेवे जाते और तीन उप
 योग ही लेवे निकले ही अज्ञान, एक दर्शन। तीन विकल्पेन्द्रिय
 पांच उपयोग लेवे जाते ही ज्ञान, ही अज्ञान एक दर्शन। और
 तीन उपयोग लेवे निकले ही अज्ञान, एक दर्शन और निर्देय
 पांचेन्द्रिय पांच उपयोग लेवे जाते। ही ज्ञान ही अज्ञान एक द
 र्शन और आठ उपयोग लेवे निकले। तीन ज्ञान, तीन अज्ञान
 ही दर्शन। ॥ समुदायमें ज्ञान उपयोग। तीन ज्ञान, ही अज्ञान, ही
 दर्शन। लेवे जाते और आठ उपयोग। तीन ज्ञान, तीन अज्ञान,
 ही दर्शन। लेवे निकले। ॥ मिश्रीमें प्रथमज्ञान, प्रथम दर्शन लेवे
 जीव ज्ञान ही यह साहि अंत भागें सर्व्व साध्यते आनन्दपर्यंत
 विराजमान होते हैं। इति.

मेवं भंते मेवं भंते तमेव मद्यम्



धौकडा नम्बर १२

मन्त्रश्री भगवती शतक १ उ० २.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

क्र. सं.	म. सं.	मंत्र	उ. सं.
१	१	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१
२	२	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	२
३	३	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	३

५	अधिराधि भावक	सौधमंशल्प	अभ्युत्कल्प
६	विराधि भावक	भुवतपति	भोगीपीमें
६	असशी तीर्थच	"	द्वंतरदेशमें
७	कन्दमूल खानेवाले तापम	"	भोगीपीमें
८	हांसी टटा करनेवाले मुनि (कर्पूपा)	"	सौधमंशल्प
९	परिप्राप्तक मय्यामी तापस	"	ब्रह्मदेशलोक
१०	आचार्यादिका अयगुण बो- लनेवाले किन्धिपीया मुनि	"	लांतकर्म
११	मंशी तीर्थच	"	आठवा देशलोक
१२	आजीविया साधु गोशालाके मतका	"	अभ्युत्कल्प
१३	यंत्र मंत्र करनेवाले अभोगी साधु	"	"
१४	स्वर्लोगी दर्शन वधप्रगा	"	नी प्रियेयक

बौद्धर्षा बोलमें भव्य जीव है पहले बोलमे भव्याभव्य दोनों
है । इति.

मेव भंते संव भंते तमेव मच्चम



थोकडा नम्बर १३

सूत्र श्री जानार्जा अध्ययन ८ वां

(तीर्थकर नाम बन्धके २ कारण)

(१) श्री अरिहत भगवानके गुण स्तवनादि करनेमे ।

(२) श्री सिद्ध भगवानके गुण स्तवनादि करनेमे ।

- (३) भी पांच समति तीन गुनि यह अष्ट प्रघचनकी मात्रा है. इनकी सम्पूष्णकारसे आराधन करनेसे ।
- (४) भी गुणवन्त गुरुजी महाराजका गुण करनेसे ।
- (५) भी स्त्रियवरजी महाराजके गुणस्तथनादि करनेसे ।
- (६) भी बहुभुती-गीतार्योका गुणस्तथनादि करनेसे ।
- (७) भी तपस्वीजी महाराजके गुणस्तथनादि करनेसे ।
- (८) लीला पदा ज्ञानको धारधार चित्तधन करनेसे ।
- (९) दर्शन (सम्पत्ति) निर्मल आराधन करनेसे ।
- (१०) मात तथा १३४ प्रकारके विनय करनेसे ।
- (११) कालोत्कल प्रतिप्रमण करनेसे ।
- (१२) लिने हुये व्रत-ग्रन्थारुयान निर्मल पालनेसे ।
- (१३) धर्मभयान-शुद्धभयान ध्याते रहनेसे ।
- (१४) धारद प्रकारकी तपधर्या करनेसे ।
- (१५) अभयदान-सुपात्रदान देनेसे ।
- (१६) दश प्रकारकी वैवाच्य करनेसे ।
- (१७) अनुषिध संघकी समाधि देनेसे ।
- (१८) नये नये अपुर्य ज्ञान पढनेसे ।
- (१९) मूत्र सिद्धांतकी धनि-सेवा करनेसे ।
- (२०) सि दान्यका नाश और सम्पत्तिकका उद्योग करनेसे ।
- (२१) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका
- (२२) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका
- (२३) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका
- (२४) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका
- (२५) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका
- (२६) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका
- (२७) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका
- (२८) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका
- (२९) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका
- (३०) निज नाम दान्यका मधन करनेसे ज्ञान धर्मका

मद मं मं मं मं मं मं मं मं

थोकडा नम्वर १४

(जलदी मोक्ष जानेके २३ श्लोक)

- (१) मांशकी अभिलाषा रमनेयात्रा जलदी २ मोक्ष जाये ।
 (२) तीव्र-उग्र तपश्चर्या करनेसे
 (३) गुरुगम्यतापूर्वक सूत्र-सिद्धान्त सुने तो जलदी २
 (४) आगम सुनके उनमें प्रवृत्ति करनेसे
 (५) पांशो इन्द्रियोंका दमन करनेसे
 (६) छे कायाको जानके उन जीवोंकी रक्षा करे तो ज०
 (७) भोजन समय माधु-माधुर्योकी भावना भाये तो
 जलदी २ मोक्ष जाये ।
 (८) आप सदृशान पदों और दुसरोकी पढाये तो ज० मोक्ष जाये
 (९) नय निदान न करे तथा नौ कोटी प्रत्याख्यान करनेसे
 (१०) दश प्रकारकी धैर्यापघ्न करनेसे जलदी २ मोक्ष जाये ।
 (११) कषायको निर्मूल करे पतली पाडे तो
 (१२) छती शक्ति शमा करे तो
 (१३) लगा हुआ पापकी शीघ्र भालोचना करनेसे ज०
 (१४) प्रदत्त किये हुये नियम अभिग्रहकी निर्मूल पाले तो
 जलदी २ मोक्ष जाये ।
 (१५) अभयदान सुपायदान देनेमें जलदी २ मोक्ष जाये
 (१६) सख मनमें शील-ब्रह्मचर्य व्रत पाठनेमें ज०
 (१७) निर्दय पापरहित मन्त्रचचन या उनेमें
 (१८) लिया हुआ समयमात्रका स्थितान्स्थित पहचानमें
 जलदी २ मोक्ष जाये ।

- (१९) धर्मध्यान-शुद्धध्यान ध्यानेमें जलदो २ मोक्ष जाये ।
 (२०) एक मासमें दो दो पीपथ करनेसे
 (२१) उभयकाल प्रतिग्रमण करनेसे
 (२२) रात्रीके अन्तमें धर्मजाग्रता (तीन मनोग्य) करे तो
 जलदो २ मोक्ष जाये ।
 (२३) आराधि दो आलोचना कर समाधि करने मरे तो
 जलदो २ मोक्ष जाये ।
 इन तीर्थीय शीलोकों पहले सम्यक्प्रदानमें जानके भेदन
 करनेमें लीय जलदो २ मोक्ष जाते हैं इति ।
 ॥ नैवं भंते नैवं भंते तमेव नद्यम् ॥

श्लोकानुस्य १५

(परम कल्याणके ४० श्लोक.)

श्रीश्लोक के परम कल्याण के लिये आगममें अति उपयोगी
 शीलोक संग्रह किया जाता है.

(१) समकित निर्मल पालनेमें 'श्रीश्लोक परमकल्याण'
 होता है । राजा धेनिक कि माफीक । श्री स्थानायाम् सूत्र)

(२) तपधर्या कर निदान न करनेसे श्रीश्लोक " परम
 कल्याण होता है " तामलो तापमकि माफीक (सूत्र श्री भगवतीजी)

(३) मन धवन शायके योगीकी निर्मल करनेसे श्रीश्लोक
 " परम गजसुकमाल मुनिध माफीक । श्री अंतगड सूत्र)

(४) समासय धर्म धर्मकी धारण कर नेमें श्रीश्लोक
 " परम ० ० तनमाकि माफीक श्री अंतगड सूत्र)

(५) पांचमहात्रय निर्मला पालनेसे जीर्वाणें " परम० " श्री गौतमस्वामिजीके माफीक (श्री भगवतीजी सूत्र)

(६) प्रमाद त्याग अत्रामादि होनेसे जीर्वाणें " परम० " श्री शैलगराजशुपिकी माफीक (श्री शातासूत्र)

(७) पांचो इन्द्रियोंका दमन करनेसे जीर्वाणें " परम० " श्री हर्येशी मुनिराजकी माफीक (श्री उत्तराध्यायनजी सूत्र)

(८) अपने मित्रोंके साथ मायावृत्ति न करनेसे जीर्वाणें " परम० " मल्लिनाथजीके पुत्रभवकें छे मित्रोंके माफीक (शातासूत्र)

(९) धर्म कर्षा करनेसे जीर्वाणें " परम० " श्री केशी-स्वामी गौतमस्वामीकी माफीक (श्री उत्तराध्यायनजी सूत्र)

(१०) सदा धर्मपर बद्ध रहनेसे जीर्वाणें " परम० " वर्जनागतस्वाकें याल्लमित्रकी माफीक (श्री भगवती सूत्र)

(११) जगतके जीर्वाणें करुणाभाव रहनेसे जीर्वाणें " परम० " मेघहृमाकें पुत्रे हाथीके भवकी माफीक (श्री शातासूत्र)

(१२) सत्य बात निःशंकपणे करनेसे जीर्वाणें " परम० " आनन्द भावक और गौतमस्वामीके माफीक (उपालक दशांग सूत्र०)

(१३) आपस समय नियम-प्रतिमं सज्जुति रहनेसे " परम० " अम्बडपरिभ्राजके मातसे शिष्योंके माफीक (श्री उत्रवाहजी सूत्र०)

(१४) सबे सब शील पालनेसे जीर्वाणें " परम० " सुदृष्टीके माफीक (सुदृष्टी शक्ति)

(१५) परिग्रहकी समग्रता त्याग करनेसे जीर्वाणें " परम० " कपोल वाद्यजकि माफीक (श्री उत्तराध्यायनजी सूत्र)

(१६) उदार भावसे मृगाय दान देनेसे जीर्वाणें " परम० " शोभक लक्ष्मणकी माफीक (श्री उत्तराध्यायनजी सूत्र)

(१७) अपने प्रतीसे गीरते हुवे जीवोंके स्थिर करनेसे ' परम० ' राजमति और रहनेनिकी माफिक (श्री उत्तराध्ययन सूत्र०)

(१८) उग्र तपश्चर्या करते हुवे जीवोंका ' परम० ' धना-
मुनिकि माफिक (श्री अनुत्तर उषवाह सूत्र)

(१९) अग्लानपणे गुरुवादिकिवेदावध करनेसे ' परम० '
पन्पकमुनिकी माफिक (श्री शातासूत्र)

(२०) सदैव अनिन्य भावना भावनेसे जीवोंका ' परम० '
भरतचक्रवर्तिकि माफिक (श्री जन्मुद्विपप्रज्ञानि सूत्र)

(२१) प्रजामोकि लहरोकी रोकनेसे जीवोंके ' परम० '
प्रमत्तधन्नुनिकी माफिक (धैणिकचरित्रमें)

(२२) मन्पज्ञानपर धृष्टा रवनेसे जीवोंके ' परम० ' अहं-
शक भावककी माफिक (श्री शातासूत्र)

(२३) चतुर्विधमद्यकि वैषावध करनेसे जीवोंके ' परम० '
मनत्नुनार चक्रवर्तिके पुर्वके भवदि. माफिक (श्री भगवती सूत्र)

(२४) घटते भावोंने मुनियोंकि वैषावध करनेसे ' परम० '
बाहुबलजीके पुर्वमवकी माफिक (श्री रूपभचरित्र)

(२५) गुरु अभिग्रह करनेसे जीवोंके ' परम० ' पांच
पांडवोंकि माफिक (श्री शातासूत्र)

(२६) धर्म इत्यादी करनेसे जीवोंके ' परम० ' श्रीकृष्ण
भवेशकि माफिक (श्री अतगडइशांग सूत्र)

(२७) सुव्रतमदि मति करनेसे जीवोंके ' परम० '
इत्यादि माफिक (श्री भगवतीसूत्र)

(२८) अशुभकरी करनेसे जीवोंके ' परम० ' श्री धर्म
अतगडइशांग माफिक (श्री शातासूत्र)

(२९) व्रतोसे गौरजानेपरभी चेतजानेसे “ परम० ” अर-
णिकमुनिकी माफीक । (श्री आवश्यक सूत्र)

(३०) आपत्त आनेपरभी धैर्यता रम्दनेसे ‘ परम० ’ सधक
मुनिकी माफीक । (श्री आवश्यक सूत्र)

(३१) जिनराज देघोंकि भक्ति और नाटक करनेसे जीघोंकि
‘ परम० ’ प्रभावती राणीकी माफीक (श्री उत्तराध्ययन सूत्र)

(३२) परमेश्वरकी त्रिकाल पुजा करनेसे जीघोंके
‘ परम० ’ शान्तिनाथजीके पुर्वभय मंगरय राजाकी माफीक
(शान्तिनाथ चरित्र)

(३३) छती शक्ति क्षमा करनेसे जीघोंके ‘ परम० ’ प्रदेशी
राजाकी माफीक (श्री रायपसेनो सूत्र)

(३४) परमेश्वरके आगे भक्ति सहित नाटक करनेसे
‘ परम० ’ रावण राजाकी माफीक (त्रिपट्टीशलाका पुरुष चरित्र)

(३५) देयादिके उपसंग सहन करनेसे ‘ परम० ’ कामदेव
भायककी माफीक (श्री उपामक दशांग सूत्र)

(३६) निर्भाकतासे भगवानकी वन्दन करनेको जानेसे ‘ परम० ’
श्री सुदर्शन शेटकी माफीक (श्री अन्तगड दशांग सूत्र)

(३७) चर्चा कर खादीयोंको पराजय करनेसे ‘ परम० ’
मंडुक धायककी माफीक (श्री भगवती सूत्र)

(३८) शुद्ध भाषोंसे वैत्यवन्दन करनेसे जीघोंके ‘ परम० ’
जगवल्लभाचार्यकी माफीक पुजा प्रकरण

(३९) शुद्ध भाषोंसे प्रभुपुजा करतसे जीघोंके ‘ परम० ’
नागवन्तकी माफीक श्री कल्पसूत्र ।

४०) जिनप्रतिमाक दशन कर शुद्ध भाषना भाषनेसे
परम० ब्राह्मकुमारकी माफीक श्री सूत्र इताग ।

इन धोलोंको कंठस्थ कर सदैवके लिये स्मरण करना और
 तथाशक्ति गुणोंको प्राप्त कर परम कल्याण करना चाहिये ।

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम् ॥

थोकडा नम्बर १६.

(श्री सिद्धोंकी अल्पावहुत्वके १०० धोल)

ज्ञान दर्शन चारित्र्यकी आराधना करनेवाले भाइयोंको इन
 अल्पावहुत्वकी कंठस्थ कर सदैव स्मरण करना चाहिये ।

(१) सर्वे स्तोत्र एक समयमें १०८ सिद्ध हुये ।

(२) उनोंसे एक समयमें १०७ " अनंतगुणे ।

(३) उनोंसे एक समयमें १०६ " "

पर्यं ५८ धा धोलमें एक समयमें ५१ " "

(५९) उनोंसे एक समयमें ५० " असंख्यातगुणे ।

(६०) उनोंसे एक समयमें ४९ " "

(६१) उनोंसे एक समयमें ४८ " "

पर्यं प्रथमस्य ८४ धा धोलमें एक समयमें २२ सिद्ध हुये असं० गु०

(८५) उनोंसे एक समय २४ सिद्ध हुये संख्यातगुणे०

८६) उनोंसे एक समय २३ " "

पर्यं प्रथमस्य १० धा धोलमें एक समयमें एक " "

यथा १ धा धोलका प्रथम सदैव गुणनेसे कर्मोंकी महा

निर्जराताकी है यथा १० धोलमें सप्तसप्तको प्रमाद तादृ पात कालमें इस

प्रमादका प्रथमस्य समय काये सिद्ध होने है इति

मेवं भंते मेवं भंते तमेव सचम्

थोकडा नम्बर १७

(सूत्र श्री जम्बुद्विप प्रशस्ति—छे आरा.)

भगवान् श्रीरुद्रभु अपने शिष्य रुद्रभूति अनगार प्रति कहते हैं कि हे गौतम इन आगपार संसारके अन्दर कर्म प्रेरित अनंत जीव अनंत काल से परिभ्रमन कर रहे हैं कालिक आदि नहीं हैं और अंत भी नहीं है.

भरत-पेरषतक्षेत्रिक अपेक्षा अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कही जाती है यह दश कोडाकोड सागरोपमकि अवसर्पिणी और दश कोडाकोड सागरोपमकी उत्सर्पिणी गर्भ दोनों मीलके बीच कोडाकोडी सागरोपमका कालचक्र होता है एवं अनंत कालचक्रका एक पुद्गल परावर्तन होता है ऐसे अनंत पुद्गल परावर्तन मूलकालमें हो गये हैं और भविष्यमें अनन्त पुद्गल परावर्तन हो जायगा.

हे गौतम मैं आज इन भरतक्षेत्रमें अवसर्पिणी कालका ही ध्यालयान करता हूँ तुं एकाग्रचित्त कर भयण कर ।

एक अवसर्पिणी काल दश कोडाकोड सागरोपमका होता है जिसके छे विभाग रूपी छे आरा होते हैं यथा—(१) सुखमा सुखमा (२) सुखमा (३) सुखमा दुःखमा (४) दुःखमा सुखमा (५) दुःखमा (६) दुःखमा दुःखमा इति छे आरा ।

(१) प्रथम सुखमा सुखम आरा च्यार कोडाकोड सागरोपमका है इस आराके आदिमें यह भारतभूमि बड़ी ही सम्यग्मणिय मुन्दराकार और सौभाग्यका धारण करनेवाली थी पाहाड पर्वत साइ खाड़ा यानि शिपमपणाकर रहित इन भूमिका विभाग पाच प्रकारक रत्न में अन्ठा मंदित था चौतर्फे वन

राजो पथ पुष्प फलादिकि लक्ष्मी से अपनी छटा दीया गही थी. दश प्रकारके कल्पवृक्ष अनेक विभागोंमें अपनी उदात्ता मशहूर कर रहे थे भूमिका खण्डे बड़ा ही सुन्दर मनोहर था स्थान स्थान चापी कृषे पुष्करणी चापी अच्छा पथ पाणी से भरी दूध लेहरी कर रही थी. भूमिका रम मानों कालपी भीसरी माफीक मधुर और स्यादिए था. भूमिकी गन्ध खोतर्फ से सुगन्ध ही सुगन्ध दे रही थी. भूमिका स्पर्श बड़ा ही सुकुमाल मखनकि माफीक था एक खारीस होनेपर दश हजार वर्ष तक उनकी सरसाइ बनी रहती थी.

हे गौतम उन समयके मनुष्य युगल कहलाते थे कारण उन समय उन मनुष्योंके जीवनमें एक ही युगल पैदा होते थे उनोके मातापिता ६९ दिन उनोका संरक्षण करते थे फिर वह ही युगल गृहवास कर लेते थे. वास्ते उन मनुष्योंकी 'युगलीये' मनुष्य कहा जाते थे वह बड़े ही भरीक प्रकृतियाले मरल स्वभायी चिनयमय तो उनका जीवन ही थे उन मनुष्योंके प्रेमयुग्धन या ममायभाव तो बोलकुल ही नहीं था. उन जमानेमें उन मनुष्योंके लिये राजनीती और कानून कायदायोकि तो आवश्यकता ही नहीं थी कारण जहां ममाय भाव होते हैं वहां राजसत्ताकि जरूरत होती है वह उन मनुष्योंके थी नहीं। वह मनुष्य पुन्यथान तो इतन ग कि जब कौसा पदार्थ भांग उपभागके लिये जरूरत होती ता उनोके पुन्यादय वह दशजातिके कल्पवृक्ष उमा बगत मना बामन परम कर देन ग उन कल्पवृक्षोंके नाम और गुण इस माफीक में

१. मनामः उद्य पदार्थके मद्रिगव द्वारा

२. नृपमः शाल कदार मारामादि धरतनाके द्वारा

(३) तुङ्गांग=५१. ज्ञानिके यात्रिके दातार.

(४) ज्ञोयांग=तूर्य चन्द्रसे भी अधिक उद्योतीके दातार.

(५) दीपांग=दीपक चराम मणि आदिके प्रकाश ,,

(६) चित्तगंगा=पांचवर्णके सुगन्धी पुष्पोंके मालाघोंके ,,

(७) चित्तरसा=अनेक प्रकारके पाक पकवानके भोजन सुन्दर स्वादिष्ट पीष्टीक मनगमते भोजनके दातार.

(८) मणियांग=अनेक प्रकारके मणि रत्न मुक्ताफल सुवर्ण मंडित कमयजन अधिक मूल्य वेसे भूषणोंके दातार ।

(९) गेहगारा=उंचे उंचे शीखरवाला मनोहर प्रासाद भुवन महल शय्या संयुक्त मकानके दातार ।

(१०) अणिअणा=उम्मदा सुकमाल बखोंके दातार ।

यह दश जातिके कल्पवृक्ष युगल मनुष्योंके मनोर्थ पूर्ण करते थे.

हे गौतम ! उन मनुष्योंके उन समय तीन पत्न्योपमका आयुष्य तीन गाउका शरीर और शरीरके २×६ पांसलीयों थी. ब्रह्मपुत्र नाराय सदनन समचतुष्ट संस्थान, उन स्त्री पुरुषोंका रूप जोयन लाघण्य चातुर्य सौभाग्य सुन्दरता बहुत ही अच्छी थी, क्रमशः काल बीतने लगा तब उतरते आरे उन मनुष्योंका दो पत्न्योपमका आयुष्य दो गाउकी अथगाहना शरीरके पांसलीयों १२८ रही वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शमें अनेकीहोनी होने लगी। भूमिका रस संधा जेसा रह गया। आराके आदिमें उन युगल मनुष्योंको तीन

दश जातिके कल्पवृक्ष । १०. अणिअणा । ११. अणिअणा । १२. अणिअणा । १३. अणिअणा । १४. अणिअणा । १५. अणिअणा । १६. अणिअणा । १७. अणिअणा । १८. अणिअणा । १९. अणिअणा । २०. अणिअणा । २१. अणिअणा । २२. अणिअणा । २३. अणिअणा । २४. अणिअणा । २५. अणिअणा । २६. अणिअणा । २७. अणिअणा । २८. अणिअणा । २९. अणिअणा । ३०. अणिअणा । ३१. अणिअणा । ३२. अणिअणा । ३३. अणिअणा । ३४. अणिअणा । ३५. अणिअणा । ३६. अणिअणा । ३७. अणिअणा । ३८. अणिअणा । ३९. अणिअणा । ४०. अणिअणा । ४१. अणिअणा । ४२. अणिअणा । ४३. अणिअणा । ४४. अणिअणा । ४५. अणिअणा । ४६. अणिअणा । ४७. अणिअणा । ४८. अणिअणा । ४९. अणिअणा । ५०. अणिअणा । ५१. अणिअणा । ५२. अणिअणा । ५३. अणिअणा । ५४. अणिअणा । ५५. अणिअणा । ५६. अणिअणा । ५७. अणिअणा । ५८. अणिअणा । ५९. अणिअणा । ६०. अणिअणा । ६१. अणिअणा । ६२. अणिअणा । ६३. अणिअणा । ६४. अणिअणा । ६५. अणिअणा । ६६. अणिअणा । ६७. अणिअणा । ६८. अणिअणा । ६९. अणिअणा । ७०. अणिअणा । ७१. अणिअणा । ७२. अणिअणा । ७३. अणिअणा । ७४. अणिअणा । ७५. अणिअणा । ७६. अणिअणा । ७७. अणिअणा । ७८. अणिअणा । ७९. अणिअणा । ८०. अणिअणा । ८१. अणिअणा । ८२. अणिअणा । ८३. अणिअणा । ८४. अणिअणा । ८५. अणिअणा । ८६. अणिअणा । ८७. अणिअणा । ८८. अणिअणा । ८९. अणिअणा । ९०. अणिअणा । ९१. अणिअणा । ९२. अणिअणा । ९३. अणिअणा । ९४. अणिअणा । ९५. अणिअणा । ९६. अणिअणा । ९७. अणिअणा । ९८. अणिअणा । ९९. अणिअणा । १००. अणिअणा ।

दिनोंसे आहारकि इच्छा होती थी जय शरीर प्रमाणे आहार करते थे फोर आराके अन्तमें दो दीनोंसे आहारकि इच्छा होने लगी.

युगल मनुष्योंके शेष संमास आयुष्य रहता है तब उनोंके परभषको आयुष्य बन्ध जाता है युगल मनुष्योंका आयुष्य नोष-कर्मी होता है । युगलनीके एक युगल (यचापची) पैदा होते है उनोंकी ४९ दिन 'प्रतिपालना करके युगल मनुष्यको छोक आति है और युगलनीको उभासी आती है. यस इतनेमें षट् दोनों सा-यदीमें कालधर्मको प्राप्त हो देषगतिमें चले जाते है ।

उन समय सिंह व्याघ्र चित्ता रोच्छ मर्षे धीच्छु गौ भेस दम्भि अभ्यादि जानवर भी होते है, परन्तु षट् भी षडे भद्रोक प्रकृतिपाले कीमी जीवोंके साथ न घैरभाय रखते है न कीसीको तकादीफ देते है उनोंकीभी गति देषतायोंकी हो होती है । युगल मनुष्य उते कीसी काममें नहीं लेते है ।

उन समय न कमी मसी असी षीणइय वैपार है न राजा प्रजा होती है यहाँके मनुष्य तथा पशु स्वइच्छानुसार घूमा करते है । जेसा षट् प्रथम आरा है जीमकि आदिमें जो षर्णन किया है तेसाही देषवृत् उत्तरवृत् युगलक्षेत्रका षर्णन समज लेना चाहिये ।

एवमथम षट् ह्ये मकृत कर्मेषा उदय अनुभाग रमकी षट् प्तः अर्णयत्त ह इति प्रथम आरा ।

इति युगल मनुष्योः शेष संमास आयुष्य रहता है तब उनोंके परभषको आयुष्य बन्ध जाता है युगल मनुष्योंका आयुष्य नोष-कर्मी होता है । युगलनीके एक युगल (यचापची) पैदा होते है उनोंकी ४९ दिन 'प्रतिपालना करके युगल मनुष्यको छोक आति है और युगलनीको उभासी आती है. यस इतनेमें षट् दोनों सा-यदीमें कालधर्मको प्राप्त हो देषगतिमें चले जाते है ।

गाउकी अथगाहना, दो पन्धोपमकी स्थिति, शरीरके पामलीयो ३२८ संहनन संस्थान छि पुरुषोंके शरीरके वर्णन प्रथमाराके माफीक समझना आराके आदिमें लॉड जेसी भूमिका भरनाई है उत्तरमें आरे एक गाउकी अथगाहना एक पन्धोपमकी स्थिति शरीरके ६५ पामलीयो भूमिका भरनाई गुड जेसी रहेगी उन मनुष्योंको दो दिनोंसे आहारकि इच्छा होगी तब यहही शरीर प्रमाणे आहारकि कल्पयूक्त पुरती करेंगे, दुसरे आराके युगलभी युगलको जन्म देंगी यह ६५ दिन संरक्षण कर यहही छीट उभानी होनेही स्वर्गगमन करेंगे । इसी माफीक हरीयाम रथयकवासके युगलकाधिकार भी समझना ।

दुसरे आरेके अन्तमें तीसरा आरा प्रारंभ होते है तब दुसरे आरेके निष्पत्त अन्तमें वर्णोपाधरस स्पर्श संहनन संस्था-
नादि पर्याय हीन होगा ।

तीसरा सुखमादुलम आरा दो कोडाकोड मागरीपमका है उरमेंभी युगल मनुष्यही होते है उमेंका आयुष्य एक पन्धोप-
मका, अथगाहना एक गाउकी, शरीरके पामलीयो ६५ होती है दोन शरीरके संहनन संस्थानरूप जोवनार्दि पुरेवत्त समझना, उत्तर-
में आरे कोडपुर्वका आयुष्य पामलीयो धनुष्यकि अथगाहना ३२ पामलीयो होती है एक दिनके प्रंतममें आहारकि इच्छा होगी है यह कल्पयूक्तपुर्व करते है भूमिकी भरनाई गुल जेसी होती है । छे मास पहलेपममका आयुष्य संध्यमें है यह युगल मनुष्य २० दिन प्रजन वधावसाकी पतिपायना कर स्वर्गका लभन करत है इन मासमें गुल उपादा है प्रेर युगल स्वल्प है इसी माफीक इच्छावत पामलीयोयुगल प्रथम ही समझना ।

इन तीसरे आरेके दो कोडाकोड मागरीपमका है उमेंभी युगल मनुष्यही होते है उमेंका आयुष्य एक पन्धोप-
मका, अथगाहना एक गाउकी, शरीरके पामलीयो ६५ होती है दोन शरीरके संहनन संस्थानरूप जोवनार्दि पुरेवत्त समझना, उत्तर-
में आरे कोडपुर्वका आयुष्य पामलीयो धनुष्यकि अथगाहना ३२ पामलीयो होती है एक दिनके प्रंतममें आहारकि इच्छा होगी है यह कल्पयूक्तपुर्व करते है भूमिकी भरनाई गुल जेसी होती है । छे मास पहलेपममका आयुष्य संध्यमें है यह युगल मनुष्य २० दिन प्रजन वधावसाकी पतिपायना कर स्वर्गका लभन करत है इन मासमें गुल उपादा है प्रेर युगल स्वल्प है इसी माफीक इच्छावत पामलीयोयुगल प्रथम ही समझना ।

से क्षान्ति होने लगी इसी माफीक कल्पवृक्ष भी निरम होने लगे, पाल देनेमें भी संयुचितपणा होनेमें युगल मनुष्योंके चित्तमें संयत्ता व्याप्त होने लगी इस समय रागद्वेषने भी अपना पग-पसारा करना मरु कर दीया इन कारणों से युगल मनुष्यों में अधिपति की आयदयवता होने लगी. तब कुलफरों कि स्थापन हुए पहले के पांचकुलफरों के 'दफार' नामका नीति दंड हुआ अगर फोह भी युगल अनुचित कार्य करे तो उसे यह कुलफर दंड देता है कि 'दे' यम इतनेमें यह मनुष्य लज्जित होके फौर जन्म भरमें कोईभी अनुचित कार्य नहीं करता. इस नीतीसे एक काल व्यतित हुआ. जब उन रागद्वेष का जोर बढ़ने लगा तब दूसरे पांच कुलफरोंने 'मफार' नामका दंड निकाला, अगर फोह युगल मनुष्य अनुचित कार्य करे तो यह अधिपति कहते कि 'म' याने यह कार्य मत्त करो इतने में यह मनुष्य लज्जित हो जाता था बाद रागद्वेषका भाइ बलेशने भी अपना राज जमाना मरुकीया जब तीसरे पांच कुलफरोंने 'धीफार' नामका दंड देना मरु कीया. इन पंद्रह कुलफरोंद्वारा तीन प्रकार के दंड से नीति चलती रही जब तीसरे आगके ८४ घोरामी लक्ष पर्य और तीन वर्ष साठे आठ मान शेष थाकी रहा उन समय सर्वाथ सिद्ध महा यमान से चयक भगवान् श्रमभदेयने, नाभीराजा के मन्त्रेया भार्या कि गन्वक्षीमे अथनाग लीया मानाकी शृणभादि चौदा मुपना आये उनोका अर्थ खुद नाभीराजने ही कहा बमदा भगवानका जन्म हुआ चौंसठ इन्द्रोंने महोन्मथ कीया मुखक वयमे मन्त्रदा मुमगला व साय भगवानका व्याह लग्न कीया तीसरे रात रम्भ मय इन्द्र इन्द्राणीयो ने करीथी फौर भगवान् श्रमभदेयने पुरुषोंकी ७- कला और छियोंकी ६४ कला यमलाह

कारण प्रभु अविज्ञान संयुक्त थे वह जागते थे कि अब कर्मण्युत्तमों का लक्ष्य ही और नीति न होगी तो भविष्य में बड़ा भारी सुन्दरान होगा कुराचार बढ़ जायगे इस वास्ते भगवान ने उन मनुष्यों की अनी मली कसी आदि कर्म करना यतलाके नीतिके अन्दर व्यापन कीया । उस पदा ने युगधर्म का बिलकुल लोप होगया अथ नितिके साथ लग्न करना असादि साध पदायें पेश करना और भगवान् भाडीश्वर के आदेश भाडीक वरगाव करना यह लोग अपना कर्तव्य समझने लग गये. भगवान् एने नीम लक्ष युग कुमार पद में रहै इन्द्र महाराज कीलके भगवान का राज्याभिषेक कीया भगवान् इकनाकुवल इसादिबुल व्यापन का उमीके साथ १३ लक्षपूर्व राजपद की चलाये अर्थात् ८३ लक्षपूर्व गृहवास लेवन किया तीर्थमें भजन बाहुबल आदि १०० गुड तथा साही, सुन्दरी आदि का पुत्रोयें दूर की अयोध्या नगरी कि व्यापना पहिलेमे इन्द्र महाराजमें करी थी और भी प्राप्त नगर पूर पाटन आदिमे मूर्धन्य बहाही शोभने लग रहाया. भगवानके दीश्राके समय भीआकाशिक देव आके भगवान् ने असे करी कि हे प्रमी ! अने आय नितीचमे बनकाक कलेगुमान युगकीवीका उद्धार किया है इसी साकीक अब जाय श्रीरा वासन कर लये जावीहा समार से इउर क का मातमाने का उचलीन करे उनमलय भगवान् मयभर जान दे क वरनही अथ वाक एव बाहुबलकी चलाया हा का राज प्रा १८ भाइ-वीके अ-वदकीका एत दे १०० राजपुत्रके साथ दाभा पहल करे उनवान के एक एक नरक का अन्तराय कम का और युगल मनुष्य अज्ञान दुःखमे एक एक नरक साहाए राजा न सीलन ल वर १० - विष्णु प्रसन्नमे मीके इलकुल वरगन करके लग गये. इव समय १०० वरमाने १०० राजा एवमकुमार के वही

किया तबसे मनुष्य आधार पाणी देना सीखे. भगवान् १००० वर्षे
 छद्मस्थ रह के केवल ज्ञानकी प्राप्ति के लिये पुरीमताल नगरके
 उद्यानमें आये भगवान् को केवल ज्ञानोत्पन्न हुआ. वह यथाइ भरत
 महाराज को पहुंची उस समय भरत राजाके आयुधशालामें
 चक्ररत्न उत्पन्न हुआ. एक तरफ पुत्र होनेकी यथाइ आई, एवं
 तीनों कार्य बड़ा महोत्सवका था, परन्तु भरत राजाने विचार किया
 कि चक्ररत्न और पुत्र होना तो संसारवृद्धिका कार्य हैं परन्तु मेरे
 पिताजीको केवलज्ञान हुआ थास्ते प्रथम यह महोत्सव करना चा-
 हिये प्रथमः महोत्सव किया. माता मरुदेवी को हस्ती पर बैठा
 के लाये माताजी अपने पुत्र (ऋषभदेव) को देख पहले बहुत
 मोहनो करी फिर आत्म भावना करते हस्तीपर बैठी हुईं माताको
 केवलज्ञान उत्पन्न हुआ और हस्तीके गंधेपरसे ही मोक्ष पधार गये.
 भगवान् के ४००० दिव्य यापिस आगये औरभी ८४ गणधर
 ८४००० साथु हुये और अनेक भय्य जीयोका उद्धार करते हुये
 भगवान् आदीश्वरजी एक लक्ष पुत्र दीक्षा पाल मोक्षमार्ग चालु कर
 अन्तमें १०००० मुनिपरोके साथ अष्टापदजीपर मोक्ष पधार गये.
 इन्द्रोका यह फर्ज है कि भगवान् के जन्म, दीक्षाप्रदत्त केवल
 ज्ञानोत्पन्न और निर्वाण महोत्सवके समय भक्ति करे इस कर्त-
 वानुसार सभा महोत्सव किये अन्तमें इन्द्र महाराजने अष्टापद
 पथपर रत्नप्रद तानवद ही विशाल स्तूप कराये और भरत
 महाराज रत्न अष्टापद पर ०८ भगवान् के रह मन्दिर बनवा व
 अपना जन्म स्मरण किये था इस यत्नत राजा अगा के लीज
 यथ सार वाच्य मास वाच्य रहा है जाकि युगठाय मरक. एक देव
 गति महत् ज्ञान मः यथ यह मनुष्य कर्मभूमि ही ज्ञान से नरक
 तापय मनुष्य दुःख लगे वह वह सिद्ध गतिम वा ज्ञाने लयगये है
 तस्मै आर ग यन्म धेइ पुत्रवा आयुष्य, पाषाणो धनुष्य वा

सिद्धार्थ जन्म महात्सव कीया था उनसमय जिन मन्दिरोंमें मेकडों पुजाओं कर अनुक्रमशः ३० वर्ष भगवान् गृहवास में रहके बाद दिक्षा ग्रहन कर साठे बारह वर्ष घोर तपभयां कर के केवलज्ञान कि प्राप्ती कर तीस वर्ष लग भव्य जीवीका उद्धार कर सर्व ७२ वर्षों का आयुष्य पाल आप मोक्ष में पधार गये उससमय भगवान् गौतम स्वामि की केवलज्ञान उत्पन्न हुया जिनका महा महात्सव इन्द्रादिकने कीया ।

चोटा आरामें दुःख ज्यादा और सुख स्वल्प है आरा के अन्तमें मनुष्यों का आयुष्य उत्कृष्ट १२० वर्षका शरीरकी उंचाई सात हाथकी पांसलीयो १६ धरतीकी सरसाइ मटी जैसी थी एक दिनमें अनेकवार आहारकी इच्छा उत्पन्न होती थी

जब चोटा आरा समाप्त हो पांचवा आरा लगा तब वर्ण-गन्ध रस स्पर्श सहनन सस्थान के पर्येष अनेने हीन हुये धरतीकी सरसाइ मटी जैसी रही ।

पाचवा आरा २० ० वर्षोंका होगा आरा के आदिमें १०० वर्षोंका मनुष्योंका आयुष्य ७ हाथका शरीर-शरीर के छे सहनन न सस्थान १६ पांसलीयां होंगे चौमट वर्ष केवलज्ञान (१ वर्ष जन्मस्वामि १० माधमस्वामि २२ जम्बुस्वामि) पाचवें आरे व मनुष्यों का आहारकी इच्छा अनियमित होगे

जम्बु स्वामि मान ज्ञान पर १० वाटोका उन्नत हंगा यथा- परमावधिज्ञान, मन.पयष ज्ञान, केवलज्ञान परिहार विशुद्धि चारित्र, सभ्रमसपराय चारित्र यथारूपान चारित्र पुलाक लरिष आहारक शरीर आयुष्यधेणी, जिन कर्पापना

मर्मगोपात पांयों आगे के धर्म भुंकर आचार्योंके नामः

- (१) श्री नरयप्रभसूक्ति जैनपोरवाल श्रीमालीके कर्ता
- (२) श्री रत्नप्रभसूक्ति उपलदे राजादि का जैन भोजवाल कीये
- (३) श्री यशदेवसूक्ति मवालभ जैन बलामवाल
- (४) श्री प्रमथस्वामि मज्जमवभदुके प्रतिबोधक
- (५) श्री मज्जमवभाचार्य दुःशयैकालक के कर्ता
- (६) श्री मज्जमवभाचार्य मिश्रुंकि के कर्ता
- (७) श्री सुहृन्नी आचार्य राजा भवती प्रतिबोधक
- (८) श्री उमास्वामि आचार्य पांयमा प्रथ के कर्ता
- (९) श्री इयामाचार्य श्री प्रतापना सूत्र के कर्ता
- (१०) श्री मिश्रमेन कीवाकर विक्रमराजा प्रतिबोधक
- (११) श्री लक्ष्मस्वामि त्रिमसिंहीकी आशासना मीराधवाके
- (१२) कालकाचार्य शास्त्रीवाहन राजा प्रतिबोधक
- (१३) श्री मन्वहृन्नी आचार्य समय कीवाकर
- (१४) श्री त्रिमसिंही आचार्य वाण्यकलां
- १५ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- १६ श्री हरिभद्रसूक्ति १३३४ प्रथम के कर्ता
- १७ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- १८ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- १९ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २० श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २१ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २२ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २३ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २४ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २५ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २६ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २७ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २८ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- २९ श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता
- ३० श्री दुःशयैकालक मज्जमवभ मालम मुक्तवाकद कर्ता

(२३) भी हिरविजयसूरी पादशाह अक्षरर प्रतियोधक ।

इत्यादि द्जानों आचार्य जो जैनधर्मके स्वयंभूत हो गये हैं
उनोके प्रभावशाली धर्मोपदेशसे विमलशा, वस्तुपाल, कर्माशा
जाशदशा भेंसाशा धत्तासा भामाशा सोमासादि अनेक धीरपुत्रोंने
जैनधर्मके प्रभायना करी थी इति

पांचवे आरा में कालके प्रभायसे कौतनेक लोग ऐसेभी होंगे
और इस आर्यभूमिका वर्णन जो पूर्ण मदा ऋषियोने इस माफीक
कीया है ।

- (१) बड़े बड़े नमर उजडसा या गामडे जैसे हो जायेंगे
- (२) ग्राम होगा वह श्मस्तान जैसे हो जायेंगे
- (३) उच्च कूलके मनुष्य दास दासीपना करने लग जायेंगे
- (४) जनता जिन्होंपर आधार रखे वह प्रधान लाचडीये
होंगे मुदाइ मुदायले दोनोंका भक्षण करेंगे
- (५) प्रजाये: पालन करनेवाले राजा यम जैसे होंगे
- (६) उच्च कूलके ओरतें निर्लज्ज हो अत्याचार करेंगी
- (७) अच्छे खानदानके ओरतों वैश्या जैसे येश या नाच
करेंगी निर्लज्ज हों अत्याचार करेंगे
- (८) पुत्र कृपुत्र हों आपत्त कालमें पिताको छोडके भाग
जायेंगे मारपीट दावा फीरयादि करेंगे
- (९) शिष्य अधिनीत हो गुरु देखोका अवगुनचाइ धोलेंगे
- (१०) उच्च लंपट दुर्जन लोग कृच्छ्र समय सुखी होंगे
- (११) दमिध्र दुष्काल बहुत पडेंगे
- (१२) मदाचारी सखन लोग दुःखी होंगे
- (१३) ऊदर सर्प टींडी आदि क्षुद्र जीवोंके उपद्रव होंगे
- (१४) धाक्षण योगी माधु अर्थ (धन) के लालची होंगे

- (१५) हिमा धर्म (गणहोम) के प्ररूपक पागड़ी बहुत होंगे
 (१६) एकैक धर्मके अम्बर अनेक अनेक भेरू होंगे
 (१७) श्रीम धर्मके अम्बरसे निकलेंगे उर्मी धर्मकी निरा
 करेगे उपकारके बदले अपकार करेंगे
 (१८) मिट्याग्नीदेव देवीयो बहुत पुत्रा पावेंगे । उन्को
 उपानकभी बहुत होंगे ।

१९) लघ्याहृष्टि देवोके दुर्जन मनुष्योंको दुर्लेभ होंगे ।

- (२०) विद्याधरोकि विद्यापीठा प्रभाव कम हो जायेंगे
 (२१) गौरव भूषणही पुत्र) तैल गृह शहरमें रम कम होंगे
 (२२) भूषण गण अभ्यादि पशु पक्षीयोका आयुष्य कम होगा
 (२३) मातृ मातृपीयाके मामकश्य जेमे क्षेत्र कृषक्य मीलेगे
 (२४) मातृकि १२ भावकही ११ प्रतिमापीका पीय होंगे
 (२५) गृह भगने शिष्टोको पदाभेमें लक्ष्मीमता रवेंगे ।
 (२६) शिष्टशिष्टपीयो कलह कदायही होंगी ।
 (२७) लक्ष्मी कर्मण तदा पीनाह कर्मवामे बहुत होंगे ।

(२८) आवापीकि लमावारी अरुण २ होंगे अरुणि अरुणि
 लखाह लमावारीके लिये उरगुव सोलेन एक पुनरेकी मुद्रा बनजा-
 केमे लमावारीमे वेडाविश्विक कृष्टिती लमावारीमे पनित लमा-
 वारीका बहुत हानि ।

२९ अतोह लाल क्यवावा अरुण दुर्माकी क्यवावा होंने
 बहुत लालहोनेमे लोकेप हानि हानि

३० अरुण लाल क्यवावा अरुण लालहोनेमे लोकेप हानि हानि

३१ अरुण लाल क्यवावा अरुण लालहोनेमे लोकेप हानि हानि

३२ अरुण लाल क्यवावा अरुण लालहोनेमे लोकेप हानि हानि
 ३३ अरुण लाल क्यवावा अरुण लालहोनेमे लोकेप हानि हानि

1

2

आवण कृष्ण प्रतिपदा के दिन सर्वत्र नामका वायु चलनेसे पहलेपहर भैरवधर्म, दूसरे पहर ३६३ पालांडीयका धर्म, तीजे पहर राजभोती, चौथे पहर वादर अग्निकाय विच्छेद होंगे उन समय गंगा सिन्धु नदी, वैतागिरि पर्वत (सायलगिरी) और लवण समुद्र कि आदि इनके सिवाय सब पर्वत पाहाड़ जंगल झाड़ी वृक्षादि वनस्पति सब हार नदी नालादि सबे वस्तु नष्ट हो जायगी, उसपर सात सात दिन सात प्रकारके मेघ पड़ेंगे वह अग्नि सोमल विष भुल आर आदि के पड़ने से सब भूमि एक-दूसरे रूप हो जायगी-हाहाकार सब जायगे उन समय कुष्ठा समुद्र्य तीर्थथ पर्वत उनी की देवता उठाने गंगा सिन्धु नदीके किनारेपर ७२ बाण रहेंगे जिनमें ३३ बीलोंमें समुद्र्य ३ बीलोंमें गङ्गाभ्र लोभेसादि मूमिखर पशु आदि ३ बीलोंमें संस्वर पक्षीके रक्षक उनीका शरीर बड़ाही भयकर काला काकरा मांजरा मूला अंगडा अनेक रोगदायक कृष्ण समुद्र्य होंगे जिनके भि-गुमहमंकी अधिकाधिक इच्छा रहने जसके कटक लहकीये बहुत होनी छे सबकी औरसे नभे धारण करेंगी, वहभी कुमी-नीचि मादीक एक बलमे ही बहुत बना बनीवोंकी पैदा करेंगी महान दुःखसब आगना जीवन पूरी करिगे ।

गंगा सिन्धु नदी मुहमे ३२ । जामसकी है परशु कायके प्रभावसे अमरा-गामी मूहना मूहना इन समय गाड़ीके बीके बीनर्मा आही जोर माहाका जाच दुये इनकी दुई रहेगी इन रानामे बहुतसे अन्तर अन्तर अन्तर अन्तर अन्तर

एक समय सुवर्ण मानाग बहुत दाना अन्तर्गत पानकना बहुत दाना अन्तर्गत मानाग बहुत दाना एक बीजमे बीजल सही लवण एक समुद्र्यके ३२२ रजसाके दिन एक नदीवोये अन्तर्गत अन्तर्गत एक अन्तर्गत बीजमे अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत

को पकड़ उन नदीके किनारेकी रेतीमें गाड़ देंगे वह दिनको सूर्यकि आतापनासे रात्रीमें चन्द्रकी शीतलतासे पक जावेंगे फीर सुबे गाड़े हुयेका श्यामको भक्षण करेंगे श्यामको गाड़े हुयेका सुबे भक्षण करेंगे इसी माफीक वह पापीष्ट जोष छठे आरेके २१००० वर्ष व्यतित करेंगे । उन मनुष्योंका आयुष्य लागते छठे आरे उत्कृष्ट २० वर्षका होगा शरीर एक हाथका हुन्डक संस्थान श्लेष्मं संदनन आठ पासलीयो और उत्तरते आरे १६ वर्षोका आयुष्य, मुडत हाथका शरीर, च्यार पांसलीयां होगी. उन दुःखमा दुःस्वम आरामें वह मनुष्य नियम व्रत प्रत्याख्यान गद्दीत मृत्यु पाके विशेष नरक और तीर्थच गतिमें जावेंगे । पाठको ! अपना जीव भी ऐसे छट्टे आरेमें अनंतो अनंती धार उत्पन्न होके मरा है घास्ते इस बखत अच्छी सामग्री मीली है निस्मे सावचेत रहनेकी आवश्यकता है । फीर पश्चाताप करनेसे कुछ भी न हांगे ।

अब उत्सर्पिणी कालका संक्षेपमें वर्णन करते हैं ।

(१) पहला आरा छटा आरेके माफीक २१००० वर्षका होगा ।

(२) दुसरा आरा पांचवा आरे जेसा २१००० वर्षोका होगा: परन्तु साथु साथी नही रहेंगे. प्रथम तीर्थकर पद्मनाभका जन्म होगा याने भेजिकराजाका जीव प्रथम पृथ्वीसे आके अवतार धारण करेंगे । अच्छी अच्छी वर्षांत होनेसे दुःखमें रम अछटा होगा.

(३) तीसरा आरा-चौथा आरेके माफीक बीजातीन्द्रहार वर्ण काम पक्ष कांडाकांड सामग्रीपमका होगा हिस्से २३ तीर्थकर आदि शलाके पुरुष हांगे मोक्षमार्ग बहुत होला रीच अधि कर बोधा आरा कि माफीक समझ लेना ।

(४) आशा आरा तीलके आरिषे. माफीक हांगा जीने व-
 कस तीला भासले जसे मूर्ति स्थित एक तीर्थकर एक अक्षरानि
 आर आरिषे जीव ही तील भासले मृतक ममृत्यु ही आरिषे वही
 कल्पवृक्ष उनीचि भागा मृतक करिसे ममृत्यु आरा ही कीहा-
 वही आरागीपमका हांगा ।

२. पापनी आरा मृतके आरिषे. माफीक तील कीहा
 वही आरागीपमका हांगा उल्लेखे मृतक ममृत्युही हांगा ।

३. छदा आरा गदेके आरिषे. माफीक अन्धकार कीहावाही
 आरागीपमका हांगा उल्लेखे मृतक ममृत्युही हांगा ।

इत इच्छादिनी मता मममूर्तिनाकाल मीत्यानेन वक्तु का-
 दन्तर दाना हे मत्ता मनेने कालवक्तु ही मने कि मर तील
 अज्ञानक माते अज्ञानमन कर रहा है । पादकाल ! इत्यन्त मृत
 मरुत कतिम विचार करे कि इत आरिषे कया कया वगा मृत है
 अरि मरिषे मया कया कया हीनी । मारुत ही मरुतमाद मीममन
 क अज्ञानही मरुतक मरुतमि मरुतमन कर इत काले मृतम
 मरुत मरुत आरुतम मरुतम है इति ।

मेरे मेरे मेरे मेरे-ममेरे ममम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

जंजरा और मोक्षतथ्य ज्ञानके अंगीकार करने योग्य है पुण्यतथ्य नैगमनयके मतसे स्वीकार करने योग्य है कारण मनुष्यजन्म उत्तम कुल, शरीर निरोग्य, पूर्ण इन्द्रिय, दीर्घ आयुष्य, धर्म सामग्री आदि सब पुण्योदयसे ही मिलती है व्यवहार नयके मतमें पुण्य जानने योग्य है और पर्यभुत नयके मतसे पुण्य जानके परित्याग करने योग्य है कारण मोक्ष जानेवालोंकी पुण्य बाधाकारी है पुण्य पापका क्षय होनेसे जीवोंका मोक्ष होता है।

नयतथ्यमें चार तथ्य जीव है—जीव, संघर, निजंजरा, और मोक्ष. तथा पांच तथ्य अजीव है—अजीव-पुण्य-पाप-आधय और बन्धतथ्य।

नयतथ्यका चार तथ्य रूपी है पुण्य-पाप-आधय और बन्ध चार तथ्य अरूपी है जीव संघर निजंजरा और मोक्ष तथा अजीवतथ्य रूपी अरूपी दोनों है.

निश्चयनयसे जीवतथ्य है सो जीव है और अजीवतथ्य है सो अजीव है शेष मात तथ्य जीव अजीवकी पर्याय है यथा संघर निजंजरा मोक्ष यह तीन तथ्य जीवकी पर्याय है, पाप पुण्य आधय बन्ध यह चार तथ्य अजीवकी पर्याय है।

अजीव पाप पुण्य आधय और बन्ध यह पांचतथ्य जीवके शत्रु है संघर तथ्य जीवका मित्र है, निजंजरातथ्य जीवको मोक्ष पहुंचानेवाला योद्धाया है. मोक्ष तथ्य जीवका घर है.

नयतथ्यपर चार निक्षेपा नामनिक्षेपा. ज्ञीवाजीवका नाम नयतथ्य तथादे. अक्षर लिखना तथा चित्रादिकि स्थापना करना यह नयतथ्यका स्थापना निक्षेपा है उपयोग रहित नयतथ्याध्ययन करना वह प्रत्यनिक्षेपा है मध्यकर्मकारे यथायं नयतथ्यका स्वहृद ममजना यह भावनिक्षेपा है

मयतत्त्वपर सात नय नैगमनय नयतत्य शब्दको तत्य माने. मयदतय तत्यकि सताशो तत्य माने. व्यवहार नय जीव अजीव यद होय तत्य माने. श्रुतु मूत्रनय ते तत्य माने. जीव अजीव पुन्य पाप आभय यन्ध, शब्दनय सात तत्य माने ते पुर्वयन्ध एक संघर. संभिरुदनय आट तत्य माने निर्जैराधिक. ययंमूत नय नय तत्य माने ।

नव तत्यपर द्रव्य क्षेत्र काल भाव—द्रव्यसे नयतत्य जीव अजीव द्रव्य है क्षेत्रसे जीव अजीव पुन्य पाप आभय यन्ध सर्व लोकमें है संघर निर्जैरा और मोक्ष प्रस नालीमें है. कालसे नवतत्य अनादि अनंत है कारण नयतत्य लोकमें सास्यता है भायसे अपने अपने गुणोंमें प्रवृत्त रहे है ।

नवतत्त्वका विशेष विवेचन इस भाकीक है ।

(१) जीवताव-जीवका सम्यक् प्रकारे ज्ञान होना जैसे जीवके चित्तन्य लक्षण है व्यवहारनयसे जीव पुन्य पापका कर्ता है सुख दुःखके भोक्ता है पर्याय प्राण गुणस्यानादिकर संयुक्त द्रव्येजीव सास्यता है पर्याय (गतिअपेक्षा) असास्यताभी है. मूलकालमें जीवता परतमानकालमें जीव है मयिष्यमें जीव रहेंगे । तीनकालमें जीवता अजीव होवे नहीं उसे जीव कहते है निश्चयनयसे जीव अमर है कर्मोका अकर्ता है और व्यवहार नयसे जीव मरे है कर्मोका कर्ता है अनादि कालसे जीवके साथ कर्मोका मयाग है जैसे धूमसे धुन नीलामें नेल गुडमें धानु इधुमें रस पुन्यमें सुगन्ध चन्द्रकान्वा मणिमें अमृत इमा माफीक जीव जीव कर्मोका अनादि कालसे मयन्ध है (शान्त माना तिमर है परन्तु अग्निके मयागसे अरना स्वरूपका छोड अग्नि व स्वरूप का धारण का क्षेत्र है इमा माफीक अनादि काल के अज्ञान व कर्म जन्मदि मयागसे जीव अज्ञानी कर्मचाला कह

समय लोकालोकके भाषीयो वंगर रहे हैं. सिद्धोका नाम लेनेसे नामनिक्षेपा, सिद्धोयो प्रतिमा स्थापन करनेसे स्थापना निक्षेपा, यहां पर रहे हुये महात्मा सिद्ध होनेवाले हैं यह सिद्धोका द्रव्य निक्षेपा है सिद्धभाषमें घरत रहे है यह सिद्धोका भाष निक्षेपा है उन सिद्धोके मूल भेद द्वाय है (१) अनंतरसिद्ध (२) परम्परसिद्ध, जिन्मे अनंतर सिद्धो जोकि सिद्ध हुयेको प्रथमही समय घरत रहे है जिनोके पंदरा भेद है (१) तीर्थसिद्धा-तीर्थ स्थापन होनेके बाद मुनियरादि सिद्ध हुये (२) अतीत्यसिद्धा-तीर्थ स्थापन होनेके पहिले मरुदेव्यादि सिद्ध हुये (३) तीत्ययर सिद्धा-गुद तीर्थपरसिद्ध हुये (४) अतीत्ययरसिद्धा-तीर्थकरोके सिधाय गणधरादि सिद्ध हुये (५) सय्योदिसिद्धा-जातिस्मरणादि ज्ञानसे असोचा केयली आदि सिद्ध हुये. (६) प्रतियोदिसिद्धा-कणकंडु आदि प्रत्येक बुद्ध सिद्ध हुये (७) बुद्ध घोहीसिद्ध-तीर्थकर गणधरा मुनिधरोके प्रतियोधसे सिद्ध हुये. (८) इत्थिलिगसिद्धा. द्रव्यसे खिलिग है परन्तु भाषसे वेदक्षय होनेसे अवेदि है यह द्वाही सुन्दरी आदि (९) पुरुषलिगसिद्धे-पुंथयन अवेदि-पुंडरिकादि-(१०) नपुंसकलिगसिद्धे-पुंथयन अवेदि गात्रेयादि नृति (११) स्थलिगीसिद्धे-स्थलिग रजोहरण मृगयन्त्रिका संयुक्त मृनियोकि मोक्ष (१२) अन्यलिगसिद्धे-अन्य लिग प्रोदहाय दिक् लिगमे भावमध्यकष चान्त्रि आनेसे मोक्ष ज्ञान (१३) गार्थिलिगसिद्धे-गार्थयके लिगमे सिद्ध होना मरुदय आदि (१४) एक समयमे एक सिद्ध (१५) एक समयमे अनेक सिद्ध (१६) सिद्धोका होना इन सबके अनंतर सिद्ध कहत है (१७) उन्मे जा परम्पर सिद्ध होने है उनोके अनेक भेद है जसे (१) प्रथम समयसिद्ध अर्थात् प्रथम समय घरत है (२)

ग्यादि संख्याते अमग्याते अनेते समयके सिद्धांतों परस्पर सिद्ध कहते हैं इति.

(२) अथ संसारी जीवोंके अनेक भेद बतलाते हैं जेते संसारी जीवोंके एक भेद याने संसारीजीव. दो भेद व्रत-स्वाधर। तीस भेद श्रियेद् पुरुषयेद् जपुंसकयेद्। चार भेद. नारकी तीर्थेष मनुष्य देयता। पांच भेद पदेन्द्रिय येन्द्रिय तेन्द्रिय चोन्द्रिय पांचेन्द्रिय। छे भेद. गृहणीकाय अपकाय तंडकाय वायुकाय वनस्पतिकाय व्रतकाय। सात भेद नारकी तीर्थेष तीर्थेषणी मनुष्य मनुष्यणी देयता देयी। आठ भेद चार गतिके पर्याना अपर्याना। नौभेद पांच च्यावर च्यार व्रत। दस भेद पांच इन्द्रियोंके पर्याना अपर्याना। इग्वारो भेद पांचेन्द्रियके पर्याना अपर्याना पर्ये १. और अनेन्द्रिय। बारहा भेद छे कायाके पर्याना अपर्याना। तेरहा भेद छे कायाके पर्याना अपर्याना तेरहा अकाया जीवोंके चौदा भेद पुरुषपकेन्द्रिय वादरपकेन्द्रिय येन्द्रिय तेन्द्रिय चोन्द्रिय असेतीपांचेन्द्रिय संतीपांचेन्द्रिय पर्ये आतीके पर्याना अपर्याना सीलाके चौदा भेद तीर्थके समस्तता।

विशेष ज्ञान दानक दिवसे संसारी जीवोंके २१३ भेद बतलाते हैं त्रिको संसारी जीवोंके मूठ भेद पांच हैं यथा १। पदन्द्रिय २। चन्द्रिय ३। तेन्द्रिय ४। चोन्द्रिय ५। पांचेन्द्रिय ६। पदन्द्रिय ७। चन्द्रिय ८। तेन्द्रिय ९। चोन्द्रिय १०। पांचेन्द्रिय ११। वादरपकेन्द्रिय १२। येन्द्रिय १३। तेन्द्रिय १४। चोन्द्रिय १५। पांचेन्द्रिय १६। पदन्द्रिय १७। चन्द्रिय १८। तेन्द्रिय १९। चोन्द्रिय २०। पांचेन्द्रिय २१। वादरपकेन्द्रिय २२। येन्द्रिय २३। तेन्द्रिय २४। चोन्द्रिय २५। पांचेन्द्रिय २६। पदन्द्रिय २७। चन्द्रिय २८। तेन्द्रिय २९। चोन्द्रिय ३०। पांचेन्द्रिय ३१। वादरपकेन्द्रिय ३२। येन्द्रिय ३३। तेन्द्रिय ३४। चोन्द्रिय ३५। पांचेन्द्रिय ३६। पदन्द्रिय ३७। चन्द्रिय ३८। तेन्द्रिय ३९। चोन्द्रिय ४०। पांचेन्द्रिय ४१। वादरपकेन्द्रिय ४२। येन्द्रिय ४३। तेन्द्रिय ४४। चोन्द्रिय ४५। पांचेन्द्रिय ४६। पदन्द्रिय ४७। चन्द्रिय ४८। तेन्द्रिय ४९। चोन्द्रिय ५०। पांचेन्द्रिय ५१। वादरपकेन्द्रिय ५२। येन्द्रिय ५३। तेन्द्रिय ५४। चोन्द्रिय ५५। पांचेन्द्रिय ५६। पदन्द्रिय ५७। चन्द्रिय ५८। तेन्द्रिय ५९। चोन्द्रिय ६०। पांचेन्द्रिय ६१। वादरपकेन्द्रिय ६२। येन्द्रिय ६३। तेन्द्रिय ६४। चोन्द्रिय ६५। पांचेन्द्रिय ६६। पदन्द्रिय ६७। चन्द्रिय ६८। तेन्द्रिय ६९। चोन्द्रिय ७०। पांचेन्द्रिय ७१। वादरपकेन्द्रिय ७२। येन्द्रिय ७३। तेन्द्रिय ७४। चोन्द्रिय ७५। पांचेन्द्रिय ७६। पदन्द्रिय ७७। चन्द्रिय ७८। तेन्द्रिय ७९। चोन्द्रिय ८०। पांचेन्द्रिय ८१। वादरपकेन्द्रिय ८२। येन्द्रिय ८३। तेन्द्रिय ८४। चोन्द्रिय ८५। पांचेन्द्रिय ८६। पदन्द्रिय ८७। चन्द्रिय ८८। तेन्द्रिय ८९। चोन्द्रिय ९०। पांचेन्द्रिय ९१। वादरपकेन्द्रिय ९२। येन्द्रिय ९३। तेन्द्रिय ९४। चोन्द्रिय ९५। पांचेन्द्रिय ९६। पदन्द्रिय ९७। चन्द्रिय ९८। तेन्द्रिय ९९। चोन्द्रिय १००।

ज्ञानते देखते हैं. उनोंने ही फरमाया है कि सूक्ष्म नामकर्मके उदयसे उन जीवोंकी सूक्ष्म शरीर मीला है यह जीव मारे हुआ नहीं मरते है, याले हुआ नहीं चलते है, काटे हुआ नहीं कटते है अर्थात् अपने आयुष्यसे ही जन्म-मरण करते है. उनोंका आयुष्य मात्र अंतरमुहुतका ही है जिसमें सूक्ष्म, पृथ्वी, अप, तेड, वायुके अन्दर तो असंख्याते २ जीव है और सूक्ष्म घनस्पतिमें अनन्ते जीव है. इन पांचोंके पर्याया अपर्याया मीलानेसे दश भेद होते है ।

दूसरे पादर एकन्द्रियके पांच भेद है यथा—पृथ्वीकाय, अपकाय, तेडकाय, वायुकाय, घनस्पतिकाय. जिसमें पृथ्वीकायके दो भेद है. (१) मृदुल (कोमल) (२) कटन. जिसमें कोमल पृथ्वीकायके मात्र भेद है काली मट्टी, नीली मट्टी, लाल मट्टी, पीली मट्टी, सुपेद मट्टी, पानीके नीचे तली जमी हुई मट्टी उसे 'पणय' कहते है. पांडु गोपीचन्दनादि ।

२. अथपृथ्वीके अनेक भेद है यथा—मट्टी खानकी, चौकणी मट्टी लाल दाहरा या दूहा रंगी - पाषाण शीश, लृण अनेक जातिका लाल है . जैसे भाले हुए धातु जाहा ताप' तरबा सिमा उप' मणय' यक्ष हाता' दिग' मणशा' परधात' प'र' धनय' प'र' अ'र' अ'र' यक्ष'न' मणि'र'र'र'र'र'

अषाढग वृक्ष, दाडिम, उम्बर बडनदी वृक्ष, पीपरी जंगाली मिथावृक्ष दालीवृक्ष कादालीवृक्ष इत्यादि ओरभी जित्त वृक्षके फलमें अनेक बीज हो यह सब इनके सामिल समझना चाहिये जिस्के मूल कन्द स्क्न्ध मांस परचालमें असख्यात जीव है पत्रोंमें प्रत्येक जीव पुष्पोंमें अनेक जीव फलमें बहुत जीव है।

(२) गुच्छा=अनेक प्रकारके होते है वैगण सहाइ धुइसी जिमुणीके लच्छाइके मलानीके मादाइके इत्यादि—

(३) गुम्मा=अनेक प्रकारके होते है जाइ शुइ मोगरा मा-लता नौमालती बसन्ती माथुली काथुली नगराइ पोहिना इत्यादि।

(४) लता=अनेक प्रकारकी होती है पत्रलता बसन्तलता नागलता अशोकलता चम्पकलता चुमनलता पैणलता आइमुक-लता कुम्बलता इयामलता इत्यादि।

(५) वेह्रीके अनेक भेद है नुबीकीयेह्री तीसंडी, तिउमी, पुंसकट्टी, कालंगी, पल, धान्दुकी, नागभ्येह्री घोमाडाइ (तोरु) इत्यादि।

(६) इशुकें अनेक भेद है इशु इशुवाही यान्नी काल इशु पुइइशु बरटइशु पकइइशु इत्यादि।

१ ७ नृणक अनेक भेद है माहायानुग मार्तियानुग हावा यानुग धार कदावण मज्जननुग भासाइनुग इकइनुग इत्यादि

१ ८ वृक्षके अनेक भेद नाउ नगाउ नवउ नष ननका नाका ना न कुम्भक्य तगाध काज इत्यादि

१ ९ इति एव एते भेद है अनेकाना इति इतिव न सम भेदक इति एतेना संभेदना मता ही इत्यादि

(१०) औषधिके अनेक भेद-शाली घ्याली गहो गोधम
 नय जयाजय ज्यारकल मशुर घिल मुंग उडद नफा कुलत्थ कागथु
 आलिस दूध तीणपली मंघा आयेसी कसुंध कोदर कंगू रालग
 माम कोहसासंण सरिसय मूल बीज इत्यादि अनेक प्रकारके
 धान्य दोते हैं वह सब इन औषधिके अन्दर गीने जाते हैं ।

(११) जलरूढा-उत्पलकमल पद्मकमल कौमुदिकमल निल-
 निकमल शुभकमल सौगन्धीकमल पुंडरिककमल महापुंडरिक-
 कमल अरिबिन्दकमल शतपत्रकमल सहस्रपत्र कमल इत्यादि ।

(१२) कुट्टुपक्षा अनेक प्रकारके हैं आत कात पात सिधो-
 टीक कष कनड इत्यादि यह धनस्पति भी जलके अन्दर होती हैं ।

इन चार प्रकारके प्रत्येक धनस्पतिकायपर दृष्टान्त
 जैसे सरसयका समुह एकत्र होनेसे एक लड्डु बनता है परन्तु
 उन सरसयके दाने सब अलग अलग अपने अपने स्वरूपमें हैं
 इसी भाँती प्रत्येक धनस्पतिकायभी असंख्य जीवोंका समुह
 एकत्र होते हैं परन्तु प्रत्येक जीवके अलग अलग शरीर अपना
 अपना भिन्न है जैसे अनेक तीलोंके समुह एकत्र ही तीलपापडो
 बनती हैं इसी भाँती प्रत्येक फल पुष्पमें असंख्यजीव रहते हैं
 वह सब अपने अपने अलग अलग शरीरमें रहते हैं जहाँतक
 प्रत्येक धनस्पति हरि रहती है वहाँतक असंख्याते जीवोंके स
 मूह एकत्र रहने हैं जब वह फल पुष्प पक जाते हैं तब उन्हींके
 अन्दर प्रत्येक जीव रह जाते हैं तथा उन्हींके अन्दर बीज हो तो
 जीवने बीज उतारते हैं जीव और प्रत्येक जीव फलका मूलगा रहता
 है इति

। २ । दुसरा साधारण वनास्पतिताय है उसीके अनेक
 भेद हैं मृदा कायदा लक्षण आदी अद्वयी रसायु पीडायु आयु
 लकरकयु मातर सुवर्णकयु यज्ञकयु कृष्णकयु मागकली युग
 कली कदली कर्षुण मागसमीय उमसे अङ्क हने पाय क्योंकि मि
 लण कृष्ण कसे कोमल फल गुण विगडे हुने वामी भ्रममें पैदा
 हुए दुर्गन्धमें भ्रमणकाय है औरभी जमीनके अन्दर उत्पन्न
 होनेवाले वनास्पति लव अनेककायमें मानी जानी है दृष्टान्त
 सेना लोहाका सोला भ्रममें गवानेसे उन लोहाके लव प्रवेशमें
 अग्नि प्रदीप हो जानी है इसी भाँतीक साधारण वनास्पतिके
 लव भ्रममें अनेके जीव होने हैं वह अनेके जीव वायुहीमें पैदा
 होने हैं वायुही में आहार प्रदान करने हैं वायुही में धरने हैं अ-
 र्याय उस अनेके जीवाका एक ही शरीर होने हैं इने साधारण
 वनास्पतिताय या वायु मितावली कहते हैं ।

वनास्पतितायके अ्यार भाग बतलाये जाते हैं ।

। १ । प्रथम वनास्पतितायके सिधायमें प्रथेक वनास्पति
 दृष्टान्त दानी है जैसे वृक्षक लाल्यानी ।

। २ । उमसे वनास्पतिरुके सिधायमें लाल्यानी वनास्पति
 'नकाय दृष्टान्त दना है जैसे ३३ वृक्षादि अन्ध व'मलनाम
 ३३३ ३३ ३३ ३३

। ३ । लाल्यानी वनास्पतिरुके सिधायमें उमसे वनास्पति
 'नकाय दृष्टान्त दना है जैसे ३३ वृक्षादि अन्ध व'मलनाम
 ३३३ ३३ ३३ ३३

। ४ । लाल्यानी वनास्पतिरुके सिधायमें उमसे वनास्पति
 'नकाय दृष्टान्त दना है जैसे ३३ वृक्षादि अन्ध व'मलनाम
 ३३३ ३३ ३३ ३३

इन साधारण और प्रत्येक घनस्पतिकों छद्मस्य मनुष्य कैसे पहचान सकें इस वास्तं दृष्टान्त बतलाते हैं.

जीस मूल कन्द स्यन्ध साया प्रतिसाया त्यचा प्रयाल पत्र पुष्पफल और बीजको तोड़ते बखत अन्दरसे चिकणास निकले तुरतो सम तुरटे उपरकि त्यचा गौरदार हो यह घनस्पति साधारण अनेकथाय समजना और तुरतो विषम तुरटे त्यचा पातली हो अन्दरसे चिकणास न हो उन घनस्पतिकायको प्रत्येक समझना

सौघोडे कचे होते हैं उनोमें संख्याते असंख्याते और अनन्ते जीव रहते हैं इन प्रत्येक और साधारण घनस्पति कायके दो दो भेद हैं (१) पर्यासा (२) अपर्यासा एवं यादर एकेन्द्रियका १२ भेद समजना । इति एकेन्द्रियके २२ भेद हैं

(२) घेइन्द्रियके अनेक भेद हैं । लट गोडोले कीडे कृमिये कुक्षीकृमिये पुरा । जलोख लेखो खापरीयो इली रसचलीत अन्न पाणीमें रसइये जीव. या शख शीप, कोडी घनणा धंसीमुखा सूचीमुखा घाला अलासीया मूनाग अक्ष लालीये जीव ठंडीरोटी पिंगरेमें उत्पन्न होते हैं इनके सिधाय जीम और न्यचाघाले जीमने जीव हांते हैं यह सब घेइन्द्रियके गीनतोमें है ।

(३) तंइन्द्रियके अनेक भेद हैं-उपपातिका रोहणीया चांचड माकड कीडी मकोटे डंम मंस उदाइ उफाली कष्टहारा पत्राहारा पुष्पाहारा फलाहारा नृणव्रिटीत पुष्प० फल० पत्रव्रिटित जू. लिख. कानखीजूर इली घनेलीका जा घनमे पेदा हांती है चर्म जू गौकीटक जा पशुवाक. कानोमें पेदा हांते हैं । गर्दभ गोशालामें पेदा हांते हैं. गौकीटि गोधरमे पेदा हांते हैं । धान्यकीटि कुंभु इलीका इन्द्रगोप चनृर्मांमाये पेदा हांते हैं. इत्यादि जीमके तीन इन्द्रिय शरीर जीम नाक हां । यह तंइन्द्रिय है ।

(४) चौरिन्द्रिय के अनेक भेद ह अधिक पतिका मक्खो मत्सर कीडे तोड पतंगीये विष्णु जलविष्णु कृष्णविष्णु श्याम-पतिका यायत् श्वेत पतिका भ्रमर चित्रपक्खा विधिप्रपक्खा जलचारा गोमयकीडा भमरी मधु मक्षिका-टाटीया डंम मंसगा कीमारी मेलक दंमक इत्यादि जीम जीवोंके शरीर जीम नाक. नेत्र होते है यह सब चौरिन्द्रियकी गीणतीमें समजना. इन तीन पैकलेन्द्रियके पर्यामा अपर्यामा मिलानेसे ६ भेद होते है।

(५) पांचेन्द्रिय जीवोंके ब्यार भेद है नारकी, तीर्थव, मनुष्य, देवता, जिस्मे नारकीके मान भेद है यथा-गम्मा वंमा शीला अन्नना रिटा मथा माघवती-मात नरकके गीथ. ररनप्रभा, शकैरामभा बालुकाप्रभा, पडुप्रभा, धूमप्रभा, तमः-प्रभा तमस्तमःप्रभा इन मानों नरकके पर्यामा अपर्यामा मीला-नेमे चौदे भेद होते है।

(६) तीर्थव पांचेन्द्रियके पांच भेद है यथा-जलघर, स्थलघर, मेघर, उरपुरिमपं भुजपुरिमपं. जिस्मे जलघरके पांच भेद है मच्छ कच्छ मगरा गाहा और मुममारा।

(७) मच्छके अनेक भेद है यथा-मच्छमच्छा युगमच्छा विद्युमच्छा हलीमच्छा नागरमच्छा रोहणीयामच्छा तंदूलमच्छा कनकमच्छा शाटीमच्छा पतंगमच्छा इत्यादि (८) कच्छके दो भेद है (१) अन्विय कच्छवाले कच्छ (२) मानवाले कच्छ (३) मोहके अनेक भेद शोलीमोह पेडीमोह मूदीमोह तुला मोह मामामोह मयलागोह कानामोह दूमोहामोह इत्यादि (४) मगरा मगरा साहमगरा दलाग मगरा पा टपमगरा नायकमगरा दलीपमगरा इत्यादि - (५) मुममारा पक्की प्रकारका जान है यह भेद है किपक याहाक जान है यह पाच प्रकारके जलघर जीव मारा भी जान है और मसूमम भी जान है ज्ञा मारी जान

है यह गर्भजघ्नि पुरुष नपुंसक. तीनों प्रकारके होते है और जो समुत्सम होते है यह एक नपुंसकही होते है ।

(२) स्थलचरके चार भेद है यथा-एकखुरा दोखुरा गंडोपदा सन्धपदा जिस्मे एक खुरोका अनेक भेद है अथ चर गचर इत्यादि दो खुरोके अनेक भेद है गौ भंस जंड चकरी रोज इत्यादि-गंडोपदाके भेद गज हस्ति गंडा गोलड इत्यादि सन्धपदके भेद सिंह-व्याघ्र नाहार केशरीसिंह बन्दर मझार इत्यादि इनोके दो भेद है गर्भज और समुत्सम ।

(३) वेधरके चार भेद है यथा. रोमपक्षी चर्मपक्षी समुगपक्षी. घीततपक्षी-जिस्मे रोमपक्षी-टंघपक्षी चंक्र-पक्षी, घदासपक्षी. हंसपक्षी. राजहंस० कालहंस, कौच-पक्षी. सारसपक्षी, बांगल० रात्रीराजा, मयूर पानेवा तोता मैना घीही कमेडी इत्यादि चर्मपक्षी घमचेड विगुल भारंड ममुद्रघयस इत्यादि समुगपक्षी जोस्की पाखी हमेशा जुडी हुई रहते है घितित पक्षी जोस्की पाखी हमेशा खुली हुई रहती है इनोकेभी दो भेद है गर्भज समुत्सम पूर्वयन् ।

(४) उरपरोसर्प के चार भेद है अहिसर्प अजगरसर्प मोहरगसर्प. अलमीयो. जिस्मे अहिसर्पके दो भेद है एक फण करे दुसरा फण नहीं करे. फण करे जिस्के अनेक भेद है आसी-विष सर्प दृष्टिविषसर्प त्रिचाविषसर्प उग्रविषसर्प भोगविषसर्प लालविषसर्प उभ्रासविषसर्प निभ्रासविषसर्प कृष्णासर्प सु-पेदसर्प इत्यादि जो फण न करे उनोका अनेक भेद है-दोषीगा गोलम. चोन्ड पेना. लेना हीनसर्प पेन्गसर्प इत्यादि । अजगर पक्षी प्रकारका सर्प है मोहरग नामका सर्प अहाइन्द्रिके पाहाइ हनि है इनोके अजगरहना इत्यर्थ । १० गर्भजके होने है

अल्पमाया आहाद्विपणं पैदरा क्षेत्रमें ग्राम नगर सेह कश्चिद
भारिके अन्तर तथा चक्रवर्ते वासुदेवकी शीष्यादि सिधे जयम्ब
अम्बुदेके असेकपाल भाग उत्कृष्ट यात्रहा योगमका शरीर होता है
जिनके शरीरमें एक पाणी पत्ता लीं आरम्भार हाते है कि उन
पाणीमें वह यात्रहा योगमकी भूमिकी चीधी बना देने है।

(५) भुजपुरकेभी असेक भेद है असे ताकृष्ण लाल मूया आदि
वह जलधर यलधर मेशर उरपुरमर्ष भुजपुर मर्ष पांच
मकारके मज्ञी गर्भज मसनाळे हाते है और यहही पापी पकारके
नीयैष असेगी मस र्हाय समुत्पन्न हाते है जां गर्भज है वह
सि नृक्ष मर्षमक हाते है और जा समुत्पन्न हाते है वह मात्र
मर्षमक हाते है एक १० भेद हुए इन नृशीके पचासा और दू-
शीके अचपासा मित्राकर नीयैष पांचिषियके २० भेद हाते है
एकिषियके २२ विकलेषियके ६ और पांचिषियके २० नये मी-
काके नीयैषके ६८ भेद हाते है।

(३) मनुष्यके चो भेद है (१) गर्भज मनुष्य (२) समु-
त्पन्न मनुष्य-प्रिये समुत्पन्न मनुष्य जो आहाद्विपण पैदरा क्षेत्र
के चरेमूमि १० अक्षेमूमि ३० अन्तरिक्षिया ५२ वये १०१ सालि
के मनुष्याके निम्नलिखित पीदा क्यालय प्राणुदेके असेकपाल
आरुकि जयनाहाला अन्तरक्षमूर्णदा प्राणुदयाले अज्ञानी मित्रा
रुदि म्रय उपाय हाते है पीदा क्यालीक नाम यथा ररा पैदाय
१०००० माहृक माल्य वलम १००० साल रोज र्हां। चीमदा
१००० चोप गुण दूय चोप १००० चोप चोप चोप हावेस सि
१०००० माल्य माल्य माल्य माल्य माल्य माल्य माल्य माल्य
मनुष्य ६८ भेद हुए 'बला नय प्रानु' क्यालय इन पाँद क्या
१०००० १०००० १०००० १०००० १०००० १०००० १०००० १००००
१०००० १०००० १०००० १०००० १०००० १०००० १०००० १००००

आह्लासिय, येमाणिय, नागल, हयकन्न, ग्यकन्न, गौकास्र व्याकुल-
कन्न, अयंममुदा, मेघमुदा, अममुदा, गोमुदा, आममुदा, हस्त्रियमुदा,
मिहमुदा, थाग्घमुदा, आसकन्ना, हरिकन्ना, अकन्ना, कन्नपाउरणा,
उक्कामुद, मेहमुदा, यिज्जुमुदा, विज्जुदाग्ता, घणदाग्ता, लद्ध-
दाग्ता, गुददाग्ता, शुद्धदाग्ता एवं २८ द्विपयुल्ल हेमयत्त पर्यंतकि
निश्चाय हे इमी माफीक २८ द्विप इमी नामके सीशरी पर्यंतकी
निश्चाय समजना एवं ५६ द्विपा हे उन प्रत्येक द्विपमें युगल मनुष्य
निश्चाय करते हे उनोंका शरीर आटमों धनुष्यका हे पन्नोंपमके
अमंलयागमें भागकी स्थिति हे. दस प्रकारके कल्पयुक्त उनोंकी
मनोंकामना पुरण करते हे जहांपर अभी ममी कसी राजा राणी
थाकर टाकुर कुच्छ भी नहीं हे. देवों छे आरोंके चांकेडेमे
विस्तार इति ।

अकर्मभूमियोंके ३० भेद हे पांच देवकृद, पांच उन्नरकृद,
पांच हरिवाम, पांच रम्यकृवाम, पांच हेमवय, पांच परणवय
एवं ३० जिनमें एक देवकृद, एक उन्नरकृद, एक रम्यकृवाम, एक
हरीवाम, एक हेमवय, एक परणवय एवं ६ क्षेत्र जम्बुद्विपमें.
इमें दुगुणा बारहा क्षेत्र धानकीसंहमें बारहा क्षेत्र पृथग्गाले द्विप
में एवं ३० भेद वह अकर्मभूमिमें मनुष्ययुगल हे वहां भी अभी
ममी कसी आदि कर्म नहीं हे. उनाके भी दस प्रकारके कल्पयुक्त
मनोंकामना पुरण करते हे । (उ आराधिकागमें देखा)

कर्मभूमि मनुष्योंके गहना भेद हे पांच अमलक्षेत्रके मनुष्य,
पांच परथल पांच महर्षिविद्वेद जिनमें एक अमल एक परथल,
एक महर्षिविद्वेद एवं तीन और जम्बुद्विपमें तीन नामके दुगुणा छे अथ
पांचवें महर्षिविद्वेद जिनमें हे छे अथ पांचवें महर्षिविद्वेद जिनमें हे कर्मभूमि गहना
पर । तों के पांच नामके पांच नामके अमी ममी कसी
आदिम क्षेत्रके अमी कर्म आराधिकागमें देखा है, उमें कर्मभूमि

कहते हैं. यहाँपर भरतक्षेत्रके मनुष्योंका विशेष वर्णन करते हैं. मनुष्य दो प्रकारके हैं (१) आर्य मनुष्य, (२) अनार्य मनुष्य. जिसमें अनार्य मनुष्योंके अनेक भेद हैं. जैसे शकदेशके मनुष्य, पद्मरदेशके, पद्मनदेशके, संपरदेशके, धिलतदेशके, पीरदेशके, पापालदेशके, गीन्ददेशके, पुलाकदेशके, पारसदेशके इत्यादि जिन मनुष्योंकी भाषा अनार्य व्यवहार अनार्य, आधार अनार्य, सावधान अनार्य, यर्म अनार्य है इस वास्ते उनीशो अनार्य कहा जाते हैं उनीके ३१९७५॥ देश है ।

आर्य मनुष्योंके दो भेद हैं (१) अद्रिमन्ता, (२) अन-
द्रिमन्ता. जिसमें अद्रिमन्ते आर्य मनुष्योंके दो भेद हैं. तीर्थ-
वर. चप्रवर्ति, बलदेश, वासुदेश, पिताधर और धारणमुनि ।

लगभगद्रिमन्ता मनुष्योंके नौ भेद हैं. क्षत्रार्थ, जातिआर्य,
कुलआर्य, कर्माय, शिष्याय, भाषार्थ ज्ञानार्थ, दर्शनाय, धारि-
थार्य. जिसमें क्षत्रार्थके साक्षात्पचयोनि क्षत्रार्थ माने जाते हैं.
उनीके नाम इस भाषिक हैं. मागधदेश राजगृहनगर, अंगदेश
चम्पानगरी, बंगदेश नामदीपुरी, वीरंगदेश कंठनपुर, काशी-
देश धनारसी, हाशानदेश संकेतपुर, कुरुदेश गजपुर, कुशावर्त
सोरीपुर पंचालदेश कपिलपुर, जंगलदेश (मारवाड) अहि-
हता, सोरठदेश दारामति, विदेहदेश मिथिला, बच्छदेश कौसुमी,
मडिलदेश नेदिपुर मदीयादेश भद्रपुर, धन्सदेश वैराटपुर,
वर्णदेश अच्छापुर इराणदेश मृगशकती वेदीदेश शक्तावती,
सिन्दुदेश वीरथपट्टी, सुवैनदेश मथुरा, भद्रदेश पाषापुरी,
पुरिषतदेश सुसमापुर, नाश सावन्धी, लाहदेश वीरीवर्ष, कैवर्ष
नामका अर्द्धदेशमें स्ववाम्बिकानगरी इति । इन आर्यदेशोंका
लक्षण जहापर नाथकर बकवर्ति वासुदेश, बलदेश, प्रतिष्ठासु-
देश आदिके जन्म होने हैं तीर्थकरीके पंचकव्यायक होने हैं.

जहांपर भाषा, आचार, व्यवहार, वैपारादि आर्यकर्म होते हैं प्रकृत समफल देये उनीको आर्यदेश कहते हैं ।

आर्यजातिके छे भेद है. यथा—अम्यष्टजाति, किलंदजाति, विदेहजाति, वेदांगजाति, हरितजाति, शुचणरुपाजाति. उन जमानेमें यह जातियों उत्तम गौनी जाती थी ।

कुलार्यके छे भेद है. उग्रकुल, भोगकुल, राजनकुल, इक्ष्वाकु-कुल, शातकुल, कौरवकुल. इन छे कुलोंसे कई कुल निकले हैं. इन कुलोंको उत्तम कुल माने गये थे ।

कर्मआर्य—वैपार करना. जैसे कपडाका वैपार, रुईका वैपार, सुतके वैपार, सोनाचान्दीके दागीनेका वैपार, कांसी पीतलके बरतनोंके वैपार, उत्तम जातिके क्रियाणाके वैपार. अर्थात् जिस्में पंद्रा कर्मादान न हो, पांचेन्द्रियादि जीयोंका बध न हो उसे कर्मआर्य कहते हैं ।

शिल्पार्य—जैसे तुनारकी कला. तनुयव याने कपडे बनानेकी कला, काष्ठ कोरनेकी, चित्र करनेकी, सोनाचन्दी घडनेकी मुंजकला, दान्तकला, भेंसकला, गन्धर चित्रकला, पत्थर कोरणी कला, रांगनकला, कोटागार निपजानेकी कला, गुंयजकला, बन्धगलबन्धन कला, पाक पकावनेकी कला इत्यादि. यह आर्यभूमिकी आर्य कलाधों है ।

भाषार्य—जो अर्थ मागधी भाषा है, वह आर्य भाषा है. इनके सिवाय भाषाके लिये अठारा जातिकी लीपी है वह भी आर्य है ।

ज्ञानार्यके पाच भेद है. मनिज्ञान धृतिज्ञान, अवधिज्ञान. मन पर्यवज्ञान, केशलज्ञान इन पांचों ज्ञानोंको आर्य ज्ञान कहते हैं ।

दर्शनार्यके द्वां भेद ह (१) सराग दर्शनार्य, (२) धीतराग दर्शनार्य. जिस्में सराग दर्शनार्यके दश भेद है ।

- (१) निसर्गरुची-जातिस्मरणादि ज्ञानसे दर्शनरुची ।
- (२) उपदेशरुची-गुरुरादिके उपदेशसे ,,
- (३) आशारुची-चातरागदेयकी आशासे ,,
- (४) सूत्ररुची-सूत्रसिद्धान्त भ्रषण करनेसे ,,
- (५) धीजरुची-धीजको मा फि.क. एष से अनेक ज्ञान, दर्शनरुची ।
- (६) अभिगमरुची-द्रादशांगी ज्ञाननेसे विशेष ,,
- (७) विस्ताररुची-धर्मास्ति आदि पदार्थसे ,,
- (८) क्रियारुची-धीतरागके घताइ हुइ क्रिया करनेसे ,,
- (९) धर्मरुची-वस्तुस्वभाषके ओलपनेसे ,,
- (१०) संक्षेपरुची-अन्य मत प्रदत्त न किये हुये भद्रिकजीयोको ,,

दुसरा धीतराग दर्शनार्थके दो भेद है. (१) उपशान्त कषाय,

(२) क्षीण कषाय. इत्यादि संयोगी अयोगी कथली तक कहना ।

(९) चारित्रार्थके पांच भेद है. सामायिक चारित्र, सेदो-
परपापनीय चारित्र, परिहारविशुद्ध चारित्र, सूक्ष्मसेपराय
चारित्र, यथाख्यात चारित्र इति. आर्थ मनुष्य इति मनुष्य ।

(४) द्वेष पांचेन्द्रियके चार भेद यथा-भुषनपति, याल-
ब्यंतर उद्योतिपी. धर्मानिक । जिभे भुषनपतियोके दश भेद हैं ।
असुरकुमार नागकुमार, सुवर्णकुमार, विदुतकुमार अग्निकुमार
द्विपकुमार दिशाकुमार, उदधिकुमार पवनकुमार, स्तनिकु-
मार । एदरा परमाधार्मिकी अमरकुमारकी जातिमे से नाम
अथ आत्मस नाम मयसे असे विरुद्धे काले महाकाले अर्मापले
धण कर्म यः मैतर्जिण मारमरे महाकाये ।

जातरा पाणायतराये मय दिशास भूतयस राक्षस विरु
विपुश्य मादर मयध आलपु.से कलपु.से अगियेइ भूतिअइ

कण्डे महाकण्डे कौटंड पर्यगद्देवा, वाणव्यतगोमेदश ज्ञातिके जंमृ
कदेशोके नाम आणजंभृक प्राणजंभृक लिंगजंभृक शौनजंभृक वखत्रं
नक पुष्पजंभृक फलजंभृक पुष्पकजंभृक विष्णुजंभृक अग्निजंभृक।

उद्योतिषीदेव पांच प्रहारके है. चन्द्र सूर्य, ग्रह नक्षत्र, तारा
पांच स्थिर अद्वाह द्विवके बाहार है जिनोकि कान्ति अम्बरके
उद्योतिषीयोमे आदि है सूर्य सूर्यके लक्ष योजन ओर सूर्य चन्द्रके
पचासहजार योजनका अम्बर है. आद्वाह द्विवके बाहार जहां-
दिन है वहां दिनही है और जहां रात्री है वहां रात्रीही है और
पांचो प्रकारके उद्योतिषी आद्वाह द्विवके अम्बर है यह सबैव
गमनागमन करते रहते है। चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा।

यैमानिह देवोके दो भेद है. (१) कल्प, (२) कल्पप्रतिष्ठित.
जो कश्य वैमानवासी देव है उनोमे इन्द्र सामानिक आदि देवो
का छोटा बट्टापणा है जिनोके बारहा भेद है सौधर्मकल्प, इशान-
कल्प सनस्कृमार, महेश्वर ब्रह्मदेवलोक लेतकदेवलोक महाशुक-
देवलोक सहस्रादेवलोक अणुदेवलोक पणतदेवलोक अरण्यदेव-
लोक अच्युतदेवलोक ॥ जो तीन कल्पिषीदेव है वह मनुष्यमवधे
आधार्योपाध्यायके अवगुण धाद योल्के कल्पिषीदेव होते है वहां-
पर अकण्ठ देव उनोसे अश्रुत रखने है. अपने विमानमे जाने नही
देने है अर्थात् यहा भारी तिरस्कार करते है जिनोके तीन भेद
है (१) तीन पत्थोपमकि स्थितिवाले पहले दुसरे देवलोकके
बाहार रहने है (२) तीन मागरोपमकी स्थितिवाले तीसरा चौथा
देव डाकक बाहार रहने है (३) तेरह मागरोपमकी स्थितिवाले
छठा देव डोकके बाहार रहने है और पांचमा देवलोकके तीसरा
गि नामक परतम नौ डोकानिकदेव रहते है उनोका नाम

सारस्यत आदित्य यनय चारुण गन्धोतीये तुनीये अठ्पापाद्
अगिषा और रिष्ट ॥

कल्पातिष्ठ-जहां छोटे घटेका कायदा नहीं है अर्थात् जहां
सबदंश अहमिदा है उनोके दो भेद है प्रीयग और अनुत्तर
धैमान जिस्में प्रीयैगके नौ भेद है यथा—भदे सुभदे सुजाये सुमा-
नसे सुदर्शने प्रीयदर्शने आमोय सुपडियुद्धे और यशोधरे । अनु-
त्तरधैमानके पांच भेद है. विजय विजययन्त जयन्त अपराजित
और स्वार्थ सिद्ध धैमान इति १-१५-१६-१०-१२-९-३-९-५
एवं ९९ प्रकारके देवताके पर्याप्ता अपर्याप्ता करनेसे १९८ भेद
देवताके होते हैं देवताके स्थान=भुवनपतिदेवता अधोलोकमें
रहते हैं पाणमित्र (व्येतर) ज्यांतिपीदेव तीर्थांलोकमें और धैमा-
निकदेव उर्ध्वलोकमें निवास करते हैं इति ।

उपर यत्तलाये हुये ५६३ भेद जीशोका संक्षेपमें निर्णय--

१४ नरक माताका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४८ तीर्थचके मृक्षम पृथ्वीकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता याद्वर
पृथ्वीकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता एवं ४ भेद अपकायके चार भेद
नडकायके चार भेद प्रायुकायके चार भेद और घनास्पति जा
मृक्षम माधारण प्रत्येक इन तीनोंमें पर्याप्ता अपर्याप्ता में छ भेद
मालाक २० भेद ये इन्द्रिय तन्द्रिय चौरिन्द्रिय इन तीनोंके
पर्याप्ता अपर्याप्ता मालाके ६ भेद तीर्थच पचिन्द्रियके जलचर
स्थलचर खचर उरपुर भूतपुर यह पांच मही और पांच असंज्ञा
माल दश भेद इनोके पर्याप्ता अपर्याप्ता मालके २० भेद होते हैं
२२-६-१० एवं ४८ भेद ।

३०३ मनस्य कर्मभूमि १२ अकर्मभूमि ३० अन्तर द्विपा ७६

मीलाके १०१ भेद इनांके पर्याप्ता अपर्याप्ता करनेसे २०२ एकसो-
एक मनुष्योंके चौदा ग्यानमे समुत्तम जीव उत्पन्न होते है वह
अपर्याप्ता होनेसे १०१ मीलाकेसब ३०३ देवतोंके दशमुवन-
पति १५ परमाधामी १६ बाणमित्र १० व्रजम्भक दश जोतीषी
बारहा देवलोक तीन कल्पिणी नौ लोकाग्निक नौ प्रीतिग पाँच
अनुर व्रैमाण पर्व ९९ इनांके पर्याप्ता अपर्याप्ता मीलाके १९८ भेद
दूधे १४-४८-३०३-१९८ पर्व जीव तावके ५६३ भेद होते है इनके
लिखाय अगर अलग अलग किया जाये तो अनेके जाँचोंके अनेके
मदमी हो सकते है । इति जीव तत्त्व ।

(२) अजीवतापके जडलक्षण-ईतग्यता रहित पुण्यपापका
अकर्ता सुख दुःखके अभावा पर्याय प्राण गुणग्यान रहित द्रव्यसे
अजीव शाश्वता है मृत कालमें अजीव या वर्तमान कालमें अजीव
है भविष्यमें अजीव रहेगा नीनों कालमें अजीवका जीव होने
नही. द्रव्यसे अजीवद्रव्य अनेके है ईश्वरसे अजीवद्रव्य कोकाकाक
व्यापक है कालसे अजीवद्रव्य अनादि अनेक है भावसे अगुण
रूपपर्याय संयुक्त है. नाम निर्देशासे अजीव नाम है व्यापना
निर्देशा अजीव पसे अधर तथा अजीवदि व्यापना करना. द्रव्य
से अजीव अचना नुजांकी काममें नही ले. भावसे अजीव अचना
नुजांकी अर्थके काममें आवे जैसे कीसीक पाल एक लकड़ी है
अवनक उन मनुष्यक वह लकड़ी काममें न आती हा लवनक उन
मनुष्यदि अचना वह लकड़ा द्रव्य है जोर वह ही लकड़ी उन
मनुष्यक काममें आति है तब वह लकड़ा भावमाना जाता है

अजीवतापके जडलक्षण-ईतग्यता रहित पुण्यपापका
अकर्ता सुख दुःखके अभावा पर्याय प्राण गुणग्यान रहित द्रव्यसे
अजीव शाश्वता है मृत कालमें अजीव या वर्तमान कालमें अजीव
है भविष्यमें अजीव रहेगा नीनों कालमें अजीवका जीव होने
नही. द्रव्यसे अजीवद्रव्य अनेके है ईश्वरसे अजीवद्रव्य कोकाकाक
व्यापक है कालसे अजीवद्रव्य अनादि अनेक है भावसे अगुण
रूपपर्याय संयुक्त है. नाम निर्देशासे अजीव नाम है व्यापना
निर्देशा अजीव पसे अधर तथा अजीवदि व्यापना करना. द्रव्य
से अजीव अचना नुजांकी काममें नही ले. भावसे अजीव अचना
नुजांकी अर्थके काममें आवे जैसे कीसीक पाल एक लकड़ी है
अवनक उन मनुष्यक वह लकड़ी काममें न आती हा लवनक उन
मनुष्यदि अचना वह लकड़ा द्रव्य है जोर वह ही लकड़ी उन
मनुष्यक काममें आति है तब वह लकड़ा भावमाना जाता है

स्कन्ध, तीन प्रदेशी स्कन्ध एवं चार पांच याषन् दश प्रदेशी स्कन्ध संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, अनंख्यात प्रदेशी स्कन्ध, अनंत प्रदेशी स्कन्ध कहे जाते हैं. निम्नयनयसे परमाणु त्रीस वर्णका होते हैं यह उसी वर्णपणे रहते हैं कारण यन्तुधर्मका नाश कीसी प्रकारसे नहीं होता है व्ययहारनयसे परमाणुओंका परायतन भी होते हैं व्ययहारनयसे एक पदार्थ एक वर्णका कहा जाता है जैसे कोयल श्याम, तोताहरा, मांमलीया लाल, हस्दी पीली, हंस सुपेद परन्तु निम्नयनयसे इन सब पदार्थोंमें वर्णादि चीसों बोल पाते हैं कारण पदार्थोंके व्याख्या करनेमें गौणता और मुख्यता अवश्य रहती है जैसे कोयलकी श्याकपर्णा कही जाती है यह मुख्यता पेशासे कहा जाता है परन्तु गौणतापेशासे उनोके अन्दर पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श भी मीलते हैं इसी अपेक्षा-नुसार पुद्गलोंके ५३० भेद कहते हैं यथा पुद्गल पांच प्रकारसे प्रणमते हैं (१) वर्णपणे (२) गन्धपणे (३) रसपणे (४) स्पर्शपणे (५) संस्थानपणे इतोंके उत्तर भेद २५ हैं जैसे वर्ण श्याम हरा, रक्त (लाल), पीला, सुपेद. गन्ध दो प्रकार सुभिगन्ध, दुभिगन्ध, रस-तिक्त, कटुक, कषायन, अम्लील, मधुर, स्पर्श, कर्कश, मृदुल, गुरु, लघु, शीत उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष. संस्थान-परिमंडल (चुडीके आकार) घट (गोल लड्डुके आकार) तंम (तीखुणासीघोडेके आकार) चौरम-चौकीके आकार, आयत-रत्न (लघा चामके आकार) पथ ५-२-५-८-५ मीलाके २५ भेद होते हैं ।

कालावर्णकि पृच्छा शेष चार वर्ण प्रतिपक्षी रत्नके शेष कालावर्णम द्वा गन्ध पांच रस, आठ स्पर्श पांच संस्थान पथ २० बोल मीलते हैं इतों मार्कीक द्वावर्णकि पृच्छा शेष चार वर्ण

प्रतिपक्षी है उन हरावर्णमें दो गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श, पांच संस्थान एवं बीस बोल पाये इसी माफीक लालवर्णमें २० बोल पीला वर्णमें २० बोल प्रवेतवर्णमें २० बोल. कुल पांचो वर्णोंके १०० बोल होते हैं। सुभि गन्धकि पृच्छा दुर्भिगन्ध रदा प्रतिपक्षी जिस्में बोल पांच वर्ण पांच रस, आठ स्पर्श, पांच संस्थान एवं २३ बोल पाये इसीमाफीक दुर्भिगन्धमें भी २३ बोल पाये एवं गन्धके ४६ बोल रस तिक्त रसकि पृच्छा च्यार रस प्रतिपक्षी जीस्में बोल पांच वर्ण, दो गन्ध, आठ स्पर्श, पांच संस्थान एवं २० एवं कटुकमें २० कपायलेमें २० आम्यिलमें २० मधुगमें २० मय मीलानेसे रसके १०० बोल होते हैं।

ककंशस्पर्श कि पृच्छा मृदुलस्पर्श प्रतिपक्षी शंघ बोल पांच-वर्ण दोगन्ध पांच रस छे स्पर्श पांच संस्थान एवं बोल २३ पाये एवं मृदुल स्पर्शमें भी २३ बोल पाये एवं गुरु स्पर्श कि पृच्छा लघु प्रतिपक्ष बोल २३ पाये एवं लघुमें २३ शीतकि पृच्छा उष्ण प्रतिपक्ष बोल २३ एवं उष्णमें २३ बोल स्निग्ध कि पृच्छा क्रक्ष प्रतिपक्ष बोल पाये २३ इसी माफीक क्रक्ष स्पर्शमें भी २३ बोल पाये. परिमण्डल संस्थान की पुच्छ च्यार संस्थान प्रति पक्ष बोल पाये पांच वर्ण दोगन्ध पांच रस आठ स्पर्श एवं २० बोल. इसी माफीक षट संस्थानमें २० तंस संस्थानमें २० चौरंस संस्थानमें २० आशतान संस्थानमें २०। कुल बोल वर्णोंके १० गन्धके ४६ रसके १०० स्पर्शके १० संस्थानके १० एवं मीलाने २३० बोल और पक्ष अरुपीय ३ बोल एवं अजीव तन्धके २६ भेद होते हैं इनके मिश्रण अजीव तन्ध अनेके हैं उनमें अनेके भेद भी होते हैं इति अजीवतत्त्व

१३ पु. ग. ३. ५५ द. न. २००० है पु. ग. ३. ५५ पु. ग. ५. ५५ पु. ग. ५. ५५

है और मुख्यपूर्वक भागवीये ज्ञाते हैं जब जीवके पुंस्य उदय रस विपाक में आते हैं तब अनेक प्रकारसे इष्टपदार्थ सामग्री प्राप्त होती है उनके जसिंसे देवादिके पौद्गलिक सुखोंका अनुभव करते हैं परन्तु मांशार्थी पुरुषोंके लिये यह पुंस्य भी सुवर्ण कि येही मुख्य है यद्यपि जीवकी उच्च स्थान प्राप्त होनेसे पुंस्य अत्यन्त महायत्नाभूत है जिसे कोसी पुरुषको समुद्र पार जाना है तो भीका कि आवश्यकता जरूर होती है इसी माफीक मोक्ष ज्ञानेवालोंकी पुंस्यरूपी भीकाकी आवश्यकता है माफीक पुंस्य-पक्ष संसार भटकी उल्लगनेके लिये शोभाशकी माफीक महायत्न तरीके हैं यह पुंस्य भी कारणोंसे सम्धाना है यथा—

- (१) अन्न पुंस्य-कीर्माकी अज्ञानादि भोजन करनेसे ।
- (२) पाणी जल प्यासोंकी जल पीजानेसे पुंस्य होते हैं ।
- (३) लेण पुंस्य-सकाम आदि स्थानका आशय देतासी ।
- (४) संज्ञापुंस्य-शुद्ध्या पाट पाटला आदि देनेसे पुंस्य ।
- (५) वस्त्रपुंस्य-वस्त्र कस्त्रल आदि के देनेसे पुंस्य ।
- (६) ममपुंस्य-दुमरीके लिये अष्टा मम रसनेसे ।
- (७) वचनपुंस्य-दुमरीके लिये अष्टा ममू वचन योद्धनेसे ।
- (८) काय पुंस्य दुमरीकी व्यायस या बन्दी बतानेसे ।
९. ममस्कार पुंस्य शुद्ध भावीसे ममस्कार करनेसे ।

इन ती कारणांसि पुंस्य सम्पत्ते है वह जीव भविष्यमें उक्त पुंस्यका फल ही सम्पत्तसि प्राप्तने है यथा—

ममस्कारकी शरार आवाग्यनादि, अन्नार्थानि उच्चगीय, मनुष्यकी मनुष्यानुपूर्वां कवगति देवानुपूर्वी पाल्यिष्टवत्तानि भीका-रूपेण ताः । वैश्वर शरार आदिसक शरार महल शरीर कामेण शरार आदिसक शरार अनापान वैश्वशरीर अनापान, आहारीक

शरीर अंगोपांग. यज्ञ अथवा नारायणसंहनन, मन्त्रचतुस्रसंस्कार, शुभ
 कर्ण, शुभगंध शुभरस, शुभस्पर्श, अगुण लघु नाम (उपादा भारीभी
 नहीं ज्यादा हलका भी नहीं) पराधान नाम. (पल्लवानकी भी
 पराजय करनके) उश्वास नाम (श्वासोश्वास मृगपृथक् ले मके)
 आताप नाम. (आप शीतल होनेपर भी दुमरीपर अपना पुरा
 असर पाड़े) उद्योत नाम, (सूर्य कि. माफीक उद्योत करने वाला
 हो) शुभगति (गजकी माफीक गति हो) निर्माण नाम,
 (अंगोपांग स्वस्थस्थानपर हो) प्रम नाम, पादर नाम, पर्याप्त
 नाम प्रत्येक नाम, स्थिर नाम (दांत टाढ मज्जपुत हो) शुभ
 नाम (नार्थिके उपरका अंग सुशोभित हो तथा हरिके कार्यमें
 दुनिया तारीफ करे) सौभाग्य नाम (सब जीवोंकी प्यारा लगे
 और सौभाग्यकी भोगये) सुस्वर नाम जिस्का (पंचम स्वर
 जैसा मधुर स्वर हो) आर्ह्य नाम (ज्ञानोका वचन सब लोग
 माने) यशो कीर्ति नाम-यश एक देशमें कीर्ति बहुत देशमें,
 देवतोका आयुष्य, मनुष्यका आयुष्य, तीर्थक्षका शुभ आयुष्य,
 और तीर्थकर नाम, जिनके उदयसे तीनलोगमें पूजनिक होते हैं
 एवं ४२ प्रकृति उदय रम विषाक आनेसे जीवकी अनेक प्रकारसे
 आटलाद सुख देती है जिस्के जरिये जीव धन धान्य शरीर
 कुटम्बानुकूल आदि सर्व सुख भोगवता हुआ धर्मकार्य साधन
 कर सबे इसी धाम्ने पुण्यका शास्त्रकारोंने बोल्लाया समान मदद
 गार माना हुआ है इति पुण्यनन्द

८ पापनशक नशम पल सुखपक्षय धाम्ने है. दुःख-
 पक्षक भागवते है जब जीवोंके पाप रह्य होत है तब अनेक
 प्रकारे अनिष्ट दशा हो नरकादि गतिमें अनिष्ट प्रकारके दुःख
 रम विषाकके भागवते पढ़ने है कारण नरकादि गतिमें मूरुप

स्थिति चारुहमाम. गति तीर्थच्छकी । प्रत्याख्यानी क्रोध-गाढाकी लीक. मान-काहका स्थंभ. माया-घालने वैलुका माया. लोभ-का जलका रंग (घात करेती संयमकी स्थिति क्यार मामकी गति मनुष्यकी) मंड्यलनके. क्रोध (पाणीकी लीक) मान (मृणके. स्थंभ) मायासांमकी छाल. लोभ (हल्द पत्तंगका रंग) घात धीतराग ताकी स्थिति क्रोधकी दो मान मानकी एक माम, मायाकी पंद्रादीन, लोभकी अतरमहुते. गति देखतीकी करे. और हांनो (ठठा मरकरी . भय. शोक. जुगप्सा रति अरति. ग्रियेद. पुरुषयेद. नपुनकयेद. नरकायुष्य नरकगति नरकानुपूर्ति, तीर्थच्छगति. तीर्थचानुपूर्ति परेन्द्रियजाति घेरन्द्रियजाति चोरिन्द्रियजाति श्लेष नाराचसंहनन नाराच० अर्द्धनाराच० किलकी० छेयटी संहनन. निमोदपरिमडल सस्यान. सादीयां० यधनस० कुट्टजमं० हुंडकमं० स्वाधरनाम सूक्ष्मनाम अपर्वामानाम साधारणनाम, अशुभनाम अस्मिन्नाम दुर्भाग्यनाम दुःस्वरनाम अनादेयनाम अयशनाम अशुभागतिनाम. अपघातनाम निचगोत्र अशुभघर्ण गन्ध रस स्पर्श—दानान्तराय लाभान्तराय भोगान्तराय उपभोगान्तराय स्त्रीयान्तराय एवं पापकर्म - प्रकारसे भोगधीया जाते है इति पापतत्त्व

अथ चतुस्रं जायते शमाशम प्रवृत्तिसे पुन्य पाप रूपा इमं मानसं गणना जेसे जीवरूपा तलाध कर्मरूपा ताला पुन्य पापरूपा पाणाव आनसे जाय गरु हो समारसे परिभ्रमन करत है उमे भाधयनय कहत है जिस्के सामान्य प्रकारसे उमे उदर मिथ्यावाधय यावन सूची कुशमात्र जय-नासे जेना रखना भाधय (देवी पैंतीस थालसे लीदधा यात्र विशेष उमे प्रकार प्राणानिपात । जीवहिंसा

करना) मृदापाद (मृत् घोळता) भरसात्तात खोरीका करता.
 मैथुन, परिग्रह (समर्थ यदाता) धोनेन्द्रिय यभ्रुहन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय
 रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय मन चक्षुष काय इत आटोकीं सुखा रचना
 अर्थात् अल्पने कष्टज्ञाने न रचना आधय है कोध मान माया लाभ
 पक्ष १७ घोळ हूये। अथ क्रिया कहते है.

काइयाक्रिया-अवस्थासे हलना चलना तथा अवलने
 अधिगरणियाक्रिया-नये शस्त्र यनाता तथा पुराने तैयार करान
 पायम्पीयाक्रिया-जीवाजीवपर इवभाष रचनेसे
 परतापनियाक्रिया-जीवोंकी परिताप रनेसे
 पाणाइवाइक्रिया-जीवोंकी प्राणसे मारनेसे
 आरंभीयाक्रिया-जीवाजीवका आरंभ करनेसे
 परिग्रहक्रिया-परिग्रहण समर्थ मृच्छा रचनेसे
 मायवर्तीयाक्रिया-कपटाइसे इजाय गुणध्वानक तद
 मिथ्याज्ञानक्रिया-साधक अधिज्ञान रचनेसे
 अज्ञानध्वानकर्तृक्रिया-साधकध्वान न करनसे
 दिडायाक्रिया-ज्ञानसाधक मंगलसे दुखता
 तृप्त्याक्रिया-ज्ञानसाधक मंगलसे दुखता
 तृप्त्याक्रिया-ज्ञानसाधक मंगलसे दुखता
 साधनवर्तय-साधन चक्षुषा दुखता-साधन चक्षुषव
 साधन ११ १२से

सहस्रिय क्रिया-साधन चक्षुष दुखता-साधन चक्षुष
 साधन चक्षुष दुखता-साधन चक्षुष दुखता-साधन चक्षुष

साधन चक्षुष दुखता-साधन चक्षुष दुखता-साधन चक्षुष

साधन चक्षुष दुखता-साधन चक्षुष दुखता-साधन चक्षुष
 साधन चक्षुष दुखता-साधन चक्षुष दुखता-साधन चक्षुष

अथ सामान्य प्रकारसे निज्जराके बारहा भेद इसी माफ़ीक है । अनसन, उमोदरी, भिक्षाचरी, रस परिष्कार, कायाक्लेश, प्रतिसंलेपना, प्रायश्चित्त, विनय, वेद्यावच, स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग इनोके विशेष ३२४ भेद है ।

अनसन तपके दो भेद है (१) स्वरूपमयांशितकाल (२) यावत् जीय जिम्मे स्वरूपकालके तपका छे भेद है धंजितप, परतरतप, घनतप, वर्गंतप, वर्गाथर्गंतप, आकरणीतप.

धंजितपके चौदा भेद ह एक उपवास करे, दो उपवास करे, तीन उपवास करे, चार उपवास करे, पांच उपवास करे, छे उपवास करे, सात उपवास करे, अठ्ठ मास करे, मास करे, दो मास करे, तीन मास करे, चार मास करे, पांच मास करे, छे मास करे.

परतरतप जिम्मे सोलह पारणा करे देखो यथसे. एसी चार परिपाटी करे पहले परपाटीमे विगड रहित आहार करे दूसरी परपाटीमे विगड रहित आहार करे तीसरी परपाटीमे लेप रहित आहार करे चार्थी परपाटीमे पारणक दिन प्राविन्द

१	२	३	४	एक एक उपवास कर पारणा करे
५	६	७	८	चार दो उपवास कर पारणा कर तीन उपवास कर, पारणा कर चार उपवास कर यह पहली परिपाटी हू
९	१०	११	१२	इसी माफ़ीक कालके एक माफ़ीक तपस्या कर अन्तरांमे पारणा करे
१३	१४	१५	१६	पथ चार परिपाटी कर घनतप

चौमथ पारणा कर चार परिपाटी करेवन समझना ।

(२) इंगीतमरण, (३) पादुगमन, जिसमें भक्तप्रत्याख्यान मरण जैसे कारणसे करे अकारण से करे, धामनगरके अन्दर कने, जंगल पर्यंत आदिके उपर करे, परन्तु यह अनसन सप्रतिक्रमण होते हैं। अर्थात् यह अनसन करनेवाले व्याघ्र करत भी हैं और कराते भी हैं कारण हो तो विहार भी कर सकते हैं दूसरा इंगीतमरणमें इतना विशेष है कि भूमिकाकी मर्यादा करते हैं उन भूमिसे आगे नहीं जा सके शेष भक्तप्रत्याख्यानकी माफीक। तीसरा पादुगमन अनसनमें यह विशेष है कि यह छंदा हुआ युद्धकी डालके माफीक जोस आसन से अनसन करते हैं फीर उन आसनकी पड़लाने नहीं है। अर्थात् काटकी माफीक निश्चलपणे रहते हैं उतोंके अप्रतिक्रमण अनसन होने हैं यह धम्मप्रवभनाराथ बंधनतवाला ही कर सकते हैं इति अनसन.

(२) औणोद्रीतपके दो भेद हैं. (१) द्रव्य औणोद्री (२) भाव औणोद्री जिसमें द्रव्य औणोद्रीके दो भेद हैं (१) औपधि औणोद्री (२) भास पाणी औणोद्री. औपधि औणोद्रीके अनेक भेद हैं जैसे स्वरूपवस्त्र, स्वरूप पात्र, जीर्णवस्त्र, जीर्णपात्र, एकवस्त्र, एकपात्र, द्वायस्त्र, द्वी पात्र इत्यादि दुसरा आहार औणोद्रीके अनेक भेद हैं अर्थात् आहार स्वराक हो उनको ३२ विभाग करके उतों से आठ विभागका आहार करे ता तीन भागका औणोद्री जाती है और बारहा विभागका आहार करे ता आधामे अधिक० साठहा विभागका आहार करे ता आदि० च्यावास विभागका आहार करे ता एक हास्माका औणोद्री जाती है अथ ३२ विभागका आहार कर एक विभाग वा कम स्व व ता उत विविन् औणोद्री और एक विभागका हा आहार कर ता उ-३२ औणोद्री जाती है अर्थात् अथना स्वराकम विस्वा प्रकरम कम खाना उतें औणोद्री तप

भाष्य औषाद्गीकः अनेक भेद हैं. लोभ नहीं करने, मान नहीं करने, भाषा नहीं करने, लोभ नहीं करने, मागद्वेष नहीं करने, द्वेष न करने फलेन्द्रा नहीं करने, हास्य भयादि नहीं करने अर्थात् जो कर्मवृत्तियं कारणाः उनीको प्रमत्तः काम करना उभं औषाद्गी कहते हैं ।

(३) भिक्षाचार्यो-मुनि भिक्षा करनको जाते हैं उम ममद्य अनेक प्रकारके अभिग्रह करतें हैं यह उत्तमर्ग मार्ग हैं जीतना जीतना शान सहित पायाको कष्ट देना उतनी उतनी कर्मनिर्जरा अधिक होती हैं उनी अभिग्रहोंके यदांपर तौम घाल यत्कार्ये जाते हैं । यथा—

- (१) द्रव्याभिग्रह-अमुक द्रव्य मीले तो लेना.
- (२) क्षत्राभिग्रह अमुक क्षत्रमें मीले तो लेना.
- (३) कालाभिग्रह-अमुक टाह्रममें मीले तो लेना.
- (४) भाषाभिग्रह-पुरण या स्त्री इस रूपमें दे तो लेना.
- (५) उषसीताभिग्रह-यरतन से निकालके देये तो लेना.
- (६) निषसीताभिग्रह-यरतनमें डालताहुया देयेंतां लेना.
- (७) उषसीतनिषसीत-य० निकालते डालते दे तो लेना.
- (८) निषसीतउषसीत-य० डालते निकालते दे तो लेना.
- (९) घट्टाञ्जाभिग्रह मंत्रते हृये आहार दे तो लेना
- (१०) साहाय्याञ्जाभिग्रह पक्ष यरतन से दमरे यरतनमें डालते हय देये ता जना
- (११) यरतन अभिग्रह शतार गण कानन करत :
हार देये ता लेना

- (१२) अथनित अभिग्रह-दातार अथगुण बोलके आहार देये तो लेना
- (१३) उथनित अथनित-पहले गुण और पीछे अथगुण करते हुये आहार देये तो लेना.
- (१४) अथ० उथ० पहले अथगुण और पीछे गुण करता देये
- (१५) संसट्ट ,, पहलेसे हाथ खरडे हुये हो यह देये तो लेना
- (१६) असंसट्ट ,, पहलेसे हाथ साफ हो यह देये तो लेना
- (१७) तन्नत ,, जोम द्रव्यसे हाथ खरडे हो यहही द्रव्य लेये.
- (१८) अणयण ,, अज्ञात कुलकि गौचरी करे ।
- (१९) मोंण ,, मौनव्रत धारण कर गौचरी करे ।
- (२०) दिट्टाभिग्रह, अपने नेत्रोंसे देखा हुआ आहार ले.
- (२१) अदिट्ट ,, भाजनमें पडा हुआ अदेखा हुआ " लेये.
- (२२) पुट्टाभिग्रह पुच्छके देये क्या मुनि आहार लोगे तो लेना.
- (२३) अपुट्टाभिग्रह-चिनो पुच्छे दे तो आहार लेना.
- (२४) भिक्षु ,, आहार रहित तिरस्कारसे देये तो लेना.
- (२५) अभिक्षु ,, आहार सत्कार कर देये तो लेना
- (२६) अणगीत्याये बहुत क्षुधा लगजाने पर आहार लेये.
- (२७) ओषणिया नजोक नजीक घरीकी गाचरी करे
- २८ । परिमल आहारके अनुमानसे कम आहार ले
- २९ अट्टमना एकही जानका नियम आहार ले
- ३० मर्ल'दान दानादिकी मन्ग्याका मान कर

इनके सिवाय पेडागोचरी अदपेडागोचरी संखावृत्तन गो-
चरी घक्रवाल गोचरी गाडगोचरी पतंगीया गोचरी इत्यादि अ-
नेक प्रकारके अभिग्रह कर सकते हैं यह सब भिक्षाचरीके ही
भेद हैं ।

(४) रस परित्यागतपके अनेक भेद हैं सरसादारका त्याग,
निषी करे, आंघिल करे ओसामणसे एक सौतले, अरस आदार ले
विरस आदार ले, लुय आदार ले, तुच्छ आदार ले, अन्तादार
ले, पांतादार ले, पचा हुआ आदार ले, फोड़ रांक भिक्षु, काग
कुत्ते भी नहीं घांछें एस फालुक आदार ले अपनि संयमयात्राका
निर्यादा करे.

(५) कायाश्लेशतप-काष्टिक माफीक खडा रहे, ओकट्ट
आसन करे, पद्मासन करे, पीरासन निपेघासन दंडासन लगडा-
सन, आमखुज्जासन, गोदुआसन, पीलांकासन, अधोशिरासन,
सिद्धामन, कोचासन, उष्णकालमें आनापना ले, शीतकालमें
पखट्टूर रस ध्यान करे, थुक थुके नहीं खाज गीणे नहीं मैल उत्तारे
नहीं, शरीरकी चिभूषा करे नहीं और मस्तकका लोच करे
इत्यादि.

६ पडिसलीपतानपके चार भेद (१) कपाय पडिस-
लेपता याने नयाकपाय करे नहीं उदय आयेको उपशान्त करे
त्रिम्ब चार भेद पांच मान माया लाभ । २ इन्द्रिय पडिस-
लेपता इन्द्रियाय विषय विशारमे ज्ञानेकी राख उदय आये
विषय विषय उपशान्त कर त्रिम्ब पांच भेद हैं धात्रेन्द्रिय
बभ्रुइन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय : याने
पडिसलीपतान पांच भेद पांच माया लाभ । ३ याने
याने पांच भेद पांच माया लाभ । ४ याने पांच भेद पांच
माया लाभ । ५ याने पांच भेद पांच माया लाभ । ६ याने
पांच भेद पांच माया लाभ । ७ याने पांच भेद पांच माया लाभ ।

- (१२) अयनित अभिग्रह-दातार अयगुण बोलके आहार देये तो लेना
- (१३) उयनित अयनित-पहले गुण और पीछे अयगुण करते हुये आहार देये तो लेना.
- (१४) अय० उय० पहले अयगुण और पीछे गुण करता देये.
- (१५) संसट्ट ,, पहलेसे हाथ खरडे हुये हो यह देवे तो लेना
- (१६) असंसट्ट ,, पहलेसे हाथ साफ हो यह देवे तो लेना.
- (१७) तप्त ,, जोम प्रथसे हाथ खरडे हो यहही प्रथ लेये.
- (१८) अणयण ,, अज्ञात कुट्टि गौचरी करे ।
- (१९) मोण ,, मौनव्रत धारण कर गौचरी करे ।
- (२०) दिट्टाभिग्रह, अपने नेत्रोंसे देखा हुआ आहार ले.
- (२१) अदिट्ट ,, भाजनमें पडा हुआ अदेखा हुआ " लेये.
- (२२) पुट्टाभिग्रह पुच्छके देये क्या मुनि आहार छोर्गे तो लेना.
- (२३) अपुट्टाभिग्रह-यिनो पुच्छे दे तो आहार लेना.
- (२४) भिक्ष ,, आदर रहित तिरस्कारसे देये तो लेना.
- (२५) अभिक्ष ,, आदार सम्कार कर देये तो लेना
- (२६) अणगीलाये . बहुत शुधा लगजाने पर आहार लेये.
- (२७) आंगणिया नजीक नर्जाक घरीकी गौचरी करे
- (२८) परिग्रह आहारय अनुमानसे कम आहार ले
- २९ श्रुट्टमना पकही ज्ञानका निवेद्य आहार ले
- ३० संसोदान दानादिकी समयाका ज्ञान करे

इनके सिवाय पेढागोचरी अदपेढागोचरी संग्रावृतन गो-
चरी चमत्काल गोचरी गाउगोचरी पतंगोया गोचरी इत्यादि अ-
नेक प्रकारके अभिप्राय कर सकते हैं यह सब भिक्षाचरीके ही
भेद हैं ।

(४) नम परिन्यागतपके अनेक भेद हैं सरसादारका प्याग,
निधी करे, आंगिल करे ओसामणसे एक सीतले, अरस आहार ले
यिरस आहार ले, लुग आहार ले, नुच्छ आहार ले, अन्ताहार
ले, पांताहार ले, घचा हुया आहार ले, कोइ रांक भिक्षु, काग
कुते भी नही घांच्छे एस फानुक आहार ले अपनि मंयमयाशका
निर्घाहा करे.

(५) कायाकलेशतप-काएफि माफीक खडा रहे. ओकट्ट
आसन करे, पद्मासन करे, धीरासन निपेघासन दंडासन लगडा-
सन, आसखुच्चासन, गोदुआसन, पीलांकासन, अधोशिरासन,
सिंहामन, कोचासन, उष्णकालमें आतापना ले, शीतकालमें
घखदूर रम्य ध्यान करे. थुक थुके नही खाज गीणे नही मैल उत्तारे
नही, शरीरकी विभूषा करे नही और मस्तकका लोच करे
इत्यादि.

। ६ पडिसलीणतातपके च्यार भेद (१) कपाय पडिस-
लेणता याने नयाकपाय करे नही उदय आयेको उपशान्त करे
जिस्के च्यार भेद क्रोध मान माया लोभा। (२) इन्द्रिय पडिस-
लेणता. इन्द्रियोंके विषय विकारमें जातेको रोके उदय आये
विषय विकारको उपशान्त करे जिस्के पांच भेद हैं धोर्षेन्द्रिय
घक्षुइन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय । ३) योग-
पडिसलिणता । अशम भागोंके व्यापारकों रोकें और शुभ योगों
के व्यापारमें प्रवृत्ति करे जिस्के तीन भेद हैं मनयोग, वचन

- (१२) अथनित अभिग्रह-दानार अथगुण बोलके आहार देये तो लेना
- (१३) उथनित अथनित-पहले गुण ओर पीछे अथगुण करते हुये आहार देये तो लेना.
- (१४) अथ० उथ० पहले अथगुण और पीछे गुण करता देये.
- (१५) संसट्ट ,, पहलेसे हाथ खरडे हुये हो यह देये तो लेना
- (१६) असंसट्ट ,, पहलेसे हाथ साफ हो यह देये तो लेना.
- (१७) तञ्जत ,, जोम द्रव्यसे हाथ खरडे हो बहती द्रव्य लेये.
- (१८) अणयण ,, अज्ञात कुलकि गोचरी करे ।
- (१९) मोण ,, मीनव्रत धारण कर गोचरी करे ।
- (२०) दिट्टाभिग्रह, अपने नेत्रोंसे देखा हुआ आहार ले.
- (२१) अदिट्ट ,, भाजनमें पडा हुआ अदेसा हुआ " लेये.
- (२२) पुट्टाभिग्रह पुच्छके देये क्या मुनि आहार लोंगे तो लेना.
- (२३) अपुट्टाभिग्रह-बिनो पुच्छे दे तो आहार लेना.
- (२४) भिक्ख ,, आदर रहित तिरस्कारमे देये तो लेना.
- (२५) अभिक्ख ,, आदार सत्कार कर देये तो लेना
- (२६) अणगीलाये ,, बहुत शुधा लगजाने पर आहार लेये.
- (२७) ओणणिया ,, नजीक नजीक घरीकी गोचरी करे.
- (२८) परिमत ,, आहारके अनुमानसे कम आहार ले.
- (२९) नुद्धमना एकही मात्रका निर्यय आहार ले
- ३० : मनीदान , दानादिकी मर्यादा मान करे

- (१२) अयनित अभिग्रह-दातार अयगुण बोलके आहार देवे तो लेना
- (१३) उयनित अयनित-पहले गुण और पीछे अयगुण करते हुये आहार देवे तो लेना.
- (१४) अय० उय० पहले अयगुण और पीछे गुण करता देवे.
- (१५) संसट्ट ,, पहलेसे हाथ खरडे हुये हो यह देवे तो लेना
- (१६) असंसट्ट ,, पहलेसे हाथ साफ हो यह देवे तो लेना.
- (१७) तन्नत ,, जोम प्रव्यसे हाथ खरडे हो यहही प्रव्य लये.
- (१८) अणघण ,, अज्ञान कृष्कि गौचरी करे ।
- (१९) मीण ,, मौनव्रत धारण कर गौचरी करे ।
- (२०) दिट्टाभिग्रह, अपने नेत्रोंमें देखा हुआ आहार ले.
- (२१) अदिट्ट ,, माजतमें पढा हुआ अदेखा हुआ " लये.
- (२२) पुट्टाभिग्रह पुच्छके देवे क्या मुनि आहार लोने तो लेना.
- (२३) अपुट्टाभिग्रह-बिनो पुच्छे दे तो आहार लेना.
- (२४) भिक्ख ,, आदर रहोत तिरस्कारमें देवे तो लेना.
- (२५) अभिक्ख ,, आदास सम्कार कर देवे तो लेना
- (२६) अणगीलाये ,, बहुत थुधा लगजाने पर आहार लये.
- (२७) आंगजिया , नलीक नर्जीक घरीकी गौचरी करे
- (२८) परिमल आहारके अनुमानमें कम आहार ले
- २९ . सुन्दमना एकही ज्ञानका निर्यय आहार ले
- ३० . सेवीदात दानादिकी मर्यादा मान करे

इनके मिश्राय पेढागोचरी अद्रपेढागोचरी संखावृतन गो-
चरी चक्रयाल गोचरी गाडगोचरी पतंगीया गोचरी इत्यादि अ-
नेक प्रकारके अभिग्रह कर सकते हैं यह सब भिक्षाचरीके ही
भेद है ।

(४) रम परिन्यागतपके अनेक भेद हैं मरसाहारका त्याग,
नियी करे, आंचिल करे ओसाभणसे एक सीतले, अरस आहार ले
यिरस आहार ले, लुख आहार ले, नुच्छ आहार ले, अन्ताहार
ले, पांताहार ले, यचा हुया आहार ले, कोइ रांक भिक्षु, काग
कृते भी नहीं घांचल्ले एम फासुक आहार ले अपनि मंयमयाप्राक्ता
निर्घाहा करे.

(५) कायाकलेशतप-काष्टिक माफीक खडा रहे. ओकट्ट
आसन करे, पद्मासन करे, थीरासन निपेधासन दंडासन लगडा-
सन, आम्रगुज्जासन, गोदुआसन, पीलांकासन, अधांशिरासन,
मिहामसन, कौचामसन. उष्णकालमें आतापना ले, शीतकालमें
यम्प्रदूर रख ध्यान करे. थुक थुके नहीं खाज खीणे नहीं मैल उभारे
नहीं शरीरकी विभूषा करे नहीं और मस्तकका लोच करे
इत्यादि

३. पहिमलक्षणतानपक च्याग भेद (१) कपाय पहिम-
लेणतः यान नयाकपाय करे नहीं उदय आयेकी उपशान्त करे
जिम्बे च्याग भेद काय मान माया लाभादा २ इन्द्रिय पहिम
लेणतः इन्द्रियीक विषय विकारमें जानेकी राक उदय आये
विषय विकारका उपशान्त करे जिम्बे पाच भेद ३ आयेन्द्रिय
चक्षुइन्द्रिय श्राणन्द्रिय रसेन्द्रिय और स्पर्शन्द्रिय ४ यान
पहिमलक्षणता । अरुभ भागाक व्यापारका राक और शुभ यान
क व्यापारमें प्रवृति कर जिम्बे तीन भेद हैं मनयाग वचन

याग, काययोग, (४) विषतमयनासन याने छि नपुमक और पद आदि विकारीक निमित्त कारण हो एसे मकानमें न रहे इति इन छे प्रकारके तपको वाद्यतप कहते है ।

(७) प्रायश्चित्ततप-मुनि ज्ञान दर्शन चारित्र्यके अन्व-सम्यक् प्रकारसे प्रवृत्ति करते हुयेकी कदाचित् प्रायश्चित्त ला-बाये, तो उन प्रायश्चित्तकी तत्काल आलोचना कर अपनि आत्माकी विशुद्ध बनाना चाहिये यथा—

दश प्रकारसे मुनिकी प्रायश्चित्त लगते है यथा-कदर्प पीडित होनेसे, प्रमादयम होनेसे, अज्ञातपणेसे, आनुरतासे, आपतियों पडनेसे, शंका होनेसे, महत्मात्कारणसे, भयोत्पन्न होनेसे द्वेषभाष प्रगट होनेसे, शिष्याक परिक्षा करनेसे ।

दश प्रकार मुनि आलोचन करते हुये दोष लगाये कम्पता कम्पता आलोचन करे पहले उन्मान पुच्छे कि अमुक प्रायश्चित्त सेवन करनेका क्या दंड होगा फिर ठीक ज्ञाने तो आलोचना करे । लोकोंने देखा हो उन पापकि आलोचना करे दुमरेकी नही अदेखा हुये दोषकि आलोचना करे । बड़े बड़े दोषोंकी आलोचना करे. छोटे छोटे पापोंकी आलोचना करे. मंद स्वरमें आलोचना करे. जोर जोरके शब्दोंसे० एक पापकी बहुतसे गौतार्थसे पाम आलोचना करे, अगौतार्थोंके पाम आलोचना करे

दशगुणोंका धर्मा हो यह आलोचना करे ज्ञानियन्त
 कलकन्त विनययन्त उपशान्तकपाययन्त जितन्द्रिययन्त
 ज्ञानयन्त दर्शनयन्त चारित्र्ययन्त असाययन्त और प्रायश्चित्त
 कर पञ्चानाम न कर

दशगुणोंके धर्मा के पाम आलोचना छि ज्ञानि है स्वयं
 न च नान्त न ज्ञानयन्त चारित्र्ययन्त हो पाप स्वयंहास
 ज्ञानक हो न्त उदात्त समय हो शब्दकरन याग हो प्राग

लोके मर्म प्रकाश न करे. निर्धांदाकरने योग्य हो अनालोचनाके अनर्थ घतलानेमें चानुर हो. प्रीय धर्मो हो. और दृढधर्मो हो ।

दश प्रकारके प्रायश्चित्त आलोचना, प्रतिग्रामण, दोनों साथमें कराये. विभाग कराना. कायोत्सर्ग कराना. तप, छेद. मूलसे फीर दीक्षा देना. अणुठप्पा. और पारंशिय प्रायश्चित्त इन ५० यो-लौका विशेष खुलासा दे, सो शीघ्रबोध भाग २२ के अन्तमें इति ।

(८) विनयतप जिम्का मूल भेद ७ हैं यथा. ज्ञानविनय, दर्शनविनय, धारिप्रविनय, मनविनय, पचनविनय, कायवि-नय, लोकोपचार विनय. इन सात प्रकार विनयके उत्तर भेद १३४ हैं ।

ज्ञानविनयके पांच भेद हैं मतिज्ञानका विनय करे, धृति-ज्ञानका विनय करे, अर्घधि ज्ञानका विनय करे, मनः पर्यषज्ञानका विनय करे. केवलज्ञानका विनय करे, इन पांचों ज्ञानका गुण करे. भक्ति करे. पूजा करे, यहुमान करे तथा इन पांचों ज्ञानके धारण करनेवालोंका यहुमान भक्ति करे तथा ज्ञानपद कि आराधना करे ।

दर्शन विनयका मूल भेद द्वा है. (१) शुद्ध्या विनय २) अनाशासन विनय. त्रिम्में शुद्ध्या विनयका दश भेद हैं गुरु महाराजका डेग मंडा होना आमनकि आमन्त्रण करना. आमन विन्हादेना चन्दन करना पावान नामाके नमस्कार करना चम्पाद्वद व मन्कर करना गण कानने सम्मान करना गुरु पधारि नो सम्मान लेनका ज्ञाना विराज बहानक सेवा करना पधारि जन मन्में परवानका ज्ञाना इत्यादि इनकी शुद्ध्या विनय करन २

अन अशासन विनयक ८० भेद हैं अग्रिहस्तोषि आशासन

प्रकारका अग्रशस्त विनय होते हैं अर्थात् विनय तो करे परन्तु मन उक्त अशुद्ध कार्योंमें लगा रखे इनोसे अग्रशस्त विनय होते हैं एवं २५ भेद मन विनयका है ।

घघन विनयका भी २५ भेद है. मूल भेद दो. (१) प्रशस्त विनय. (२) अग्रशस्त विनय, दोनोके २५ भेद मन विनयकि माफ़ीक समझना ।

काय विनयके १५ भेद हैं मूल भेद दो (१) प्रशस्तविनय, (२) अग्रशस्त विनय. जिसमें प्रशस्त विनय के ७ भेद हैं. उपयोग सहित यत्नापूर्वक चलना. बैठना उभारहना सुना एक वस्तुको एक दफे उलंघन करना तथा धारंवार उलंघन करना इन्द्रियो तथा कायाको सयं कार्योंमें यत्ना पूर्वक धरताना. इसी माफ़ीक अग्रशस्त विनयके ७ भेद हैं परन्तु विनय करते समय कायाको उक्त कार्योंमें अयत्नासे धरताये एवं १५.

लोकोपचार विनयके ७ भेद हैं यथा (१) सदैव गुरुकुल-धानाको सेवन करे (२) सदैव गुरु आज्ञाको ही परिमाण करे और प्रवृत्ति करे (३) अन्य मुनियोका कार्य भि यथाशक्ति करवे परकी माना उपजाये ४ हुमरोका अपने उपर उपकार है जो उनोके बहसेमें प्रत्युपकार करना ५ ग्यानि मुनियो कि गवेधन कर इनोके स्वायच्छ करना ६ द्रव्य क्षेत्र काल भाषका ज्ञानका इन भाषायाहि सब सबका विनय करना ७ सब साधुषाक सब कर्मस सबका प्रसन्नता रखना यहही अग्रक विनय है इति

यद्यपि नवक इति भद्र के भाषाये महाराज उपा-
यद्यपि नवक इति भद्र के भाषाये महाराज उपा-
यद्यपि नवक इति भद्र के भाषाये महाराज उपा-
यद्यपि नवक इति भद्र के भाषाये महाराज उपा-
यद्यपि नवक इति भद्र के भाषाये महाराज उपा-

व्यापक करे याने आहारपाणी लाके देखें और भी यथा उचित कार्यमें सहायता पहुंचाना जिनसे कर्मोंकी महा निर्झर और संसारममुद्रसे पार होनेका मिथा रहस्यता है।

(१०) व्याख्याय तपके पांच भेद हैं. वाचना देना या लेना, पृच्छना-प्रभादिका पृच्छना. परार्थनेना-पठनपाठन करना. अनु-पेक्ष पठनपाठन कीये हुये ज्ञानमें लायकमणना करना. धर्मकथा-धर्माभिलाषीयोंको धर्मकथा सुनाना ॥ तीन जनोंको वाचना नहीं देना. (१) निर्य विगइ याने मरम आहारके करनेवालेको. (२) अविनयवंतको, (३) दीर्घ कथायवालेको। तीन जनोंको वाचना देना चाहिये. विनयवंतको, निरम भोजन करनेवालेको २ जिम्मे कांध उपशासन हो गया है तथा अग्यतीर्था पार्सही हो धर्मका श्रेणी हो उनको भी वाचना न देनी और न उनसे वाचना लेनी कारण वाचना देनेसे उनको विभीत होगा ता धर्मकी निंदा करेगा और वाचना लेना पढे ना भी वह उपहास करेगा कि जैनोंको हम पढाने है, हम जैनोंके गुरु है इस वाक्ये एसे धर्मद्वेषीयोंमे दूर ही रहना श्रेयसा है अगर भद्रिक प्रजामी हो उसे उपदेश देना और मिथ्यात्वक रहस्यता छोडना धूमिलीका कर्त है।

वाचनाका विधि ११। २ २० १ मरिनाइ पद १५ अथवा
 २५ वि १५ २० २५ ३० ३५ ४० ४५ ५० ५५ ६० ६५ ७० ७५ ८० ८५ ९० ९५
 १० १५ २० २५ ३० ३५ ४० ४५ ५० ५५ ६० ६५ ७० ७५ ८० ८५ ९० ९५
 १०० १०५ ११० ११५ १२० १२५ १३० १३५ १४० १४५ १५० १५५ १६० १६५ १७० १७५ १८० १८५
 १९० १९५ २०० २०५ २१० २१५ २२० २२५ २३० २३५ २४० २४५ २५० २५५ २६० २६५ २७० २७५ २८० २८५
 २९० २९५ ३०० ३०५ ३१० ३१५ ३२० ३२५ ३३० ३३५ ३४० ३४५ ३५० ३५५ ३६० ३६५ ३७० ३७५ ३८० ३८५
 ३९० ३९५ ४०० ४०५ ४१० ४१५ ४२० ४२५ ४३० ४३५ ४४० ४४५ ४५० ४५५ ४६० ४६५ ४७० ४७५ ४८० ४८५
 ४९० ४९५ ५०० ५०५ ५१० ५१५ ५२० ५२५ ५३० ५३५ ५४० ५४५ ५५० ५५५ ५६० ५६५ ५७० ५७५ ५८० ५८५
 ५९० ५९५ ६०० ६०५ ६१० ६१५ ६२० ६२५ ६३० ६३५ ६४० ६४५ ६५० ६५५ ६६० ६६५ ६७० ६७५ ६८० ६८५
 ६९० ६९५ ७०० ७०५ ७१० ७१५ ७२० ७२५ ७३० ७३५ ७४० ७४५ ७५० ७५५ ७६० ७६५ ७७० ७७५ ७८० ७८५
 ७९० ७९५ ८०० ८०५ ८१० ८१५ ८२० ८२५ ८३० ८३५ ८४० ८४५ ८५० ८५५ ८६० ८६५ ८७० ८७५ ८८० ८८५
 ८९० ८९५ ९०० ९०५ ९१० ९१५ ९२० ९२५ ९३० ९३५ ९४० ९४५ ९५० ९५५ ९६० ९६५ ९७० ९७५ ९८० ९८५
 ९९० ९९५ १०००

प्रश्न करनेके दो भेद हैं, अपनेको शंका होनेसे प्रश्न करे. दूसरे मिथ्यात्वियोंको निरुत्तर करनेको प्रश्न करे। अनुयोग ज्ञानकी प्राप्तिके लिये प्रश्न करे. दूसरोंको धोलानेके लिये प्रश्न करे. जानता हुआ दूसरोंको धोके लिये प्रश्न करे. अनजानता हुआ गुरथादिकी सेवा करनेके लिये प्रश्न करे।

परायर्तन करनेके आठ भेद हैं. काले, चिनये, बहुमाणे, उचदाणे, अनिहयणे, व्यञ्जन, अर्थ. तदुभय इन आठ आचारोंसे स्वाध्याय करे तथा इन्हींकी ३४ अस्वाध्याय हैं उनको टालके स्वाध्याय करे. अस्वाध्याय आगे लिखी है सो देखो।

अनुपेक्षाके अनेक भेद हैं. पढा हुआ ज्ञानको चारंबार उपयोगमें लेना. ध्यान, धयण, मनन, निदिध्यासन, वर्तन, चैतन्य. नडादिके भेद करना।

धर्मकथाके न्यार भेद हैं. अक्षेपणी, विक्षेपणी, संयोगणी. नियोगणी. इनके नियोग विविध प्रकारकी धर्मकथा है.

त्रैल सिद्धान्त पठनेवालोंकी पहलां इस माफीक—

१. श्रान्तयोगक लिये न्यायशास्त्र पढो
२. नरककालान्यायक लिये नातिशास्त्र पढो.
३. मालान्यायक लिये मलिनशास्त्र पढो
४. धर्मकथान्यायक लिये अरकशास्त्र पढो

इस न्यायशास्त्रके शास्त्र न्यायक अनुयोगकारक लिये मद्रकशास्त्र इन्हींके पहलां मुख्यताकी गाम आवश्यकता है इस न्यायक त्रैल सिद्धान्त पठनेवालोंकी पहलां मुख्यताकी उपासन करना चाहिये

फोकर चिंता शोकका करना, आशुपातका करना, आक्रन्द शब्द करना रोना, छाती मस्तक पीटना थिन्नापातका करना.

रौद्रध्यानके च्यार पाये. जीर्षदिस्या कर खुशीमनाना, जूठ बोल खुशीमनाना, चोरी कर कुशीमनाना, दुमरोको कागगृहमें डलाके हर्ष मानना. एवं रौद्रध्यानके च्यार लक्षण है. स्वल्प अपराधका बहुत गुस्सा द्वेष रचना, ज्यादा अपराधका अत्यन्त द्वेष रचना, अज्ञानतासे द्वेष रचना, जाय जीयतक द्वेष रचना. इन परिणामवालोंको रौद्रध्यान कहते है।

धर्मध्यानके च्यार पाये. धीतरागकि आशाका चितवन करना, कर्म आनेसे स्थानीको विचारना, कर्मोंके शुभाशुभ विषा-कका विचार करना, लोकका संस्थान चितवन करना, धर्मध्यान के च्यार लक्षण इस मुत्तय है आशास्त्री याने धीतरागके आशा का पालन करनेकी स्त्री नि.मर्गस्त्री याने ज्ञानिस्मरणादिज्ञान से धर्मध्यानकि स्त्री होना उपदेशस्त्री याने गुर्यादिवे उपदेश धरण करनेकि स्त्री हो मन्त्रस्त्री यानिद्वान्त धरण कर मनन करनेकी स्त्री यह धर्मध्यानके च्यार लक्षण है। धर्म-यानके च्यार अवलम्बन ह स्त्रीकि याचना पुच्छना पराधर्तना और धर्मकया कहना धर्म-यानके च्यार अनुपक्षा है ममारका अनि-व्य समझना ममारम कामों मरणा तथा दे सुखदुःख अपने प्राप हा की भागयना पढ़ना यह तीस पकटा प्राया है और प्रवला ही ज्ञायना पकव्यपणा चितन है चेतन्य नु इस ममारम पकक नाथामि कीतना काननावार मयन्ध कोया है इस मयन्धी याम तथा कान है नु कामका है कीमय लिये नु मयन्धमाय करना है ममारम मय मयन्धीयीआ डादक पकलेका ही जाना पढ़ना।

करना कर्म क्षान्ताजिवादिना श्याम करना, संसारा-मरणादि
गतिना श्याम करना इति श्याम ॥ इति निर्णयनाथ ।

(८) बन्धनत्व-जीवन्मयी जमीन, कर्मन्मयी पृथ्वर राग-
द्वेषन्मयी ज्वालामे प्रकाश यनाता इतो मार्गीक जीवोंके गुणानुस
अवयवनायमे कर्म पृथ्वर पकत्र कर आत्माके प्रदेशोंपर बन्ध
होना उमे बन्धनत्व कहते है

- (१) प्रकृतियन्ध-१५८ प्रकृतिगोका बन्धना.
- (२) स्थितियन्ध १५८ प्रकृतिगोकी स्थितिका बन्धना.
- (३) अनुभागयन्ध-कर्मप्रकृति बन्धने समये रग पहना.
- (४) प्रदेशयन्ध-प्रदेशोंका पकत्र हो आत्मप्रदेशपर बन्ध
होना

इसपर लट्टुका रोगम जस लट्टु मूर्ती मानेका बसना है वह
प्रकृति है वह लट्टु जीवमे जाळ रहेगा वह स्थिति है वह लट्टु
कया नुमूना मकर जीमूर्ती मकर आगुनी मकरका है वह हम
विषय है वह लट्टु जीवमे प्रदेशोंपर बसना है इत्यादि

इसपर लट्टुका रोगम जस लट्टु मूर्ती मानेका बसना है वह प्रकृति है वह लट्टु जीवमे जाळ रहेगा वह स्थिति है वह लट्टु कया नुमूना मकर जीमूर्ती मकर आगुनी मकरका है वह हम विषय है वह लट्टु जीवमे प्रदेशोंपर बसना है इत्यादि

एवं ५७ हेतु है इनोसे कर्मबन्ध होते है यह सामान्य है अथ विशेष प्रकारसे कर्मबन्धका हेतु अलग अलग कहते है ।

ज्ञानावर्णिय कर्मबन्धके से कारण है ज्ञानका प्रातनिक (घैरी) पणा करना, अथवा ज्ञानी पुरुषोसे प्रतनिकपणा करना, ज्ञान तथा जिनोके पास ज्ञान सुना हो पढा हो उनोका नामकी बदला के दुसराका नाम बतलाना । ज्ञान पढते हुयेको अंतराय करना । ज्ञान या ज्ञानी पुरुषोके आशातना करना, पुस्तक पाना पाटी आदिकी आशातना करना । ज्ञान तथा ज्ञानी पुरुषोके साथ द्वेष भाव रखना, ज्ञान पढते समय या ज्ञानी पुरुषोपर विषमवाद तथा पढनेका अभाव करना इन छे कारणों से ज्ञानावर्णिय कर्मबन्धता है ।

दर्शनावर्णीय कर्मबन्ध के छे कारण है जो कि उपर ज्ञानावर्णिय कर्मबन्ध के छे कारण बतलाया है उसी भाकीक समझना.

वेदान्तिय कर्मबन्ध के कारण इस मुख्य है ज्ञाना वेदान्तिय अभाव । वेदान्तिय कर्म जिनसे ज्ञाना वेदान्तिय कर्मबन्ध के कारण के सब कारण मुख्य कारण समझकी अनुकम्पा करे इस न के कारण के कारण कारण कारण कारण कारण कारण उद्दिष्टन के कारण कारण कारण कारण कारण कारण कारण कारण कारण वेदान्तियकर्म कारण है जो सब कारण मुख्य कारण समझकी इस कारण के कारण कारण कारण कारण कारण कारण कारण कारण वेदान्तियकर्म कारण है जो सब कारण मुख्य कारण समझकी

ज्ञानावर्णिय कर्मबन्ध के छे कारण है ज्ञाना वेदान्तिय अभाव । वेदान्तिय कर्म जिनसे ज्ञाना वेदान्तिय कर्मबन्ध के कारण के सब कारण मुख्य कारण समझकी अनुकम्पा करे इस न के कारण के कारण कारण कारण कारण कारण कारण कारण उद्दिष्टन के कारण कारण कारण कारण कारण कारण कारण कारण कारण वेदान्तियकर्म कारण है जो सब कारण मुख्य कारण समझकी

उनोंको अनेक प्रकारकी तपभर्या कर सर्वथा कमोंका नाश कर जीवको निर्मल बना अक्षयपद को प्राप्त करना उसे मोक्ष तप कहते हैं जिसके सामान्य चार भेद ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य, धीर्य, विशेष नौ भेद हैं

(१) सत्पद परूपना, सिद्ध पद सदाकाल शास्यता है

(२) द्रव्य प्रमाण-सिद्धीके जीव अनंता है ।

(३) क्षेत्र प्रमाण-सिद्धीके जीव सिद्ध शीलाके उपर पैंता-लीस लक्ष योजन के विस्तारवाला पक्ष; योजनके चौथीसवां भाग में सिद्ध भगवान विराजते है ।

(४) स्पर्शना-एक सिद्ध अनेक सिद्धीको स्पर्श कर रहे हैं अनेक सिद्ध अनेक सिद्धीको स्पर्श कर रहे हैं ।

५ काल प्रमाण पक्ष सिद्धीके अपेक्षा आदि हैं परन्तु यस्त नहीं है और बहुत सिद्धीके अपेक्षा आदि भी नहीं और यस्त भी नहीं है ।

६ अन्तर सिद्धीय परस्पर आंतरा नहीं है

७ अनेक सिद्धीय जीव अनेक हैं यह अक्षय जीवोंके अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक हैं ।

८ अनेक सिद्धीय जीव अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक हैं ।

९ अनेक अक्षय

१० अनेक अक्षय अनेक अक्षय अनेक अक्षय अनेक अक्षय हैं

११ अनेक अक्षय अनेक अक्षय अनेक अक्षय अनेक अक्षय हैं

१२ अनेक अक्षय अनेक अक्षय अनेक अक्षय अनेक अक्षय हैं

१३ अनेक अक्षय

१४ अनेक अक्षय

- (३२) पहला देवलोककी देवी " "
 (३३) पहला देवलोकके देवसे " "

नोट—नरकादिसे निवाल मनुष्यका भव कर मोक्ष ज्ञाने कि अपेक्षा है।

इति मोक्ष तत्व ॥ इति नव तत्व संपूर्ण.

नेवंभंते सेवंभंते तमेवसत्रम्.

थोकडा नन्वर २.

(श्री पञ्चव्यादि सूत्रोंसे क्रियाधिकार)

- | | |
|--|--------------------------|
| (१) नामद्वार | (१५) अल्पायुतुत्य |
| (२) अर्थद्वार | (१६) शरीरोत्पत्त |
| (३) स्वक्रियाद्वार | (१७) पांशुक्रिया लागे |
| (४) क्रिया कीलसे करे | (१८) नौ जीवोंकी क्रिया |
| (५) क्रियाकरतां कीलने
कर्म दग्धे. | (१९) मृगादि क्रिया |
| (६) कर्म घान्धतां क्रिया | (२०) अग्नि |
| (७) एक जीवकी कीलनी० | (२१) ज्ञान |
| (८) वाह्यादि क्रिया | (२२) विरियाणे |
| (९) अज्ञोजीवा क्रिया | (२३) भेद घेने |
| (१०) कीली क्रिया करे | (२४) ऋषीभ्वर |
| (११) आरंभीयादि क्रिया | (२५) अन्न क्रिया |
| (१२) क्रियाका भांग | (२६) समुद्रघात |
| (१३) प्राणानिपादि | (२७) नौ क्रिया |
| (१४) क्रियाका लगना | (२८) तेरटा क्रिया |
| | (२९) दसवीस क्रिया |

अथवा रूप और रूपके अनुकूल द्रव्योंसे करते हैं। परिग्रहकी क्रिया सर्व द्रव्यसे करते हैं एवं क्रोध, मान, माय, लोभ, राग, द्वेष, कलह अभ्याख्यान, पैशुन्य परपरीषाद रति अरति माया मृषावाद् और मिथ्यादर्शन इन सबकी क्रिया सर्व द्रव्यसे होती है अर्थात् प्राणातीपात, अदत्तादान, मैथुन इन तीन पापकी क्रिया देश द्रव्यी है शेष पंद्रह पापकी क्रिया सर्व द्रव्यी है। समुच्चय जीवापेक्षा अठारा पापकी क्रिया बतलाइ है इसी माफीक नरकादि चौबीस दंडक भी समझ लेना. इसी माफीक समुच्चय जीवों और नरकादि चौबीस दंडकके जीवों (बहुषचन) का सूत्र भी समझना एवं २० चोलोकों अठारा गुने करनेसे १०० तथा १२२ पहले पांच क्रियाके मीलाके सर्व यद्वांतक १०२५ भांगे होंगे.

जीव प्राणातिपातकी क्रिया करता हुआ. स्यात् सात कर्म बान्धे स्यात् आठ कर्म बन्धे एवं नरकादि २४ दंडक। बहुत लीखीक अपेक्षा सात कर्म बान्धनेवाला भी घणा, आठ कर्म बान्धनेवाले भी घणा। बहुतसे नारकीके जीवों प्राणातिपातकी क्रिया करते होंगे सात कर्म तो मईष बांधते हैं सात कर्म बान्धने वाले बहुत आठ कर्म बांधनेवाले एक. सात कर्म बांधनेवाले बहुत और आठ कर्म बांधनेवाले भी बहुत हैं. इसी माफीक पञ्चदश कर्म १५ दंडकमें तीन तीन भाग होतसे २७ भांगे होंगे. पञ्चदश कर्म १५ दंडकमें सात कर्म बांधनेवाले बहुत और आठ कर्म बांधनेवाले ८ दंडक हैं. इस माफीक मयावाद्वादि याचन क्रिया के लिये अठार पापकी क्रिया करते होंगे समुच्चय जीव और चौबीस दंडक के अथवा सात कर्म बांधनेवाले अथवा आठ कर्म बांधनेवाले २७ दंडक हैं. जिसके भाग पञ्चदश पापक २७ मयावादन दंडक हैं सात कर्मके आठ गुण करनेसे १०० भांगे होंगे.

नारकीकी स्यात् ३-४-० । एवं घणा जीवोने एक नारकीकी स्यात् ३-४-० एवं घणा जीवोको घणी नारकी की तीन क्रियाभी घणी स्यार क्रियाभी घणी अक्रियाभी है. इसी माफीक १३ दंडक देवतोकाभी समझना. तथा पांच स्याधर, तीन विकलेन्द्रि, तीर्यघपांचेन्द्रिय और मनुष्य यह दश दंडक औदारोकेके समुच्चय जीवकी माफीक ३-४-२-० समझना । समुच्चय जीवसे समुच्चयजीव ओर चौथीस दंडकसे १०० भांगा हुये । एक नारकीने एक जीवकी कीतनी क्रिया लागे ? स्यात् ३-४-२ क्रिया लागे. एक नारकीने घणा जीवोकि कीतनी क्रिया ? स्यात् ३-४-२ क्रिया लागे. घणी नारकीने एक जीवकी कीतनी क्रिया ? स्यात् ३-४-२ क्रिया लागे, घणी नारकीने घणा जीवोकी कीतनी क्रिया ? घणी ३-४-२ क्रिया लागे. एक नारकीने वैक्रिया शरीर-वाले १४ दंडकके पकेक जीवोकी स्यात् ३-४ क्रिया लागे. एवं एक नारकीने १४ दंडकके घणा जीवोकी स्यात् ३-४ क्रिया एवं घणा नारकीने १४ दंडकोके पकेक जीवोकी स्यात् ३-४ क्रिया एवं घणा नारकीने १४ दंडकोके घणा जीवोकी घणी ३-४ क्रिया लागे. इसी माफीक दश दंडक औदारोकेके परन्तु यह स्यात् ३-४-२ क्रिया कहना कारण वैक्रिय शरीर मारा हुआ नहीं मरने है और औदारोके शरीर मारा हुआ मरभी जाने है । इति नरकव १०० भांगा हवा इसी माफीक शेष २३ दंडकके २३०० भागा समझना परन्तु यह ध्यानमें रखना चाहिये कि मनुष्यका दंडक समुच्चय ज'वव' मा'क'व कहना कारण मनुष्यमें औद्दे गुणमग्न वा'व'क' शिखर क्रिया है हा' नह' इस वास्ते समुच्चय ज'वव' मा'क'व वैक्रिय मा' कहना वः समुच्चयज'वव' १०० भाग वा'व'स दंडकव २३०० भाग मा'क' २३०० भाग हव

क्रिया पांच प्रकारकी है वा'व'क' अधिगमनाय' वा'व'सो'य'

परतापनिया, पाणाइयाइया, जीव काइया क्रिया करेसो क्या अधिगरणी या भी करे ? यंत्रसे देखे समुच्चय जीव और चौबीस

क्रियाकेनाम	काइया	अधिगरणी	पायसीया	परताप निका	पाणाई याइया
काइयाक्रिया	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	भजना
अधिगरणिया	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	भजना
पायसीया	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	भजना
परतापनिका	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा	भजना
पाणाइयाइया	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा

वैदिकमें पांच पांच क्रिया होनेसे १२५ भांजा हुआ एकैक भांजे यंत्र मुक्तव नियमा भजना लगानेसे ६२५ भांजा होने है । यहती समुच्चय मंत्र हुआ इसी माफिक जीम समय काइयाक्रिया करे उन समय अधिगरणीया क्रिया करे इनकाभी यंत्रकी माफिक ६२५ भांजा कहना अधिकता एक समय ? कि है इसी माफिक जीम देशमें काइया क्रिया करे उन देशमें अधिगरणीया क्रिया करे ? यंत्र माफिक ६२५ भांजा कहना पर प्रकृशकाभी ६२५ भांजा जीम प्रकृशमें काइया क्रिया करे उन प्रकृशमें अधिगरणीया क्रिया करे समुच्चयक ३०० समयक ३०० हुआ विभाग क ६०० प्रकृशक ३०० मंत्र माफिक ३०० भांजा होने है इसी माफिक भजनाकाया 'अथावा' उपरयन ३००० भांजा कहना विद्वान् १९२५ कि समुच्चयम उपरयन मंत्रक २२०० भांजा मंत्र भजनाका उपरयन उपरयन ३०० भांजा है पर २००० ।

क्रिया पांच प्रकारकी है काइयाक्रिया अधिकरणीया पात्र-
मिया परतापनिया पाणाइयाइक्रिया समुच्चयजीव और चौथीस
दंडकमें पांच पांच क्रिया पाये. पर्य १२५ भांगा हुया. (१) जीव-
काइया अधिकरणीया पात्रमिया यह तीन क्रिया करे यह पर-
तापनीया पाणाइयाइयाभी करे (२) तीन क्रिया करे यह चौथी
क्रिया करे पांचमी नही करे. (३) तीन क्रिया करे यह चौथी
पांचथी नभी करे. (४) तीन क्रिया न करे यह चौथी पांचथी
क्रियाभी न करे. इसी माफीक चार भांगा स्पर्श करनेकाभी
समझ लेना. यह समुच्चय जीवोंमें आठ भांगा कदा इसी माफीक
मनुष्यमेंभी समझना शेष २३ दंडकमें चौथी आठथी भांगो
छोडके छे छे भांगा समझना. कुल भांगा १५४ हुये ।

क्रिया पांच प्रकारकी है आरंभिया, परिग्रहिया, मायाव-
त्तिया मिथ्यादर्शन यत्तिया, अपशरानिया. समुच्चयजीव और
चौथीसदंडकमें पांच पांच क्रिया पानेसे १२५ भांगा होते है ।

समुच्चयजीव आरंभियाक्रिया करे यह परिग्रहीयाक्रिया
करते है या नही करते है देखो यंत्रसे

क्र. सं. क्र. सं.	क्र. सं.	क्र. सं.	क्र. सं.	क्रिया-व्यय	व्यय-व्यय
आरंभिया	नियम	भजना	नियम	भजना	भजना
परिग्रहिया	नियम	नियम	भजना	भजना	भजना
मायाव- त्तिया	भजना	भजना	नियम	भजना	भजना
मिथ्या- दर्शन	नियम	नियम	नियम	नियम	नियम
अपशरानिया	नियम	नियम	नियम	भजना	नियम

संख्या.	सात एक के साम्यता	आठ कर्म	शे कर्म	अप्राप्यक
१	१०	०	०	०
२	१०	१	०	०
३	१०	२	०	०
४	१०	०	१	०
५	१०	०	२	०
६	१०	०	०	१
७	१०	०	०	३
८	१०	१	१	
९	१०	१	२	
१०	१०	१	१	
११	१०	१	१	
१२	१०	१	१	
१३	१०	१	१	
१४	१०	१	१	
१५	१०	१	१	
१६	१०	१	१	
१७	१०	१	१	
१८	१०	१	१	
१९	१०	१	१	
२०	१०	१	१	

जहांपर तीनका अंक है वह बहु-
वचन और एक का अंक है उसे एक-
वचन समझे जहां (०) है वह कुछभी
नहीं।

समुच्चय जीवकी माफीक मनुष्यमेंभी
२७ भांगे समझना. एवं ५४ एक प्राणा-
तीपातके त्याग के ५४ भांगे हुये इसी
माफीक अठारा पापों के भी ५४-५४
भांगे गीननेसे ५७२ भांगे हुये शेष
तेषीस दंडकमें अठारा पापका विर-
माण नहीं होते हैं परन्तु इतना विशेष
है की मिथ्यादर्शन शल्यका विरमण
नारकी देयता और तीर्यच पांचेन्द्रिय
एवं १५ दंडक कर सकते हैं वह जीव
सात आठ कर्म बान्धते हैं बहुत जीवों
वि अपेक्षा सात कर्म बान्धनेवाले स-
द्वैय साम्यत हैं आठ कर्म बान्धनेवाले
असाम्यत हैं जिसके भांगे तीन होते
हैं सात कर्म बान्धनेवाले साम्यत
सात कर्म बान्धनेवाले गुरु और
सात कर्म बान्धनेवाले गुरु : सात
कर्म बान्धनेवाले गुरु सात आठ कर्म
बान्धनेवाले गुरु हैं पर पदरा
द्वैय सात कर्म बान्धनेवाले गुरु
सात कर्म बान्धनेवाले गुरु

समस्त कर्मों में सात कर्मों का अर्थ है
वैश्वदेविक कर्मों का अर्थ है

१९.	३	०	३	३	लागे ? क्यातु लागे (छटे गुणस्थान)
२०	३	१	१	१	क्यातु न भी लागे . अप्रमातादि गुण-
२१	३	१	१	३	स्थान) परिग्रह, मिथ्यादर्शन, और
२२	३	१	३	१	अप्रत्याख्यानक क्रिया नहीं लागे-तथा
२३	३	१	३	३	मायावृत्तिया क्रिया क्यातु लागे (द्वा-
२४	३	३	१	१	शये गुणस्थान तक . क्यातु न भी लागे
२५	३	३	१	३	(बीतरागी गुणस्थान) एवं मृदावा-
२६	३	३	३	१	दादि यावत् मिथ्यादर्शन शक्यतक
२७	३	३	३	३	अठारा पाप के त्याग किये दृष्टे की म

ममज्ञान समुच्चय जीवकी माफीक मनु-
ष्य की भी ममज्ञान शेष २३ इंद्रक के
जीव १८ पापों के त्याग नहीं कर सकते
है इतना विशेष है कि मिथ्यादर्शन के त्याग नारकी श्रेयता
तीर्थेय पंचिन्द्रिय शेष २० इंद्रक के जीव कर सकते है उनी की
मिथ्यात्वकी क्रिया नहीं लगती है। समुच्चय जीव बीसोम इंद्रक
की अठारा पापसे गुणा करनेसे ४०० भाग हुए।

अप्या यदुत्थ मयस्ताव मिथ्यात्वक क्रियावात् जाय है
अप्रत्याख्यानक क्रियावात् जाय विशेष शिव के परिग्रहक
क्रियावात् जाय शिवात्मिक के प्रासंगिक क्रियावात् जाय
विद्यात्मिक है मायावर्तितया प्रियावात् नवीनता शिव के

समुच्चय जीव पाप २००० पाप १०००० मीलवगत १००००
कर्म १०००० कर्म १००००० कर्म १०००००० कर्म १०००००००
कर्म १००००००० कर्म १०००००००० कर्म १०००००००००
कर्म १००००००००० कर्म १०००००००००० कर्म १०००००००००००
कर्म १००००००००००० कर्म १०००००००००००० कर्म १०००००००००००००
कर्म १००००००००००००० कर्म १०००००००००००००० कर्म १०००००००००००००००
कर्म १००००००००००००००० कर्म १०००००००००००००००० कर्म १०००००००००००००००००

योग, मत्तरा दंडकके जीव चक्षु इन्द्रिय, अठारा दंडकके जीव घ्राणेन्द्रिय उत्तीस दंडकके जीव रसेन्द्रिय, और घचनके योग उत्पन्न करते हुयेको स्यात् तीन क्रिया स्यात् च्यार क्रिया स्यात् पांच क्रिया लगती है ।

समुच्चय एक जीवको एक औदारिक शरीर कि कौतनी क्रिया लागे ? स्यात् तीन क्रिया स्यात् च्यार क्रिया स्यात् पांच क्रिया स्यात् अक्रिया, एवं एक जीवने घणा औदारिक शरीरकी घणा जीवको एक औदारिक शरीर की घणा जीवको घणा औदारिक शरीरकी, घणी तीन क्रिया घणी च्यार क्रिया घणी पांच क्रिया घणी अक्रिया । एक नारकीके जीवको औदारिक शरीरकि स्यात् ३-४-५ क्रिया, एवं एक नारकीने घणा औदारिक शरीरकी घणा नारकीको एक औदारिक शरीरकी और घणा नारकीको घणा औदारिक शरीरकी घणी ३-४-५ क्रिया लागे एवं चौथीस दंडक मोलाके १०० भांगे हुवे इसी माफीस जीव और वैक्रिय शरीर परन्तु क्रिया ३-४ एवं आहारीक शरीर क्रिया ३-४ लागे कारण वैक्रिय आहारीक शरीरके उपक्रम लागे नहने कम कारण शरीरके ३-४ क्रिया, एवं एक शरीरसे समकाल प्राय और चौथीस दंडक पचवीसवा च्यार क्रिया कारण १०० भांगे हुवे एवं पांच शरीरके ५० भांगे समकाल

एक प्रत्यासन्न भागके भागसे है उताकि निरूपण ती जीवको पांच पांच क्रिया परन्तु है जैसे मृग भागनेवाले मनुष्यकी धनुष्य ज्ञान प्राप्त होना है उन प्राप्त प्राय अन्य गतिमें उत्पन्न हुवे है वह प्रत्येक प्रत्यासन्न नहने कारण है ती उताके शरीरसे धनुष्य बन है प्रत्येक भाग भागसे वह धनुष्य या सहायक हानसे उन भागके भाग पांच क्रिया लगती है ।

कीसी चाचकके अथ पाणी घसादिकी आवश्यकता होनेसे उने तीव्र क्रिया लगति है और कीसी दातारने अपनि घस्तुकि मन्त्र उतार उसे देदी तो उन चाचक कों पतली क्रिया लगती है और दातारकी मन्त्र उतारनेसे उन पदार्थकि क्रिया बन्ध हो गइ है।

क्रियाणा-कीसी मनुष्यने क्रियाणा बेचा. कीसी मनुष्यने क्रियाणा खरीद क्रिया, बेचनेवालेकों क्रिया हलकी हुई, और लेनेवालोंको भारी हुई कारण बेचनेवालोंको तो संतोष हो गया अथ लेनेवालोंको उनका संरक्षण तथा-तेजी भंडीका विचार करना पडता है. माल बेचीयो तीकों तोल दीनों रूपैया लीना नहींतो बेचनेवालोंको दोनों क्रिया हलकी. लेनेवालोंको दोनों क्रिया भारी लगती है। मालतो तोलीयो नहीं और रूपैया ले लीना इनसे बेचनेवालोंको क्रिया भारी खरीदनेवालोंको रूपैया कि क्रिया हलकी हुई। माल तोलके रूपैया ले लीना तो रूपैया लेनेवालोंको रूपैयाकी क्रिया भारी. माल उठानेवालोंको मालकी क्रिया भारी लगती है

कीसी मनुष्यका दुःखानपरसे पइ आइमि पक घस्तु ले गया उसकी दुःखके लिये पापको मन्त्रम कर रहा उनको कीमतो किउ के मन्त्रमदुनि हो के नवन क्रिया क्रियादृष्टि हो के पाके क्रिया पा के क्रिया दुःखो पाके दुःख मन्त्रम करनेका यह उपाय मन्त्रम कर के पाके क्रिया कचको हो पावे है

कीसी मनुष्यका दुःखानपरसे पइ आइमि पक घस्तु ले गया उसकी दुःखके लिये पापको मन्त्रम कर रहा उनको कीमतो किउ के मन्त्रमदुनि हो के नवन क्रिया क्रियादृष्टि हो के पाके क्रिया पा के क्रिया दुःखो पाके दुःख मन्त्रम करनेका यह उपाय मन्त्रम कर के पाके क्रिया कचको हो पावे है

पञ्चमिया—अगर कोई गृहस्थ मुनियोके पास्तें ही मक्कांन कराया है कदाच मुनि उनमें न ठेरे तो गृहस्थ विचार करे कि अपने रहनेका मक्कांन मुनिकों देदो अपने दुसरा बन्धा लेंगे अगर पत्ता मक्कांनमें मुनि ठेरे तो उने पञ्च मिया लागे ।

महापञ्च मिया—कोई भद्रालु गृहस्थ अन्य तीर्थीयोके लिये मक्कांन बन्धाया है जिस्में भी उमोका नाम गोलके अलग अलग मक्कांन बन्धाया हो उनमें तो साधुयोको उत्तरना कल्पता ही नहीं है अगर उत्तरे तो महापञ्च मिया लागे ।

सावध मिया—बहुतसे साधुयोके नामसे एक धर्ममालादि-क मक्कांन कराया है उनमें मुनि ठेरे तो सावध मिया लागे. मदा एक साधुका नामसे मक्कांन बनाये उनमें उत्तरे तो महा सावध मिया लागे । गृहस्थ अपने भांगवने के लिये मक्कांन बनादा है परन्तु साधुयोके ठेरनेके लिये उन मक्कांनको लोपणसे लिपाये. ताम तवाये, तपरा कराये पत्ता मक्कांनमें साधुयोको ठेरना नहीं कल्पे ।

अगर गृहस्थ अपने उपभाग के लिये मक्कांन बनाया है वह निजके नामसे मुनि उन मक्कांनमें ठेरे तो उमोका बीसो प्रकारका मिया मक्कांन बनाया है उन पञ्च सावध मिया कहत है अ-प निजके नामसे मक्कांन ठेरे तब मिया महा मक्कांन है सावध

मिया मक्कांन ठेरे तब मिया महा मक्कांन है अ-प निजके नामसे मक्कांन ठेरे तब मिया महा मक्कांन है सावध मिया मक्कांन ठेरे तब मिया महा मक्कांन है अ-प निजके नामसे मक्कांन ठेरे तब मिया महा मक्कांन है सावध

हानेसे पाप लागे । मृषायादयोऽलनेसे क्रिया लागे । चोरी कर्म कर
नेसे क्रिया लागे । मराय अध्ययनायने० मित्रद्रोहीपणा करनेसे ।
मानसे, मायामे, लोभमे, इयांपयिकी क्रिया. (मूत्रकृतांग मूत्र).

हे भगवान् कोई भाषक सामायिक कर देता है उसकी
क्रिया क्या संपराय कि लगती है या इयांपयि कि १ उन भाष-
ककी संपराय की क्रिया लगती है किन्तु इयांपयिकी क्रिया महा
लागे ! कारण सामायिकमें घेठे दूये भाषककी आत्मा अधिकरण
है यहाँ अधिकरण का प्रकारके होते है प्रत्याधिकरण हलशक
टादि सीतो सामायिकके समय भाषक के पास है मही भौर
दुमरा भाषाधिकरण जो क्रोध, मान माया, लोभ, यह आत्म
प्रदेशीमें रहा दूया है इस वास्ते भाषकके इयांपयि क्रिया मही
लागे किन्तु संपराय क्रिया लगती है ।

बृहत्कल्पसूत्र उद्देश १ अधिकरण नाम क्रोधका है.

बृहत्कल्पसूत्र उद्देश ३ अधिकरण नाम क्रोधका है.

व्यवहारसूत्र उद्देश ४ अधिकरण नाम क्रोधका है

निशियसूत्र उद्देश २३ वा अधिकरण नाम क्रोधका है

अथर्त्तिसय शनक १६३०१ आत्मादीन गरीरवाले सुमिगीर
कायका १० अधाकरण कहा है

इतिनेव १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१०

१०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१०

१०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१०

१०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१०

१०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१०

१०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१० १०१०

अथ श्री

शीघ्रबोध ज्ञाग ३ जो ।

थोकडा नम्बर. २०

गृध्र श्री अनुराग द्वागदि अनेक प्रकरणांमिं.

(बालायबोध द्वार पचर्याम)

- (१) नयमान २) निक्षेपा व्यास (३) प्रत्यगुल पचर्या
- (४) प्रत्य क्षेत्र काण्ड भाषि ५. प्रत्य भाषि ६) कार्य काण्ड
- (७) निघण्टु व्यवहार ८ उपान्यास विमान ९) प्रमाण व्यास
- १०) नामाख्य विरोध ११ गृणगृणी १२ ज्ञय ज्ञान ज्ञानी
- १३ उपन्यास विरोध्या उपन्यास (१४) प्रत्येय भाषाया १५
- ब्राह्मिभाष विरोध्या (१६) गीतना प्रोक्तवना । १७ उपन्यास
- व्यास १८ व्यासभाषा १९ व्यास व्यास (२०) अनुराग
- व्यास २१ ब्राह्मिभाषा २२ व्यासभाषा २३ पद्य व्यास
- २४ उपन्यास २५ उपन्यास व्यास इतिवृत्त

२६ उपन्यास २७ उपन्यास २८ उपन्यास २९ उपन्यास ३० उपन्यास
 ३१ उपन्यास ३२ उपन्यास ३३ उपन्यास ३४ उपन्यास ३५ उपन्यास
 ३६ उपन्यास ३७ उपन्यास ३८ उपन्यास ३९ उपन्यास ४० उपन्यास
 ४१ उपन्यास ४२ उपन्यास ४३ उपन्यास ४४ उपन्यास ४५ उपन्यास
 ४६ उपन्यास ४७ उपन्यास ४८ उपन्यास ४९ उपन्यास ५० उपन्यास

होता है पांचवाने पैरोंपर हाथ लगाके देखाकि हस्ति स्तंभ जैसा होता है छट्टाने पुच्छपर हाथ लगाके देखाकि हस्ति चक्र जैसा होता है सातवाने कुम्भस्यलपर हाथ लगाके देखाकि हस्ति कुम्भ जैसा है हस्तिको देख ग्राम के लोग ग्राममें गये और यह साती अन्धे मनुष्य एक वृक्ष निचे बैठे आपसमें विवाद करने लगे अपने अपने देखे हुये पकेक अंगपर मिथ्याग्रह करने लगे एक दूसरोको झूठे यनने लगे इतनेमें एक मुह्त मनुष्य आया और उन साती अन्धे मनुष्योंकि धातीं सुन बोला के भाइ तुम पकेक धातको आप्रहमे तांनते हो तवतीं सयके सय झूठे हो अगर मेरे कहने माफीक तुमने पकेक अंगहस्तिके देखे है अगर साती जनों सामीलहो विचार करोगे तो पकेकापेक्षा सातीं सत्य हो । अन्धोंने कहा की कैसे ! तय उन मुह्त विद्वानने कहाकी तुमने देखा यह हस्तिका दान्ताशूल है दूसराने देखा यह हस्तिकि शूंड है यावत् सातवाने देखा यह हस्ति के मुच्छ है इतना सुनके उन अन्ध मनुष्योंको ज्ञान होगया कि हस्ति महा कायायाला है अपने जो देखा था यह हस्तिका पकेक अंग है इसका उपनय-यस्वु एक हस्ति माफीक अनेक अश (विभाग) मयुक्तहं उनको माननेवाले एक अंगको मानके शेष अंगका उच्छेद करनेसे अन्धे मनुष्योंकि कदाग्रह तुन्य होने द अगर सपुरण अंगोंको अलग अलग अपेक्षामे माना जाये ना मुह्त मनुष्यकि माफीक हस्ती शीकनारपर समज सकने है इति

नय क मूल दश भेद ह । १ द्रव्यास्तिक नय ना द्रव्यका ग्रहन करने है । २ पर्यायास्तिक नय यस्नुक पर्यायको ग्रहन करे । त्रिभेमे द्रव्यास्तिक नयक दश भेद है यथा नित्य द्रव्यास्तिक एक द्रव्यास्तिक मयु द्रव्यास्तिक यस्नुक द्रव्यास्तिक, अशुद्ध द्रव्यास्तिक अन्धय द्रव्यास्तिक परमद्रव्यास्तिक शुद्धद्रव्या-

स्तिय, सत्ताद्रव्यास्तिक, परम भाय द्रव्यास्तिक । पर्यायास्तिक-
नयके द्वे भेद हे द्रव्यपर्यायास्तिक, द्रव्ययजनपर्यायास्तिक गुण-
पर्यायास्तिक, गुणयजनपर्यायास्तिक, स्वभाय पर्यायास्तिक,
विभायपर्यायास्तिकनय । इन द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक दोनों
नयों के ७०० भांगे होते है ।

तर्कषादि धीमान् निद्रसेनदियाकरजी महाराज द्रव्यास्ति-
कनय तीन मानते है नैगमनय, संग्रहनय, व्ययहारनय, और
सिद्धान्तषादी धीमान् जिनभद्रगणी स्वमानमणा द्रव्यास्तिकनय
चार मानते है नैगमनय संग्रहनय व्ययहारनय रज्जुसूत्र नय ।
अपेक्षासे दोनों महा ऋषियोंका मानना मत्य है कारण ऋजु-
सूत्र नय प्रणाम प्रदी होनेसे भायनिक्षेपा के अन्दर मानके उसे
पर्यायास्तिक नय मानी गई है और ऋजुसूत्रनय शुद्ध उपयोग
रहित होनेसे । धी जिनभद्रगणी स्वमानमणजीने द्रव्यास्तिक
नय मानी है दोनों मतका मतलब एक ही है.

नैगम, संग्रह, व्ययहार, और रज्जुसूत्र, इन चार नयका
द्रव्यास्तिक नय कहते है अथवा अर्थ नय कहते है तथा क्रियानय
भी कहते है और शब्द संभिरूढ और पदभूत इन तीनों नय
का पर्यायास्तिक नय कहते है इन तीनों नयको शब्द नयभी
कहते है इन तीनों नयका ज्ञान नयभी कहते है पद द्रव्यास्तिक
नय और पर्यायास्तिक नय दोनोंका मिलावनेसे सातनय-यथा
नैगमनय संग्रहनय व्ययहारनय रज्जुसूत्रनय शब्दनय संभि-
रूढनय पदभूतनय एवं इन सातों नयके सामान्य लक्षण
वैशेष्यज्ञान है

१) नैगमनय । जम्बू । पद्म । गम । स्वभाय । महा है अनक-
मान स्वभाव । मी । वर । वस्तु । वस्तुमान तमे सामान्यमान
विशेषमान । नैगमनय । यातमान । निक्षेपाचार माने तीनों

कालमें वस्तुका अस्तित्व भाव माने जिन नैगमनय के तीन भेद हैं (१) अंश. (२) आरोप (३) विकल्प ।

(क) अंश-वस्तुका एक अंशको ग्रहण कर वस्तुको वस्तुमाने शेष निगोदीये जीवोंको सिद्ध समान माने कारण निगोदीये जीवों के आठ रूचक प्रदेश+ सदैव निर्मल सिद्धों के माफीक है इस वास्ते एक अंशको ग्रहण कर नैगमनयवाला निगोदीये जीवोंको भी सिद्ध ही मानते है । तथा चौदये अयोगी गुणस्थानवाले जीवों को संसारी भीष माने; कारण उन जीवोंके अभीतक चार अघाति कर्म याकी है अन्तर बहुत संसार याकी है उतने अंशको ग्रहण कर चौदये गुणस्थानक वृत्ति जीवोंको संसारी माने यह नैगमनयका मत है ।

ख) आरोप-आरोपके तीन भेद है (१) मृत कालका आरोप (२) भविष्य कालका आरोप (३) वर्तमान कालका आरोप जिस्मे मृत कालका आरोप जैसे मृतकालमें वस्तु हो गई है उनको वर्तमान कालमें आरोप करना. यथा-भगवान् वीरप्रभुका जन्म चैत्र शुक्ल १३ के दिन हुआ था उनका आरोप, वर्तमान कालमें कर पर्युषण में जन्म महोत्सव करना उन्की मूर्ति स्थापन कर सेवा पूजा भक्ति करना तथा अर्चने सिद्ध हो गये है उन्की नामका स्मरण करना तथा उन्की मूर्ति स्थापन कर पूजन करना यह सब मृतकालका वर्तमानमें आरोप है २ . भविष्यकाल में होने वालोका वर्तमान कालमें आरोप करना जैसे धी पद्मनाभ

१. मृतकालमें वस्तु हो गई है उनको वर्तमान कालमें आरोप करना यथा-भगवान् वीरप्रभुका जन्म चैत्र शुक्ल १३ के दिन हुआ था उनका आरोप, वर्तमान कालमें कर पर्युषण में जन्म महोत्सव करना उन्की मूर्ति स्थापन कर सेवा पूजा भक्ति करना तथा अर्चने सिद्ध हो गये है उन्की नामका स्मरण करना तथा उन्की मूर्ति स्थापन कर पूजन करना यह सब मृतकालका वर्तमानमें आरोप है २ . भविष्यकाल में होने वालोका वर्तमान कालमें आरोप करना जैसे धी पद्मनाभ

माने तीन कालकोषात् माने निक्षेपाचारोमाने एक शब्द में अनेक पदार्थ माने जैसे कीसीने कहाकी 'धन' तो उसके अन्दर जोतने वृक्ष लता फल पुष्प जलादि पदार्थ है उन सबको संग्रह नयवाले ने माना तथा कीसी सेठने अपने अनुचरको कहाकी जायें तुम दास्तण लायें तो उन संग्रह नयके मतवाला अनुचरने दास्तण काच जल प्रारी यन्त्रादि पोसाक सब लेके आया-इसी माफीक सेठने कहाकी पयलिम्बना है कागद लायो तो उन दासने कागद कल्प दधात दस्तरी आदि सब ले आया, इन वास्ते संग्रहनयवाला एक शब्दमें अनेक दस्तु ग्रहन करते हैं जिस्के दोय भेद है (१) सामान्य संग्रहनय (२) विशेष संग्रहनय ।

(३) व्यवहारनय-वाद्य दीमती यन्तुका विवेचन करे कारण की जीसका जेसा वाद्य व्यवहार देखे वेसाही उन्नाका व्यवहार करे अर्थात् अन्तःकरणको नहीं माने जैसे यह जीव जन्मा है यह जीव मृत्युकोप्राप्त हुआ है जीव कर्म बन्ध करते हैं जीव सुख दुःख भोगधते हैं पुद्गलोंका संयोग वियोग होते हैं इस निमित्त कारणसे हमारा भला बुरा हो गया यह सब व्यवहार नयका मत है व्यवहार नयवाला सामान्यके साथ विशेषमाने निक्षेपा चार माने तीनों कालकी बात माने जैसे व्यवहारमें कोयल उषाम शुकहरा मामलीयालाल हन्दी पीली हंस मुफेद परन्तु निश्चय नयमें इन पदार्थोंमें पाचा वर्ण द्वागन्ध पाच रस आठ स्पर्श पांच व्यवहारमें गुण्ठाच सुगन्ध मृत्युध्वान दुगन्ध मृड तिक तिष कटुक आम्लाकपायल आम्र प्रायिल माकर मसूर कण्ठोत कर्कश ना लृया मधुल शोहागुरु अकतुल लघु पाणी शानल, अग्निउष्ण घृत स्निग्ध रास्य क्रूर यह सब व्यवहारमें मोल्यता गुण यतलार्थ परन्तु निश्चयमें गौणतामें सब वादोंमें वर्गादि दीम थीम धोल

मीलते हैं। जिस व्यवहारनयके दो भेद हैं (१) शुद्ध व्यवहारनय (२) अशुद्ध व्यवहारनय।

(४) ऋजुसूत्रनय—सरलतासे बोध होना उसे ऋजुसूत्रनय कहते हैं ऋजुसूत्रनय भूत भविष्यकाल को नहीं माने मात्र एक वर्तमानकालको ही मानते हैं ऋजुसूत्रनयवाला सामान्य नहीं माने विशेष माने. एक वर्तमानकालकि घात माने निक्षेपा एक भाष माने. परबस्तु कों अपने लिये निरर्थक माने ' आकाशकुसुमघत् ' जैसे घीसोने कदा की सो घर्षों पहले सूषणकि घर्षाद हुई थी तथा सो घर्षों के बाद सूषण कि घर्षाद होगा ? निरर्थक अर्थात् भूत भविष्यमें जो कार्य होगा वह हमारे लिये निरर्थक है यह नय वर्तमानकाल को मौरव्य मानते हैं जैसे एक साहुकार अपने घरमें सामायिक कर घेठा था इतनेमें एक मुसाफर आके उन सेठके लडकेकी ओरतसे पुछा की घेहन ! तुमारा सुसराजी कहां गये हैं ? उन ओरतने उत्तर दीया कि मेरे सुसराजी पसा-रीकी दुकान मेंठ हरडे खरीदने कों गये है यह मुसाफर वहां जाके तलाम की परन्तु सेठजी वहांपर न मीलनेसे यह पीछा सेठजीके घरपर भाके पुच्छा तो उन ओरतने कहाकि मेरे सु-सराजी मोंचीक घरा जने खरीदनेकों गये है इसपर यह मुसाफर मोंचीके घरा जाके तलाम करी घरापर सेठजी न मीले. तब फीरके पुन सेठजीके घरमें जाके इतनेमें सेठजीके सामायिकका का- होजानेसे अग्नि सामायिक पर उन मुसाफरसे घात कर विदा काय फीर अपने लडकेरी ओरतसे पुच्छा कि क्यों बहुज्ञ मे सामायिक कर घरेके अन्दर घेठाया यह तुम जानती थी फीर उन मुसाफर की गायी तब शीक क्यों दीयी बहुज्ञाने कहा क्यों समराजी आपका चित दांनो स्थानपर गयाया



और अरिहन्तोंकि स्थापना (मूर्ति) सिद्धोका नाम और सिद्धोंकि स्थापना एवं आचार्योंपाध्याय साधु, ज्ञान, दर्शन, चारित्र इत्यादि जेसा गुण पदार्थमें है वैसे गुणयुक्त स्थापना करना उसे सत्यभाव स्थापना कहते हैं और असत्यभाव स्थापना जैसे गोल पत्थर रखके भेरूकि स्थापना तथा पांच सात पत्थर रख शीतला-माताकि स्थापना करनी इसमें भेरू और शीतलाका आकार तो नहीं है परन्तु नामके साथ कल्पना देखकी कर स्थापना करी है.

इस यास्ते ही सुज्ञ जन स्थापना देखकी आशातना टालते हैं जिस रीतीसे आशातना का पाप लगता है इसी भाँतीक भक्ति करनेका फल भी ह्रांते है उस स्थापनाका दश भेद है (सूत्र अनुयोगद्वार :

- (१) कठुकम्मेषा -काष्ठकि स्थापनाजैसेआचार्यादिकि प्रतिमा.
- (२) पांथ कम्मेषा-पुस्तक आदि रखके स्थापना करना.
- (३) चित्त कम्मेषा-चित्रादिकरके स्थापना करना.
- (४) लेप्प कम्मेषा-लेप याने मट्टी आदिके लेपमें ॥
- (५) पेढीम्मेषा-पुष्पोंके बोटसे बोटकी मीलाके स्था० ॥
- (६) गुयीम्मेषा-चीट्टो प्रमुक्त की प्रयीय करना ॥
- (७) पुरिम्मेषा-सुषर्ण चाम्दी पीतलादि वस्त्रका काम
- (८) मघाहम्मेषा-बहुत वस्तु एकत्र कर स्थापना
- (९) भस्सेइवा चन्द्राकार समुद्रके भक्षकि स्थापना
- (१०) वराहइवा मय्य वादी भादि की स्थापना

एव दश प्रकार की मद्भाव स्थापना और दशप्रकारकी अमद्भाव स्थापना एव २० प्रकार की स्थापना एव थीस

अनेक प्रकार वि. स्थापना सर्व मील स्थापना के ४० भेद होते हैं. इनके अतिरिक्त अन्य प्रकारसे भी स्थापना होती है.

प्रश्न—नाम और स्थापना में क्या भेद विशेष है ?

उत्तर—नाम वापत्काल याने घोरकाल तक रहता है और स्थापना स्थानकाल रहती है अथवा नाम निक्षेपादि निष्पत्त स्थापना निक्षेपा—विशेष ज्ञानका कारण है जैसे—

लोक या नाम लेना और लोक कि स्थापना (नकशा) देखना. अरिहंतोंका नाम लेना और अरिहंतोंकि मूर्ति को देखना. जम्बुद्विपका नाम लेना और नकशा देखना. संस्थान दिशा भांगा इत्यादि अनेक पर्याय हैं कि जिनोका नाम लेने कि निष्पत्त स्थापना (नकशा) देखनेसे विशेष ज्ञान हो सकते हैं इति स्थापना निक्षेप ।

(३. द्रव्य निक्षेपा—भाषाशून्य वस्तु को द्रव्य कहते हैं जोस वस्तुमें भूतकाल में भाषागुण या तथा भविष्य में भाषागुण प्रगट होनेवाला है उसे द्रव्य कहा जाता है जैसे भूतकालमें तीर्थ कर नाम कर्म उपाजन किया है वहांसे लगाके जहांतक केषल ज्ञान उत्पन्न न हुये ३४ अतिशय पैंतीस घाणि गुण अष्ट महा प्रतिहार प्राप्त न हुये वहां तक द्रव्य तीर्थकर कहा जाता है तथा तीर्थकर मोक्ष पधारणके के बाद उनोंका नाम लेना वह सिद्धी का भाषा निक्षेपा है परन्तु अरिहन्तोका द्रव्य निक्षेपा है वह भूत भविष्य कालके अरिहन्त वन्दनीय पूजनीय है उन द्रव्य निक्षेपाके ६ भेद हैं १। आगमसे २। नोआगमसे त्रिसं आगमसे द्रव्य निक्षेपा जो आगमो का अर्थ उपयोग शून्यतासे करे जिस पर आश्रयक का दृष्टान्त यथा कोइ मनुष्य आश्रयक लुप्त का अध्ययन किया है जैसे—

पद सिक्कितं—पद पदार्थ अच्छी तरफसे पढा हो.
ठितं—वाचभादि स्वाध्यायमें स्थिर कीया हुआ हो.
जितं—पढा हुआ ज्ञानको भूलना नहो. सारणा धारणा
धारणासे अस्खलित.

मितं—पद अक्षर बराबर याद रखना

परिजितं—कमोत्क्रम याद रखना.

नामसमं—पढा हुआ ज्ञान को स्व नामयत्न याद रखना.

घोस सम—उदात्त अनुदात्त स्वर व्यञ्जन संयुक्त.

अहीण अक्षरं—अक्षर पद हीनता रहीत हो.

अणाञ्चअक्षरं—अक्षर पद अधिक भी न बोले.

अव्याद्ध अक्षरं—उलट पुलट अक्षर रहित.

अक्षलियं—अमिलत पणसे बोलना.

अमिलिय अक्षरं—धिरामादि संयुक्त बोलना.

अव्यामेलियं—पुनरुक्ती आदि दोषरहित बोलना.

पदि पुत्रं—अटस्यानोच्चारणसंयुक्त.

कठोट्ट्विपमुक्तं—घालक की माफीक अस्पष्टता न बोले ।

गुरुवायणोद्योग्यं—गुरु मुत्तसे वाचना ली हो उन माफीक

सेण तत्थ वायणाप—सुधार्य की वाचना करना.

पुच्छणाप—शका होनेपर प्रश्न का पुच्छना

परिभट्टणाप—पढा हुआ ज्ञानकि आवृत्ति करना.

धम्मकाहाप—उच्चस्वर से धर्मकथाका कहना

इतनि शुद्धताके माय आवश्यक करनेवाला होनेपर भी
नोभणुपेहाप क्षीम लिखने पढ़ने वाचने व अक्षर जोतीका
अनुमंशा (उपयोग) नहीं है उन सबका इत्य निशेवा में माना

मटा—शरीरको तेलादिकसे मालिसपीटी करे.

तुपुटा—नागरधेली के पानोंसे होठें कों लाल बना रखे.

पट्टर पट्ट पाउरणा—उज्वल सुपेद धखी धोलपट्टा पहने ।

जिणाणमणाणाप—जिनाहाके भंगकों करनेवाले ।

सच्छंद विहारीउण—अपने छंदे माफीक चलनेवाला ।

उभओकालं आवस्सयस्स उधदंति “ अण उवओगद्धं ”
दोनोयरुत आवश्यक करने पर भी “ उपयोग ” न होनेसे द्रव्य-
आवश्यक कहते हैं इति.

कुप्रवचन द्रव्यावश्यक जैसे चकचीरीया चर्मनेडा दंडधारी
फलाहारी तापसादि प्रातः समय स्नान भजन कर देव सभामें
इन्द्रभुवनमें अर्थात् अपने अपने माने हुये देवस्थानमें जाके उप-
योग शून्य किया करे उसे कुप्रवचन द्रव्यावश्यक कहते हैं । इति
द्रव्यनिक्षेपा ।

(४) भावनिक्षेपा—जीस वस्तुका प्रतिपादन कर रहे हो
उनी वस्तुमें अपना संपुरण गुण प्रगट हो गया हो उसे भाव निक्षेप
कहते हैं जैसे अरिहन्ताका भाव निक्षेपा कवलज्ञान दर्शन मयुक्त
समवसरणमें विराजमानका भाव निक्षेप कहते हैं उन भावनि-
क्षेप के दो भेद हैं (१) आगमसे - ना आगमसे । जिसमें
आगमसे आगमोंका अर्थ उपयोग मयुक्त उचआगा भावा
दूसरा तो आगम भावावश्यक कर्ता न भेद है ? लौकीक भावा
वश्यक (२) लौकीकर भावावश्यक. ३ कृप्रवचन भावावश्यक.

लौकीक भावावश्यक. जैसे राज राजभ्यः युगराजा मलयः
पादम्या कौटुब्धो मेट मैनापति आदि प्रातः समय स्नान भजन
नीत्यक छापा कर अपने अपने माने हुये तेषोंका भाव सहित

जब लीका कि भावश्यकता रहती है रत्नद्रिय जाना यह कार्य है । और रत्नद्रियमें पहुँचने के लिये लीका में घेड़ना वह लीका कारण है । लीकी नीचे की मोक्ष जाना है उन्मोके लिये क्षान शील तप भाव गुता प्रभावना स्वामि वात्मक्य संयम स्वान ज्ञान प्रीन इत्यादि भाव कारण है इन कारणोंमें कार्यकी निद्रि ही मोक्षमें जा सके है । कारण कार्य के कारण भागा होते है ।

(क) कार्य शुद्ध कारण अशुद्ध जेने सुशुद्ध प्रधान-गुणोप पाणों व्याप्ते लोके उन्मोकां विनुद्ध यना जयशानु राजाकों प्रति- बन्ध किया उन कारणमें यद्यपि अनेके प्रीयांकि हिना दूर परम्पु कार्य विनुद्ध था कि प्रधानका इरादा राजाकोंप्रतिघोष देनेका था.

(ख) कार्य अशुद्ध है और कारण शुद्ध जेने प्रमाणी अतगार ने कृष्ट किया तथाकि बहुत ही उच्च कोटी का किया था परम्पु अगता कक्षाग्रह की मन्त्र यनासे वा कार्य अशुद्ध था भाविक निम्नको की पैकि में क्षान्य द्रुवा ।

(ग) कारण शुद्ध आर कार्यकी शुद्ध जेने एक गोचर स्वामि आदि मृनिवने तथा भाव-रादि भावयनी इन प्रधानभावों का कारण तप संयम गुता प्रभावना आदि कारण भी शुद्ध और कोनराग दनेकी राजा प्रभावना भाव भी शुद्ध था

य क १० प्र १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २००

पटला व्यवहार होगा तो फीर निश्चय भी कभी आ जायेंगे। जैसे निश्चयमें जीव अमर है व्यवहार में जीव मरे जन्मे, निश्चयमें कर्मोंका कर्ता कर्म है व्यवहारमें कर्मोंका कर्ता जीव है, निश्चयमें जीव अण्वायाध गुणोंका भोक्ता है व्यवहार में जीव सुरदुःख का भोक्ता है निश्चयमें पाणी चये, व्यवहार में घर चये. निश्चयमें आप लाये, व्यवहार में आम आये. नि० खेल चाले. व्यवहार में गाड़ी चाले. नि० पाणी पड़े. व्यवहार में पनालपड़े इत्यादि अनेक दृष्टान्तोंसे निश्चय व्यवहारको समझना चाहिये. निश्चयकि धृद्धना और व्यवहार कि प्रवृत्ति रचना शास्त्रकारों कि आज्ञा है।

(८) उपादान निमित्त-निमित्त है सो उपादान का साधक साधक है जैसे शुद्ध निमित्त भोलनेसे उपादानका साधक है अशुद्ध निमित्त भोलना उपादानका साधक है। जैसे उपादान माताके निमित्त पिताको पुत्रकि प्राप्ती हुई-उपादान गौको निमित्त गोपालको दुध की प्राप्ती हुई। उपादान दुध निमित्त खटाह दहीकी प्राप्ती हुई। उपादान दहीका निमित्त भोलोने का घृतकि प्राप्ती हुई. उपादान गुरुका निमित्त सुशील शिष्य को ज्ञानकि प्राप्ती हुई. उपादान भव्य जीवको निमित्त ज्ञानदर्शन चारित्र्य तप ध्यान मौन पूजा प्रभायनादिका जीवनसे मोक्षकी प्राप्ती हुई

१ प्रमाण चार प्रत्यक्ष प्रमाण, आगम प्रमाण अनुमान प्रमाण ओषमा प्रमाण जिस्में प्रत्यक्ष प्रमाण के दो भेद हैं (१) इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण (२) ना इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण, इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण के पांच भेद हैं धात्रन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण चक्षु इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण घ्राणन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण रसेन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण, स्पर्शन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण, । ना इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण के दो भेद हैं देशसे २ सर्वसे जिस्में देशसेका दो भेद अवधिज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण मन परब ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण सर्वसेका षट् भेद

परमाणु गुणगण, सामान्य अरूपी अज्ञीवद्रव्य, विशेष धर्मद्रव्य
 अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, कालद्रव्य इत्यादि सामान्य तीर्थकर
 विशेष क्यार विशेषे साम तीर्थकर क्यारना तीर्थकर, प्रत्य ती-
 र्थकर भाव तीर्थकर सामान्य साम तीर्थकर विशेष बीम प्रकाश
 से तीर्थकर साम कर्म बन्धना है, अस्मिन्मोकि भक्ति करनेसे ता-
 पन् समकितका उर्ध्व करमेसे (देखो भाग १ लेखे बीम बोध)
 सामान्य अस्मिन्मोकि भक्ति विशेष स्मृति गुणकीर्तन पूजा नाद-
 क इत्यादि सामान्यसे विशेष विष्कारनाया है.

(११) गुण और गुणी पदार्थसे व्यापक बन्नु है उमे गुण
 कहा जाने है और जो गुणको धारण करमेवाले है उमे गुणी
 कहा जाता है. यथा—गुणी जीव और गुणज्ञानादि, गुणी अजीव
 गुणवर्तादि। गुणी अज्ञान अयुक्त जीव गुणमिष्टवाच्य, गुणीगुण,
 गुणगुणव्य गुणीगुणके, गुणगीत्याम कामजना, गुणी जीव गुण
 भिन्न नहीं है अर्थात् अवेद है।

(१२) ज्ञेय ज्ञान ज्ञानी—ज्ञेय जो जगत्के सद्वपरादि पदार्थ
 है उमे ज्ञेय कहते है, उमेका ज्ञानरता वह ज्ञान और ज्ञाननेवाला
 वह ज्ञानी है. ज्ञानी पुरुषोक्त लिये जगत्के मने पदार्थे वैराग्यका
 ही कारण है कारण इष्ट अस्मिन् पदार्थे लय ज्ञेय ज्ञाननेवाला है
 अस्मिन्मोकि इनाया काय है कि इष्ट अस्मिन् पदार्थोका अस्मिन्
 प्रथम पदार्थ ज्ञानना इमा अस्मिन् पदार्थ ज्ञाननेवाला है
 अस्मिन्मोकि अस्मिन् पदार्थ के अस्मिन् पदार्थ है अस्मिन् पदार्थ ज्ञानना पद
 पदार्थ के अस्मिन् पदार्थ के अस्मिन् पदार्थ है

ज्ञेय ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी
 ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी
 ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी
 ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी

लेन रहनेसे अनेक प्रकारके लये लये रूप धारण करने पर भी
 नैसर्ग्य तो अच्छी है परन्तु छद्ममण्योकि पद्यात्मके लिये कीलीने
 कीली भाकारक आचरणका है प्रीने अरिहंत भवती है लयनि
 उनीकि मूर्ति स्थापन कर उन शास्त्र मुद्राका रवान करना । इया
 निग रवान तो निर्गतम निगाकार निरकलेक अमूर्ति अच्छी भ
 लय अचल अगम्य अवेदी अवेदी अयोगि अवेदी इत्यादि
 लक्षितानम् बुद्धानम् अदानम् अलम् ज्ञानमय अनेन दर्शनमय
 वा मित्र अगवान है उनीक स्वरूपका रवान करना उनी रवा-
 निग रवान कहन है ।

। १० । अनुयोग क्याह प्रत्यानुयोग-शिक्षी श्रीवासीव अ
 नम्य अह कर्म संख्या परिणाम अत्यन्तमाय कर्मवन्धके हेतु कारण
 मिष्टि मिष्टि अन्धकार इत्यादि अचरकरी लमजाये गये हो उनी प्रत्या
 नुयोग कहा जाता है शिक्षा अत्र पर्यन्त गाहक लयी अह हेतुभीक
 नाहका अन्ध मूर्ध वह इत्यादि लक्षण विषय हो इति गीतवानु
 कोन कहन है शिक्षा भा-१ आचरण शिक्षा अन्ध आचरण वा
 कोन अन्ध । विषय अ । अन्धकार शिक्षा अन्धकार हो इति
 अन्ध अन्ध अन्ध कहन है शिक्षा अन्ध अन्ध अन्धकार शिक्षा
 अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध
 अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध
 अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध

अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध
 अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध
 अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध
 अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध
 अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध अन्ध

- (१) द्रव्यमें द्रव्यका उपचार जैसे काष्ठमें वंशलोचन.
- (२) द्रव्यमें पर्यायका उपचार यह जीव ज्ञानघन्त है.
- (३) द्रव्यमें पर्यायका उपचार यह जीव मरूपवान है.
- (४) गुणमें द्रव्यका उपचार-अज्ञानी जीव है.
- (५) गुणमें गुणका उपचार-ज्ञानी होनेपरभी क्षमायुक्त है.
- (६) गुणमें पर्यायका उपचार-यह तपस्वी यहै रूपघन्त है.
- (७) पर्यायमें द्रव्यका उपचार-यह प्राणी द्वेषतोका जीव है.
- (८) पर्यायमें गुणका उपचार-यह मनुष्य बहुत ज्ञानी है.
- (९) पर्यायमें पर्यायका उपचार-मनुष्य-श्यामवर्णका है.

२३) अष्टपक्ष-एक वस्तुमें अपेक्षा प्रदत्तकर अनेक प्रकारकी व्याख्या हो सती है. जैसे नित्य, अनित्य, एक, अनेक, सत्, असत्, वक्तव्य, अवक्तव्य, यह अष्टपक्ष एक जीवपर निश्चय और व्यवहारकी अपेक्षा उतारे जाते हैं यथा—

व्यवहारनयकी अपेक्षा ज्ञान गतिमें उदासि भाषमें वर्तता हुआ नित्य है और समय समय आयुष्य क्षीण होनेकी अपेक्षा अनित्य भी है निश्चयनयकी अपेक्षा ज्ञान दर्शन चाग्निप्रापेक्षा नित्य है और आरु लघु पर्याय समय समय उन्पान व्यय ही नकि अपेक्षा अनित्य भी है

व्यवहार नयमें ज्ञान गतिमें ज्ञान उदासि भाषमें वर्तता हुआ एक है और दूसरे भाषा पिता पुत्र छि वन्धवादिकी अपेक्षा अनेक अनित्य भी है निश्चयनयपेक्षा मय ज्ञानाका वैतन्व्यता गुण एक हीनसे आप एक है और आत्माकि असत्क्यात प्रदेश मय एक एक एकमें गुण पर्याय अनन्त अनन्त होनेसे

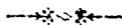
समय है अर्थात् अस्ति नास्ति एक समयमें है परन्तु है अथक्तव्य । कारण यद्यनके योगमें यत्तव्यता करनेमें असंख्यात समय लगते है चास्ते एक समय अस्तिनास्ति वा व्याख्यान हो नहीं सकते है । इसी भाषीक जीयादि सर्वे पदार्थों पर समभंगी लग सकती है । यह बात स्वाम ध्यानमें रखना चाहिये कि जहां स्वगुणकी अस्ति होमें वहां परगुणकि नास्ति अयश्य है । इति

(२५ . निगोदस्यरूपद्वार-निगोद दो प्रकार की है (१) सूक्ष्म निगोद । (२) घादर निगोद. जिस्में घादर निगोद जैसे कन्दमूल कान्दा मूला आलु रतालु पींडालु आदो अडधी सूयर्ण कन्द यमकन्द सफरकन्द निलण फूलण लसजादि इनोमें अनन्त जीवोंका पंढ है और जो सूक्ष्म निगोद है सो दो प्रकारकि है (१) व्यथहाररासी २ अव्यथहाररासी जिस्में अव्यथहाररासी है यह तो अभीतक घादर पाणिका पर-देखाही नहीं है-उन-जीवों की-शास्त्रकारोंने कीसी प्रकारकी गणतीमें व्याख्या करीभी नहीं है जो अठाणु बोलादि अल्पावहुत्य है उनमें जो जीवोंकि अल्प बहुत्य घतलाइ है यह मय व्यथहाररासी की अपेक्षा है उन व्यथहार रासीसे जीतने जीव मोक्ष जाते है य उतने ही जीव अव्यथहाररासीसे निकल व्यथहाररासी में आजाते है चास्ते व्यथहाररासीमें जीव कम नहीं होते है । व्यथहाररासी कि जो सूक्ष्म निगोद है उनोका स्वरूप इस भाषीक है

सूक्ष्म निगोद क गोलें सपूर्ण शोकाकाशमें बरा हुआ है एकमें चोकाश पदेश समा नहीं है कि जीमपर अम निगोदके गोलें न हें सपूर्ण शोकाका एक घन बनानेसे सात राज का बन होता है उनोमें एकचो अंगुलअध क अन्दर असंख्यात अणि है एकक अणिमें असंख्या - परतर है एकक परतर में अ

हे भव्यजीवी यह अपना जीव अनन्तीवार उन मूर्खम चादर निगोदमें तथा नरकमें दुःखों का अनुभव कर आया है इस समय मनुष्यादि अच्छी सामग्री मौली है धाम्ने यह परम पवित्र पुरुषोक्ता परमाया हुआ स्याद्वादनय निक्षेप द्रव्यगुण पर्यायादि अभ्यास शान का अभ्यास कर अपनी आत्मामें रमणता करो तांके पीर उन दुःखमय स्थानोंको देखने का अवसर ही न मौले । सज्जनों ! आधुनिक लोगों का आलस्य प्रमाद बहुत बढ़जानेसे बड़े बड़े प्रयोगों को अलमारी में रखा छोड़ते हैं इस धाम्ने यह संक्षिप्त में मार लिख सूचना करते हैं कि इस संयमध को आप कंठस्थ कर पीर रमणता करे तांके आपकी आत्मा का घटी भारी शांति मिलेगी । इति ।

संबंधते संबंधते—तमेव सचम् ।



थोकडा नम्बर. २२

पद द्रव्यके द्वार ३१ ।

नामद्वार आदिद्वार संस्थानद्वार द्रव्यद्वार अक्षद्वार
कालद्वार भाषद्वार. सामान्यविशेषद्वार निश्चयद्वार तयद्वार
निश्चयद्वार गुणद्वार पर्यायद्वार साधारणद्वार स्वामिद्वार
परिणामिकद्वार जीवद्वार मृतिद्वार प्रदेशद्वार एकद्वार शेष
द्वार क्रियाद्वार कर्ताद्वार निश्चयद्वार कारणद्वार मृतिद्वार
एवमद्वार प्रकृत्याद्वार स्पर्शनाद्वार प्रदेशस्पर्शनाद्वार अन्वय
द्वार

छे आग आठ, एवं दो दो प्रदेश वृद्धि होनेसे लोकान्त तक अंगरुप्यात् प्रदेशी है. एवं अधर्मास्तिकाय और आकाशान्तिकायका संस्थान लोकमें प्रीयाके आभरण जैसा और अलोकमें गाढाके ओधनाकार है. जीघ पुट्टलके अनेक प्रकारके संस्थान है कालका कोई आकार नहीं है।

(४) द्रव्यद्वार—गुणपर्यायके भाजनको द्रव्य कहते है निस्मे समय समय उत्पाद व्यय होते रहे—कारण कार्य एकही समयमें हो जो एक समय कार्य में उत्पाद व्यय है उनी समय कारणका उत्पाद व्यय है मूलजों एक द्रव्य है उनोंका निश्चय दो संद नही होता है कारण जीघद्रव्य तथा परमाणुद्रव्य इनका विभाग नही होते है। अगर द्रव्यके स्कन्ध देश प्रदेश कहा जाते है यह सब उपचरित नयसे कहा जाते है। द्रव्यके मूल सामान्य है स्वभाव है।

(१) अस्तित्वं—नित्यानित्य परिणामिक स्वभाव।

(२) वस्तुत्वं—गुणपर्यायका आधारभूत स्वभाव।

(३) द्रव्यत्वं—पट्टद्रव्य एकस्थानमें रहने परभी एकेक द्रव्य अपना अपना स्वभाव मुक्त नही होते है अर्थात् एक दुसरे स्वभावमें नही मालते हुये अपनि अपनि क्रिया करे।

(४) प्रमेयत्वं—स्वात्मा परात्माका ज्ञान होना यह स्वभाव जीघद्रव्यमें है। शेषद्रव्यमें स्वपर्याय स्वभावको प्रमेयत्वं स्वभाव कहते है।

(५) सत्त्वं—उत्पाद व्यय छुव एकही समय होनेपर भी वस्तु अपने स्वभावका त्याग नही करती है।

(६) अगुरुत्वत्वं—समय समय पट्टगुण हानिवृद्धि हाने पर भी अपन अपने गुणोंमें प्रणमते है।

उसे अभव्य स्वभाव कहते हैं। अर्थात् भव्य कि अनेक विष-
यस्यो होति है और अभव्य कि विषयस्यो नही पलटती है।

(११) वक्तव्य स्वभाव—एक द्रव्यमें अनेक वक्तव्यता है
उसमें जीतनि वक्तव्यता कर सबे उमे वक्तव्य स्वभाव कहते हैं।

(१२) अवक्तव्य स्वभाव—शेष रहे हुये गुणोकि वक्तव्यता
न हो उसे अवक्तव्य स्वभाव कहते हैं।

(१३) परम स्वभाव—जो एक द्रव्यमें गुण है यह कोसी दूसरे
द्रव्यमें न मिले उसे परम स्वभाव कहते हैं। जैसे धर्मद्रव्यमें चलनगुण

द्रव्यके विशेष स्वभाव अनन्त है। पटद्रव्यमें धर्मद्रव्य,
अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य यह पकेक द्रव्य है और जीवद्रव्य, पुद्-
गलद्रव्य अनन्त अनन्त द्रव्य है कालद्रव्य वर्तमानापेक्षा एक समय
है यह अनन्त जीवपुद्गलोकी स्थिति पुरण कर रहा है वास्ते
उपचरितनयसे कालद्रव्यको भी अनन्त कहते हैं और भूत भवि-
ष्यकालके समय अनन्त है परन्तु उने यहांपर द्रव्य नही माना है।

(५) क्षेत्रद्वार—जोम क्षेत्रमें द्रव्य रहे के द्रव्य कि क्रिया
करे उसे क्षेत्र कहते हैं धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य जीवद्रव्य और पुद्-
गलद्रव्य यह स्थान द्रव्य लोक व्यापक है। आकाशद्रव्य लोका-
लोक व्यापक है कालद्रव्य प्रवर्तन रूप आकाश द्विप व्यापक है
अन्य उपाह्व स्वयं रूप आकाश व्यापक है।

३. क्षेत्रद्वार जोम समय से द्रव्य क्रिया करने है उसे
कार कहते हैं धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य द्रव्यापेक्षा आदि
अन्य रहित है और ननि समयापेक्षा आदि मान्य है पुद्गल-
द्रव्य द्रव्यापेक्षा आदि अन्य रहित है द्विप्रदेश नाम प्रदेशो या-
वन अन्य प्रदेशो अपेक्षा आदि मान्य है क्षेत्रद्रव्य द्रव्यापेक्षा
आदि अन्य रहित है और उनेम न समयापेक्षा आदि मान्य है।

(१६) परिणामिद्वार—निश्चय नयसे पट्टद्रव्य अपने अपने गुणों में सदैव परिणमते हैं यास्ते परिणामि स्वभाव वाले हैं और व्यवहार नयसे जीव और पुद्गल अन्याअन्य स्वभावपूर्ण परिणमते हैं जैसे जीव, नरक तीर्थच मनुष्य देवतापणे और पुद्गल द्वि प्रदेशी याघन् अनेक प्रदेशी पणे परिणमते हैं ।

(१७) जीवद्वार—पट्ट द्रव्य में पांच द्रव्य अजीव है और एक जीव द्रव्य है जो जीव है वह अमर्यादा आत्म प्रदेश ज्ञान दर्शन चारित्र्य शौर्य गुण संयुक्त निश्चय नयसे कर्मोका अकर्ता ब्रह्मता सिद्ध सामान्य है ।

(१८) मूर्तिद्वार—पट्ट द्रव्य में पांच द्रव्य अमूर्ति यानि अरूपी है एक पुद्गल द्रव्य मूर्तिमान है परन्तु जीव जो कर्म संगसे नये नये शरीर धारण करते हैं इनापेक्षा जीव भी उप-चरित नयसे मूर्तिमान है ।

(१९) प्रदेश द्वार—पट्ट द्रव्य में पांच द्रव्य सप्रदेशी है एक काल द्रव्य अप्रदेशी है कारण धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्य असे रूपान्तर प्रदेशी है, एक जीव व अमर्यादा प्रदेश है और अनेक जीवो व अनेक प्रदेश हैं आकाश द्रव्य अनेक प्रदेशी है । पुद्गल द्रव्य निश्चय नयसे व परमाणु व परम्बु अनेक परमाणु पदार्थ होनेसे अनेक प्रदेशी है और व व अनेक पद सभय होनेसे अनेक प्रदेशी है और जीवो व अनेक व

पट्ट द्रव्य में पांच द्रव्य अजीव है और एक जीव द्रव्य है जो जीव है वह अमर्यादा आत्म प्रदेश ज्ञान दर्शन चारित्र्य शौर्य गुण संयुक्त निश्चय नयसे कर्मोका अकर्ता ब्रह्मता सिद्ध सामान्य है ।

(१९) प्रदेश द्वार—पट्ट द्रव्य में पांच द्रव्य सप्रदेशी है एक काल द्रव्य अप्रदेशी है कारण धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्य असे रूपान्तर प्रदेशी है, एक जीव व अमर्यादा प्रदेश है और अनेक जीवो व अनेक प्रदेश हैं आकाश द्रव्य अनेक प्रदेशी है । पुद्गल द्रव्य निश्चय नयसे व परमाणु व परम्बु अनेक परमाणु पदार्थ होनेसे अनेक प्रदेशी है और व व अनेक पद सभय होनेसे अनेक प्रदेशी है और जीवो व अनेक व

एव भाव मै रहतेनाले हीनी हे भयानि एक भाकाश पदेपाए
उभाकिनि उभाभाकिनि तीव गृहगत भीर काउड कय अगनि अगनि
रेका करन गृह भी एक दुलहे के अगुए नहीं भीजने हे ।

२० — विद्यापार निपाय लयमे गृह प्रत्य अगनि अगनि
एवमा कहे हे परम्पु उयवकार लयमे तीव भीर गृहगत विपा
करन हे पाय कवाए प्रत्य अगिअ हे ।

२१ । निपायपार उयवकार लयमे गृह प्रत्य निपाय
गःकवा हे भीर उयवकार लयमे उयवकारवा । गृह प्रत्य
अगिअ हे उयवकार लयमे पाय प्रत्य भीर गृहगत प्रत्य अगिअ
ए पाय कवाए प्रत्य निपाय हे ।

२२ । काउडपार पाय प्रत्य हे मा प्रीव प्रत्य के काउड
हे परम्पु जेव प्रत्य पीपी उयवी के काउड नहीं हे । जेमे जेव
प्रत्य अगि अगि उभाकिनिपाय प्रत्य काउड भीजनेमे प्रीव के
कउड काउड हे उयवकार गृह दुल भाकीक लय प्रत्य अगिअ

२३ । उयवकार निपाय लयमे गृह प्रत्य लयमे अगने उय
अगि काउड के कउड हे उयवकार लयमे पाय एव उयवकार कउड
हे उयवकार प्रत्य अगिअ हे ।

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१
५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८
५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५
६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२
७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६
८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३
९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००

अपनि कार रखाइ करे परन्तु एक दुसरेको न तो यादा करे न एक दुसरे से मीले । इसी भाँतिक पट्ट द्रव्य समझ लेना ।

(२८) पृच्छाद्वार—क्या धर्मास्तिकाय के एक प्रदेशको धर्मास्तिकाय कहते है ? यहाँपर-एवंभूत-नयसे उत्तर दिया जाता है कि एक प्रदेशको धर्मास्तिकाय नहीं कहा जावे । एवं दो तीन चार पाँच यायत् दश प्रदेश संख्याते प्रदेश असंख्याते प्रदेश सर्व धर्मास्तिकायसे एक प्रदेश कम होनेसे भी धर्मास्तिकाय नहीं कही जावे. तर्क—क्या कारण है ? उ—समाधान खंडे दंडको संपुरण दंड नहीं कहा जाते है एव खंड छत्र. घन. पत्र. चक्र इत्यादि जहाँ तक संपुरण वस्तु, न हो यहाँ तक एवंभूतनय उन वस्तुको वस्तु नहीं माने इस वास्ते संपुरण लोक व्यापक असंख्यात प्रदेशी धर्मास्तिकाय को धर्मास्तिकाय कहते है एवं अधर्मास्तिकाय एवं आकाशास्तिकाय परन्तु प्रदेश अनंत कहा ना एवं जीव पुद्गल और काल समझना ।

लोकका मध्य प्रदेश रत्नप्रभा नाम पहली तरक १८०००० योजनकी है उनोके निचे २०००० योजनकी घणोदधि. असंख्यात योजनका घणघायु. असंख्यात योजनका तनघायु उनोके निचे सो असंख्यात योजनका आकाश है उन आकाशके असंख्यातमें भागमें लोकका मध्य प्रदेश है इसी भाँतिक. अधो लोकका मध्य प्रदेश चाँदी पट्टप्रभा तरकवे. आकाश कुच्छ अधिक आदा चले-जातेपर अधो लोकका मध्य प्रदेश आना है । उर्ध्व लोकका मध्य प्रदेश पाचया त्रेयलोकके तीजा गिहनामका परतरमें है । तीचर्चा लोकका मध्य प्रदेश मरुपथके आठ रूपक प्रदेशमें है इसी भाँतिक धर्मास्तिकायका मध्य प्रदेश अधर्मास्ति कायका मध्य प्रदेश आकाशास्ति कायका मध्य प्रदेश समझना जीवका मध्य प्रदेश जीवों के आठ रूपक प्रदेशमें है. कालका मध्य प्रदेश कालके समझ है

स्पर्श करे स्यात् न भी करे काण्ड आढाह द्विपञ्च अन्दर जो धर्मास्ति है वह तो कालके प्रदेशको स्पर्श करे यह अनंत प्रदेश स्पर्श करे यहाँ उपचरित नयने कालके अनंत प्रदेश माना है और जो आढाहद्विपञ्च पाठार धर्मास्ति है वह कालके प्रदेश स्पर्श नहीं करने है । इसी माफोक अधर्मास्तिकाय भी समझना स्वभावापेक्षा ज० तीन प्रदेश उ० दो प्रदेशपन कायापेक्षा धर्मास्तिकाय यत्-आकाशान्तिकायका एक प्रदेश-धर्मद्रव्यका जय-न्य १-२-३ प्रदेश स्पर्श करे उ० सात प्रदेश स्पर्श करे-कारण आकाशास्ति अलोपमे भी है वास्ते लोकाके षण्मात्रमे एक प्रदेश भी स्पर्श कर सकते हैं । शेष धर्मास्ति काययत् जोयथा एक प्रदेश धर्मास्तिकायका ज० चार उ० सात प्रदेशोंका स्पर्श करते है शेष धर्मास्तिवत् । पुद्गलान्तिकायका एक प्रदेश-धर्मास्तिकायके ज० चार उ० सात प्रदेश स्पर्श करते है शेष धर्मास्तिकायवत् । कालका एक नमय धर्मास्तिकायको स्यात् स्पर्श करे स्यात् न भी करे जहांपर करने है यहाँ ज० चार उ० सात प्रदेश स्पर्श करे, शेष धर्मास्तिकायवत् । पुद्गलान्तिकायके दो प्रदेश-धर्मास्तिकायके ज० दुगुणोसे दो अधिक याने संप्रदेश उत्कृष्ट पांच गुणोसे दो अधिक याने बारहा प्रदेश स्पर्श करे एवं तीन चार पांच से सात आठ नौ दश संख्याते असंख्याते अनन्ते, सब जगह नयन्य दुगुणोसे दो अधिक उ० पांचगुणोसे दो अधिक.

३१ अन्पावहुत्वद्वार-द्रव्यापेक्षा सर्वे स्तोत्र धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य तीनों आपसमें तुला है कारण तीनोंका प्रत्येक द्रव्य है उनोसे त्रिषद्रव्य अनंत गुणो है उनोसे पुद्गलद्रव्य अनंत गुणो है कारण प्रत्येक त्रिषके अनन्ते अनन्ते पुद्गलद्रव्य लगे हुए है उनोसे काल द्रव्य अनंत गुणो है इति । प्रदेशापेक्षा सर्वे स्तोत्र धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य है प्रदेश है कारण तीनोंके प्रदेश असंख्याते है २ उनोसे त्रिष प्रदेश अनंतगुणो है ३ उनोसे

सर्प संख्या, द्रव्यका एक, यौल, अनंत प्रदेशी स्वगन्ध, श्रेयका एक, यौल अस्मख्यात प्रदेशी यगाहा, कालके यगाहा यौल एक समयसे अस्मख्यात समय तथा पर्यं १४ भायके यणके ६५, गन्धके २६ रसके ६५, स्पर्श के ६२ कुल २०२ यौल हुये.

उक्त २२२ यौलोंमें द्रव्य भाषापणे ग्रहन करते हैं सो (१) स्पर्श कीये हुये, (२) आत्म अवगाहन कीये हुये, (३) यह भी परस्पर अपगाहन कीये नहीं किन्तु अणन्तर अवगाहन कीये हुये (४) अणुया-छोटे द्रव्य भी लेंगे (५) पादर स्थुल द्रव्य भी लेंगे (६) उर्ध्व दिशाका (७) अधोदिशाका (८) तीर्थगुदिशाका (९) आदिका (१०) अन्तका (११) मध्यका (१२) स्वयिपयका (भाषाके योग्य) (१३) अनुपूर्वी (प्रमशः) (१४) भाषापणे द्रव्य ग्रहन करनेवाले प्रसनालीमें होनेमें नियमा छे दिशाका द्रव्य ग्रहन करे (१५) भाषाका द्रव्य सान्तर ग्रहन करे तो जघन्य एक समय उत्कृष्ट अस्मख्यात समय का अन्तर महुते, (१६) निरान्तर लेंगे तो ज० दो समय उ० असख्यात समयका अन्तरमहुते (१७) भाषाका पुद्गल प्रथम समय ग्रहन करे, अन्त समय त्याग करे, मध्यम ग्रहन करे और छडता रहे, पर्यं २२२ के अन्दर १७ यौल मौलानेसे २३९ यौल होते हैं । समुच्चयजीय और १९ दंडका पर्यं वीम गुना करनेसे ४७८० यौल हुये ।

(९) समुच्चयजीय सत्यभाषापणे पुद्गल ग्रहन करे तो २३० यौल पंचघन कहना इसीमाफीक पांचेन्द्रियके शालहादंडक पर्यं सतरेकी २३९ गुना करनेसे ४६३ यौल हुया इसी माफीक अस्मख्याभाषाकाभी ४०२३ इसीमाफीक मिश्रभाषाकाभी ४०६३ पंचहास भाषा में समुच्चय जीय और १९ दंडक हे कारण वकले चन्द्रिय में पंचहास भाषा हे यौलकी २३९ गुणा करनेसे ४७८० यौल हुये समुच्चयके ४७० यौल मौलानेसे एक वचनापेक्षा २१७४९

अज्ञानके वस मूलज्ञानसे प्रोधादि वस सत्य ही असत्य भाषाकि माफीक है और पर-परतापनावाली भाषा तथा जीवोंके प्राण चला जाय एसी भाषा बोलना यह दशों असत्य भाषा है ।

मिथ भाषाके दश भेद है-इन नगरमें इतने मनुष्यों उत्पन्न हुये हैं; उन नगरमें इतने मनुष्योंका मृत्यु हुआ है, इस नगरमें आज इतने मनुष्योंका जन्म और मृत्यु हुये यह सब पदार्थ जीव है यह सब पदार्थ अजीव है यह सब पदार्थोंमें आदे जीव आदे अजीव है. यह घनास्पति सब अनेतकाय है यह सब परित्तकाय है कालमिथ. उठो पोरसी दीन आगये है । लो इतने पर्य हो गये है भाषाये जय तक जिस बातका निश्चय न हो जाय यहाँ तक अगर कार्य हुआ भी हो तो भी यह मिथभाषा है जिसे कुच्छ सत्य हो कुच्छ असत्य हो उसे मिथभाषा कहते है ।

व्ययहार भाषाका बार भेद है (१) आमंत्रण भाषा-हे खोर, हे देव. (२) आज्ञा देना यह कार्य एना करो. (३) याचना करना यह वस्तु हमे दो (४) प्रभादिका पुच्छना (५) वस्तु तन्वकि प्ररूपना करना (६) प्रत्याख्यानदि करना (७) आगलेकी इच्छानुसार बोलना ' जहासुम् ' (८) उपयोग शुभ्य बोलना. (९) इरादा पूर्णक व्ययहार करना (१०) शेका मयुक बोलना (११) अस्पष्ट बोलना (१२) स्पष्टनासे बोलना । जिस भाषामें असत्य भी नहीं और पूर्ण सत्य भी नहीं उसे व्ययहार भाषा कही जाती है जिसे जीव मरगया इन्म पूर्ण सत्य भी नहीं है कारणकि जीव कभी मरना नहीं है और पूर्ण असत्य भी नहीं है कारण व्ययहारमें सब लानानि मरना जन्मना स्वीकार किया है इत्यादि -

है उनका काल-नरकमें असंख्यात समय के अन्तर महर्त्से. आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है असुरकुमार देवोंके जघन्य एक दिनसे उ० एकहजार वर्ष माधिक से, नागादिनीकायके देवोंको तथा व्यंतर देवों को ज० एक दिन उ० प्रत्येक दिनोंसे ज्योतिषी देवोंकी जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक दिनोंसे-धमानीक देवोंमें मीधर्म देवलोक के देवोंकी ज० प्रत्येक दिन उ० २००० वर्ष इशान देवलोक के देवों ज० प्रत्येक दिन उ० माधिक २००० वर्ष, मनसु-मार देवलोक के देवोंकी ज० २००० वर्ष, उ० ७००० वर्ष महेश्वर देवोंके ज० साधिक २००० वर्ष, उ० माधिक ७००० वर्ष, ब्रह्मदेवों की ज० ७००० वर्ष उ० १००० वर्ष लांतक देवों के ज० १०००० उ० १४००० वर्ष महाशुक्र देवोंकी ज० १४००० उ० १७००० वर्ष मद्दखादेवोंकी ज० १७००० उ० १८००० वर्ष अणुदेवोंके ज० १८००० उ० १९००० वर्ष यणत् ज० १९००० उ० २०००० वर्ष, आरण्य ज० २०००० वर्ष उ० २१००० वर्ष अच्युत देवोंकी ज० २१००० उ० २२००० वर्ष, प्रीयैक प्रथम प्रीक ज० २२००० उ० २२००० वर्ष मध्यम प्रीक ज० २२००० उ० २८००० उपरकी प्रीक की ज० २८००० उ० ३१००० वर्ष च्यार अनुत्तर वैमानवामी देवों की ज० ३१००० उ० ३३००० वर्ष स्याथैमिद्र वैमानवामी देवोंकी ज० उ० ३३००० वर्षोंसे आहार इच्छा उत्पन्न होती है। पाँच व्याघर की निरागतगाहार इच्छा होती है। सोन एकलेन्द्रिय की अन्तर महर्त्से मीर्यष पाचन्द्रि ज अन्तर महर्त्से उ सा दिनोंसे नार मन्त्र्यकी आहार इच्छा ज अन्तर महर्त्से उ नाम दिनोंसे आहार इच्छा उत्पन्न होता है।

२। नारक व नैरिय सा आहारपण पुद्गल प्रहस करने है नर प्रथम अन्न अन्नप्रकृता प्रथम अन्नकाल प्रदेण प्रय गाहन काय हृत् कालमे एक सप्तर्षिक नियति पाचन् अन्नकाल

समयकि स्थिति के पुद्गल, भावसे वर्ण गन्ध रस स्पर्श जैसे भाषाधिकारमें कहा है इसी भाषीक, परन्तु इतना विशेष है कि भाषापणे च्यार स्पर्शबाले पुद्गल लेते थे यहां आहारपणे आठो स्पर्शबाले पुद्गल ग्रहन करते हैं. इस वास्ते पांच वर्ण दोगन्ध पांच रस आठ स्पर्श षडं बीस बोलसे प्रत्येक बोल पर तेरह तेरह बोलोकि भाषना करणी जैसे एक गुण काला पुद्गल दोगुण तीनगुण च्यारगुण पांचगुण छेगुण सात गुण आठगुण नौगुण दशगुण संख्यातगुण असंख्यातगुण और अनंतगुणकाले इसी भाषीक, बीसो बोलोको तेरहा गुणे करनेसे २६० बोल हुये. स्पर्शादि १४ देखो भाषाधिकारमें बोल भीलानेसे १-१-१२-२६०-१४ सर्व २८८ बोलोका आहार नारकी ग्रहन करते हैं। अधिकतर नारकी वर्णमें इयाम वर्ण हरावर्ण गन्धमें दुर्भगन्ध रसमें तिक्त कटुक रस, स्पर्शमें कर्कश गुरु शीत क्लृप्त स्पर्श के पुद्गलो का आहार लेते हैं यह ग्रहन कीये हुये. पुद्गलोकी भी मडाके खराय करके पूर्वका वर्णादि गुणोको विधीत कर नये खराय वर्णादि उत्पन्न कर फीर ग्रहन कीये हुये पुद्गलो का आहार करे

इसी भाषीक द्रवतो क तेरहा दंडको मे भी २८८ बोलोका आहार लेते हैं परन्तु यह शब द्रव्य वर्णमें पीला मृपेद गन्धमें सुधिगन्ध रसमें अखिच मधुर रस स्पर्शमें मृदुल लघु उष्ण क्लृप्त पुद्गलो का आहार करे यहमें उन पुद्गलोकी पञ्च खराय गुणों के अक्छा बनके मनास पुद्गलोका आहार करे इसी भाषीक प्रव्यादि दश दंडको मे वामो बालक पुद्गलो की ग्रहन कर चाहे उमें अक्छा क खराय बनके चाहे खराय क अक्छा बनके २८८ बाल पञ्चवन् आहार ग्रहन करे परन्तु पांच ख्यावरमें ८-८ दिशाका भी आहार लेते हैं कारण

जहां अलौकिक कि. व्याघात है वहां ३-४-५ दिशाका ही पुद्गल लेते हैं शेष छे दिशा सयें ७२०० बोल हुये ।

(५) नारकी जो आहारपणे पुद्गल ग्रहन करते है वह क्या नयें आहार करे. मर्यप्रणमें मर्यउभ्यामपणे मर्यनिभ्यामपणे प्रणमे तथा पर्याप्ता कि अपेक्षा बारबार आहार करे प्रणमें उभ्यामे निभ्यामें और अपर्याप्ता कि अपेक्षा कदाचू आहारे कदाचू प्रणमे. कदाचू उभ्यामे कदाचू निभ्यामे ? उभरमें बारहा बोल ही करे है पयें २४ दंडकों में बारहा बोल हानेमे २८८ बोल हुये ।

(६) नारकी सें नैरियों के आहार के योग्य पुद्गल है उनीसे अमरुघात में भाग के द्रव्यों को ग्रहन करते है ग्रहन कीये हुये द्रव्योंसे अनंतमें भागके द्रव्य अस्थादन में आते है शेष पुद्गल विगर अस्थादन कियेही विध्वंस हो जाते है इसी माकीक २४ दंडकमें परन्तु पांच स्वाधरमें एक स्पष्टीग्रिय होनेसे वह विगर स्पष्टी कीये अनंत भाग पुद्गल विध्वंस हो जाते है ।

(६) नारकी देवताओं और पांचस्वाधर पयें २० दंडकोंके आहार पणे पुद्गल ग्रहन करते है वह मयके मय आहार करने जीव जी है कारण उनीसे राम आहार ह और ये इन्द्रिय जी आहार अंते है वह हा प्रकारसे लेते ह एक रोम आहार जो समय समय करते है वह नी मय व मय पुद्गल का आहार काम है और इसका जो कथनाहार है उनीसे ग्रहन कीये इय पुद्गल का प्रमथ्यात्ममे जागका आहार काम ह और अनंत हतारों जागय पुद्गल विगर स्वाद विगर स्पष्ट किये ही वि धम हो जाने है तिस्कातरतप्रमा . मय स्वाद विगर अस्थादन कीये पुद्गल . उनीसे प्रमथ्या पुद्गल अनंत गल है पयें २४ दंडक परन्तु २४ विगर मधुर्धिय स्वादा कहना . मय स्वाद विगर

विगत स्वर्ण विद्ये पुद्गल अस्तित्वात् इति माफीक चोन्निद्रिय
पांचेन्द्रिय और मनुष्यभी समझना ।

(८) नारकी जो पुद्गल आहारपणे ग्रहण करते है
वह नारकीके कील कार्यपणे प्रणमते है । नारकीके आहार
विद्ये हुये पुद्गल चोन्निद्रिय, चक्षुन्निद्रिय घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय
स्पर्शेन्द्रिय अनिष्ट अघात अप्रिय अमनोहा विशेष अमनोहा अशुभ
अनिष्टापणे भेदपणे उंचापणे नही किन्तु निष्ठापणे, सुखपणे
नही, किन्तु दुःखपणे, इन सत्तरा घोटोपणे वारवार प्रणमते है ।
पांच स्याथर तीमर्थयलेन्द्रिय तीर्थय पांचेन्द्रिय और मनुष्य इन
दश दंडकीमें औदारिक शरीर होनसे अपनि अपनि इन्द्रियोके
सुख और दुःख होनोपणे प्रणमते है । देवतोके तैरह दंडकीमें
नरकमे उलट्टे घाने सत्तरा घोटोभी अष्ट सुखकारी प्रणमते है ।
अर्थात् नारकीमें आहारके पुद्गल पक्वान्त दुःखपणे देवतोमें प
क्वान्त सुखपणे और औदारिक शरीरघाले शैवजीयोके सुख दुःख
होनोपणे प्रणमते है ।

। नारकीय जैरिय जो पुद्गल आहारपणे ग्रहण क
रते है वह क्या पक्वन्द्रियक शरीर है यायतु क्या पांचेन्द्रियके
शरीर है पय पयायापश्नाता जो जाय अपना शरीर छोडा है
जनीयाहा शरीर के चाहे पक्वन्द्रियक हा यायतु चाहे पांचेन्द्रियक
हा और यत्मान का पुद्गल नारका ग्रहण विद्ये हुय है वास्ते
पांचेन्द्रियक पुद्गल कहा जाते है पय दे दंडक पय पांच स्या
थर पयतु यत्मान पक्वन्द्रिय क पुद्गल कहा जाते है पय येन्द्रिय
क इन्द्रिय चोन्निद्रिय अपनि अपनि इन्द्रिय कहना कारण पहले
आहार लेनघाले जाय उन पुद्गलोकी अपना करलेते है वास्ते
जनीय ही पुद्गल कहलाते है ।

(१०) नारकी देवता और पांच स्थावर—रोमाहारी है किन्तु प्रक्षेप आहारी नहीं है. तीन यैकलेन्द्रिय तीर्थेष पांचेन्द्रिय और मनुष्य रोमाहारी तथा प्रक्षेपाहारी दोनों प्रकारके होते हैं ।

(११) नारकी पांच स्थावर तीन यैकलेन्द्रिय तीर्थेष पांचेन्द्रिय और मनुष्य ओजाहारी है और देवता ओज आहारी और मन इच्छताहारी भी है कारण देवता मन इच्छा करे वैसे पुद्गलोंका आहार कर सके है शेष जीवकों जैसा पुद्गल भीले वैसीका ही आहार करना पड़ता है इति

॥ सेवं भंते सेवं भंते—तमेव सचम् ॥



थोकडा नम्बर. २५



(सूत्र श्री पद्मवर्णार्जी पद ७ वा श्यामांशस)

नारकीके बैरिया श्यामोश्याम लोहारकि धमणकि मारकीके खेते है तीर्थेष और मनुष्य ये मात्रा याने जल्दीसे या धीरे धीरे दोनों प्रकारसे श्यामोश्याम खेते है । देवतामें असुर कुमारके देव सचयमे मात्र स्नाक कालमे उत्कृष्ट साधिक पक्ष पञ्च पञ्चा-दिन । से श्यामांशस खेते है । नागादि नो निकारके देव तथा व्यतर देव स मात्र स्नाक कालमे २० प्रत्येक महृतमे । श्यामि पांशेष ज० प्रत्येक महृत ३ प्रत्येक महृत साधिक देवलाकड देव ज० प्रत्येक महृत ३० दा पञ्चमे इशानदेव ज० प्रत्येक महृत ३० साधिक दा पञ्चमे सनस्कृमारके देव ज० दा पञ्च ३ मात्र पञ्च पञ्च ज० दा पञ्च साधिक ३० साधिक मात्र पञ्चमे पञ्च देव स स नरख २० इशानदेव लोहारके देव ज० इशानदेव ३० श्री-

दापक्ष महाशुभः देव ज० शीतपक्ष उ० मत्तरापक्ष महासादेव ज०
 मत्तनापक्ष उ० अठारापक्षमे अपानदेव ज० अठारापक्ष. उ० उक्ति-
 मपक्षमे, पपानदेव ज० उक्तिमपक्ष उ० शीत पक्षमे अण्युतदेव ज०
 शीतपक्ष उ० पक्षशीत पक्षमे अण्युतदेव ज० पक्षशीत पक्ष उ० श्वा-
 शीतपक्षमे शीतपक्षः पहले शीतपक्षः देव ज० श्वाशीतपक्ष उ० पक्षशीत
 पक्ष शुभरी शीतपक्ष देव ज० पक्षशीत पक्ष उ० अठारीत पक्षमे
 शीतरी शीतपक्ष देव ज० अठारीत पक्ष उ० पक्षशीत पक्ष श्वारा-
 नुसर श्वमानपक्ष देव ज० पक्षशीत पक्ष उ० तैत्तरीपक्ष मयापंमिष्ट
 श्वमानपक्ष देव ज० अण्युत उच्छृष्ट तैत्तरीपक्षमे श्वसोश्वास स्तंते हैं ।
 जैसे जैसे पुण्य घटते जाते हैं वैसे वैसे योगीश्री स्थिरता भी
 घटती जाती है देखताथीमे जहाँ हजारी यपौकि स्थिति है वह
 सात स्तोत्र कालमे, पक्षोपमकि स्थिति है वह प्रत्येक दिनेमे
 और श्वारोपमकी स्थिति है वहाँ जीतने सागरोपम उतनेही
 पक्षमे श्वसोश्वास लेते हैं । नोट-अमेरुपात समयकि एक आधि-
 लक्ष संख्याते आधिलक्षा, का एक श्वसोश्वास सात श्वसोश्वा-
 सका एक स्तोत्र काल होते हैं इति ।

संबंधते संबंधते तमेवमन्त्रम्.

— ❦ ❦ ❦ —

धाकडा नम्बर. २६

सुत्रश्री पञ्चवर्णाञ्ज पद = वा मन्त्राधिकार

महा जाषोर्व इन्द्र' वह महा दश प्रवा'क' है आहा
 महा अयमहा मैदुनमहा परिदहमहा उधमहा मानमहा
 अ'वा'महा राभमहा राकमहा आधमहा .

आहारसंज्ञा उत्पन्न होनेके चार कारण-है. उदरगीता होनेसे श्लुधायेदनिय कर्मादियसे आहारको देखनेसे और आहारकि चिंतयना करनेसे आहार संज्ञा उत्पन्न होती है ।

भयसंज्ञा उत्पन्न होने के चार कारण है अधेयं रखनेसे. भयमोहनिय कर्मादियसे, भय उत्पन्न करनेवा पदार्थ देखने से और भय कि चिंतयना करने से । हा हा अय क्या करेगा ?

मैथुन संज्ञा उत्पन्न होने के चार कारण है. शरीर को पीट याने हाट मांस रोद्र बढ़ानेसे. वेद मोहनिय कर्मादियसे, मैथुन उत्पन्न करनेवाले पदार्थ छि आदि को देखने से मैथुन कि चिंतयना करने से मैथुनसंज्ञा उत्पन्न होती है ।

परिमह संज्ञा उत्पन्न होने का चार कारण है. ममत्वभाव बढ़ाने से. लोभ मोहनिय कर्मादिय से, घनादि के देखने से परिमह कि चिंतयना करनेसे "

क्रोध संज्ञा उत्पन्न होने के चार कारण है क्षेत्र स्वत्वा बाग-वगेचे. घर. हाट. हथेली. शरीरादि से धनधास्यादि औपधि से क्रोध उत्पन्न होते हे एवं मात्र माया लाभ

लोकसंज्ञा अन्य लोकों की दृश्य व प्राय ही वह क्रिया करत रहे औघसंज्ञा शून्य धिन्नम विद्यापान करे मात्रमाण उपनाद धरती मीण इत्यादि उपवास शून्यतासे ।

नरकादि मोक्षमो दृष्टी म दश दश संज्ञा पाव काम' दृष्टि से मा'मघा' भविष्य मा'जन से प्रकृति काय ७ कीसी प्राणी की इतना मा'मघा' म मो'जन से मना'म' म है का'र मा'मघी मो'जन से प्रकृति ६ व म भी प्रकृतम संज्ञा व' आ'स्ति'म्य छद् गुणस्थान नव है

अल्पायुहृतय— नरक. मे (१) स्तोक मैथुनसंज्ञा (२) आहार
 संज्ञा संख्यातगुणे (३) परिग्रहसंज्ञा संख्यातगुणे (४) भयसंज्ञा
 संख्यातगुणे— तीर्थच मे (१) सर्वस्तोक परिग्रहसंज्ञा. (२) मैथुन
 संज्ञा संख्यातगुणे. (३) भयसंज्ञा संख्यातगुणे (४) आहारसंज्ञा
 संख्यातगुणे । मनुष्य मे (१) सर्वस्तोक भयसंज्ञा. (२) आहार-
 संज्ञा संख्यातगुणे (३) परिग्रहसंज्ञा संख्यातगुणे (४) मैथुनसंज्ञा
 संख्यातगुणे । देवता मे (१) सर्वस्तोक आहारसंज्ञा (२) भय-
 संज्ञा संख्यातगुणे (३) मैथुनसंज्ञा संख्यातगुणे (४) परिग्रहसंज्ञा
 संख्यातगुणे.

नरक.मे सर्वस्तोक. लोभसंज्ञा मायामंज्ञा संख्यातागुणे मान-
 संज्ञा संख्या० प्रोधसंज्ञा संख्यागु तीर्थच मनुष्य मे सर्वस्तोक
 मानसंज्ञा. प्रोधसंज्ञा. विदोषाधिक. मायामंज्ञा विदोषाधिक. लोभ-
 संज्ञा विदोषाधिक देवता मे सर्वस्तोक. प्रोधसंज्ञा मानसंज्ञा सं-
 ख्यातगुणे मायामंज्ञा संख्यातगुणे लोभसंज्ञा संख्यातगुणे इति ।

नेत्रंनेत्रं नेत्रंनेत्रं नेत्रंनेत्रं ।

— ३ —

श्री ३ टा नमः ५

अथ वा पक्षवर्णानपद - वा यानपद

अथ वा पक्षवर्णानपद - वा यानपद
 अथ वा पक्षवर्णानपद - वा यानपद
 अथ वा पक्षवर्णानपद - वा यानपद
 अथ वा पक्षवर्णानपद - वा यानपद
 अथ वा पक्षवर्णानपद - वा यानपद

नहीं है। घन्मीपत्तायोनि शेष सर्व मंसारी जीयोकि माताके होती है जीस योनि में जीष उत्पन्न होते है यह जन्मते भी है वि-
श्वंस भी होते है। इति

सेवंभते सेवंभते तमेवसद्यम् ।

थोकडा नम्बर २८.

सूत्रश्री भगवतीजी शतक १ उद्देशा १

सर्व जीष दो प्रकार के है उरते आरंभी कहते है (१)
आत्मा का आरंभ करे, परवा आरंभ करे, दोनों का आरंभ करे,
(२) कीसी का भी आरंभ नहीं करे यह अनारंभीक है, इसका
यह कारण है कि जो मिथो के जीष है वह तो अनारंभी है और
जो सनारी जीष है वह दो प्रकार के है १) संयति (२) असयति,
जिसमें संयति के दो भेद है, १ प्रमादि संयति दूसरे अप्र-
मादि संयति जो अप्रमादि संयति है वह तो अनारंभी है और जो
प्रमादि संयति है उनीष ही भेद है यह समयोगि दूसरा अनुभ-
वति जिसमें दो प्रकार है पहला अनारंभ है और जो प्रमादि
संयति अनारंभ के है वह आत्मा आरंभी है परवा के उभया-
रंभ है यह समयोगि का समजनता यह तरवादि २२ दृष्टवनी
आत्मा के परवा के समयोगि के परवा अनारंभ नहीं है और
मनुष्य समुच्चय के शेष मापव संयति अप्रमादि का सम योगि
न के का अनारंभ है ३ दाय अनारंभ है

संयोगि के दो प्रकार है पहला अनारंभ है और जो प्रमादि
संयति अनारंभ के है वह तो अनारंभ है दाय अनारंभ है

यद्य मनुष्य शेष २३ दंडक के लेश्या मयुक्त जीव आत्मारंभी परारंभी उभयारंभी है. कृष्ण, निल, कापोत, लेश्यावाले समुच्चय जीव और बायीस बायीस दंडक के जीव सबके मय आरंभी है कारण यह तीनों अशुभ लेश्या है इनके परिणाम आरंभमे यत्र नहीं स्रजते है। तेजा लेश्या समुच्चय जीव और अठारा दंडकोमे है जिस्मे समुच्चय जीव और मनुष्यके दंडकमे जो संयति अग्रमादि और सुभयोगवाले ती अनारंभी है शेष मय आरंभी है यह यह लेश्या तथा शुक्ल लेश्या भी समजना परन्तु यह समुच्चय जीव वैमानिक देव और मंशी मनुष्य तीर्यचमे ही है जिस्मे संयति अग्रमादिपणा मनुष्यमे ही होते है यह अनारंभी है शेष जीव ती आत्मारंभी परारंभी उभय आरंभी होते है यह अनारंभी नहीं है।

आत्मारंभी स्वयं आप आरंभ करे। परारंभी तुमरोमे आरंभ कराये उभयारंभी आप स्वयं करे तथा तुमरोमे भी आरंभ कराये इति

संबंधते संबंधते-तमेरगम्

—→*⊙⊙⊙*←—

थोकडा नम्बर २६.

—
अव्याख्यान

सही अमशी मम स्वावर पयामा अवयांता. गुणम और बाहर इन आठ बाकीक लडिया अलडिया पय २६।

१. मनेस्ताव मशा व लडिया ० मम प्रीपीक लडिया अमकवात गुण । २. अमशाव अलडिये अमकगुणे । ३. स्वावर क अलडिये विद्याय ० । बाहर व लडिये अमक ० । ४. मनेस्ताव अलडिये विद्याय । ५) अम

पर्याप्ता के अलक्ष्मिये असंख्यात गुणे (८) पर्याप्ता के अलक्ष्मिये विशेष. (९) पर्याप्ताके लक्ष्मिया संख्यात गुणे (१०) अपर्याप्ताके अलक्ष्मिये विशेष. (११) सूक्ष्मके लक्ष्मिये विशेष (१२) यादरके अलक्ष्मिये वि० (१३) स्यादरके लक्ष्मिये विशेष (१४) प्रसके अलक्ष्मिये वि० (१५) असंज्ञीके लक्ष्मिये वि० (१६) संज्ञीके अलक्ष्मिये विशेषाधिक । लक्ष्मिया जैसे संज्ञीके लक्ष्मिये कहनेसे संज्ञी जीव और संज्ञीके अलक्ष्मिये कहनेसे असंज्ञी जीव और सिद्धीके जीव गीने जाते है इसी भाषीक जीसके लक्ष्मिये कहनेसे यह जीव है और जीसको अलक्ष्मिया कहनेसे उन जीवोंके सिवाय शेष जीव अलक्ष्मिये में गीने जाते है इति ।

चौदाभेद जीवोंकी अल्पावहुत्व. (१) सर्व स्तोक संज्ञी पांचेन्द्रियका अपर्याप्ता. २) संज्ञी पांचेन्द्रियके पर्याप्ता संख्यात गुणे. ३) चौरिन्द्रिय पर्याप्ता संख्या. गु० (४) असंज्ञी पांचेन्द्रिय पर्याप्ता विशेषः ५) द्वादशेन्द्रियके पर्याप्ता विशेषः (६) तेइन्द्रियके पर्याप्ता विशेषः ७) असंज्ञी पांचेन्द्रिय के अपर्याप्ता असंख्यात गुणे (८) चौरिन्द्रियके अपर्याप्ता विशेष (९) तेइन्द्रियके अपर्याप्ता विशेष (१०) द्वादशेन्द्रियके अपर्याप्ता विशेष. (११) यादर पकेन्द्रियके पर्याप्ता अनंत गुणे (१२) यादर पकेन्द्रियके अपर्याप्ता असंख्यात गुणे (१३) सूक्ष्म पकेन्द्रियके अपर्याप्ता असंख्यात गुणे (१४) सूक्ष्म पकेन्द्रियके पर्याप्ता संख्यातगुणे इति ।

आठ बालीके अल्पावहुत्व १. सर्वस्तोक अभव्यजीव (२) प्रतिपत्ति मध्यमदृष्टि अनंतगुणे ३) सिद्धभगवान् अनंतगुणे ४) संसारीजीव अनंतगुणे ५) सर्व पुद्गल अनंतगुणे (६) सर्व काल अनंतगुणे ७) आकाशप्रदेश अनंतगुणे ८) क्वलज्ञान केवलदशनव पर्यव अनंत गुणे ।

स्तोक परत्तससारी जीव. शुद्धपक्षी जीव अनंतगुणे, कृष्ण

पक्षीजीव अनंतगुणे, अपरत संसारी जीव विशेषः । पुनः । स्तोक
अपर्याप्ता जीव सुत्ताजीव संख्यातगुणे जागृतजीव संख्यातगुणे
पर्याप्ताजीव विशेषः ॥ पुनः ॥ स्तोक समोद् वा मरणवाले जीव.
इन्द्रिय बहुता संख्यात गुणे नोइन्द्रिय बहुते विशेषः असमोद्ये
जीव विशेषः । पुनः । स्तोक वादरजीव, अजाहारी जीव संख्यात
गुणे, सूक्ष्मजीव संख्यातगुणे आहागीक जीव विशेष ॥ पुनः ॥
स्तोक घादरके लद्धिये, सूक्ष्मके अलद्धिये विशेषः सूक्ष्मके ल-
द्धिये असंख्यातगुणे घादरके अलद्धिये विशेषः इति ।

—→*⊙⊙⊙*←—

थोकडा नम्बर ३०.

स्तोक. अभव्यके लद्धिये (२) शुक्लपक्षके लद्धिये अनंत
गुणे (३) भव्यके अलद्धिये अनंतगुणे (४) भव्यके लद्धिये अ-
नंत गुणे (५) कृष्णपक्षके लद्धिये विशेषः (६) कृष्णपक्षके
अलद्धिये अनंतगुणे (७) शुक्लपक्षके अलद्धिये विशेषः (८)
अभव्य के अलद्धिये विशेषः ॥ पुनः ॥ स्तोक. मनुष्यके लद्धिये
(२) नामकीके लद्धिये असंख्यातगुणे (३) देवताके लद्धिये
अम० गु० (४) तीर्थचके अलद्धिये विशेषः (५) तीर्थचके ल-
द्धिये अनंतगुणे । ६ । देव अलद्धिये वि० ७ नामके अलद्धिये
वि० मनुष्य अलद्धिये विशेषः ॥

स्तोक. मिथ्यादृष्टि [२] पुरुषवेद असंख्यात गुणे ३ वि-
वेद संख्यात गुणे (४) अषधिदशन विशेष ५ चक्षुदशन
म० गु० ६ । कषलदशन अनंतगुणे ७ मध्यादृष्टि विशेष
(८) नपुंसकवेद अनंतगुणे ९ मिथ्यादृष्टि वि० १० । अष
क्षुदशन विशेष पुन । स्तोक अचर्मजीव ५ नामहीजीव
अनंतगुणे ३ नामनयागीजीव विशेष ४ नामअज्ञजीव विशेष

स्तोक मनः चलप्राण [२] यद्यन चलप्राण असंख्यातगुणे [३] श्रोत्रेन्द्रिय चलप्राण असंख्यात गुणे [४] चक्षुइन्द्रिय चलप्राण विशेषः [५] घ्राणेन्द्रिय चलप्राण विशेषः वि० [६] स्नेन्द्रिय चलप्राण वि० [७] स्पर्शेन्द्रिय चलप्राण अनंतगुणे [८] काय चल प्राण विशेषः [९] श्वासोश्वास चलप्राण वि० [१०] आयुष्य चलप्राण विशेषः ॥ पुनः ॥ स्तोक मनः पर्याप्तिके जीव [२] भाषापर्याप्तिके जीव असंख्यात गुणे [३] श्वासोश्वास पर्याप्ति के जीव अनंतगुणे [४] इन्द्रिय पर्याप्ति० वि० [५] शरीर पर्याप्तिके जीव वि० [६] आहार पर्याप्तिके जीव विशेषः ॥ पुनः ॥ स्तोक मनुष्य [२] नास्की असंख्यात गुणे [३] देयता असंख्यातगुणे [४] पुरुषवेद विशेषः [५] स्त्रियेद संख्यातगुणे [६] नपुंसकवेद अनंत गुणे [७] तीर्थच विशेषाधिक ॥ इति

थोकडा नम्बर ३१.

स्तोक मनुष्यणी [२] मनुष्य असंख्यात गुणे [३] नैरिये असंख्यातगुणे [४] तीर्थचणी असंख्यातगुणी [५] देयता संख्यात गुणे [६] देयी संख्यातगुणी [७] पांचेन्द्रिय संख्यात गुणे [८] चारिन्द्रिय वि० [९] तेइन्द्रिय वि० [१०] वेइन्द्रिय वि० [११] प्रसकाय वि० [१२] तेउकाय असंख्यात गुणे [१३] पृथ्वी काय वि० [१४] अपकाय वि० [१५] वायुकाय वि० [१६] मिद्ध भगवान अनंतगुणे [१७] अनन्द्रिय विशेष [१८] यनाम्पति अनंतगुणे [१९] मन्द्रिय वि [२०] नायच विशेष [२१] मन्द्रिय वि० [२२] मकाया वि [२३] समुच्चय जीव विशेषः
स्तोक मनुष्य - नास्की असंख्यात गुणे [३] देयता असंख्यात गुणे [४] पुरुषवेद विशेष [५] स्त्रियेद संख्यातगुणी

[६] पांचेन्द्रिय वि० [७] चौरिन्द्रिय वि० [८] तेन्द्रिय वि०
 [९] वेन्द्रिय वि० [१०] प्रसक्ताय वि० [११] तंडकाय अमं-
 रुयात् गुणे [१२] पृथ्वीकाय वि० [१३] अपकाय वि० [१४]
 वायुकाय विशेषः [१५] यनास्पतिकाय अनंतगुणे [१६] पकेन्द्रिय
 विशेषः [१७] नपुंसक जीव विशेषः [१८] तीर्थचर्त्रीय विशेष ।

सर्वे स्तोक पांचेन्द्रियके लद्धिये [२] चौरिन्द्रियके लद्धिये
 विशेषः [३] तेन्द्रियके लद्धिये वि० [४] वेन्द्रियके लद्धिये
 वि० [५] तंडकायके लद्धिये असं० गु० [६] पृथ्वीकायके ल-
 द्धिये वि० [७] अपकायके लद्धिये वि० [८] वायुकायके ल-
 द्धिये वि० [९] अभव्यके लद्धिये अनंतगुणे [१०] परत समारी
 जीवोंके लद्धिये अनंतगुणे [११] शुक्रपक्षी विशेषः [१२-१३]
 सिद्धोंके लद्धिये और संसारके अलद्धिये आपसमें तुला और अ-
 नंतगुणे [१४] यनास्पतिकायके अलद्धिये विशेषः [१५] भव्य
 जीवोंके अलद्धिये विशेषः [१६] परतजीवोंके अलद्धिये वि०
 [१७] कृष्णपक्षीके अलद्धिये वि० [१८] यनास्पतिके लद्धिये
 अनंतगुणे [१९] कृष्णपक्षीके लद्धिये वि० [२०] अपरतजी-
 वोंके लद्धिये वि० [२१] भव्यजीवोंके लद्धिये वि० [२२-२३]
 संसारी जीवोंके लद्धिये और सिद्धके अलद्धिये आपसमें तुला
 वि० [२४] शुक्रपक्षीके अलद्धिये वि० [२५] परतजीवोंके अल-
 द्धिये वि० [२६] अभव्यजीवोंके अलद्धिये वि० [२७] वायु
 कायके अलद्धिया वि० [२८] अपकायके अलद्धिये वि० [२९]
 पृथ्वीकायके अलद्धिये वि० [३०] तंडकायके अलद्धिये वि०
 ३१] वेन्द्रियके अलद्धिये वि० [३२] तेन्द्रियके अलद्धिये
 वि० [३३] चौरिन्द्रियके अलद्धिये वि० [३४] पांचेन्द्रियके अ-
 लद्धिये विशेषाधिकार इति ।

श्री सयंप्रभमूरीश्वराय नमः

शीघ्रबोध भाग ४ था.

धोकडा नम्बर ३२.

सूत्र श्री उत्तराध्ययनजी अध्ययन २४.

(अष्ट प्रवचन)

इयांसमिति, भाषासमिति, पपणासमिति, आदान भंडम-
 लोषगणसमिति, उद्यार पासषण जल खेल मैल परिठाषणिया
 समिति, मनोगुप्ति, धचनगुप्ति, कायगुप्ति इन पांच समिति तीन
 गुप्तिके अन्दर पांच समिति अपथाद् है और तीन गुप्ति उन्मर्ग हे
 चसे मुनिको उन्मर्ग मार्गमे गमनागमन करना मना है परन्तु
 अपथाद् मार्गमे आहार, निहार, विहार और जिनमन्दिर दर्शन
 करनेको जाना हा ता इयांसमितिपूर्वक जाये उन्मर्ग मार्गमे मु-
 निका भौत रचना परन्तु अपथाद् मार्गमे याचना पुच्छना, आज्ञा
 जना और पश्चादि पुच्छाका उत्तर देना इन कारणों से सोचाना
 पर ता भाषा समिति समुक्त वाटे उन्मर्ग मार्गमे मुनिको आहार
 करना हा नही अपथाद्मे संयम यात्रा शरीरक निर्वाहके लिये
 आहार करना पड़े ता पपणासमिति निदाष आहार लाके करे,
 उन्मर्ग मार्गमे मुनिको निरुपाधि रहना अपथाद्मे लज्जा तथा
 धारमह न महन हा ता मर्यादा माफिक ओपधि राखे, उन्मर्गमे

मल मात्र करे नहीं, आहार पाणीके अभाव परठे नहीं; अपवाद मार्गमें निर्घण्ट भूमिपर विधिपूर्वक परठे ।

(१) इयामिति का चार भेद है—आलम्बन, काल, मार्ग, यत्ना, जिनमें आलम्बन—ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य, काल—अहोरात्री, मार्ग—कुमार्ग न्याय और सुमार्ग प्रवृत्ति, यत्नाका चार भेद इंद्रिय, श्रेय, काल भाव, द्रव्यमें इयामिति—छे कायाके जीवोंके यत्ना करते हुये गमन करे, श्रेयमें—चार उपाय परिमाण भूमि देखके गमनागमन करे, कालसे दिनको देखके रात्रीमें पूँजके घाने, भावसे—गमनागमन करने हुये याचना, पुच्छना, पराधर्तना, अनुपेक्षा, धर्मकथा न कहे, शब्द, रूप गन्ध, रस, स्पर्शपर उपयोग न रखते हुये इयामिति पर ही उपयोग रखे ।

(२) भाषामितिके चार भेद—द्रव्य श्रेय काल, भाव, द्रव्यसे—कर्मशुकारी, कठोरकारी, छेदकारी भेदकारी मर्मकारी, भाषण पापकारी मृदापाद और निशयकारी भाषा न बोले श्रेय में—गमनागमन करने समय रहस्नेमें न बोले कालसे—एक पहर रात्री ज्ञानिक याद मृदाक्षय हो यद्वातक उच्चस्वरमें नही बोले, भावमें—राग द्वेष असुक्त भाषा नही बोले ।

३ गणयान्तिभित्तिक चार भेद - द्रव्य श्रेय, काल भाव द्रव्यमें मुनि निदाय आहार पाणी यस्व यात्र, मकानादिवा प्रश्न करे कारण निदाय अज्ञानादि भाषणमें अहितयुक्ति निर्घण्ट रहना है इत्येवम्ब कस्मिन् आहार दानवाच अत्र ज्ञेयवासि दृष्टर वनयाय ४ पात्र विगत क रण दानवन आहारान्दि दनेवाले या उन्नया ४ दानके दान्यकाने च र दनलाये है श्री स्वानाग पुत्र स्थान ५ न तथा उन्नयनांनय दानक ५ ३ ३ ३ में दायित आहार दानक स्थान अ यस्व तथा अश्म दानायुक्व यस्वने है और यस्व यनयन दानक ५ ३ ३ में आधाशर्मा पात्रा कर्मेशालीका

[११] अभिहृद दोष—अन्यस्थानसे सन्मुख लाके देवे.

[१२] भिन्नोदोष—छान्दो कीमाडादि खुलवाके देवे.

[१३] मालोहृद दोष—उपरसे जो मुश्किलसे उतारी जावे
 पसे स्थानसे उतारके दी जावे ।

[१४] अच्छोजे दोष—निर्बल जनोसे सबल नयरदस्ति
 बलाकारे दीरावे उसे लेना.

[१५] अणिसिद्धे दोष—दो जनोके विभागमें हो एकको देने
 का भाव हो एकके भाव न हो यह वस्तु लेवे तो भी दोषित है.

[१६] अज्योयर दोष—साधुके निमित्त कमादार बनाते
 समय ज्यादा करदे यह आहार लेना । ..

इन १६ दोषोंको उद्गमन दोष कहते है यह दोष जो गृहस्थ
 भद्रोक साधु आचारमें अज्ञात और भक्तिके नामसे दोष लगाते है.

१७] घाहदोष— धात्रीपणा याने गृहस्थ लोंगोंके घाल्यष्टो
 को रमाना, खेलाना इनोसे आहार लेना । ..

१८] दूधदोष—दूधपणा इधर उधर से समाचार कह से
 आहार लेना

१९] निमित्तदोष भूत भक्षिष्यका निमित्त कहके आ

२०] आज्ञादोष धरति जतिवा गोरथ बतलाये

२१] वलिमागदोष राक्षसि मापित्र याचना कर आ०

२२] विरक्तदोष—अपेधि वगए बतलाय आ०

२३] कालदोष पंच कर भय बतलाय आहार लेना

२४] माणदोष मान अहक र कर आहार लेना

२५] मायादोष मायावृत्ति कर आहार लेना

२६] लालदोष लालच लालुपता से आहार लेना

२७] दुःखपक्षासमर्थक दोष—आहार ग्रहण करनेके पहले

२८] पाकदोष पाक वस्तु करके आहार लेना

[३८] विज्ञानशोध—सूक्ष्मशोधका विद्या सतत्याके अद्योत् शोध-
लि आदि विधीयोंका साधन करनेकी विद्या ..

[३९] मिलनशोध—यंत्र यंत्र शीघ्राना अद्योत् हरीतगणेषो
आदि विधीयोंका साधन करवाना ..

[३०] श्रुतशोध—एक गद्यार्थके साधन नुसरा गद्यार्थ मीमांसा
के एक मीमांसी यन्त्रु प्राप्त करना मीमांसक ..

[३१] प्रयोगशोध—लेख प्रतीककरणआदि कलाके भाग ..

[३२] सूक्ष्मशोध—सर्वांगानादि शोधधीयों उपायो सत-
त्याके आहार पाणी प्रदान करना शोध है.

[३३] यह साष्टक शोध मुनिपोक कारण से उत्पन्न है साष्टक
साधनानिष्ठाधीयोंका अगने आश्रित विज्ञानशोध शोधे इन शोधोंकी
साधना आश्रिते इन ३३ शोधोंका उपाय शोध कहने है ।

३३ सर्वांग शोध आहार प्रदान समस्त मुनिही तथा सू-
क्ष्मशोध शोध है कि यह आहार शोध है या अशुद्ध है तथा आ-
हारकी प्रदान करना यह शोध है

३४ मीमांसक शोध एक गद्यार्थके साधन नुसरा गद्यार्थ मीमांसा
के एक मीमांसी यन्त्रु प्राप्त करना मीमांसक

३५ लेख प्रतीककरण आदि कलाके भाग

३६ शोधधीयोंका साधन करवाना

३७ सूक्ष्मशोध—सर्वांगानादि शोधधीयों उपायो सत-
त्याके आहार पाणी प्रदान करना शोध है.

३८ विज्ञानशोध—सूक्ष्मशोधका विद्या सतत्याके अद्योत् शोध-
लि आदि विधीयोंका साधन करनेकी विद्या ..

बहु कटोरी कुटछी लीत पडो रहने से जीषोकि विराधना होती है और धोने से पाणीके जीषोकी विराधना हो . ,

[४] दायगोदोष—दातार अगोपांगसे दित हो, अंधा हो जिनसे गमनागमनमें जीष विराधना होती हो . .

[४१] लीतूदोष—नत्वाल्का लिपा हुआ आंगण हो .

[४२] छंडियेदोष घृतादिके छांटे दोषके पडते देवे . .

[४] यह दश दोष मुनि गृहस्थों दोनोंके प्रयोग से लगते है वास्ते दोनोंको उपास रचना चाहिये । एवं ४२ दोष श्री आचारांग सूयगढायांग तथा निशियनूषोंमें और विशेष खुलासा पिंड-निर्युक्तिमें है । प्रसंगोपात अन्य नूषों से मुनि भिक्षाके दोष लिखे जाते है ।

श्री आचर्यकसूत्रमें १ गृहस्थोंके घरका कमाड दरवाजा खुलाके तथा कुच्छ खुला हो उनोंके अन्दर जा के भिक्षा लेना मुनियोंके लिये दोषित है २ कौनकेक देशमें पहले उत्तरी हुए गोश्री तथा घाट राँव वाषण अग्रभागका गौ कुत्तादिकों डालने से यह जेना मुनिकों दोषित है [३] देव देवीके बसीका आहार जना दोषित है [४] विना देवी हुए वस्तु लेना दोष है [५] पहले निशय आहार करना हो पकन से कौमी गृहस्थोंने मरमा-हारादि अन्न-वस्तु का वन-वस्तुमें पहन करने ममय विचार करे कि अन्न आहार वह जातने वा निशय आहार परतु हुगे वा दोषित है कस्य आहार परतुकरा वह आरा प्रायश्चित्त है

४३ ममय विचार परतुकरा -

अन्न-वस्तु का वन-वस्तुमें पहन करने ममय विचार करे कि अन्न आहार वह जातने वा निशय आहार परतु हुगे वा दोषित है कस्य आहार परतुकरा वह आरा प्रायश्चित्त है

श्रीय रक्षा निमित्त० तपभयार्थ निमित्त० और भ्रतगत करने निमित्त इन छे कारण से आहारका त्याग कर देना चाहिये । और छे कारण से आहार करना कदा हे शुभा येदना सहन नहीं हो सके, आत्मार्यादिक, व्यायस करना हो, इयां सोधनेके लिये, संवस यात्रा निर्याहानेको, प्राणभूत श्रीय सम्पत्तिक रक्षा निमित्त, धर्मवचन कर्मके लिये इन छे कारणों से भूमि आहार कर सके है ।

धर्म रक्षणार्थिक सूत्रमें—

[१] निर्या रक्षाया हा वही गोचरी जानेंमें शोच हे का रण निरर्थक लग जाये यात्रा विगेरे फूट जानेका सम्भव है ।

[२] जहापर अर्थकार पहना हो वही जानेंमें शोच है.

[३] शूद्रश्लोक पर प्रारपर बहने बहरी [४] वने वयो

[५] भ्रान कृमि [६] मायिकि वास्तव बेटे हा उलोको उल्लगके जाना शोच है । कारण यह भीहक-मय पाये इत्यादि [७] श्रीयके काट प्राप्ती हो उलोको उल्लगके जानेंमें शोच हे कारण वही शरीर या अर्थवर्तिक मान होनेका प्रसंग हो जानि है ।

[८] उदकशोच वहा भूमि जानिक परल कर्मिक वस्तुको भाषी वास्तु कर हा अर्थवर्तिक वस्तुका इतर रक्षा रण ही है कर करनेसे शोच है

१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २००

(४) जहाँ बहुत मनुष्योंके लिये भोजन किया तो तथा स्थानि लक्ष्मी जीमण्यार हो यही आहार ले तो योग है ।

(५) जहाँपर बहुतसे मिश्रक भोजनार्थी एकत्र हुये हो उन परोंमें जा के आहार ले तो योग [भविष्यम हो]

(६) भूमिपूज मेषानादिने निकालके आहार लेये तो योग ।

७ । उष्णादि आहारका पूजके आहार ले तो भी योग है ।

८ । रीतिनादि से रीतिल कर आहार ले तो भी योग है ।

धी भगवतीपुत्रमे—

१ । खाये दूये आहारका प्रमाण बनानेके लिये सूखरी दूके जेने दूध वा जानपर भी लक्ष्मके लिये जाना हुये भोगोण वाप करत है ।

२ । निरम आहार सी स्नान लक्षण लाके करना हुलोके कारिणके कालमा हो जाने के कारण वा कारण ।

३ । मरम प्रमाण आहार भीलनेपर युक्ति बन जाने से कारिणसे धुवा निकल जाये वातवा कारण ।

४ । प्रमाणसे भविष्यकार करके दान कारण आहारसे प्रमाद रीतिनादि शलाभ्यलिका कारण है ।

५ । बहुत बड़ाका लाना रूप आहारदि लक्षण पहचाने आहारसे धुवा निकल दान लक्षण है ।

६ । कारण से आहारसे धुवा निकल दान लक्षण है ।

७ । कारण से आहारसे धुवा निकल दान लक्षण है ।

८ । कारण से आहारसे धुवा निकल दान लक्षण है ।

(१०) ग्लोतादि लिये किया आहार लेना दोष ।

(११) घादलोमें अनायीके लिये बनाया आहार लेना दोष ।

(१२) गृहस्थ नेताके तौर कहे कि हे स्वामिन आज हमारे घरे मोषरीको पधारी इस माफीक जाने तो दोष ।

धी प्रभ्रव्याकरण सूत्रमें—

(१) मुनिके लिये स्थाण्तर स्थना करके देवे जैसे नुकती दानीका लड्डु घना देवे इत्यादि तो दोष है ।

(२) पर्याय घदलके-जैसे दहीका मट्ठा राहता घनाके देवे

(३) गृहस्थोके यहाँ अपने हाथों से आहार लेये तो दोष ।

(४) मुनिके लिये अम्बर आरुडादि से आहार लाके देवे तो दोष ।

(५) मधुर मधुर यद्यन गोलके आहारादिकि याचना करे-

धी निशिधसूत्रमें—

१ गृहस्थोके यहाँ जाके पुरांठे कि इस यतनमें क्या है? इसमें क्या है वसी याचना करने से दोष है ।

(२) अत्रयीमें अनाथ मजरीके लिये गया हुआ से याचना करे जानना से आहार ले ता दोष है ।

३ अन्यतरीजा मित्र्यावृत्ति से लाया हुआ आहार है वही से याचना करे आहार ले ता दोष है ।

४ पासना जायिदाचार्या से आहार ले ता दोष ।

(५) राम ३ इस याचना जाय यह राम जन मुनियेकि दानना कर गये बलमे जाय आहार ले ता दोष ।

(६) शरदानरुकी माध ले जाय उनाके दलाली से अशा नादिये याचना करना दोष है ।

श्री ब्रह्मसंहितासूत्रम्—

(१) सायकके लिये बनाया हुआ आहार मुनि भेदे तो शीघ्र ही कारण बालक होने लग जाये तब तक है भेदे ।

(२) गर्भकालके लिये बनाया आहार भेदे तो शीघ्र ।

श्री बृहस्पतिस्मृत्यम्—

(१) अशान पान, व्याधिम, व्याधिम यह व्याधिमकारके आहार शरीरमें बाली रहने में भोग्ये तो शीघ्र ।

वर्ष ४२-५-२ २३ ८ १२ २-३ २-३ लये १०३ तिथिमें पांच प्राण साहसिक और १-१ शीघ्र मानवी लामिका है. प्रथमे इन वायोर्जा शक्ति ।

(२) शीघ्रमे वा व्याध उग्रराम ले प्राण लही भोग्ये

(३) बालके पहिल्यापहर का लाया अन्नमगहर में ल भोग्ये ।

(४) मायमे साहसिक पांच शीघ्र. भोग्ये, भोग्ये, भुम्, परिमाण, कारण इती प्राणी की शरीर के आहार को इसलिये

अन्नमगहर अन्नमगहर ल को व्याधुद लिये लक लयावका तुलसी

लयावका ल लिये लका हीयने ल हाकि लयाव लयाव लयाव लिये लिये

ल लिये लयाव ल भोग्ये लयाव लयाव लयाव लिये लयाव लयाव

ल लिये लयाव ल लिये लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव

ल लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव

ल लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव

ल लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव

ल लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव

ल लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव

ल लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव

ल लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव लयाव

धिक किया हुआ, शंकायाला, मूल्य लाया हुआ, सचित पाणाकी शुन्द जो शीतल आदारमें गौर गर है यह इति । पपणा समिति ।

(४) आदान मत्त भेडोपगरणीय समिति के च्यार भेद है द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाष.

द्रव्यसे संयम यात्रा निर्वाहनेको पञ्चपात्रादि भंडोमत्तां एगरण रखा जाते हैं उनोकि संख्या ।

(१) रजोहरण-जीवरक्षानिमत्त तथा जैन मुनियोका चन्द्र इनको शास्त्रकारोने धर्मध्यज कहा है यह आठ अंगुलकि दसोयो चौबीस अंगुल कि दंडो कुल ३२ अंगुलका रजोहरण होना चाहिये ।

(२) मुखपत्रिका-मययी मच्छरादि प्रस जीयो कि बोलत समय पिराधना न हो या मूत्रादिक पर थुक से अशातना न हो. बोलते समय भुंद् आगे रगनेको एकविलस च्यार अंगुल समचोरस होना चाहिये ।

(३) बोलपट्टा-कटीबन्ध पांच हायका होता है ।

(४) घदर-मुनियोको तीन साध्योको च्यार ।

(५) कम्बली-जीवरक्षानिमत्त, गमनागमन समय शरीर आच्छादन करनेको चतुर्मासमें छेपट्टी शीतकालमें च्यार घट्टी. उष्णकालमें दो घट्टी पाछला दिनसे उक्त काल दिन उगणे के बाद कम्बली रगना चाहिये ।

(६) दंडा मुनियोको अपने कान प्रमाणे दंडा संयम या शरीर रक्षणनिमित्त रगना चाहिये ।

(६) पात्रे काण्य नृषेय मट्टीके आहार पाणी लानेके लिये. पय विलसय घांटे हा तीन बिलाम च्यारांगुलसे परधीयाले ।

झाली पात्रे बन्ध जानेके बाद गाटसे च्यारो पले च्यारांगुल च्यादा रहना चाहिये आहार लेनेका ।

५ गुच्छ उनप गुच्छ पात्रोप उपर नीच देके जीवरक्षाय लिये पात्रा पन्धनेका रग जाने है ।

नीचनी करे, उग्रयोगगुण्य हो सर्व ३२ प्रहारकी प्रतिरोधन दूर हलसे गुण्य भी न करे, अजिह्व भी न करे, विमोच न करे, तिग्मे विकल्प भ्रात है ।

सं.	उपादा.	काम.	विमोच.	सं.	उपादा.	काम.	विमोच.
१	महो	महो	महो	५	को	महो	महो
२	महो	महो	को	६	को	महो	को
३	महो	को	महो	७	को	को	महो
४	महो	को	को	८	को	को	को

इस आठ मांगाने प्रथम मांगा विगुह है, मांग मांगा अगुह है, प्रतिरोधन करने समय परस्पर कार्य न करे, अथाह प्रहारकी विद्यवा न करे प्रत्यात्मवान न करे न हराये, आत्मप्रवाचवातेना, आत्मप्रवाचवा तेना यह पाप कार्य न करे अथर कर भी ३३ आवाये विनायक माने है ।

(४) मांगने अह इतलसगदि समान्यमाह इतिव चापरे, संशयक मानन चामन समग्र

... अथाह प्रहारकी विद्यवा न करे प्रत्यात्मवान न करे न हराये, आत्मप्रवाचवातेना, आत्मप्रवाचवा तेना यह पाप कार्य न करे अथर कर भी ३३ आवाये विनायक माने है ।

- १. ...
- २. ...
- ३. ...
- ४. ...
- ५. ...

पाण्डिघाटाओ घेरमणं. सव्वाओ मृषाओ घायाओ घेरमणं,
नव्वाओ अदीसादानाओ घेरमणं. मव्वाओ मेहुआणो घेरमणं,
मव्वाओ परिगाहो घेरमणं ।

६ . हो काय—पृथ्वीकाय. अपकाय. तेजकाय. वायुकाय.
अनल्पनिकाय अल्पकाय । छ लेश्या—कृष्णलेश्या, नीललेश्या.
शापोनलेश्या, तेजमलेश्या पद्मलेश्या, शुक्रलेश्या ।

७ सात भय आलोक भय. परलोक भय. आदान भय,
अंकुश मात्र भय. मरण भय अपयश भय, आजोषका भय ।

८ । आठ मद्—जातीमद् कुटुम्बमद्. यत्नमद्. रूपमद्. तप
मद् मूत्रमद्. लाभमद्. पैश्वर्यमद् ।

९ नौ प्राद्वचर्यगुणि—श्री पशु नपुंसक सहीत उपास्यमे
न रहें । यथा थिलो और मुरकका दहांत १ त्रियोकी कथा धारना
न करे । यथा नौधकी गटाईका दहांत २ स्त्री जिस आसनपर
बैठी हो उस आसनपर दो घड़ीसे पहिले न बडे । अगर बैठे तो
तथा हुई जमान पर ठसे हुये घुतका दहांत । ३ स्त्रीके अगोपांग
इन्द्रिय घनरह न देवे जैसे कछी नांस और नूर्यका दहांत ।

४ शिवायभागादि गहरीकी भीत नाटा कनात आदिके अन्तरसेभी
न मुन यथा राजवंत नमय मयराका दहांत । ५ पुर्य (गृहस्था
अथवा कश्चिन्मन्त्रं) गह न करे इसपर पंचिक और होकराव
मः

६ शक्तिमत्त्व आहार न करे । अगर करे
७ शक्तिमत्त्व आहार न करे । अगर करे
८ शक्तिमत्त्व आहार न करे । अगर करे

९ शक्तिमत्त्व आहार न करे । अगर करे
१० शक्तिमत्त्व आहार न करे । अगर करे

११ शक्तिमत्त्व आहार न करे । अगर करे
१२ शक्तिमत्त्व आहार न करे । अगर करे

भाषणे हलका। लक्ष्मि : सत्य लोकेऽ) मीयमे (१० प्रकार मंगल
 पाले मने : १२ प्रकारका मंग कते : सईए / इष्टानिमित्तको
 आचार समुह लाते , वेदनेरे । अक्षयर्ष पाळे :

(११) इत्याहा आचक प्रतिमा : अविषय विरोध : वरीम
 प्रतिमा अमप्रतिमा, आचकप्रतिमा, गीयप्रतिमा, पत्राचीप्र
 तिमा अक्षयर्षप्रतिमा, अविषयप्रतिमा, आरंभप्रतिमा, आरंभ
 प्रतिमा, अविद्वान्प्रतिमा, अमलमूलप्रतिमा, विष्णुहर्म शीघ्ररोप
 नाम ४० था म

१२ आराहा विद्वान्प्रतिमा कर्मणा. सातप्रतिमा अक्षय
 मन्त्रिक हे आरुची मंगल सात रात्री मीची मूळने सात रात्री,
 इत्याही मीमने सात रात्रीका इत्याहना या रात्रीकी, याहानी अक्ष
 रात्रीनि अक्षप्रतिमा इत्याही मी अविष्णु अक्षेण शीघ्ररोप नाम
 ४० मूळ मी द्या :

(१३) अहमा विद्या अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण
 दिवात ह अक्षेणमात्र अक्षेणमात्रप्रतिमा अक्षेणप्रतिमा, अक्षेण
 अक्षेणप्रतिमा अक्षेणप्रतिमा अक्षेणप्रतिमा अक्षेणप्रतिमा अक्षेण
 अक्षेणप्रतिमा

१४ आचक अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण
 अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण
 अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण

अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण
 अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण
 अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण

अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण
 अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण
 अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण अक्षेण

के अतीतक उंभी स्वयंसे उच्चारण करे, मगमे मुंजकरे, बचनके मुंजकरे कायमे मुंजकरे मूर्धके उचयमे अल्प तक लाउंभाई करे, आहारपानीकी शुद्ध गयेगणान करे मो अलमाधी नीच लगे.

२१ लयपदा— यह पदकीम धीपकरा गीपन करवेगे लय- मयो धीपकरागी लयपदा कोपलगे, बन्धकर्म करेगी० मेषुन गीनेगी० शक्तिधातन करेगी० आधाकर्मि आहार करेगी० शक्तिविह भोग वना० धीप- धीप लयिन आहार करेगी० शक्तिवार मध्यामपान बलितो० शिवा लोकर उ महीला पदिके तक मपडमे मुंजके मपडमे जायना० यह मानमे मान लयीका लेग लनायेना० यह मानमे लीन आवाकपाल लयपदा० विज्ञानपदका विह । आहार भोगवेगी० बाहुरी मानकर जीव मायेगी० मानकर मृदवीतिना- मानकर पानी करेगी० लयिन पुसिकी इगए वेद जीवका इवलमे करेगी० शिवाये पुसिकीपन पटुक आकका इगएक करेगी० प्राण मृष शक्ति लयपदाया बरनीपन वेदना० बदामानकी हरी वनाकपनि आयेना० यह बर्यम बदा लयीका लेग लनायेना० यह बर्यम मृष आवाकपाल मे इनी लयिन पाना पुदरी शक्ति लयपदाया आहारपानी लीना लयपदा काय पान

००	व	प	ल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
६७५	६७६	६७७	६७८	६७९	६८०	६८१	६८२	६८३	६८४	६८५	६८६	६८७	६८८	६८९	६९०	६९१	६९२	६९३	६९४	६९५	६९६	६९७	६९८	६९९	७००	७०१	७०२	७०३	७०४	७०५	७०६	७०७	७०८	७०९	७१०

हैं और दूसरे द्युत स्कंधके सात अध्ययन—पुष्करणीयावन्दीका०
 म्रियाका० भाषाका० अनाचारका० आहारप्रज्ञा० आर्द्रकुमारका०
 उदक पेडालपुत्रका० एवं २३

(२४) चौथीस तीर्थकर—ऋषभदेयजी, अजीत, संभव,
 अभिनदन, सुमती, पद्मप्रभु, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभु, सुविधि, शीतल,
 श्रयांस, यासुपुत्र्य विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्धु, अर,
 मलि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि पार्श्व, वर्धमान० एवं २४ तथा
 देवता-दश भुवनपति, आठ याणव्यंतर, पांच ज्योतिषि, एक
 वैमानिक. एवं २५ देय ।

१ २५ . पांच महाव्रतकी पचसीस भाषना (संयमकी
 पुष्टी) यथा पहिले महाव्रतकी पांच भाषना—इयांभाषना,
 मनभाषना, भाषाभाषना, भंडोपगरण यत्नापूर्थक लेने रखनेकिं
 भाषना, आहारपानीकी शुद्ध गयेपणा करना भाषना ॥ दूसरे
 महाव्रतकी पांच भाषना—द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाष देखकर विचार
 पूर्थक बोले, क्रोधके घस न बोले (क्षमा करे) लोभघस न बोले,
 सन्तोष रखे भयघस न बोले धैर्य रखे) हास्यघस न बोले
 मौन रखे ॥ तीसरे महाव्रतकी पांच भाषना—विचार कर अ-
 विग्रह मकानादिकी आज्ञा ले. आहारपानी आचार्यादिककी
 आज्ञा लेकर घापरे आज्ञा लेतां कालक्षेत्रादिककी आज्ञा ले. सा-
 धर्मिका भंडोपगरण घापरे तां राजा लेकर घापरे म्हानी आदिक
 की वैयाघ्र कर चौथे महाव्रतकी पांच भाषना—घांघार
 खांख धृगारादिकका कथा घातां न करे खांके मनाहर इन्द्रियो
 की न द्रव्य पथमे किये हूँ काम कीडाओका याद न करे प्रमाण
 उपरान्त आहारपानी न घापरे खांपुरुष नपुंसकवाले मकानमे
 न रहे पांचव महाव्रतकी पांच भाषना—विषयकारी शब्द न

गृहे विपयकारीकय न केले, विपयकारी मध्य न ले, विपयकारी
रस न बीजने, विपयकारी कपरी न करे,

(२३) ब्रह्मासुमन्त्रधका द्वा अथयन, धवयहारसुयका द्वाअ
थयन सुमन्त्रधका से अथयन, कुल मित्राकर २३ अथयन हुवे.

(२४) मुनिक गुण कलापीन - पांच महाजन पांच, पांच
इन्द्रिय द्वाचार कपाय जीन मतस्यमापी, पञ्चनभ्यमापी, काय
स्यमापी नाजसयत्रा द्वातीतसयत्रा आरिचसंयत्रा, मानसक्य,
वसतस्यव नागस्यक्ये, क्षमायेन, पैरात्यक्य वेदनामहे, मरुतका
नय नही प्राप्ति प्राप्ता नही

(२५) ब्राह्मणीन कथयका २८ अथयन - ब्राह्मणीन मदन
धनकथयका नी अथयन अक्षयता आकविजय, गीनापन
अर्द्धसमाह आकलाह नूना विमुखा, उपायाप, अवाधता ॥
दुम्हे धनकथयका २३ अथयन गडेयता, अत्राययता इवायन
का आयाययता वसययता वाययता इमगदिमा इवायययकी
का, आकयययका विनिध. वायकीया अययययकीया अययय
कीया, अययययययका अकीयाययकीया आययय अययय
विमुनि अथयन विनिध. वायकीया अयययय इययय
अथयन अयययय अयययय अयययय अयययय अयययय

... .. विप
... .. अथयन
... .. अथयन
... .. अथयन
... .. अथयन
... .. अथयन
... .. अथयन

(३३) गुरुकी तैतीम आशातना—गुरुके आगे शिष्य चलें तो आशातना, गुरुकी परायण चलैतो० गुरुके पीछे स्पर्श करता चलैतो- एयम् तीन, घंठते समय और तीन घंटे रहते समय तीन एवं नौ प्रकारसे गुरुकी आशातना होती है गुरुशिष्य एकसाथ स्थंडिल जाये और एक पात्रमें पानी द्योतो गुरुसे शिष्य पहिले मूचि करे तो, स्थंडिलसे आकर गुरुसे पहिले इरियायही पढि कमेंतो० विदेशमें आयेहुये भाषकके साथ गुरुसे पहिले शिष्य वार्तालाप करैतो० गुरु कहे कौन मूते हैं और कौन जागते हैं, तो जागताहुया शिष्य न बोलैतो० शिष्य गौचरी लाकर गुरुसे आलोचना न लै और छोटेके पास आलोचना करैतो० पहिले छोटेको आहार घताकर फिर गुरुको आहार घतायेतो० पहले छोटे साधुको आमंत्रण करके फिर गुरुको आमंत्रण करैतो० गुरुसे बिना पुछे दूसरोको मनमान्य आहार देतो० गुरुशिष्य एक पात्रमें आहार करे और उसमेंसे शिष्य अच्छा २ आहार करैतो० गुरुके बोलानेपर पीछा उत्तर न देतो० गुरुके बुलानेपर शिष्य आसनपर बैठाहुया उत्तर देतो० गुरुके बुलानेपर शिष्य कहे कथा कहते हां पेसा बोलैतो० गुरु कहे यह काम मतकरो शिष्य जयाव द कि न कौन कहनेवालाता गुरु कहे इस ग्लानीकी पैयायच करा तो घहाने लाभ होगा इसपर जयाव दे कथा आपका लाभ नहा चाहिये पेसा बोलैतो गुरुका नुकाग देकाग दे लापर-वाइस बोलै तो० गुरुका ज्ञानादाय कहैतो० गुरु धर्मकथा करे तो शिष्य अप्रसन्न होयता० गुरु धर्मदेशना देताहो उसवक्त शिष्य कहे यह शब्द पेसा नहा पेसा है तो० गुरु धर्मकथा कहे तस परिषदांम दइभेइ करैतो० ज' कथा गुरु परिषदांम कहीहो -सा कथा ३' उनापरिषदांम शिष्य अच्छातरहसे वर्जन करैतो० गुरु धर्मकथा कहनेह' और शिष्य कहे गौचरीकी घखत हांगई

सेप्रणालानुकूल० तस्यानुसूप० मस्तुत द्याग्याः परस्पर अवि-
 रूढः अभिज्ञानः अति म्निग्धः मधुन० अन्व ममंरहितः अर्थ
 धर्मयुपत० उदाहः परनिद्रा स्वदलाया रदित० उपगतभागाः
 अनयनीत० कुतूहल रदित० अद्भूत स्वल्पः विलंब रदित०
 विभ्रमादि क्षोप रदित विधिप्रयत्नः आहित विशेषः साकार
 विशेषः सत्य विशेषः श्रेष्ठ रदितः अल्प्युक्तं०

(३६ : उत्तराध्ययनसूचके ३६ अध्यायन — विनय० परिमह०
 चउरंगिय० अमंयस्य० अकाम स्वकाम मरण० सुहानियटि०
 एलय० काचिल० ममिपदथाता० दुमपत्तय० गहृस्नुय० हरिषम-
 चल० निस्तमंमू० उमुयाः० भिक्षुः० शंभनेरसमादि० पाय-
 समण संज्ञांगाय० मियापुती० महानिगंधी० ममुद्रपालिय०
 रहनेमी० पेत्तीगोयम० पययणमाया० जयघोम विज्ञयघोम०
 मामायारी० गलुकि० सुषयमगई० समत परिष्कामिय०
 तथमगाय० चरणविहीय० पमायठाण० अठकम्मप्पगढी० लेम०
 अणमारमग्ग जीधज्ञीध विभतीः इति ।

मेवंधेते मेवंधेते नमेवमचम्

--* ॐ ॐ ॐ*--

धोक्ता नस्वर ३८.

श्री भगवतांजामुत्र श० २५ उ० ३

१९९९

पत्रवणा परपगा वय रदः राम मरगा - कृष्ण-कृष्ण

- चारित्र म. मारिचदि - परिसेवग दाव जागके नही

आम-मन्वादि २, तिग्ने तीयंमं तांदि २, शिग-कपडिगादि शारा-
 श्रीहादिकादि शिगे-दिमक्षेत्रं कादि-दिमकापमे, मनी-दिम-
 मनीं मंगम-मंगममंगम निहाले-आदिप्रयगीय योग-सपीती
 अर्थांगी उगवाग आकार सद्गुना ५ कपाय-सकपाय २ शिवा-
 कृष्णादि ३ परिणाम-द्विपमानादि ३ यंघ-कर्मका वेद्व-कर्मवेदे
 उदीरणा-कर्मकी उचसंगमाल कर्ताजावि सला सलासद्गुना, आहा
 -साहारी २ मय दिमला मय कडे आगरेम दिमने मलय भावे
 काय-दिमनी अयमा सद्गुनाय वेद्वना ३ क्षेत्र-दिमने क्षेत्रमे हावे
 कुसला-दिमक्षेत्रकपी माय-उद्यादि ५ परिणाम-दिमनावादि
 अन्वावद्गुण इति ३३ कार ।

(२) पञ्चवला-निपटा (मातृ) श्रे प्रहासे है

१. १. गुणादि-वा मकारण है । २. लक्ष्मी गुणादि मैले
 अकर्मनी आदि काई तत्वमूर्ती वा सामनकी आशावता की भी
 उचकी मैला मंगलहदा अक-गुण कर्मक दिने लक्ष्मीका अर्थात्
 कडे ५ आदिप्र गुटाक शिवाक वाय धीर ज्ञानगुटाक, वरीव
 गुटाक, आदिप्रगुटाक दिमगुटाक विना कालम दिम वा
 द्यः । अहम-अहमगुटाक मलयमा अयमानाय मलय ज्ञानमकी
 वपदा कडे मय म व मीह आदाहा ३५ शिवाय माय वपु
 दम की म व म म म म

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९
९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९

तीन निर्यटा तीर्थमें और अतीर्थमें भी होते हैं. तीर्थकर हो और पण्येक बुद्धि हो. शारम्.

(९) दिग-छेहो निर्यटा (नाधु . द्रव्य दिग भाषो स्व-दिग, अण्यदिग, गृहदिग तीर्थोंमें होये. और भावदिग भाषो स्वदिगमें होते हैं. शारम्.

(१०) शरीर—२ औदारिक वैकिय, आहारक, नेत्रन, कामेण, पुत्राक. निमय, स्नातकमे औ० ने० का० तीन शरीर. चकृष्ट. पहिसेषणमें औ० ने० का० पै० और कथाचकृशीलमें पाचो शरीरवाले मिलते हैं शारम् ।

(११) क्षेत्र २ कर्मभूमि, अकर्मभूमि—छे हो निर्यटा जम्भ-भाषो १२ कर्मभूमिमें होने और संहरणभाषो पुत्राककी छाड़के शर २ निर्यटा कर्मभूमि, अकर्मभूमि, क्षेत्रोंमें होते हैं. प्रमेणोत्तम पुत्राक लब्धि आहारिक शरीर मधुषीका, अग्रमादी उपग्राम अणोचालेका अणकधनी०, वेचलज्ञान उपग्राम हूये पीछे, इन का तीका संहरण नहीं होता शारम्

१० : काल—पुत्राक उन्मविर्गीकालमें जम्भभाषो तीर्थे खीरे आरामे जम्भे और प्रवर्नेभाषो ३ ४-५ आरामे प्रवर्ने अण-विर्गीकालमें दूध, नात्र खीरे आरामे जम्भे और नात्र खीरे आरामे प्रवर्ने भा उन्मविर्गी ना अणवर्णो भा खीरे प्रवर्ने भा उ-पमासुषमा का उन्मविर्गीकालमें प्रवर्ने १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

(१३) गति—देखो यंत्रसे.

नाम.	गति.		स्थिति.	
	जघन्य.	उत्कृष्ट.	जघन्य.	उत्कृष्ट.
पुलाक	सुधर्म देवलोक	महत्कार दे०	प्रत्येक } पत्योपम }	१८ सागर
षकुश	..	अभ्युत दे०		२२ सागर
पडिसेषण
कपायकुशाल	..	अनुत्तर वि०	..	३३ सागर
निग्रंथ	अनुत्तर वि०	सर्वार्थसिद्ध	३१ सागर	..
स्नातक	..	मोक्ष	३३ सागर	..

देवताओंमें पद्मि ५ हैं. इन्द्र, लोकपाल, प्रायश्चित्तक, सामानिक, अहमइन्द्र, पुलाक, षकुश, पडिसेषणमें पहिलेकी ४ पद्मिमेंसे १ पद्मिखाला होवे, कपायकुशीलकी ५, मँकी १ पद्मि होवे, निग्रंथकी अहमइन्द्रकी १ पद्मि होवे एवं स्नातक तथा मोक्षमें जावे और जघन्य विराधक ही तो चार जातिका देयता होवे, उत्कृष्ट विराधक चौथीस दंडकमें प्रमण करे द्वारं.

। १८ । मयम—मयमस्थान अमस्थाने हैं. पुलाक, षकुश, पडिसेषण कपायकुशील इन चारोंक मयमस्थान अमस्थाने २ हैं निग्रंथ स्नातकका मयमस्थान एक है अन्पाठहृन्ध सर्वस्त्रोक निग्रंथ स्नातकक मयमस्थान एक है इतीसे अमस्थानगुण पुलाकक मयमस्थान इतीसे अम. गुण षकुशक इतीसे अम. गुण पडिसेषणक इतीसे अम. गुण कपायकुशीलक मयमस्थान द्वार

निक से मयमक पर्याय चारिष पर्याय अम

द्विज भव्यम जगत् मानं वदन्तु ही मातः, (२) चापीम त्रीर्लोक्यो
 न तथा महामिन्देह दीप्तये मुनियोनिं प्रामादिकु मयम जगत्तीव
 मव गदने हि, (३) तद्गोपयामावनिम रथिम लिख्या ही भेद है,
 १) म अतिशय ही पुत्रं मयममे अष्टम भावनां प्रायश्चित्त नियम
 करने पर पीतमे तद्गोप भयम दिया जाता है २) त्रींमने त्रीं-
 करीया तथा त्रींयोमने त्रींरिक्तींकि शासनमं आने है इमही म
 तद्गो- मयम दिया जाने है मर निरातिशय तद्गोप मयम है ३)
 परिहार विदुः मयममे ही भेद है १) नियुक्तमान जेमे नी म-
 नुष्य नीनी यथे, ही दीक्षा ले पीत मं मृगवृत्तवाममे वदका नी
 पुंमेना अष्टमवत पर विदेष गुण प्राप्तिमे, त्रिये मृग आत्तमे परिहार
 विदुः मयमका कयीकार करे । मयम ही मातः मक जयार मुनि
 तपधर्या करे जयार मुनि तपधर्या मुनियोकि व्याख्य करे एक मुनि
 व्याख्यान वांनि हुमरे हा मायमे तपधर्या मुनि व्याख्य करे व्याख-
 यानले तपधर्या करे तीमरे हा मायमे व्याख्यानवाला तपधर्या
 करे स्नात मुनी उरहीकि व्याख्य करे, एक मुनि व्याख्यान वांनि ।
 तपधर्यका मयः उष्णकालमे पक्काम्बर शीत कालमे सुद सुद पा-
 रणा वनुर्मानामे अष्टम अष्टम पारणा करे, एमे १८ मातः तक
 तपधर्या करे । पीर जिनकल्पका कयीकार करे अगर पत्ता न हो
 तं वापिन मृगवृत्त थासाका कयीकार करे । ५ गृहम सपराय
 मयममे ही भेद है । मरुत्तण परिणाम उपशम धेजिमे गिरते
 तपधर्य - विदुः परिणाम मयधेहिं सुदत हुयम । ६ यथा
 मयम मयममे ही भेद है । मयधर्य मयधर्या - विजयिन
 मयः जिमही विजयिन मयधर्य ही भेद है । ७ मयम - मयधर्य
 मयम मयधर्य ही भेद है । मयधर्य मयधर्य ही भेद है । ८ मयधर्य
 मयधर्य ही भेद है ।

१) मय मयधर्य मयधर्य ही भेद है । मयधर्य मयधर्य ही भेद है । मयधर्य मयधर्य ही भेद है । मयधर्य मयधर्य ही भेद है । मयधर्य मयधर्य ही भेद है ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

१. श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

२. श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

३. श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

४. श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

५. श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

६. श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १ ॥

॥ २ ॥

॥ ३ ॥

- (३) यथाख्यात संयमबाले संख्यात गुणे ।
 (४) छदोपस्थापनिय संयमबाले संख्यात गुणे ।
 (५) सामायिक संयमबाले संख्यात गुणे ।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेर सचम् ॥

थोकडा नम्बर ३६

सूत्र श्री दशबैकालिक अध्ययन ३ जा.

(५२ अनानार)

जिस वस्तुका त्याग किया हो उन वस्तुकी भोगवनेकी इच्छा करना, उनको अतिक्रम कहते हैं और उन वस्तुपामिके लिये कदम उठाना प्रयत्न करना, उनको व्यतिक्रम कहते हैं तथा उन वस्तुकी प्राप्त कर भोगवनेकी नैयारीमें हो उनको अतिशय कहते हैं और त्याग करी वस्तुकी भोगव लेनेमें शास्त्रकारोंने अनाचार कहा है । यथापर अनाचारके दो ५० बोट लिखते हैं ।

- १) मृत्तिक लिये पथ पात्र मकान ओर अमनादि द्वारा पकारका आहार मृत्तिक उद्देशसे किया हुआ मृत्ति लेना अनाचार जात
- २) मृत्तिक लिये मृत्तिक टाई हुए वस्तु मृत्तिक मृत्ति भागना अनाचार जात
- ३) मृत्तिक लिये पथ उद्देश आहार भोगवना अनाचार
- ४) मृत्तिक लिये पथ आहार भोगवना अनाचार ..

- (२९) गृहस्थ लोकोक्ति धियाबन्ध करनेसे अनाधार ॥
 (३०) अपनी ज्ञाति कुल बतलाके आजीविका करे तो ॥
 (३१) सचित्त पदार्थ जलहरी भादि भोगये तो अना ॥
 (३२) शरीरमें रोगादि भानेसे गृहस्थोक्ति महायता लेनेसे..
 (३३) मूलादि वनस्पति (३४) रश्मि (३५) कन्द (३६)
 मूल भोगये तो अनाधार लागे.
 (३७) फल फूल (३८) बीजादि भोगयेतो अनाधार ॥
 (३९) सचित्तनमक (४०) सिंधु देशका सिंधालुण (४१)
 सांबर देशका सांबरलुण (४२) धूल माटिका लुण (४३) समुद्रका
 लुण (४४) कालानमक यह भयं सचित्त भोगये तो अनाधारलागे ।
 (४५) कपडोंको धूपादि पदार्थोंसे सुगन्ध बनानेसे अना०
 (४६) भोजन कर वसन करने से अनाधार ॥
 (४७) विगर कारण जुलावादिका लेनासे अनाधार ॥
 (४८) गुप्तस्थानको धोना समारनादि करनेसे अना०
 (४९) नैत्रांमिं सुरमा अन्नन लगाके शोभनिक बनाये ॥
 (५०) दांतोंको भ्रष्टनादिका रंग लगाके सुन्दर बनाये ॥
 (५१) शरीरको नैत्रादिसे उषटनादि कर सुन्दर बनानेमें..
 (५२) शरीरको शुष्का करना रंग नल समारणादि शोभा
 करनेसे.

उपर लिखे अनाधारको बन्ध टालके निरमल चारित्र्य प्राप्त
 चाहिये ।

सर्वं भवे मेवं भवे—नमेव मयम्.

घर. इन चार प्रकारके जीवोंको मनसे हने नहीं, हनावे नहीं, हणताको अनुमोदे नहीं पचम् चाराह और चाराह बचनका, तथा चाराह कायासे कुल छत्रीश हुय इनको दिनको, रातको अकेलेमें, पर्यदा में, निद्रावस्थामें, जागृत अवस्थामें, ६-इन भागोंको ३६ के माय गुणा करनेसे प्रथम महाव्रतके २१६ तणाये हुय.

(२) महाव्रत मृषावाद—क्रोधसे, लोभसे, हास्यसे, और भयसे. इस तरह चार प्रकारका झूठ मनसे बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोळतेको अनुमोदे नहीं. पचम् बचन और कायासे गुणातां ३६ हुय इनको दिन, रात्रि अकेलेमें, पर्यदामें, निद्रा और जागृत अवस्था, ये छै प्रकारसे गुणा करनेसे २१६ तणावा दूसरे महाव्रतके हुय.

(३) महाव्रत अदत्तादान—अल्पवस्तु, बहुतवस्तु, छोटी वस्तु, बड़ी वस्तु, अचित्त, (शीष्यादि) अचित्त, (ब्रह्मणाशादि) ये छै प्रकारकी वस्तुको किसीके बिना दिये मनसे लेवे नहीं, लेवावे नहीं, और लेतेको अनुमोदे नहीं. पचम् मन बचन और काया से गुणानेसे ५४ हुय जिनको दिन, रात्रि आदि ६ का गुणा करनेसे ३२४ तणाये तीसरे महाव्रतके हुय.

(४) महाव्रत ब्रह्मचार्य—देवी, मनुष्यजी, और त्रीर्षणी, के माय मैथुन मनसे सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवतेको अनुमोदे नहीं. पचम् बचन और कायासे गुणातां २७ हुय जिनको दिन रात्रि आदि ६ का गुणा करनेसे १६२ तणावे चौथे महाव्रतके हुय.

(५) महाव्रत परिग्रह—अल्प, बहुत, छोटा, बड़ा, अचित्त, अचित्त, छै प्रकार परिग्रह मनसे रखे नहीं रखावे नहीं, रानतेको अनुमोदे नहीं. पचम् बचन और कायासे गुणातां ५४ हुय जिनको दिनरात्रि आदि ६ का गुणा करनेसे ३२४ तणावे पांचवें महाव्रतके हुय.

६. रात्रिमात्रम-अशन पांज आदिम, स्वादिम, ये चार

प्रहारका आहार मनसे रात्रिको करे नही, कराये नही. करतेको अनुमोदे नही, एषम् वचन और कायासे गुणातां ३६ हुय इनको दिनमें (पहिले दिनका लाया हुआ दूसरे दिन) रात्रिमें, अफे-लेमें, पर्यहामें, निद्राअवस्था, और जागृत अवस्था ६ का गुणा करनेसे २१६ तणाये हुय.

(७) छकाय—पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय, वायुकाय घनास्पतिकाय, और प्रसकायको मनसे हणे नही. हणावै नही. हणतेको अनुमोदे नही. एषम् वचन और कायासे गुणातां ५४ हुय मित्तको दिन रात्रि आदि ६ का गुणा करनेसे ३२४ तणाये हुय.

एषम् सर्वं २१६-२१६-३२४-१६२-३२४-२१६-३२४ सब मिला कर १७८२ तणाया हुय.

अथ प्रसंगोपात् दशवैकालिक सूत्रके छठे अध्ययनसे अठाराह स्थानक लिखते हैं. यथा पांच महाव्रत, तथा रात्रिभोजन, और छ काय एषं १२ अकल्पनीय वस्त्र, पात्र, मकान और चार प्रकारका आहार १३ गृहस्थके भाजनमें भोजन करना १४ गृहस्थके पलेग खाट आसन पर बैठना १५ गृहस्थके मकानपर बैठना अर्थात् अपने उत्तरे हुये मकानसे अन्य गृहस्थके मकान घेठना १६ स्नान देससे या सर्वसे स्नान करना १७ नख फेंस रोम आदि समारना १८ इन अठाराह स्थान में से एक भी स्थानकको सेवन करनेवालोंको आचारसे भ्रष्ट कहा है ।

गाथा—दश अठ्य ठाणाईं, जाईं घालो घरज्जइ

तध्य अग्रयरे ठाणे. निग्गंय ताउ भेसइ

अर्थ—दस आठ अठाराह स्थानक हैं उनको घालजोष थि-

राधे या अठाराहमेंसे एक भी स्थान सेवे तो निर्ग्रय । साधु उन स्थानसे भ्रष्ट होता है. इस लिये अठाराह स्थानकी सदैव यतना करणी चाहिये. इति

मेवं भंते मेवं भंते तमेव मञ्जम् ॥

थोकडा नंबर ३८

श्री भगवती सूत्र श० ८ उद्देशा १०

आराधना.

आराधना तीन प्रकारकी है. ज्ञान आराधना १, दर्शन आराधना २ और चारित्र आराधना.

ज्ञान आराधना तीन प्रकारकी है उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य. उत्कृष्ट ज्ञान आराधना. चौदे पूर्वका ज्ञान या प्रबल ज्ञानका उद्यम करे. मध्यम आराधना. इग्यारे अग या मध्यम ज्ञानका उद्यम करे. जघन्य आराधना अष्ट प्रबचन माताका ज्ञान. ४ जघन्य ज्ञानका उद्यम

दर्शन आराधनाके तीन भेद. उत्कृष्ट (क्षायक मध्यवत्य) मध्यम (क्षयोपशम स०) जघन्य (क्षयोपशम या नास्त्यादत्तम०)

चारित्र आराधनाके तीन भेद उत्कृष्ट (यथाख्यात चारित्र) मध्यम (परिहार विशुद्धादि जघन्य (सामायिक०)

उत्कृष्ट ज्ञान आराधनामें दर्शन आराधना कितनी पावे ? हा पावे. उत्कृष्ट मध्यम ॥ उत्कृष्ट दर्शन आराधनामें ज्ञान आराधना कितनी पावे ? तीना पावे उत्कृष्ट मध्यम और जघन्य

उत्कृष्ट ज्ञान आराधनामें चारित्र आराधना कितनी पावे ? हा पावे उत्कृष्ट और मध्यम ॥ उत्कृष्ट चारित्र आराधनामें ज्ञान आराधना कितनी पावे ? तीना पावे उत्कृष्ट मध्यम और जघन्य

उत्कृष्ट दर्शन आराधनामें चारित्र आराधना कितनी पावे ?

तीनों पापों, उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य ॥ उत्कृष्ट चारित्र्य आराधनामें दर्शन आराधना कितनी पापों ? एक पाप, उत्कृष्ट ॥

उत्कृष्ट ज्ञानआराधना वाले जीव कितने भय करे ? जघन्य एक भय, उत्कृष्ट दोय भय.

मध्यम ज्ञान आराधनावाले जीव कितने भय करे ? जघन्य दो, उत्कृष्ट तीन भय करे.

जघन्य ज्ञान आराधनावाले जीव कितने भय करे ? जघन्य तीन और उत्कृष्ट पंद्रहा भय करे ॥ एक दर्शन और चारित्र्य आराधनामें भी समझ लेना.

एक जीवमें उत्कृष्ट ज्ञानआराधना होय, उत्कृष्ट दर्शन आराधना होय और उ० चारित्र्य आराधना होय, जिसके भांगा नाने संघमें लिखे हैं.

पहिला एक ज्ञान दुसरा दर्शन और तीसरा चारित्र्य तथा ३ के आंकड़ो उत्कृष्ट २ के आंकड़ो मध्यम और १ के आंकड़ो जघन्य समझना.

३-३-३	२-३-०	२-१-०	१-३-१
३-३-०	२-३-१	२-१-१	१-२-२
३-०-०	०-३-०	१-३-३	१-०-१
०-३-३	०-०-१	१-३-०	१-१-२
			१-१-१

मेव भवे मेव भवे नमेव ममम्.

थोकडा नम्बर ३६

श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र अध्ययन २६

(माधु समाचारी)

धी जिनेन्द्र देवोकि करमाइ हुइ समाचारा को आराधन कर अनन्त ओष मोक्षमें गये है—जाते हैं और जावेंगे.

दश प्रकारकी समाचारीके नाम (१) आयस्मिय (२) निमि-
हिय (३) आपुच्छणा (४) पट्टिपुच्छणा (५) छंदणा (६) ईच्छाकार
(७) मिच्छाकार (८) तहकार ९ अरुभुजणा (१०) उचमंपया.

(१) आयस्मिय—माधु को आयदय \times कारण हो तब ठेरे हुये उपासगमें बाहर जाना पड़े तो जानी वक्त पेस्तर आय-
स्मिय पेसा शब्द उच्चारण करे तब गुरुवादिको ज्ञान हो जाये
को अमुक माधु इस टाइममें बाहर गया है

(२) निमिहिय—कार्यमें तियुती पाव पीछा स्थान पर
जाना वक्त निमिहिय शब्द उच्चारण करे तब गुरुवादिको ज्ञान
हो को अमुक माधु बाहरमें आया है यदि कम स्थान टाइम लगी
हो तो इन्द्र बालका निर्णय गुरु महाराज कर सकें है

३) आपुच्छणा—स्वयं अपन लिये यदृक्चित्त भी कार्य हो
तो गुरुवादिका पूछ अंगर गुरु आज्ञा से तो वह कार्य करे.
मायस्मिआदि.

..... [१] अरु
..... [] []
..... [] []
..... [] []
..... [] []

(४) परिपुष्टाना—अन्य साधुओंको हरेक कार्य हो तो
 तुममें पुष्ट कर वह कार्य तुम जाइएते ही करे ।

(५) ईशाना—जो गौचरी में जाया हुआ आहार पायी
 तुम्हारे ही मरती मरिचि सभ साधुओंको संविभाग करे
 अपने विभागमें आये हुवे आहार की वन्दना सभ महा पुरुषोंको
 आनन्द करे, यज्ञ सभ कार्य तुम छाड़े, जाता । ले करे ।

(६) इच्छार—हरेक कार्यके अन्दर तुम्हारे प्रार्थना
 करेकि हे भगवान् : आपकी मरती हो तो यह कार्य करे या
 न करे (पाठलेपादि) ।

(७) निष्कार—अनुचिति भी अपराध हुआ हो तो तुम
 मनीष अपनी आत्मा ही निहाराय निष्कारि तुम्हें देना, आह
 ग्यते में यह कार्य नहीं करेगा ।

८ महार—तुम्हारे इच्छन हरवन्त बढ़त करके
 परिमाण मुदा हीनमें स्व, काम करना ।

९ आमुष्टाना—तुम्हारे साधुभक्तान् वा मदानां मदन्यां
 पादि की वन्दना में मिले आनन्दपरी वन्दना में तुम्हारे कर
 काम मना मनुष्यिकी मरती अथवा अनाधुन शरीर मुनिये
 व वन्दना में मरना काम

१० इवमपरा—मन्त्र वन्दना तुम्हारे काम मन्त्र करके
 व मन्त्र वन्दना मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

समाप्त

समाप्त काममें मिले कर काम के वन्दना मन्त्र मन्त्र
 मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
 मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
 मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
 मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
 मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

अ समभूमि पर खड़ा हो कर अपना द्विचणकी छाया पड़े पर हो पग प्रमाण हो तो एक पेहर दीनका परिमाण समझना अपना लडकामें विलश (घंघ) की छाया विलश परिमाण हो तो पेहर दीन समझना और धायण कृष्ण सप्तमीकी एक आंगुल छाया बड़े, धायण कृष्ण अमास्याकी २ आंगुल छाया बड़े, धायण शुक्ल सप्तमीकी ३ आंगुल छाया बड़े, और धायण शुक्ल पूर्णमाकी ४ आंगुल छाया बड़े (एक मासमें ४ आंगुल छाया बड़े) धायण शुक्ल पूर्णमा २ पग और ४ आंगुल छाया आनेसे पेहर दीन आया समझना, भाद्रपद शुक्ल पूर्णमा की २ पग ८ आंगुल छाया, आश्विन पूर्णमा ३ पग छाया, कार्तिक पूर्णमा ३ पग ४ आंगुल, मातमर पूर्णमा ३ पग ८ आंगुल. पौष पूर्णमा ४ पग छायाके पेहर दीन समझना, इमी मासके एक एक मासमें ४ आंगुल कम करते आषाढ पूर्णमाकी २ पग छायाको पेहर दीन समझना. यह प्रमाण सम भूमिका है वर्तमान विषम भूमि होनेसे कुछ तकाबत भी रहता है यह गीतार्यों से निर्णय करे ।

पौर्णमा और चतुर्थाष्टमि पौर्णमाका येर.

ज्येष्ठ पग २ ४	भाद्रपद पग ३ ८	मास ० पग ४-८	काश्विन पग ३-४
अंगुल ६ २-१०	अंगुल ८-३-४	अ० १० ४ ६	अ० ८-४
आषाढ पग ४	आश्विन पग ३	पौष पग ४	शुभ पग ३
अंगुल ६ २ ६	अंगुल ८-३-८	अ० १० ४-१०	अंगुल ८ ३-८
धायण पग ४ ४	कार्तिक ३ ४	माघ प ३ ८	वशाख पग २-८
अंगुल ४-४ १०	अंगुल ८-४	अ० १० ४ ६	अंगुल ८-२-४

बहुपङ्क्ति पूजापोरसीका मान जेष्ठआसाढ धायण मासमें जो पेटरकी छाया पताहूँ है जोसमें ६ आंगुल छाया जादा और भाद्रपद आश्विन कार्तिकमें ८ आंगुल मगसर पोष माघमें १० आंगुल फाल्गुन चैत वैशाखमें ८ आंगुल छाया घाटानेसे पङ्क्तिपूजा पौरसीका काल आते हैं इस घक्त मुपत्ती या पाशादिको फिरसे पङ्क्तिहदन की जाती है.

एक्य मास और संवत्सरका मान विशेष जोतीपीयांकां योक्तेमें लिखेंगे यहां संक्षपसे लिखते हैं. जैन शास्त्रमें संवत्सर की आदि भाषण कृष्ण प्रतिपदासे होता है. धायण मास ३० दीनोंका होता है. भाद्रपद मास २९ दीनोंका जोसमें कृष्णपक्ष १५ दीनोंका और शुक्ल पक्ष १५ दीनोंका होता है आश्विन मगसर माघ चैत जेष्ठ मास यह प्रत्येक ३० दीनोंका मास होता है और कार्तिक पोष फाल्गुन वैशाख आषाढ मास प्रत्येक २९ दीन का होता है जो एक तिथी घठती है यह कृष्णपक्षमें ही घठती है. इस सुधमां भगवान् के मंत्र को मान देनासे जैनोमें एकिय संवत्सरिका झण्डा कां म्ययं तिलांजली मिल जायेगी .

दिनका प्रथम पेटरका घोधा भागमें . सूर्योदय होनासे ही घड़ी पङ्क्तिहदन करे किचन माघ वद्यपात्रादि उपकरण धिगरे पङ्क्तिहदा न गवे . पङ्क्तिहदनकि. विधि इनी भागके खनुर्यं ममिति में लिखि गइ हे मां देखा

पङ्क्तिहदन कर गुरु महाराजकी विधिपूर्वक. वन्दन नमस्कार कर प्रार्थना करेकि हे भगवान् अय मे कोइ साधुकी व्याधय कर या म्वा. याय कर गुरु आदेश करेकि. अमुक. साधुकि व्याधय

.....

.....

करो तो अग्लानपने व्यायस करे अगर गुरु आदेश करेकी स्वा-
ध्याय करी तो प्रथम पेहरका रहा हुआ तीन भागमें मुलमूर्त्तिक
स्वाध्याय करे अथवा अन्य साधुओंकी याचना देखे स्वाध्याय
कैसी है की मर्ष दुर्गोंकी अगत करनेवाली है.

दिनका दुसरा पहरमें ध्यान करे अर्थात् प्रथम पहरमें मूठ
पाठकी स्वाध्याय करी थी उरुका अर्थात्पयोग संयुक्त चिंतन करे.
शास्त्रोंका नया नया अपूर्वज्ञानके अन्दर अपना चित्त रमण
करते रहना जीनमे जगत् कि मर्ष उपाधीयां नष्ट हो जाती है वही
चेतनका मोक्ष है.

दिनके तीसरे पहरमें जब पूर्ण श्रुधा सताने लग जावे अर्थात्
छ कारण (थोकडा नं० ३२ में देखी) से कोई कारण हो तो पूर्व
पहिलेहा हुआ पात्रा ले के गुरु महागुरुकी आज्ञा पूर्वक आनु-
गता स्वपलता रहित भिक्षाके लिये अटन करे भिक्षा लानेका
४२ तथा १०१ दोष (थोकडे नं० ३२ में देखी) यज्ञित निर्वेषाहार
श्राव्य इग्न्यावहि आलोचना कर गुरुको आहार दीना के अर्थ
महागुरुओंकी आग्रहण करे शेष रहा हुआ आहार भाण्डलाका
पांच दोष वर्जके क्षणधार भावना भाये धर्म्य है जो मुनि तपधर्मा
करे वादमें अमुच्छित्त अगिर्द्वापणे संयम यात्रा निर्वाहने के लिये
नया शरीरकी भाडा रूप आहार पाणी करे अगर कोसी क्षेत्रमें
नोमरा पहरमें भिक्षा न मिलती हा ता जीन वक्तमें मोले उस
वक्तमें श्राव्य पसा लेन इश्वरकार्तिकमूत्र अ० - ३ - गाथा ४ में
है) इस कार्यमें नोमरी पहर स्वतन्त्र ही जानि ले

द्वितीय श्राव्य पहरका चार भागमें तीन भाग तक स्वाध्याय
करे और साया भागमें विभिन्नपुस्तक पहिलेहन पुत्र प्रमाणे ।
इस साधन के अद्विष्ट भा इष्ट म प्रतिफल वादम होनक विषय
जा लागी रूप प्रतिपत्ति निरुक्ति आलोचना रूप उपयुक्त संयुक्त
प्रतिपत्ति कर

सबके छेदका निरुद्ध करना, जोनसे अमयला चारित्र और अष्ट प्रवचन माताकी उपयोग संयुक्त आराधना (निर्मल) करे.

(२) पचम काउसगायत्र्यक-प्रतिक्रमण करना अना उपयोग रहा हुआ अतिचार रूपि प्रायश्चित्त जीमकी शुद्ध करने के लिये चार लोगस्सका काउस्सग करे एक लोगस्स प्रगट करे फल-मूत और वर्तमान कालका प्रायश्चित्तको शुद्ध करे जैसे कोई मनुष्यको देना हो या वजन कीमी म्यावपर पहुंचाना हो उनको पहुंचा देये या देना दे दीया फिर निर्भय होता है इसी माफीक धत में लगाहुया प्रायश्चित्तको शुद्ध कर प्रशस्त ध्यानके अन्दर सुखे सुखे विचरे.

(३) छठा पञ्चषाणाषड्यक-गुरु महाराजका द्वादशा वृतसे २ घन्डना देके भविष्यकालका पञ्चषाण करे। फल आता हुआ आश्रयकी रांफे और इच्छाका निरुद्ध होनासे पूर्व उपाजित कर्मोंका क्षय करे.

यह षडाषड्यक रूप प्रतिक्रमण निर्विघ्नपणे समाप्त होने पर भाष मंगल रूप तीर्थकरादि स्तुति चैत्यघन्डन जपमय ३ श्लोक उत्कृष्ट ७ श्लोकसे स्तुति करना। फल ज्ञान दर्शन चारित्रिक आराधना होती है जोससे जीव उन्ही भवमें मोक्ष आवे अथवा विमानिक देवतां में जाये वहांसे मनुष्य होके मोक्षमें जाये उत्कृष्ट करे तो भी १५ भवमें अधिक न करे.

रात्रिका कृत्य.

जब प्रतिक्रमण हो जाये तब स्वाध्यायका काल आनेसे काल पहिलेहन करे जैसे ठाणयम मूत्रका दशमा ठाणाम १० प्रकाशका आकाशकी अमत्राय वताइ है वहा तारा नुटे दीशा लाल भराउम गात्र बीजदी. कइक, मूर्तिकम्य वाउघम्भ.

वन्दन कर पञ्चमांत करना और गुरु आशा माफिक पूर्वंश
दीनकृत्य करते रहेना.

इसी माफिक दिन और रात्रिमें वरताय रचना और भी
ज्ञान, ध्यान, मौन, विनय, व्यायस्य पर्याराधन तपश्चर्या दीनरा-
त्रिमें सात घेर चैत्यवन्दन चार चार सज्जाय समिति गुप्ति भाषा
पूजन प्रतिलेखनके अन्दर पूर्ण तय उपयोग रचना पंच महाव्रत
पंच समिति तीन गुप्ति यह १३ मूल गुण हैं जोस्मे हमेशा प्रयत्न
करते रहेना एक भयमे यद्किंचित् परिधम उठाणा पढता है
परन्तु भयोभयमे जीव सुखी हो जाता है.

यह धी सुधर्मास्थामिकी समाचारी सर्व जैनोंको मास्य है
यास्ते क्षपडे की समाचारीयांको तिलाञ्जलि देके सुधर्म समा-
चारीमें ययाशक्ति पुरुषार्थ करे ताके शीघ्र कल्याण हो.

शान्तिः

शान्तिः

शान्तिः

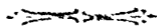
मेवंभंते—सेवंभंते—तमेवसच्चम्.

॥ इति शीघ्रबोध चतुर्थे भागे समाप्तम् ॥

श्री रत्नप्रभाकरि नमः

अथ श्री

शीघ्रदोष भाग ५ वां.



धोकडा नन्वर १०

— — —

(जट चैत्यन्य स्वभाव.)

जीवका स्वभाव चैत्यन्य और कर्मका स्वभाव जट एवं जीव और कर्मका भिन्न भिन्न स्वभाव होने पर भी जैसे घूल्में धान् तौलोमें तैल दूधमें घृत है, इसी माफीक अनादि काल में जीव और कर्म के संघन्ध हैं जैसे पचादि के निमित्त कारण से घूल्में धान् तौलोमें तैल दूधमें घृत अलग हो जाते हैं इसी माफीक ज्ञान, कर्म, जप, पूजा प्रभावनादि शुभ निमित्त मात्तममें कर्म और जीव अलग अलग हो जीव सिद्ध पदको प्राप्त कर सके हैं

जबतक ज्ञानोपमाय कर्म जग हूँ हैं जबतक जीव अपनि कर्म का भूय मिथ्यात्वादि परगुण में परिभ्रमन करता है जैसे मयः ५५ निमित्त अक्षयक कोमल गुणवाला है किन्तु अप्रिका मयः ५५ अपना असत् स्वरूप छुाड उपायना को ध रण करता है तब तब प्रायुक्त निमित्त मोक्षने पर अप्रिको त्यागकर अपने असत् प्रायुक्त धारण कर लेता है इस माफीक जीव भी निमित्त

अकलंक अमूर्ति है परन्तु मिथ्यात्वादि अज्ञानके निमित्त कारण से अनेक प्रकारके रूप धारण कर संसारमें परिभ्रमन करता है परन्तु जब सद्ज्ञान दर्शनादिका निमित्त प्राप्त करता है तब मिथ्यात्वादिका संग त्याग अपना असली स्वरूप धारण कर सिद्ध अथम्याको प्राप्त कर लेता है.

जीव अपना स्वरूप किस कारणसे मूल जाता है ? जैसे कोई अकलमंड समजदार मनुष्य मदिरापान करने से अपना भान मूल जाता है फिर उन मदिराका नशा उतरने पर पश्चात्ताप कर अच्छे कार्यमें प्रवृत्ति करता है इसी भाँतीक अनंत ज्ञान दर्शनका नापक चैतन्यको मोहादि कर्मद्वक विषाकोदय होता है तब चैतन्यका संभान-विकल-यना देता है फिर उन कर्मोंको भोगके निजर्जरा करने पर अगर नया कर्म न बन्धे तो चैतन्य कर्म मुक्त हो अपने स्वरूपमें रमणता करता हुआ सिद्ध पदको प्राप्त कर लेता है.

कर्म क्या बन्तु है ? कर्म एक कीसके पुद्गल है जिन पुद्गलोंमें पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस, चार स्पर्श है जीवोंके उन पुद्गलोंसे अनादि कालका सन्ध लगा हुआ है उन कर्मोंके प्रेरणासे जीवोंके शुभाशुभ अभ्यवसाय उत्पन्न होते हैं उन अभ्यवसायोंकी आकर्षणासे जीव शुभाशुभ कर्म पुद्गलोंको ग्रहण करते हैं । यह पुद्गल आत्माके प्रवेशीपर चीपक जाने है अर्थात् आत्म प्रवेशीके साथ उन कर्म पुद्गलोंका खीरनिकी भाँतीक बन्ध हाते है जिनोंसे यह कर्म पुद्गल आत्माके गुणोंका साया बना दत है जैसे तर्कका बादल साया बनाना है । जैसे जैसे अभ्यवसायोंकी मदना नाशना हाती है वैसे वैसे हमोंके अन्दर रस तथा स्थिति पद ज्ञानि है यह कर्म बन्धने के बाद यह कर्म कीतने कालमें विषाक उदय हाते है उसकी अगदा काल कहते है जैसे दूधोंके अन्दर मुदन दानी ज्ञानि है । कर्म दो प्रकारसे योगवीये

प्रकृति १५८ का संक्षिप्त विवरण कर आप.क सेवामें रखी जाती है आशा है कि आप इस कर्म प्रकृतियोंको कंठस्थ कर आगे के लिये अपना उत्साह बढ़ाते रहेंगे इत्यलम् ।



थोकडा नम्बर ४१



(मूल आठ कर्माधिक उत्तर प्रकृति १५८)

- १) ज्ञानावर्णियकर्म—चेतन्यके ज्ञान गुणको रोक रखा है ।
 - २) दर्शनावर्णियकर्म—चेतन्यके दर्शन गुणको रोक रखा है ।
 - ३) वेदनियकर्म—चेतन्यके अव्यावाहृत् गुणको रोक रखा है ।
 - ४) मोहनियकर्म—चेतन्यके क्षायिक गुणको रोक रखा है ।
 - ५) आयुष्यकर्म—चेतन्यके अटल अवगाहाना गुणको रोक रखा है ।
 - ६) नामकर्म—चेतन्यके अमूर्त्त गुणको रोक रखा है ।
 - ७) गौत्रकर्म—चेतन्यके अगुरु लघु गुणको रोक रखा है ।
 - ८) अन्तरायकर्म—चेतन्यके योग्य गुणको रोक रखा है ।
- इन आठों कर्माधिक उत्तर प्रकृति १५८ है उनीका विवरण—

(१) ज्ञानावर्णियकर्म जैसे घाणीका वहल-याने घाणीके वहलक मैत्रीपर पाट्टा बान्ध देनेसे कौमी यम्नुका ज्ञान नहीं होता है इसी भाँतीक जीवोंके ज्ञानावर्णिय कर्मपट्टल आजानेसे यम्नुतावका ज्ञान नहीं होता है । जैसे ज्ञानावर्णिय कर्मके उत्तर प्रकृति पाच है यथा— (१) मतिज्ञानावर्णिय ३४० प्रकारके मतिज्ञान है (देखो श्रीब्रह्मसूत्र भाग ६ टा) उनपर आवरण करना अर्थात् मतिसे कौमी प्रकारका ज्ञान नहीं होने देना अच्छी बुद्धि

उत्पत्त नहीं होना तथा यन्त्रपर विचार नहीं करने देना. प्रज्ञा नहीं फैलना-यदलेमें स्वभाव मति-बुद्धि-प्रज्ञा-विचार पैदा होना यह सब मतिज्ञानार्थणियकर्मका ही प्रभाव है (२) धृतज्ञानार्थणिय-धृतज्ञानको रोके, पठन पाठन भ्रयण करनेकी रोके, सदृज्ञान होने नहीं देये योग्य मीलनेपर भी मूत्र निदान्त याचना सुननेमें अन्तराय होना-यदलेमें मिथ्याज्ञान पर भ्रष्टा पठन पाठन भ्रयण करनेकी रूची होना यह सब धृतिज्ञानार्थणियकर्मका प्रभाव है (३) अवधिज्ञानार्थणियकर्म-अनेक प्रकारके अवधिज्ञानकी रोके (४) मनःपर्यवज्ञानार्थणियकर्म आते हुये मनःपर्यवज्ञानकी रोके (५) कैवल्यज्ञानार्थणियकर्म-संपूर्ण जो कैवल्यज्ञान है उनको आते हुयेकी रोके इति ॥

(२) दर्शनार्थणियकर्म--राजाके पोलीया जैसे कीसी मनुष्यको राजासे मीलना है परन्तु यह पोलीया मीलने नहीं देते है इसी माफिक जीवोको धर्म राजा से मीलना है परन्तु दर्शनार्थणियकर्म मीलने नहीं देते है जीसकि उत्तर प्रकृति नौ है. (१) चक्षु दर्शनार्थणियकर्म प्रकृति उदय से जीवोको नेत्र (आँखो) हिन बना दे अर्थात् एकेन्द्रिय द्वेन्द्रिय त्रैन्द्रिय जातिमें उत्पत्त होते है कि जहां नेत्रोका बिलकुल अभाव है और चौरिन्द्रिय पाचेन्द्रिय जातिमें नेत्र होने पर भी गतीदा होना काणा होना तथा बिलकुल नहीं दीखना इसे चक्षु दर्शनार्थणियकर्म प्रकृति कहते है (२) अचक्षु दर्शनार्थणियकर्म प्रकृति उदयसे त्वचा जीभ नाक कान और मनसे ज्ञा यन्त्रका ज्ञान होता है उनोको रोके जिम्का नाम अचक्षु दर्शनार्थणिय कहते है (३) अवधि दर्शनार्थणियकर्म प्रकृति उदयसे अवधि दर्शन नहीं होने देवे अर्थात् अवधि दर्शनकी रोके (४) षडल दर्शनार्थणिय कर्मोदय. षडल दर्शन होने नहीं देने अर्थात् षडल दर्शनपर आश्रयण कर रोके रख ॥ तथा निद्रा निद्रा निद्रा दर्शनार्थणियकर्म प्रकृति उदय से

स्थेभ सादृश, माया सांसकी जड सादृश, लोभ करमजी रेस्मके रंग सादृश घात करे तो सम्यक्स्थगुणकि स्थिति यावत् जीवकि, गति करे तो नरककि ॥ अप्रत्याख्यानि क्रोध तलावकि तड, मान दान्तकास्थेभ, माया मेंढाका धुंग, लोभ नगरका कीच, घात करे तो भायकफे वतोकि स्थिति एक वर्षकि, गति तोर्यव कि ॥ प्रत्याख्यानि क्रोध गाढाकी लीक, मान काटका स्थेभ, माया चालता बैलकामूत्र, लोभ नेत्रोके अजन घात करे तो सर्व वनकि, स्थिति करे तो च्यार मासकि, गति करे तो अनुष्यकी ॥ मेडवलनका क्रोध पाणीकी लीक, मान तृणका स्थेभ, मायापांसकी छाल लोभ हलदिका रंग, घात करे तो बीतरामपणाकी, स्थिति क्रोधकी दो मान, मानकी एक मान, मायाकी पद्मग दिन, लाभकी अन्तर मुहुर्त, गति करे तो देवतायोमें जावे. इन मोलह प्रकारकी कथायकी कथाय मोहनिय कहते है

नौ नोकपाय मोहनिय हास्य कनूहल मश्करी करना । भय-हरना विस्मय होना । शोक-फोकर चिन्ता आर्तप्यान करना । जुगुप्सा-ग्लानी लाना नफरत करना । रति आरंभादिकार्योमें खुशी लाना । अरति-संयमादि कार्योमें अरति करना । स्त्रीवेद-जिम प्रकृतिके उदय पुरुषोकि अभिलाषा करना । पुरुषवेद जिम प्रकृतिके उदय स्त्रीयोकि अभिलाषा करना । नपुंसक वेद जिम प्रकृतिके उदय स्त्री पुरुष दानोकि अभिलाषा करना पय २८ प्रकृति माहनियकर्मकी है ।

• आयुष्य कर्मकि च्यार प्रकृति है यथा नरकायुष्य नायंश्चायुष्य मनुष्यायुष्य देवायुष्य । आयुष्यकर्म जेमे कारागृहका मुदत हो इतने दिन रहना पडता है इमी माफोके नाम गतिके आयुष्य हो उमे भागवता पडता है ।

(३ : नामकर्म चित्रकार शुभ और अशुभ दानो प्रकारक

जैसे औदारिक संघातन, वैक्रियसंघातन, आहारिक संघातन, नेत्रस संघातन कागमण संघातन ।

छ) सहनन नामकर्मकि छे प्रकृति है. शरीरकि ताहन और हाडकि मजयुतिकी सहनन कहते है यथा वज्र अम्बनाराच सहनन । वज्रका अर्थ है मीला. अम्बका अर्थ है पाट्टा. नाराचका अर्थ है दोनों तरफ मर्कट याने कुटीयाके आकार दोनों तरफ हड्डी जुडी हुए अर्थात् दोनों तरफ हड्डीका मीलना उसके उपर एक हड्डीका पट्टा और इन तीनोंमें एक खीन्नी हो उसे वज्रअम्ब नाराच सहनन कहते है ॥ नाराच सहनन-उपरधनु परन्तु बीचमें मीली न हो. नाराच सहनन-इसमें पट्टा नहीं है । अर्द्ध नाराच सहनन-एक तरफ मर्कट वग्ध हो दुसरी तरफ मीली हो । किन्नीका सहनन-दोनों तरफ अंकुडाकि भाफीक एक हड्डीमें दुसरी हड्डी फसी हुए हो । छेयटुं सहनन-आपन में हड्डीयो जुडी हुए है ॥

(ज) संन्याननामकर्मकि छे प्रकृतियो है-शरीरकी आकृतिकी संन्यान कहते है समचतुरस्र संन्यान-पाण्टीमार के (पद्मासन) घेठनेसे घीनर्फ धराधर हो याने दोनों जानुके बिचमें अन्तर है इतना ही दोनों स्कन्धोंके बिचमें । इतना ही एक तरफसे जानु और स्कन्धके अन्तर हो उसे समचतुरस्र संन्यान कहते है । निग्रोध परिमडल संन्यान नाभीके उपरका भाग अच्छा सुन्दर हो और नाभीके निचेका भाग दिन हो । मारि संन्यान-नाभीके निचेका बिभाग सुन्दर हो नाभीके उपरका भाग खराब हो । कुब्ज संन्यान-हाथ पैर शिर गर्दन अथयव अच्छा हो परन्तु छाती पेट पाँट खराब हो । यामन संन्यान हाथ पैरदि छोटे छोटे अथयव खराब हो । दृढक संन्यान मध शरीर अथयव खराब अप्रमाणीक हो ।

१३ . वर्णनामकर्मकि पांच प्रकृति है-शरीरके जो पुरुगल लंगा है उन पुरुगलीका वर्ण जैसे कुन्जरग निठयर्ण, रक्तवर्ण

सुभाग नाम—कीर्तीपर भी उपकार किया बिगर ही लोगों के प्रीतीपात्र होना उसको सुभागनाम कर्म कहते हैं । अथवा सौभाग्यपणा मदैय घना रहना युगल मनुष्यवत्.

सुस्वर नाम—मधुरस्वर लागीकी प्रीय हो पंचमस्वरवत्

आदिय नाम—जिनोका वचन मर्षमान्य हा आदर मत्कारसे संध लोन मान्य करे ।

यशःकीर्ति नाम—एक देशमें प्रशंसा हो उसे कीर्ति कहते हैं और बहुत देशोंमें तारीफ हो उसे यशः कहते हैं अथवा दान तप शील पूजा प्रभाषनादिसे जो तारीफ होती है उसे कीर्ति कहते हैं और शत्रुओंपर विजय करनेसे यशः होता है । अब स्थावरकि दश प्रकृति कहते हैं ।

स्थावर नाम—जिस प्रकृतिके उदयसे स्थिर रहे याने शरदी गरमीसे बच नहीं सके उम्मे स्थावर कहते हैं जैसे पृथ्व्यादि पांच स्थावरपणे में उत्पन्न होना ।

सूक्ष्म नाम—जिस प्रकृति के उदयसे सूक्ष्म शरीर—जो कि छद्मस्थोके छिगोबर होये नहीं कीर्तीके रोकनेपर रूकावट होये नहीं. सुदके रोकता हुआ पदार्थ रूक नहीं सके । जैसे सूक्ष्म पृथ्व्यादि पांच स्थावरपणमें उत्पन्न होना ।

अपर्याया नाम—जिस ज्ञानिमें तिननी पर्याय पाये उनोमें कम पर्यायवाच्यके मर जाये अथवा पुद्गल प्रकृतमें अममर्ष हा ।

साधारण नाम अनंत ज्ञान एक शरीरक स्वामि हा अर्थात् एक ही शरीरन अनेक जीव रहत हा कन्दमुलादि

अस्थिर नाम दान्न हाड कान जीम प्रीयादि शरीरके अथ यथा अस्थिर हा चपल हा उम्मे अस्थिर नाम कम कहते हैं ।

अशुभनाम नाभाके नीचका शरीर पर बिगरे जाकि दुःख

हो, परन्तु दान देनेमें उत्साह न बदे वह दानान्तराय कर्मका उदय है.

दातार उदार हो दानकी चीजों मौजुद् हो आप याचना करनेमें कुशल हो परन्तु लाभ न हो तथा अनेक प्रकारके व्यापारदिमें प्रयत्न करनेपरभी लाभ न हो उसे लाभान्तराय कहते हैं।

भोगबने योग्य पदार्थ मौजुद् है उस पदार्थमें वैराग्यभाव भी नहीं है न नकरत आति है परन्तु भोगान्तराय कर्मोदयमें कीसी कारणसे भोग्य नहीं सके उसे भोगान्तराय कहते हैं जो वस्तु एक दफे भोगमें आति हो अमानादि।

उपभोगान्तराय-जो छि पछ भूषणादि वारवार भोगनेमें आवे पसी सामग्री मौजुद् हो तथा त्यागवृत्ति भी नहो तथापि उपभोगमें नहीं ली जावे उसे उपाभोगान्तराय कहते हैं।

धीर्यान्तराय-रोग रहीत शरीर यलयान सामर्थ्य होनेपरभी कुछभी कार्य न कर सके अर्थात् धीर्य अन्तराय कर्मोदयसे पुरुषार्थ करनेमें धीर्य फोरनेमें कायरोंकी भाफीक उत्साह रहित होते हैं उठना बैठना हलना चलना बोलना लिखना पढ़ना आदि कार्य करनेमें असमर्थ हो वह पुरुषार्थ कर नहीं सकते हैं उसे धीर्य अन्तरायकर्म कहते हैं इन आठों कर्मोंकी १५८ प्रकृतिकी कंटस्थ कर फोर आगेके धोकडेमें कर्मबन्धनेका कर्म तोड़नेके हेतु लिखने उपपर ध्यान दे कर्मबन्धक कारणोंका छोड़नेका प्रयत्न कर गुणों कर्माकी श्रय कर मोक्षपद प्राप्त करना चाहिये इति।

सर्वभो देवने नमोवचन

पुस्तकोंसे तकीयेका काम लेना। पुस्तकों को भंडारमें पड़े पड़े सड़ने देना किन्तु उनीका सहउपयोग न होने देना उद्धारपाणके लक्षमें रखकर पुस्तके रचना इनीके मित्राय भी ज्ञान द्रव्यके आमदकी तोड़ना ज्ञानद्रव्यका भक्षण करना इत्यादि कारणासे ज्ञानावर्णाय कर्मका बन्ध होता है अगर उत्कृष्ट बन्ध हो तो तीस कोड़ाकोड सागरोगम के कर्म बन्ध होनेसे इतनेकाल तक कीमी कीस्मका ज्ञान हो नहीं सकते हैं चास्ते भोक्षार्थी ज्ञाथीको ज्ञान आशातना टालके ज्ञानकी भक्ति करना-पढ़नेवालीकी साहिता देना पढ़नेवालीकी साधन वस्त्र भोजन स्यान पुस्तकादि देना।

(२) दर्शना वरणीय कर्मबन्धका हेतु-दर्शनी साधु भगवान् तथा जिनमन्दिर जैनमूर्ति जैन सिद्धांत यह सब दर्शनके कारण है इनीकी अभक्ति आशातना अथज्ञा करना तथा साधन इन्द्रियो-ष्ठा अनिष्ट करना इत्यादि जैसे ज्ञानवर्णिय कर्म बन्धके हेतु कहा है इसी माफीक स्थल्प ही दर्शनावर्णियकर्मका भी समझना। बन्ध और मोक्षमें मुख्य कारण आत्मा के परिणाम है चास्ते ज्ञान और ज्ञानसाधना तथा दर्शनी (साधु) और दर्शन साधनोंके सम्मुख अप्रीती अभक्ति आशातना दीखटाना यह कर्मबन्धके हेतु है चास्ते यह बन्धहेतु छोड़के आत्माके अन्दर अनेक ज्ञानदर्शन भरा हुआ है उनको प्रगट करनेका हेतु है उनीसे प्रेमस्नेह और अन्तमें रागद्वेषका श्रयकर अपनि निज वस्तुथीके प्राप्त कर लेना यहही विद्वानोंका काम है

(३) वेदनियकर्म दो प्रकारमें बन्धना है (१) मातापे दनिय (२) अमातापेदनिय जिम्मे ज्ञानावेदनियकर्मबन्धके हेतु जैसे गुरुओंकी सेवा भक्ति करना अपनेस ज्ञा श्रेष्ठ है वह गुरु जैसे माता पिता धर्माचार्य पिशाचार्य कलाचार्य जेठ आतादि क्षमा करना जाने अपनेमे बदला लेनेकी सामर्थ्य जानपर भी

क्रियासे ही मोक्षमार्ग मानना मोक्षमार्गका अन्धा करना याने नास्ति है इस लोक परलोक पुन्य पाप आदिकी. नास्ति करना खाना पीना पेस आराम भोग विलास करनेका उपदेश करना इत्यादि उपदेश दे भद्रकी जीवोंको मग्मार्गमे पतितकर उग्मार्ग के सम्मुख करवा देना. त्रिनेन्द्रभगवानकी या भगवानके मूर्तिके तथा अनुविध संघिके निंदा करने समग्रमरण—यत्र छत्रादिका उपभोग करनेवालेमें शीतरागप्य हो ही न सके इत्यादि कहना—जिनप्रतिभाकी निंदा करना पूजा प्रभावना भक्तिके हानि पहुँचना मूत्र मिद्धान्त गुरु या पूर्वाचार्यकी तथा महान् ज्ञानसमुद्र जैसे ग्रन्थोंकी निंदा करना यह सर्व दर्शन माह्नियकर्म बन्धके हेतु है जिनसे अनेककाल तक शीतरागका धर्म मोलनाभी असंभव हो जाता है।

चारित्र्य माह्निय कर्म बन्धके हेतु—जैसे चाग्निपर अभाव लाना. चारित्र्यबन्ध कि निंदा करना मुनि के मन्त्र-मलीन गाय बन्ध देख दुर्गच्छा करना खराब अध्यायसाय रचना. व्रत करके खंडन करना विषय भोगों कि अभिलाषा करना यह सब चारित्र्य माह्नियकर्म बन्धका हेतु है जिस चारित्र्य माह्नियका दो भेद है (१) कृपाय चारित्र्य माह्निय (२) नाकृपाय चारित्र्य माह्निय—जिन्मे कृपाय चारित्र्य माह्निय जैसे अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ करनेसे अनन्तानुबन्धी आदिका बन्ध पय अग्र्याख्यानी—ग्रन्थाख्यानी और भङ्गवन्दन इत्यादि करनेसे कृपाय चारित्र्य माह्निय कर्मबन्धता है तथा पाद जर्मा कुचष्टा करना टासा करना कलहल करना दुस्वर्गीकी हानि विस्मय कराना इत्यादि इत्यादि इत्यादि माह्निय कर्मबन्ध जाता है। आरंभमें खुशी माननेवाला मेलो खला देखनेवाला चक्षुःशूलपी देशदेशके नया नया नाटक देखना विचित्रप्रामादि रीतिना पमसे दुस्वर्गी

गांभीर्य मर्ध जनसे प्रिति गुणानुरागी उदार परिणामि इत्यादि कारणोंसे जीव मनुष्यका आयुष्य बन्धता है। सराग संयम, मंयमासंयम अकाम निउर्जरा बाल तपस्वी देवगुद, मातापितादिका विनय भक्ति करे देव पूजन सत्यका पक्ष गुणोंका रागी निष्कपटी संतोषी ब्रह्मचर्य मन पालक, अनुकम्पा सहित भ्रमणोपासक शास्त्ररागी भोग न्यागी इत्यादि कारणोंसे जीव देवायुष्य बान्धता है।

(६) नामकर्म कि दो प्रकृति है (१) शुभनामकर्म (२) अशुभ नामकर्म जिन्मे सरल स्वभाषी-माया रहित मन बचन काया वैपार जिस्का एकसा हो वह जीव शुभनामको बन्धता है गौंधरहित याने ऋद्धिगौंध रसगौंध, सातागौंध इन तीनों गौंधसे रहित होना पापसे डरनेवाला क्षमाधात मदेवादि गुणोंसे युक्त परमेश्वरकी भक्ति गुरु बन्धन तपस्य राग द्वेष पतले गुणगृहो हो पसे जीव शुभ नामकर्म उपाज्जन कर सकते है। दुसरा अशुभ नामकर्म-जैसे मायावी जिनोंके मन बचन कायाकि आचारणा में और बतकाने में भेद है। दुसरो के ठगनेवाले जूटी गवाही देनेवाले। घृत में चरयी दुख में पाणी या अच्छो वस्तु में बुरी वस्तु मीला के बचने वाले। अपति तारीफ और दुसरोकी निंदा करनेवाले वैश्याओं के बखालेकार दे दुसरे को ब्रह्मव्रत में पतिन बनानेवाले इत्यादि देवव्रत्य ज्ञानव्रत्य साधारणव्रत्य मानेवाले विश्वासघात करने वाले इत्यादि कारणों से जीव अशुभ नामकर्म उपाज्जन कर संसार में परिभ्रमन करते है

(७) माधकर्म कि दो प्रकृति है १ उच्चगोत्र २ निचगोत्र-जिन्मे किमी व्यक्ति में दांवी व रहने हुये भी उनका विषय में उदासीन सिर्फ गुण का ही देखनेवाले है। मातृ प्रकार के मदीं से रहित अर्थात् ज्ञानिमद् कृतमद् चलमद्, चांधी रूपमद्, भुत-

थोकडा नम्बर ४३

(कर्म प्रकृति विषय.)

ज्ञानगुण दर्शनगुण चारित्र्यगुण और शीर्षगुण यह चार चैतन्य के मूल गुण हैं जिसको कौनसो कर्म प्रकृति चैतन्य के सत्य गुणों कि घातक है और कौनसो कर्म प्रकृति देश गुणों कि घातक है यह इस थोकडा द्वारा यतलते हैं ।

द्वैतज्ञानार्थणिय कथन्य दर्शनार्थणिय मिथ्यात्व मोह निय, निद्रा, निद्रा निद्रा, प्रचलानिद्रा, प्रचलाप्रचलानिद्रा, स्वानिद्रि निद्रा अनंतानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोभ, अप्रत्याख्यानि क्रोध-मान-माया-लोभ, प्रत्याख्यानि क्रोध-मान-माया-लोभ पर्य २० प्रकृति सत्य घातो है ।

मतिज्ञानार्थणिय भुतिज्ञानार्थणिय अधधिज्ञानार्थणिय मरः पर्यवज्ञानार्थणिय-चक्षुदर्शनार्थणिय अचक्षुदर्शनार्थणिय अक्षि दर्शनार्थणिय मंड्यलनका क्रोध-मान-माया लोभ-हास्य भय शोक जुगप्सा रति अरति स्त्रियंद पुरुषवेद नपुंसकयेद दांतान्तराय लामांतराय भोगान्तराय उपभोगान्तराय शीर्यान्तराय पर्य २५ प्रकृति देशघातो है तथा मिथमोहनिय नम्यकम्बमोहनिय यह दो प्रकृति भी देशघातो है ।

शेष प्रत्येक प्रकृति आठ शरीरपाच, अगोपागतोन, सिंहनरु स मन्थान छे गतिच्यार जातिपाच पिडायोगति दो, अनुपूर्वी आयुष्यच्यार यमकिदश म्यायकिदश यणांश्च्यार गीत्रिंश ४ प्रकृति पर्य ३३ प्रकृति अघातो है ।

थोकडा नम्बर ८१ म आठ कमा कि १-८ प्रकृति है त्रिंश

शरीर नाम तीन शरीरके आंगोपांग नाम छे महान छे संस्थान
उपघात नाम साधारण नाम प्रत्येक नाम उद्योत नाम आताप
नाम पराघात नाम पर्यं ३६ प्रकृतियां पुद्गल विपाकी है परं
४-७८-४-३६ कुध १२२ प्र० उद्यय ।

परावर्तन प्रकृतियों-एक दुसरे के बदलेमें बन्ध सके-यथा
शरीरतीन आंगोपांगतीन महान छे संस्थान छे जातिपांच गति-
व्यार विहागतिदा अनुपूर्वोच्चार वेदतीन दोयुगलकि व्यार कपा-
यशोला उद्योत आताप उद्यगौत्र निद्यगौत्र वेदनिय-माता-भमाता
निद्रापांच प्रसकीदश स्याधरकीदश नरकायुष्य तीर्वचायुष्य मनु
स्यायुष्य देवायुष्य पर्यं ९१ प्रकृति परावर्तन है ।

शेष ५७ प्रकृति अपरावर्तन याने जोसकी जगह बह ही प्र-
कृति बन्धती है उसे अपरावर्तन कहते है । शेष आगे पांच
कर्मप्रथाधिकारे लिखा जायेगा

सेवं भंते सेवं भंते—तमेव मच्चम्.

—→*~*~*←—

थोकडा नंबर ४४

(कर्म ग्रंथ दूसरा)

मूल कर्म भाट है जिनकी उत्तर प्रकृति १४८० जिनके नाम
थोकडा न० ४२ में लिख आये है यहाँ देख लेना उन १४८
प्रकृतियोंमें से बंध, उद्यय, उद्योगणा, भोग मत्ता किम ५ गुण-
स्थान में कितनी २ प्रकृतियाकी है मा लिखते है

(प्र गुणस्थानक किसे कहते है ?)

• • • • •
वस्तु १०० न० ३६ है मन्त्रिक यह वन अवन ।

(उत्तर) जिस तरह शिव (मोक्ष) मंदिर पर घठने के लिये पायडिया (सीढी) हैं उसी तरह कर्म शत्रु को विदारने के लिये जीव के शुद्ध, शुद्धतर, शुद्धतम अध्यवसाय विशेष, यद्यपि अध्यवसाय असेख्याते हैं, परन्तु स्थूल याने व्यवहार नयसे १४ स्थान कहे हैं यथा मिथ्यात्व १ सास्यादन २ मिथ ३ अघिरति सम्यक्दृष्टि ४ देशघिरति ५ प्रमत्त संयत ६ अप्रमत्त संयत ७ निवृत्ति घादर ८ अनिवृत्ति घादर ९ सूक्ष्म संपराय १० उपशांत मोह घीतराग ११ क्षीणमोह घीतराग छद्मस्थ १२ सयोगी केषली १३ और अयोगी केषली १४ यह षषडे गुणस्थानक है

पहिले घताई हुई १४८ प्रकृतियों में से षणादिक १६ पांच शरीरका बंधन ५ संघातन ५, और मिथ मोहनीय ! सम्यक्त्व मोहनीय १ पथम् २८ प्रकृति कम करनेसे शेष १२० प्रकृतिका समुच्चय बंध है ।

(१) मिथ्यात्व गुणस्थानक में १२० प्रकृतियों में से तीर्थकर नामकर्म १ आदारक शरीर २ आहारक अगोपांग ३ तीन प्रकृतियोंका बंध विरह होनेसे षष्ठी ११७ प्रकृतियोंका बंध है.

(२) सास्यादन गुणस्थानक में नरक गति १ नरकायुष्य २ नरकानुपूर्वी ३ पर्वान्द्र ४ घोरान्द्र ५ तेहन्र ६ घोरिन्र ७ स्थावर ८ सूक्ष्म ९ साधारण १० अपर्याप्ता ११ हुंटक संस्थान १२ आतप १३ तंषदुं सघयण १४ नपुंसक बंध १५ मिथ्यात्व मोहनीय १६ दे माला प्रकृति का बंध विरह होनेसे १०१ प्रकृति का बंध है

(३) मिथ गुणस्थानक में पृथक् १०१ प्रकृति में १०१ प्रकृति १ विषय ५०० २ विषयानुपूर्वी ३ निष्प्रतिष्ठा ४ प्रथम प्रकृति ५ प्रकृति ६ दुर्भाव ७ दुस्वर ८ अनादय ९ अनानुबंध १० मान ११ प्राया १२ लोभ १३

ऋषभ नाराय संघयण १४ नारायसंघयण १५ अर्द्ध नाराय सं०
१६ कीलिका सं० १७ म्यग्रोध संस्थान १८ सादि संस्थान १९
वामन सं० २० कुट्टज सं० २१ नीचगोत्र २२ उद्योत नाम २३ अशु-
भविहायांगति २४ स्त्री बंध २५ मनुष्यायु २६ देवायुः २७ मर्तांत
प्रकृति छोटकर शेष ७४ का बंध होय.

(४) अधिरति मम्यकरट्टि गुणस्थानक में मनुष्यायुष्य १
देवायुष्य २ तीर्थंकर नाम कर्म ३ यह तीन प्रकृतियोंका बंध वि-
शेष करे इस वास्ते ७७ प्रकृति का बंध होय.

(५) देशधिरति गुणस्थानक पूर्ण ७७ प्रकृति कही उममें
मे वस्यऋषभनारायसंघयण १ मनुष्यायु २ मनुष्यजाति ३ मनु-
ष्यानुपूर्वी ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध ५ मान ६ माया ७ लोभ ८
औदारिक शरीर ९ औदारिक अंगोपांग १० इन दश प्रकृतियों
का अवयव होने से शेष ६७ प्रकृति बांधे.

(६) प्रमत्त संयत गुणस्थानक में प्रत्याख्यानी क्रोध १
मान २ माया ३ लोभ ४ का विच्छेद होनेसे शेष ६३ प्रकृति बांधे.

(७) अप्रमत्त संयत गुणस्थानक में ६९ प्रकृतिका बंध है.
पूर्ण ६३ प्रकृति कही जिनमेंसे शोक १ अरति २ अस्थिर ३
अशुभ ४ भयदा ५ अमाला येदनीय ६ इन छठ प्रकृतियोंका बंध
विच्छेद करे और आहारक शरीर ७ आहारक अंगोपांग ८
विशेष बांधे प्रथम ६० प्रकृतिका बंध करे अंग देवायुष्य १
बांधे तो ६१ प्रकृतिका बंध कर्षाक देवायुष्य छठे गुणस्थानकमें
बांधने हूय वस्यऋषभ नाराय संघयण १ मनुष्यायु २ मनुष्यजाति ३ मनु-
ष्यानुपूर्वी ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध ५ मान ६ माया ७ लोभ ८
औदारिक शरीर ९ औदारिक अंगोपांग १० इन दश प्रकृतियोंका
बन्ध शेष ६७ प्रकृति बांधे.

अनुक्ति वस्यऋषभ नाराय संघयण १ मनुष्यायु २ मनुष्यजाति ३ मनु-
ष्यानुपूर्वी ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध ५ मान ६ माया ७ लोभ ८
औदारिक शरीर ९ औदारिक अंगोपांग १० इन दश प्रकृतियोंका
बन्ध शेष ६७ प्रकृति बांधे.

थोकडा नं. ४५



(उदय)

समुच्चय १४८ प्रकृति में से १२२ प्रकृति का अंश उदय है। बंधकी १२० प्रकृति कही उसमें से समकित मोहनोय १ मिश्रमोहनीय २ ये दो प्रकृति उदयमें उपादा है क्योंकि इन दो प्रकृतियों का बंध नहीं होता परन्तु उदय है।

(१) मिष्ट्यान्व गुणस्वानक में ११७ का उदय होय क्योंकि सव्यवत्त्व मोहनीय १ मिश्रमोहनीय २ त्रिज नाम ३ आहारक शरीर ४ आहारक श्रेणोपांग ५ ये पांच का उदय नहीं है।

(२) साम्वादनगुण ० ११२ प्र० का उदय है, मिष्ट्यान्व में ११७ का उदय था उसमें से मूत्रम १ साधारण २ अपवाता ३ भाताय ४ मिष्ट्यान्व मोहनीय ५ और नरकानुपूर्वी ६ इन छ प्रकृतियोंका उदय विच्छेद हुआ।

(३) मिश्रगुण० में १०० प्रकृतिका उदय होय क्योंकि अनंतानुबन्धी चौक ४ पंचत्री ५ विक्रमेत्री ८ स्यावर ९ निर्वचानुपूर्वी १० मनुष्यानुपूर्वी ११ देवानुपूर्वी १२ इन चार प्रकृतियोंका उदय विच्छेद होने से शेष ९९ प्रकृति रही, परन्तु मिश्रमोहनोय का उदय होय इन चारमे १०० प्रकृतिका उदय कहा।

(४) अविशती सव्यकृष्णी गुण० में १०४ का उदय होय- कर्वादि मनुष्यानुपूर्वी १ निर्वचानुपूर्वी २ देवानुपूर्वी ३ नरकानुपूर्वी ४ और सव्यकृष्ण सादभाव ५ इन पांच प्रकृतिका उदय विच्छेद होय और मिश्रमोहनोय का उदय विच्छेद होय, इन चारमे १०० प्रकृतिका उदय कहा।

• दशविशती गुण० में ८३ प्रकृतिका उदय होय कर्वा

और नित्रा नित्रा पञ्चम् ४ प्रकृति का उदय विच्छेद होने से शेष ५५ का उदय होय.

(१३) सर्वांगी केवली गुण० में ज्ञानावरणीय ५ दर्शनावरणीय ४ अन्तराय ५ पञ्चम् १४ प्रकृति का उदय विच्छेद होने से ४१ प्रकृति और तिर्थकर नाम कर्म को मिलाकर ४२ प्रकृति का उदय होय.

(१४) अयोगी गुण० में १२ प्रकृति का उदय होय मनुष्य नति १ मनुष्यायु २ पंचेश्वरी ३ सौभाग्य नाम कर्म ४ व्रत ५ वाद्य ६ पर्याप्त ७ उच्येयौत्र ८ आद्येय ९ यशकीर्ति १० तिर्थकर नाम ११ वेदनी १२ ये चारे प्रकृतियों का उदय नरम समय विच्छेद होय. ॥ इति उदयद्वार समाप्तम् ॥

अब उद्दीरणा अधिकार कहते हैं. पहिले गुण ब्याजक से छद्मे गुण ब्याजक तक जैसे उदय कहा गये ही उद्दीरणा भी कहनी. और ज्ञान में गुण ब्याजक से लेकर गुण ब्याजक तक जो उदय प्रकृति रही है उसमें से शान्त वेदनीय १ अज्ञाना वेदनीय २ और मनुष्यायु ३ ये तीन प्रकृति कम करके शेष प्रकृति रहे सो हरेक जगह कहना. चौदमें गुण ब्याजकमें उद्दीरणा नहीं

॥ इति उद्दीरणा समाप्तम् ॥

—ॐ—

शोकटा नं ४३

—

१. मि.प. ५५ १११ ३ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

२. मि.प. ५५ १११ ३ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

उद्दीरणा की समाप्ति है

रुपिया देना पड़ता है, वैसेही कर्मका अवाधाकाल पूर्ण होनेपर कर्म उद्यममें आते हैं. उस काल भोगना पड़ता है. हुंडीकी मुद्रण पकने के पहिलेही रुपिया दे दिया जाय, तो लेनदार मांगनेका नहीं आता. इसी तरह कर्मोंके अवाधाकालमें पूर्व तप संयमादिते कर्म क्षय कर दिये जाय तों, कर्मविपाकी भोगने नहीं पड़ते. (अर्जुनमालीषत्)

अवाधाकाल चार प्रकारका है. यथा.

(१) जघन्य स्थिति और जघन्य अवाधाकाल. जैसे दशमें गुणस्थानकर्म अंतरमुहूर्त स्थितिका कर्मबंध होता है. और उनका अवाधाकाल भी अंतरमुहूर्तका है.

(२) उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अवाधाकाल. जैसे मांढनीयकर्म उ० स्थिति ७० कोडाकोडी सागरोपमकी है. और अवाधाकाल भी ७००० वर्षका है.

(३) जघन्य स्थिति और उत्कृष्ट अवाधाकाल. जैसे मनुष्य तिर्यक्ष, कोड पूर्वका आयुष्यथाला कोड पूर्वके तीसरे भागमें मनुष्य या तिर्यक्ष गतिका अल्प आयुष्य बांधे. तो कोड पूर्व के तीसरे भागका अवाधाकाल और अंतर मुहूर्तका आयुष्य.

(४) उत्कृष्ट स्थिति और जघन्य अवाधाकाल. जैसे अंग (इंद्र) अंतरमुहूर्तमें ३३ सागरोपमका उ० नरकका आयुष्य बांधे.

मूल कर्म आठ ज्ञानावरणीय १ दूरीनावरणीय २ वेदनीय ३ मांढनीय ४ आयुष्य ५ नाम ६ गात्र ७ अंतराय ८ समुच्चय तीर्थ और ९ दृष्टव्य व तीर्थीय आठौं कर्म है

मूल आठौं कर्मकी उत्तर प्रकृति १४८ यथा ज्ञानावरणीय ६ दूरीनावरणीय ९ वेदनीय २ मांढनाय ४ आयुष्य ४ नामकर्म १४८ अंतराय कर्मका २४८ तीर्थीय

मोहनोप कर्मको २८ प्रकृतिमेंसे नन्दवृक्ष मोहनोप और मित्र
मोहनोपका वंश नहीं होता, दाही १५६ प्रकृति वंशती है.

उत्तर प्रकृति १५६ की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति और अबाधा-
काल स्थिति २ तथा संघाधिकारी बीज २ है ?

मतिज्ञानावरणीय १ धृत ज्ञानावरणीय २ अबाधज्ञानावर-
णीय ३ मनःपट्टेय ज्ञानावरणीय ४ वंचल ज्ञा० ५ वायु ६ अणु
७ अक्षि ८ वंचल ९ दानांतराय १० लाभा ११
भोगा १२ उपभोगा १३ बीजा १४ इन चौदा प्रकृतियोंकी
समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य अंतरमुहूर्त तथा निद्रा १ निद्रानिद्रा
२ प्रचला ३ प्रचला प्रचला ४ दीपनी ५ और अज्ञातापेक्षनीय ६
वह छे प्रकृति समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागरोपमका
स्थिति, तीन भाग पन्धोपमके असंख्यातमें भाग उत्ता
ग्युम और उत्कृष्ट स्थितिवंध इन बीसों प्रकृतियोंका
३- कांटाकांटी सागरोपम और अबाधाकाल ३००० वर्षका
है, दाही बीस प्रकृति पकेंद्री बांधे तो जघन्य १ सागरोपम
पन्धोपमके असंख्यातमें भाग ऊंली पेइन्द्री जघन्य २५ सा०
पन्दो० व अमे भाग ऊंली पेइन्द्री २० सा० पन्दो० के अमे०
भाग ऊंली वीरिंद्री १ साग० पन्दो० के असं० भाग ऊंली,
और अमज्ञा पन्द्री हजार भाग० पन्धोपमके असंख्यातमें
भाग उत्ता बांधे तब उत्कृष्ट स्थिति पकेइंद्री १ सागरोपम के
१००० साग० पेइन्द्री २ साग० वीरिन्द्री १०० साग० अमज्ञी
पन्द्री हजार भाग० और मज्ञा पन्द्री तघन्य १५ प्रकृति अत
रमुहूर्त और प्रकृति अंत कांटाकांटी सागरोपमकी बांधे उत्त
का बीस प्रकृति स्थिति और अबाधाकाल समुच्चय जीववन्तः ।

यह कांटाकांटी सागरोपमका स्थिति पाछे सामान्यसे सौ
वर्षक अबाधाकाल है एसेही पकेन्द्रियादिक सबमें समझ लेना.

अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, अपत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, और संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ, इन सोलह प्रकृतियोंमेंसे प्रथमकी १२ प्रकृति समुच्चय जीव बांधे तो, जघन्य १. सागरोपमका सातिया ४ भाग पर्योपमके असंख्यातमें भाग ऊंणी. और संज्वलनका क्रोध २ महीना. मान १ महीना, माया १५ दिन और लोभ अंतर मुहूर्तेका बांधे. उत्कृष्ट १६ प्रकृतिका स्थितियंध ४० कोडा-कोडी सागरोपम. और अथाधाकाल ४ हजार वर्षका है ॥ यही सोलह प्रकृति पक्षेन्द्री जघन्य १ साग० येइन्द्री २५. सा० तेइन्द्री ५० साग० शौरिन्द्री १०० साग० असंखी पंचेन्द्री १ हजार साग० पर्योपमके असंख्यातमें भाग ऊंणी नर्थ स्थान और उत्कृष्ट सब जीव धुरी २ बांधे, नखी पक्षेन्द्री १२ प्रकृति जघन्य अंतः कोडा-कोडी सागरोपम तथा ४ प्रकृति पहिले लिखी उम मुजब बांधे. और उत्कृष्ट सोलहो प्रकृतिका स्थितियंध तथा अथाधाकाल समुच्चय जीववत् समझना ।

भय १ शोक २ श्लुगुप्सा ३ भरति ४ नपुंसक वेद ५ नरकगति ६ तिर्यचगति ७ पक्षेन्द्री ८ पंचेन्द्री ९ औदारिक शरीर १० " बंधन ११ अंगोपांग १२ और संघातन १३ वैदिकशरीर १४ बंधन १५ अंगोपांग १६ तथा संघातन १७ तैजस शरीर १८ " बंधन १९ संघातन २० कारमण शरीर २१ कारमण शरीरका बंधन २२ तस्य संघातना २३ छषट्महनन २४ दृढक मन्थान २५ कण वर्ण २६ तिकरम २७ दूरभिगध २८ कर्कश स्पर्श २९ गुह स्पर्श ३० मान स्पर्श ३१ रुध स्पर्श ३२ नरकानुपूर्वी ३३ तिर्यचानुपूर्वी ३४ अशुभगति ३५ उध्याम ३६ उघात ३७ आतप ३८ पराघात ३९ उघघात ४० अगुरु लघु ४१ निर्माण ४२ प्रम ४३ वाह्य ४४ ४५ अस्विय ४६ अशुभ ४७ दूर्भाग्य ४८ दुः प्रतापिय ४९ स्वाध ५० और बीच गोत्र

न्यधम्य १२ मुहुर्त और शेष पांच प्रकृतिपौष्टा प्रथम्य स्थितिबन्ध
 १ सागरौपमका सातिया १॥ भाग ५० अ० उणी, उम्कट ४
 प्रकृतिपौष्टा बन्ध १५ कौडाकौडी सागरौपम और अबाधाकाल १५
 नो वर्षका है. पकेन्त्री यावत् असेही पचेन्त्री पूर्ववत् १-२५-५०
 १००-१००० सा० और मंही पचेन्त्री शालावेदनीय जघम्य ११
 मुहुर्त शेष पांच प्रकृति जघम्य अंतः कौडाकौडी साग० ही बांधे.
 उम्कट बंध समुच्चयवत् ?।

येइन्द्रिय १ तेइन्द्रिय २ शीरिन्द्रिय ३ मूत्रम ४ साधारण
 ५ अपर्याग ६ कीलिकासंहनन ७ और कुष्ठसंभ्यात ८ ये आठ
 प्रकृतिका समुच्चय जीव जघम्य १ सागरौपमका पैतीसीया १ भाग
 पन्योपमके असंख्यातमे भाग उणी, और उम्कट १८ कौडाकौडी
 सागरौपमकी बांधे. अबाधाकाल १८०० वर्षका। पकेन्त्री यावत्
 असेही पचेन्त्री पूर्ववत् १-२५-५० १०० १००० सागरौप. ५० मंही
 पचेन्त्री जघम्य अंतः कौडाकौडी सागरौपम उम्कट समुच्चयवत्.
 न्यधम्य १२ मुहुर्त और शेष पांच प्रकृतिपौष्टा प्रथम्य स्थितिबन्ध
 १ सागरौपमका सातिया १॥ भाग ५० अ० उणी, उम्कट ४

आहारक शरीर १ तन्म्य यधन २ अंगोपांग ३ संयातन ४
 और जिननाम ५ ये पांच प्रकृति समुच्चय बांधे तो, प्रथम्य अंतर-
 मुहुर्त उम्कट अंतः कौडाकौडी सागरौपम, पचम मंही पचेन्त्री ॥

मिथ्याय माहनी समुच्चयज्ञाय बांधे तो, जघम्यबंध १ साग-
 रौपम उम्कट ७० कौडाकौडी साग अ० काल ७ हजार वर्ष.
 पकेन्त्री यावत् पचेन्त्री पूर्ववत् और मंही पचन्त्री जघम्य अंतः
 कौडाकौडी सागरौपम उम्कट समुच्चयवत्

शुभनाराय महनन न्यधोध मन्ध्यात ५ ये वा प्रकृति
 समुच्चय जीव बांधे तो जघम्य १ सागरौपमका पैतामिया ३ भाग
 पन्योपमके असंख्यातमे भाग उणी उम्कट १- कौडाकौडी सा
 अबाधाकाल १५० वर्ष पकेन्त्री यावत् असेही

श्लोकडा नं. ४८.

श्री भगवत्सूत्र शतक ८ उ० १०

(कर्म विचार.)

श्लोकके आकाशप्रदेश कितने हैं ?

अनेक्यात हैं.

एक जीवके आत्मप्रदेश कितने हैं ?

अनेक्यात हैं. (जितने लोकाकाशके प्रदेश हैं, उतनेही एक जीवके आत्मप्रदेश हैं.)

कर्मकी प्रकृति कितनी है ?

आठ—यथा ज्ञानावर्णयि, दर्शनावर्णयि, चेदनी, मोहनी, आयुष्य, नाम, गंध, और भंतराय, नरकादि चोषीस दंडकर्म स्त्रीषोके आठ कर्म हैं. परंतु मनुष्योमे आठ, सात, और चार भी पाये जाते हैं. (सीतराम केषरी कि अपेक्षा)

ज्ञानावर्णयि कर्मके अविभाग पत्नीहृद् (विभाग) कितने हैं ?

अनेक हैं परन्तु याथत भगवत्कर्मके नरकादि चोषीस दंडकर्म कहना

एक जीवके एक आत्मप्रदेशपर ज्ञानावर्णयि कर्मकी कितनी अवेदा पयेही (कर्मका आटा जैसे ताकले पर मूतका आटा) है ?

कितनेक जीवोंके हैं और कितनेक जातोंके नहीं हैं (केवलिक नहीं) जिन जीवोंके हैं उनके नियमा अनेकी २ हैं परन्तु दर्शनावर्णयि, मोहनी, और भंतरायकर्मभी यावत् आत्माके शपर समझ लेना

मनुष्य एक ज्ञीय वेदनीय कर्म बांधता हुआ ७-८-९-१ कर्म बांधे. इमी माफिक मनुष्य भी ७-८-९-१ कर्म बांधे. शेष २३ दंडकके एक एक ज्ञीय ७-८ कर्म बांधे ।

मनुष्य घणा ज्ञीय वेदनीय कर्म बांधता ७-८-९-१ बांधे. जिनमें ७-८-९ कर्म बांधनेवाले मास्वता और ६ कर्म बांधनेवाले अमास्वता जिसका भांजा ३ ।

(१) ७-८-९ कर्म बांधनेवाला घणा (मास्वता)

(२) ७-८-९ का घणा और छ कर्म बांधनेवाला एक ।

(३) ७-८-९ का घणा और छै कर्म बांधनेवाले घणा ।

घणा मारकीका ज्ञीय वेदनीय कर्म बांधता ७-८ कर्म बांधे, जिनमें ७ कर्म बांधनेवाले मास्वते और ८ कर्म बांधनेवाले अमास्वते जिनका भांजा ३ । (१) सात कर्म बांधनेवाले घणा ।

(२) सात कर्म बांधनेवाले घणा और ८ कर्म बांधनेवाला एक ।

(३) सात कर्म बांधनेवाले घणा ८ कर्म बांधनेवाले घणा । एवं १० मुचनपति ३ विकल्पेत्री, त्रियेच, पंचेत्री, द्येनर, उवांतिनी, पै मानिक, मरुकादि १८ दंडकमें तीन भांजा तीनभांजा ५४ भांजा हुआ ।

गृह्यादि पांच ध्यावरमें सात कर्म बांधनेवाले घणा और ८ कर्म बांधनेवाले भी घणा बांधने जागा नहीं उठने है ।

घणा मनुष्य वेदनीय कर्म बांधता ७-८-९-१ कर्म बांधे जिनमें ३ ३ कर्म बांधनेवाले घणा जिनका भांजा ०

३ १ का	०	३ २ का	०	३
३	०	३	३	३
३	०	३	३	३
३	०	३	३	३
३	०	३	३	३
३	०	३	३	३

समुच्चय क्षीयका भांगा ३ अठारे दंडकका ५४ मनुष्यका ९ सर्व ६६ भांगा हुआ इति ।

समुच्चय एक जीव मोहनीय कर्म बांधता ७-८ कर्म बांधे एवं २४ दंडक ।

समुच्चय घणा जीव मोहनीय कर्म बांधतां ७-८ कर्म बांधे निसर्मे ७ कर्म बांधनेवाले घणा और आठ कर्म बांधनेवाले भी घणा इसी माफिक ५ स्थावर भी समझ लेना ।

घणा नारकीका जीव मोहनीय कर्म बांधतां ७-८ कर्म बांधे निसर्मे ७ कर्म बांधनेवाले सास्वता ८ का असास्वता निसका भांगा ३ ।

(१) सात कर्म बांधनेवाले घणा (सास्वता)

(२) " " " आठ बांधनेवाला एक

(३) " " " " घणा

एवं पांच स्थावर वर्जके १९ दंडकमें समझ लेना ५७ भांगा हुआ ।

समुच्चय एक जीव आयुष्य कर्म बांधतां नियमा ८ कर्म बांधे एवं नरकादि २४ दंडक इसी माफिक घणा जीव आक्षयी समुच्चय जीव और २४ दंडकमें भी नियम ८ कर्म बांधे इति ।

भांगा ३३०-६६-५७ सर्व मीली २५३ भांगा हुआ ।

मेव भंते मेव भंते नमेव मञ्जम्.

थोकडा नम्बर ५०

(मूत्र श्री पद्मवर्णाजी पद २५)

(बांधतो वेदे)

मूल कर्म महति आठ यावत् पद २५ के माफिक समझना ।
समुच्चय एक जीव ज्ञानायर्णीय कर्म बांधतो हुवा नियमा
आठ कर्म वेदे कारण ज्ञानायर्णीय कर्म दशमा गुणस्थान तक
बांधे है वहां आठ ही कर्म मौजूद है सां वेद रहा है पद नर-
कादि २४ दंडक समझना ।

समुच्चय घणा जीव ज्ञानायर्णीय कर्म बांधते हुवे नियमा
आठ कर्म वेदे यावत् नरकादि २४ दंडकमें भी आठ कर्म वेदे ।

एवं वेदनीय कर्म वर्जके शेष दर्शनायर्णीय, मांढनीय, आ-
गुण्य नाम, गोत्र, अम्नराय कर्म भी ज्ञानायर्णीय माफिक समझना ।
समुच्चय एक जीव वेदनीय कर्म बांधे तो ३-८-४ कर्मवेदे
कारण वेदनीय कर्म तेरहवांगुणस्थान तक बांधते है । एवं मनुष्य
भी समझना शेष २३ दंडक नियमा ८ कर्म वेदे ।

समुच्चय घणा जीव वेदना कर्म बांधते हुवे ३ ८-४ कर्म वेदे
एवं मनुष्य शेष २३ दंडक क जीव नियमा आठ कर्म वेदे ।

समुच्चय शेष ३ ८ ४ कर्म वेदे नियमा ८ ४ कर्म वेदनेवाले
समझना शेष ३ कर्म वेदनेवाले समझना नियमा भाग ३

१ आठ कर्म शेष भाग कर्म वेदनेवाले घणा

२ ८ ४ कर्म वेदनेवाले घणा भाग कर्म वेदनेवाले पद

३ आठ कर्म वेदनेवाले शेष भाग कर्म वेदनेवाले

४ ४ कर्म वेदनेवाले ३ भाग समझना समझना शेष इति

सांख्य भाग १ नमः शिवाय

घणा मनुष्य में ज्ञानावर्णीय कर्म वेद तो ७-८-६-१ कर्म बांधे त्रि-
भुक्त ७ कर्म बांधने वाला सांख्यता शेष ८-६-१ का अमास्यता
जिसका भाग २७

७ कर्म ।	८ कर्म ।	६ कर्म ।	१ कर्म	७ क. ।	८ ।	६ ।	१ ।
३	०	०	०	(१५)३	३	०	३
३	१	०	०	(१६)३	०	१	१
३	३	०	०	(१७)३	०	१	३
३	०	१	०	(१८)३	०	३	१
३	०	३	०	(१९)३	०	३	३
३	०	०	१	(२०)३	१	१	१
३	०	०	३	(२१)३	१	१	३
३	१	१	०	(२२)३	१	३	१
३	१	३	०	२३)३	१	३	३
३	३	१	०	(२४)३	३	१	१
३	३	३	०	(२५)३	३	१	३
३	१	०	१	(२६)३	३	३	१
३	१	३	३	(२७)३	३	३	३
३	३	०	१				

एवं भांजा २७

एवं दर्शनावर्णीय और अन्तराय कर्म भी समझना ।

समु० एक त्रिभुक्त वेदनीय कर्म वेदता ७-८ ६-१-० (अथाध)
कर्म बांधे एवं मनुष्य शेष २ दृष्टक ७-८ कर्म बांधे ।

समु० घणा त्रिभुक्त वेदनीय कर्म वेदता ७-८-६-१ जिसका
७-८-१ का अमास्यता और ७ कर्म तथा अथाध का अमास्यता
जिसका भाग १ ।

७-८-१ ।	६ ।	अयाध	७-८-१ ।	६ ।	अयाध
३ (घणा)	०	०	३ ..	१	१
३ ..	१	०	३ ..	१	१
३ ..	३	०	३ ..	३	१
३ ..	०	१	३ ..	३	३
३ ..	०	३	एवं भांगा ९		

नारकी का जीव वेदनीय कर्म वेदता ७-८ कर्म बांधे जिसमें ७ का सास्यते और ८ कर्म बांधने वाले असास्यते जिसका भांगा ३ ।

(१) सात का घणा । २ सात का घणा आठको एक (३) सात का घणा और आठ कर्म बांधने वाले भी घणा ।

एवं एकेन्द्री का ५ दंडक और मनुष्य वर्ज के १८ दंडक में समझना भांगा ५४ । एकेन्द्रियमें भांगा नहीं है ।

घणा मनुष्य वेदनीय कर्म वेदता ७-८-६-१-० (अयाध) जिसमें ७-१ कर्म बांधने वाले सास्यते और ८-६-१ का असास्यते जिसका भांगा २७

७-० ।	८ ।	१६	०	१८	३	०	०	०
०	३	घणा	०	९	३	०	१	३
२	३	०	०	१०	३	०	३	०
३	३	०	०	११	३	०	३	०
४	३	०	१	०	२	३	०	१
(५)	३	०	३	०	३	३	०	३
(६)	३	०	०	१	४	३	०	१
(७)	३	०	३	०	५	३	०	३

(१६) ३	०	१	१	(२३) ३	१	३	३
(१७) ३	०	१	३	(२४) ३	३	१	३
(१८) ३	०	३	३	(२५) ३	३	३	३
(१९) ३	०	३	३	(२६) ३	३	३	३
(२०) ३	१	१	३	(२७) ३	३	३	३
(२१) ३	१	३	३	एथ भांगा २७+			
(२२) ३	१	३	३				

समु० एक ज्योय मोहनीय कर्म वेदतां ७-८-६ कर्म बांधे एथ मनुष्य शेष २३ दंडक ७-८ कर्म बांधे ।

समु० घणा ज्योय मोहनीय कर्म वेदतां ७-८-६ कर्म बांधे जिनमे ७-८ कर्म बांधने वाले सास्वते ६ कर्म बांधने वाले असास्वते जिसका भांगा ३ ।

(१) ७-८ कर्म बांधने वाले घणा ।

(२) " " " छ कर्म बांधने वाले एक

(३) " " " घणा

घणा नारकी माहनी कर्म वेदता ७-८ कर्म बांधे जिनमे ७ कर्म बांधने वाले सास्वते और ८ कर्म बांधने वाले असास्वते जिसका भांगा ३ ।

१. सात का घणा । २. सात का घणा आठ का एक ३) सात का घणा आठ का भी घणा एथ मनुष्य तथा पकंद्री जिन १८ दंडकीका भागा २६ समझना पकंद्री में सात कर्म बांधने वाला घणा और आठ कर्म बांधने वाला भी घणा ।

घणा मनुष्य में माहनी कर्म वेदता ७ ८ ६ कर्म बांधे जिनमे

हे भगवन् ! कर्म कितने प्रकारसे बंधता है !

दो प्रकारसे-यथा ! इर्यायति (बंधल यांगोकि प्रकृता से ११-१२-१ : गुणव्याप्तक से बंधता है) २ संभ्राय (कर्माय और यांगो से पहिले गुणव्याप्तक से द्वयर्थे गुणव्याप्तक तक बंधता है ।

इर्यायति कर्म कया नारयो वे जीय यांधे तीर्थेष, तीर्थेषणी मनुष्य, मनुष्यणी द्येयता द्येयी यांधते है !

नारयो, तीर्थेष, तीर्थेषणी द्येयता, द्येयी न यांधे शेष मनुष्य, और मनुष्यणी, यांधे. भूतकाल से बहुत से मनुष्य और मनुष्यणीयो ने इर्यायति कर्म यांधा या और वर्तमान काल का भागा ८ यथा १ मनुष्य एक २ मनुष्यणी एक ३ मनुष्य बहुत ४ मनुष्यणी बहुत ५ मनुष्य एक और मनुष्यणी एक ६ मनुष्य एक और मनुष्यणी बहुत ७ मनुष्य बहुत और मनुष्यणी एक ८ मनुष्य बहुत और मनुष्यणीया बहुत ।

इर्यायति कर्म कया एक स्त्री यांधे या एक पुरुष यांधे या एक नपुंसक यांधे ' पसेही कया बहुत से स्त्री, पुरुष नपुंसक यांधे ? । उत्तर ६ ही बोलवाले जीव नहीं यांधे ।

कया इर्यायति कर्मनास्त्री, नोपुरुष नोनपुंसक यान्धे पहिले वेदका उद्देश्यता तब स्त्री पुरुषादि कहजाते थे फीर वेदके क्षय-काल से नास्त्री नापुरुषादि कह जाते है (उत्तरमे)

हा यांधे भूतकाल से यांधा वर्तमान से यांधे और भविष्यमे यांधे जिसमे वर्तमान बंध न भागा - २ यथा असंयोगभागा ६ तब नास्त्री यांधे बहुतसे ना स्त्रीया यांधे २ एक नो पुरुष यांधे ३ बहुत से नापुरुष यांधे ४ एक नो नपुंसक यांधे ५ बहुत से नो नपुंसक यांधे

द्विसंयोगी भांगा १२

नोःशी	नोःपुण्य	नोःशी	नोः नपुंमक	नोः पुण्य	नोः नपुंमक
१		२		३	
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

बिग्रह (१) एक यजन (३) बहुयजन समप्रता

त्रिक संयोगी भांगा ८ ।

नोःशी.	नोः पुण्य	नोनपुंमक.	नोःशी.	नोःपुण्य	नोनपुंमक.
१	१	१	१	१	१
१	३	३	१	१	३
१	१	१	३	३	१
१	३	३	३	३	३

इति २६ भांगा यत्ता भव आशी इषीचरी कर्म त्रिं ८ त्रिं
 नीचं त्रिंके है इमका यज कहां ० शाना है ० यज नाना त्रिंके इम
 याना का अविहारी है

१)	वाचस्पति	वाचस्पति है	वाचस्पति
२)	वाचस्पति	वाचस्पति है	नवाचस्पति
३)	वाचस्पति	नवाचस्पति है	वाचस्पति
४)	वाचस्पति	नवाचस्पति है	नवाचस्पति
५)	नवाचस्पति	वाचस्पति है	वाचस्पति
६)	नवाचस्पति	वाचस्पति है	नवाचस्पति
७)	नवाचस्पति	नवाचस्पति है	वाचस्पति
८)	नवाचस्पति	नवाचस्पति है	नवाचस्पति

में भांगे २६ से इयाँवही कर्मघत्त बांधे. क्योंकि अघेही नघमें गुण-स्थानक के २ समय बाकी रहने पर (चेदोका क्षय होते हैं) होजाते हैं और सम्प्राय कर्मका बंध दशर्वे गुणस्थानक तक है

सम्प्राय कर्म क्या इन चार भांगों से बांधे १ सादि सांत, २ सादि अनंत, ३ अनादिसांत, ४ अनादि अनंत,

तीन भांगों से बांधे. और १ भांगा शुन्य. यथा. १ सादिसांत भांगों से बांधे सम्प्रायकर्मबांधनेकी जीवों के आदि नहीं है. परन्तु यदा अपेक्षायुक्त वचन है जैसे कि जीव उपशम भ्रेणी करके ग्यारह गुणस्थानक वर्तता हुआ इयाँवही कर्म बांधे परन्तु इग्यारमें गुणस्थानक से नियमा गिरकर सम्प्राय कर्म बांधे इस अपेक्षा से सम्प्राय कर्मकी आदि है और क्षपक भ्रेणीकर के चारमें गुणस्थानक अवश्य लावेगा. यदा सम्प्राय कर्म का बंध नहीं है इसलिये अंतभी है २ सादि अनंत भांगा शून्य है क्योंकि पेसा कोई जीव नहीं है कि जिसके सम्प्राय कर्मकी आदि हो. यदि उपशम भ्रेणी की अपेक्षा से कहोगे तो वह नियमा मोक्षभी लायगा तो अन्त पणाकी बाधा आयेगी वास्ते यह भांगा शास्त्र-कारोंने शून्य कहा है.

३ अनादि सांत. भागा नव्य जीवोंकी अपेक्षा से. क्योंकि जीवक सम्प्राय कर्मका आदि नहीं है परन्तु मोक्ष लायगा इसवास्ते अंत है

४ अनादि अनंत. यथाय जीवका अपेक्षा से जिसके सम्प्राय कर्मका आदि नहीं है यथा न कर्म अंत हागा

सम्प्राय कर्म कर्म इत . . . से बांधे . . . दश . . . जीवका . . . सम्प्राय कर्म . . . समय . . . समय से दश ६ सर्व . . . समय

शेष देहनीय, आधुन्य, माम, मोच, से चार अनाती कार्य है (पाप पुण्य मिलित) इनलिये शास्त्रकारी ने प्रथम समुच्चय पापदण्ड की वृक्षा अलग की है उपरोक्त ७७ बीजोंमेंसे कौन २ से बीजों में चार इन चार भागों में से कौन २ से भागों से पाप कार्य की वधि, इन से साहनीय कर्मकी प्रवृत्तता है इनलिये उनके बीच विच्छेद होने से शेष कर्मों के विनयमान होने हुए भी उनके बीच की विवक्षा नहीं की, क्योंकि उपचार प्रवृत्तता गुणों भी साहनीय कर्म वही शास्त्रकारी ने प्रचार्य और दिया है कारण कि साहनीय कर्म लक्ष कर्मों का राजा है, उनके छत्र होने से शेष नाम कर्मों का विच्छिन्न भी और नहीं प्रवृत्तता, उपरोक्त सैनाधीन बांधी में से समुच्चय शीत की वृक्षा करते हैं समुच्चयश्रीय १ सुव्यसिणी २ लक्ष्मी ३ शुक्र वरी ४ लक्ष्मी ५ मन्त्रिणी ६ पुन्यवती ७ अश्विनी ८ मन्त्रवती ९ मन्त्रवृद्धि १० भी लक्षा ११ अश्विनी १२ मन्त्रवती १३ भीम वृत्तवती १४ मन्त्रवती १५ मन्त्रवती १६ मन्त्रवती १७ मन्त्रवती १८ मन्त्रवती १९ मन्त्रवृद्ध उपवती २० इन बीज बीजों के बीजों में चारों भागों मिलित है तथा:

- (१) शीत वधि, शीतवती, मित्रवती, सुव्यसिणी अश्विनी शीत, सुव्यसिणी शीत-शीत-शीतवती
- (२) शीत, शीत से शीतवती अश्विनी शीत सुव्यसिणी शीत वधि, शीत शीत शीत शीत से शीतवती
- १ शीत से शीत शीतवती शीतवती शीत शीत शीतवती
- २ शीत से शीत शीतवती शीतवती शीत शीत शीतवती
- ३ शीत से शीत शीतवती शीतवती शीत शीत शीतवती

(१) बांधा, बांधे बांधसी, यह सामान्यता से कहा है बहुत अपेक्षा.

(२) बांधा बांधे, न बांधसी यह विशेष व्याख्या है क्योंकि भव्य जीव है यह तद्भव मोक्ष जायगा तब (न बांधसी.

(२२) अकपायी में दो भांगों यथा-३-४ या.

(३) बांधा, न बांधे, बांधसी, उपशम श्रेणी दशमें. इत्यादि रमें गुण० वर्तता हुआ भूत कालमें बांधा वर्तमान् (न बांधे परन्तु नियमा पीछा गिरेगा. तब (बांधसी)

(४) बांधा, न बांधे, न बांधसी. क्षपक श्रेणी चाले अकपायी है (२५) अलेशी, कबली और अजोगी, में भांगा १ बांधा, न बांधे, न बांधसी. यन्ध अभाव ।

(४७) लेंदया पांच, कृष्णपक्षी, अज्ञाना चार, येद चार, संज्ञा चार, कपाय तीन, और मिथ्यात्वदृष्टि इन बाइस बोलों के लीकों में भांगा २ मिलते हैं यथा । १-२ जो ।

(१) बांधा, बांधे, बांधसी, अभव्य की अपेक्षा से.

(२) बांधा, बांधे, न बांधसी भव्य की अपेक्षा से.

यह समुच्चय जीव की अपेक्षा से कहा. जैसे ही मनुष्य के दंडक में समझ लेना. शेष तेवीस दंडक के जीव में दो भांगों मिलते हैं यथा. १-२ जो.

१. बांधा बांधे न बांधसी. अभव्य की अपेक्षा विशेष व्याख्या न करके सामान्यता से

(२) बांधा बांधे, न बांधसी, यह विशेष व्याख्या है क्योंकि भव्य जीव है यह भविष्य में निश्चय मोक्ष जायगा तब (न बांधसी)

यह समुच्चय पापकर्म की व्याख्या की है. अब आती कर्म

की विधि २ व्याख्या करते हैं तिसमें मोक्षनीय कर्म समुच्चय वाच्य कथितम् समग्र ज्ञानात्.

आत्मतत्त्वकीय कर्म की पूर्ण कहे हुए भील बोलीमें से मन्त्र वाणी और भाष्य कथानी मन्त्र की बोली की छोड़कर हीय ज्ञानात् व्याख्या कीय तूष्णीय कथानी ज्ञानात् वाच्य (पूर्णमें ही कुछ कहे जाने हैं और ज्ञान ही कुछ कर्ममें यह सब वाच्य तूष्णीयत्वक से मन्त्र रक्षनी है इत्यधिके पाठकी की हरेक बाल पर तूष्णीयत्वक का प्रयोजन रक्षनी जनि आचरन्त्वक है, विना तूष्णीयत्वक के उच्यते वाच्य मन्त्र जे ज्ञानात् तूष्णीयक है.

अभिधी, कथनी और अर्थानी, से ज्ञानात् र नीला, वाच्य, न वाच्य, न वाच्यनी

मिच्छन्ति जे ज्ञानात् २ परिष्कार और दूष्णरा पूर्णत्वम्
अन्वयार्थी जे ज्ञानात् २ नीलात् और नीलात् पूर्णत्वम्

ज्ञान बोलीय वाच्यी वाच्यीय पाठकी की व्याख्या से कहे यह और अन्वयार्थी ज्ञान कथानी ; से ज्ञानात् २ परिष्कार और दूष्णरा पूर्णत्वम्

यह समुच्चय ज्ञान ही ज्ञानात् से कहे, ज्ञानात् २ परिष्कार और दूष्णरा पूर्णत्वम् ज्ञानात् २ परिष्कार और दूष्णरा पूर्णत्वम् ज्ञानात् २ परिष्कार और दूष्णरा पूर्णत्वम्

मिलता है पहिला, दूसरा और चौथा भांगा और बांधा, न बांधे बांधसी, इस तीसरे भांगो में पूर्वोक्त बारदा बोलों के जीव नहीं मिलते, क्योंकि यह भांगा वर्तमानकाल में वेदनीय कर्म न बांधे, और फिर बांधेगा यह नहीं होसता, कारण वेदनीय कर्म का बांध तेरवा गुणस्थानक के अंत समय तक होता है.

अलेशी, अजोगी, में भांगो १ चौथो, बांधा, न बांधे, न बांधसी, शेष तेतीस बोलों में भांगा २ पहिला और दूसरा.

एषम् मनुष्य दंडक में भी भांगा ३ समुद्ययवत् समझ लेना शेष तेथोस दंडक में भांगा २ पहिला और दूसरा.

समुद्यय जीवोंकी अपेक्षा से आयुष्य कर्ममें, अलेशी, केशली और अयोगी, ये तीन बोलों के जीवोंमें केवल चौथा भांगा पावे.

कृष्णपक्ष में भांगा २ पहिला और तीसरा.

मिधदृष्टि, अवेदी और अकषायी में २ भांगा, तिसरा और चौथा, मनः पर्येष ज्ञानी, नोमंज्ञा में ३ भांगा, पहिले तीसरा और चौथा शेष अडतीस बोलों के जीवों में चारों भांगा से आयुष्य कर्म बांधे अब नांवीस दंडकों की अपेक्षा आयुष्य कर्म के बांध के भाग कहने हैं नारकी के पूर्वोक्त ३२ बोलोंमेंसे कृष्ण पक्ष और कृष्ण चंद्रो में भागा दो पावे पहिला और तीसरा, मिधदृष्टि में भागा दो पावे तिसरा और चौथा शेष बतीस बोलों के बांध चारों भांगा से आयुष्य कर्म बांधे

दशनाश में मधनपति से यावत् बारहावे देशलोक तक के दशनाशोंमें पूर्वोक्त कर्तृहृष बोलोंमें से कृष्णपक्ष और कृष्णलेशी (जहा पावे बहावक में दो भागा पहिला और दूसरा मिधदृष्टिमें दो भागा तिसरा और चौथा शेष बतीस बोलों के जीवों में भांगा चारों पावे नव पैयक के दशनाशोंमें पूर्वोक्त ३२ बोलोंमें से कृष्णपक्षमें

भांगा दो पाये. पहिला और तीसरा. शेष ३१ बोलों में चारों भांगा पाये. ॥ चार अनुत्तर विमानों के देवताओं में पूर्वांक २१ बोलोंमें भांगा चारों पाये ॥ सर्वाथे सिद्ध विमानके देवताओं में पूर्वांक २६ बोलों में भांगा ३ पाये. दूसरा, तीसरा, और चौथा.

पृथ्वीकाय, अप्यकाय, और वनस्पतिकाय के जीवों में पूर्वांक २७ बोलों में से तेजालेशी, में भांगा एक पाये. तीसरा शेष २६ बोलों के शेष चारों भांगों से आयुष्य कर्म पाये ॥ तेजसकाय और वायुकाय के जीवों के पूर्वांक २६ बोलों में भांगा २ पाये पहिला और तीसरा ॥ तीनों विकल्पेन्त्री जीवों के पूर्वांक ३१ बोलों में से मज्ञानी, मतिज्ञानी, भुनज्ञानी, और मध्यकदृष्टि इन चार बोलों के जीवों में भांगा तीसरा पाये शेष २७ बोलों में भांगा २ पहिला और तीसरा.

तीर्थेष पंचेन्त्री जीवों के पूर्वांक ३२ बोलों में से कृष्णपद्मी में भांगा २ पहिला और तीसरा. मिधदृष्टि में दो भांगा तीसरा और चौथा. और सज्ञानी, मतिज्ञानी, भुनज्ञानी तथा अथधिज्ञानी और मध्यकदृष्टि में भांगा ३ पाये पहिला, तीसरा, और चौथा. शेष २८ बोलों में भांगा चारों पाये.

मनुष्य के कंदक में पूर्वांक ४७ बोलों में से कृष्णपद्मी में भांगा दो पाये. पहिला और तीसरा मिधदृष्टि अथेशी और अकवाह में भांगा दो पाये तीसरा और चौथा अलेशी, वेवली, और अज्ञांगों में एक भागा चौथा. नाभज्ञा चार ज्ञान, मज्ञानी और मध्यकदृष्टि में तीस भागा पहिला तीसरा और चौथा शेष नतीस बोलों में भागा चारों पाये

इस छन्दोमय शतक के प्रथम उद्गाता त्रिमला विष्णार किवा ज्ञान इतना ही मन्त्र है परन्तु प्रथम वदुत्तम से कंदक के भागा में प्रमाद हुआ है कि ज्ञान से पहले मन्त्र में वर्तन किया है इस के कंदक के विष्णार गुरुत्तम से चारों इति ॥

धोकडा नं. ५६.

(श्री भगवती सूत्र शतक २६ उ ०२)

अणंतर उववन्नगादि

अंतरा रहित सो प्रथम समय उत्पन्न हुआ है उसकी अपेक्षासे यह उद्देशा कहेंगे इसी शतक के पहिले उद्देशे में जो ४७ बोल प्रथम कह आये हैं उनमें से नीचे लिखे १० बोल प्रथम समय उत्पन्न हुआ है उसमें नहीं मिलते क्योंकि उत्पन्न होने के प्रथम समय में इन १० बोलों की प्राप्ति नहीं होसकी । यथा (१) अलेशी (२) मिधदृष्टि (३) मनःपर्येष ज्ञानी (४) केवलज्ञानी (५) नो संज्ञा (६) अवेदी (७) अकषायी (८) अयोगी (९) मनयोगी (१०) वचनयोगी शेष ३७ बोल समुच्चय जीवों में मिले.

नरकादि दंडकों में नारकी से लेकर चारह देवलोक तक पूर्वोक्त कहे हुए बोलों में से मिधदृष्टि, मनयोगी, और वचन योगी, यह तीन बोल कम करके शेष बोलों में प्रथम समय का उत्पन्न हुआ जीव मिले.

नव ग्रैवेकम तथा पांच अनुत्तर विमानों में पूर्वोक्त कहे हुए ३२ और २६ बोलों में से मनयोगी और वचनयोगी कम करके शेष बोलों में प्रथम समय का उत्पन्न हुआ जीव मिले ।

तियंश्च पंचन्द्रो मे पूर्वोक्त कहे हुये ४० बोलों में से मिधदृष्टि मनयोगी, और वचनयोगी यह तीन बोल कम करके शेष ३७ बोलों में प्रथम समय का उत्पन्न हुआ जीव मिले ॥ मनुष्य दंडक में समुच्चयधत्त ३७ बोलों में प्रथम समय का उत्पन्न हुआ जीव मिले ।

चौथीस दंडकी में प्रथम समय उत्पन्न हुए जीवों के जो जो बोल कह आए हैं उन बोलों के बीच समुच्चय पापकर्म और ज्ञानावरणीय आदि मात कर्मों (आयुष्य छोड़ कर) को पूर्वांक " बांधा, बांधे, बांधसी " इत्यादिक चार भागा में से केवल दो भागों से बांधे । बांधा बांधे बांधसी, बांधा, बांधे न बांधसी.)

आयुष्य कर्मको मनुष्य छोड़कर शेष तेथीस दंडकी में पूर्वांक कहे हुए बोलों में ' बांधा न बांधे, बांधसी ' । का १ भागा पाये. क्योंकि प्रथम समय उत्पन्न हुआ जीव आयुष्य कर्म बांधे नहीं, मृत कालमें बांधा या और भविष्यमें बांधेगा.

मनुष्य दंडक में पूर्वांक ३७ बोलों में से कृष्ण पक्षी में भागा १ तीसरा शेष छत्तीस बोलों में भागा २ पाये, तीसरा और चौथा इति द्वितीयोद्देशकम्.

शतक २६ उद्देशों ३ जो परम्परगोचरगा.

उत्पत्ति के दूसरे समय से यावत् आयुष्य के शेष काल की "परम्पर उच्यन्नगा," कहने हैं. इसी शतक के प्रथम उद्देशमें ४७ बोलों में से जितने २ बोल प्रत्येक दंडक के कह आये हैं, उन्हीं मातृक परम्पर उच्यन्नगा जावों के समुच्चय जीवादि दंडकी में भी कहना. तथा बांधी का भागा शारीर्य अधिकार प्रथम उद्देश के मातृक कहना. बांधी के भागों के साथ " परम्पर उच्यन्ना " का मूत्र नखादि सर्व दंडक के साथ जोड़ लेना इति तृतीयोद्देशकम्

धी भगवती मूत्र १ २- ३ ४ प्रथम प्रयोगादा

ज्ञान ज्ञान गति में उत्पन्न हुआ है उभयगति के आकाश प्रकाश अच्यन्ता आकाशम विद्युत् का पद हा समय हुआ है उभय प्रकाश आकाश कहने हैं इससे बांध और बांधी के भागों का मन्त्राधिकार प्रथम उच्यन्नगा द्वितीय उद्देश के मातृक कहना और प्रथम उच्यन्नगा के मन्त्र १ २- ३ ४ प्रथम प्रयोगादा का मूत्र

पद्मसगा कहते हैं. इसका सर्वाधिकार प्रथम उद्देशो यत् समझना. परन्तु परंपर पद्मसगा का सूत्र विशेष कहना. इति नवमोद्देशकम् श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० १० अक्षरमोद्देशो.

जिस जीव का जिस गति में अक्षर समय शेष रहा हो उसको अक्षरमोद्देशो कहते हैं इसका सर्वाधिकार प्रथम उद्देशात् परन्तु "अक्षरमोद्देशो" का सूत्र विशेष कहना. इति दशमोद्देशकम् श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० ११ अक्षरमोद्देशो.

अक्षरमोद्देशो प्रथम उद्देशो के माफक है. परन्तु ४७ श्लोको में अक्षरी, केवली, अयोगी ये तीन शील कम करना. भांसा ४ में चौथो भांगो और देवता में सर्वाधिकार को शील कम करना. शेष प्रथम उद्देशो के माफक कहना. इति श्रीभगवती सूत्र श० २६ समाप्तम्.

सर्वं भवे सर्वं भवे तमेव मन्त्रम्



थोकडा नं. ५७.

॥ श्री भगवती सूत्र श० २७ ॥

श्लोक २६ उद्देशा १ में जो ८७ शील कह आये है उसपर जो "बाधा बाधे बाधसी इत्यादिक ८ भांगो का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है उसी माफक यहा भी कर्म क्रिया करे करसी इत्यादिक नोच लिख ४ भांगो का अधिकार पूर्वक ११ उद्देशो यही सादश है समझ लना

(१) कर्म क्रिया कर करमा (२) क्रिया करे न करमा (३) क्रिया न करे करमा (४) क्रिया न करे न करमा

(म) जय अधिकार सादश है तो अलग २ शतक कहने का क्या कारण है ?

(उ) कर्म, करिया, करे, करसी. यह किया काल अपेक्षा सामान्य व्याख्या है; और कर्म बांधा बांधे बांधसी. यह बांध काल अपेक्षा विशेष व्याख्या है. शेषाधिकार यन्धी शतक माफीक समझना. इति शतक २७ उद्देशा ११ समाप्त.

—→*←—

थोकडा नं० ५८

श्री भगवती सूत्र श० २८

पूर्योक्त ४७ बोलों के जीय पापादि कर्म कदां के बांधे हुए कदां भोगये १ इसके भांगे ८ है यथा (१) तीर्थचमें बांधा तीर्थच में ही भोगये (२) तीर्थचमें बांधा नरकमें भोगये (३) तीर्थचमें बांधा मनुष्य में भोगये (४) तीर्थच में बांधा देवता में भोगये (५) तीर्थचमें बांधा नारकी और मनुष्य में भोगये (६) तीर्थच में बांधा नारकी और देवता में भोगये (७) तीर्थच में बांधा मनुष्य और देवता में भोगये. ८ तीर्थच में बांधा नारकी मनुष्य देवता तीनों में भोगये प्रथम भांगों ८ । पहिले जो शतक २६ उद्देशा १ म जा ४७ बोलों का प्रत्येक श्लोक पर वर्णन कर आये है उन सब बोलों में समुदाय पाप कर्म और ज्ञानावरणीयादी ८ कर्मों में भाग आठ आठ पाबे इति प्रथमोद्देश

पुषान बांधा शतक ४ १ उद्देशावन इस शतक के भी ११ उद्देश है आठ प्रत्येक उद्देश के बोलों पर उपर लिखे मुनब भाट २ भाग जगा लेना इस शतकमें अव्यवहाररामों मानना भी सिद्ध होता है आठ प्रज्ञापना पद ३ बाल २८ तथा जुम्माधिकारसे देखा इति शतक २८ उद्देशा ११ समाप्त.

—→*←—

थोकडा नं. ५६

(श्री भगवती सूत्र श० २६)

४७ बोल प्रत्येक दंडक पर शतक २६ उद्देशो पहिले में विष-
रण करचूकें हैं. उनबोलों के जीष (१) एक साथे कर्म भोगवणा
मांडिया (सुरूकिया) और एक साथे पूरण किया (२) एक
साथे भोगवणा मांडिया और विषमता से पूराकिया (३) विषम
भोगवणा मांडिया और विषम पूराकिया (४) विषम भोगवणा
मांडिया और साथे पूरा किया. यह चारो भांगे कहना क्याकि
जीष ४ प्रकार के हैं यथा—

(१) सम आयुष्य और साथे उत्पन्न हुआ. (२) सम
आयुष्य और विषम उत्पन्न हुआ (३) विषम आयुष्य और
साथे उत्पन्न हुआ. (४) विषम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुआ.
यह चार प्रकार के जीषोंमें कौन २ सा भांगा पाये सो दिखाते हैं.

(१) सम आयुष्य और साथे उत्पन्न हुआ जिसमें भांगा
पहिला स० न० (२) सम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुआ
जिसमें भांगा दूसरा स० वि० (३) विषम आयुष्य और साथे
उत्पन्न हुआ जिसमें भांगा तीसरा. वि० स० (४) विषम आयुष्य
और विषम उत्पन्न हुआ जिसमें भागा चौथा वि० वि० । यह
आयुष्य कर्म की अपेक्षा से चार भागा जाना है इति प्रथमोद्देशः ।

दूसरा उद्देशः अगतर उष्यत्रगा का है जिसमें भागा २
पहिला और दूसरा यहा प्रथम समय की अपेक्षा है इसी प्रकार
चौथा छट्टा और आठवा उद्देशः भी समझ लेना. जोर १-३-५-
७-९-१०-११ यह मान उद्देशों की व्याख्या मःश है (चारो भागा
पाये इति श २९ शतक ११ उद्देशः समाप्त)

थोकडा नं. ६०

श्री भगवती सूत्र श० ३०

समोसरण-अधिकार.

समोसरण चार प्रकार के कदा है यथा १ क्रियावादी २ अक्रियावादी ३ अज्ञानवादी और ४ विनयवादी क्रियावादी के सूयडांग सूत्र में जो १८० भेद कहे हैं वह केवल मिथ्यादृष्टि है और दशाघृत स्कंध में जो क्रियावादी कहे हैं उन्होंने पेस्तर मिथ्यादृष्टि में आयुष्य पांथा था उसके बाद में सम्यक्त्व प्राप्त किया है और यदां जो क्रियावादी कहे हैं वह सम्यक्दृष्टि है.

समुच्चयजीव में पूर्ण जो ४७ बोल २६ पां शतक में कदा आये हैं उसमें कृष्णपक्षी १ अज्ञानी ४ मिथ्यादृष्टि १ पथम् है बोल में समोसरण ३ अक्रियावादी, अज्ञानवादी, और विनयवादी, इन तीनों समोसरण के प्रीय चारों गति का आयुष्य पांथे. और इनमें भव्य, अभव्य. दोनों होये.

ज्ञान ४ और सम्यक्दृष्टि १ इन पांचो बोलों में समोसरण १ क्रियावादी आयुष्य जो नारकी, देवता, पांथे तो मनुष्य का और मनुष्य, तीर्थथ पांथे तो वैमानिक का और नियमा भव्य है.

मिथ्यादृष्टिमें समोसरण २ अज्ञानवादी और विनयवादी. आयुष्य का अयंघक और नियम भव्य हो.

मनः पर्यव ज्ञान और मोक्षता में समोसरण १ क्रियावादी. आयुष्य पांथे तो वैमानिक का और नियमा भव्य होय.

कृष्ण, नील कापात्र हंसीमें समो० चार पांथे. जिसमें क्रिया-

वादी आयुष्य मनुष्य का बांधे और नियमा भव्य होय. शेष तीन समी० आयुष्य चारोगति का बांधे, और भव्याभव्य दोनों होय ।

तेजो, पद्म, शुक्ल लेशी में समी० चार पावे जिसमें क्रिया-वादी आयुष्य मनुष्य वैमानिकका बांधे और नियमा भव्य होय. शेष तीन समी० नारकी धर्ज के तीनगति का आयुष्य बांधे और भव्याभव्य दोनों होय.

अलेशी, केयली, अयोगी, भवेदी, अकपायी, इन पांच बोलों में समीसरण १ क्रियावादी आयुष्य अबंधक और नियमा भव्य होय.

शेष २२ बोलों में समीसरण चारों जिसमें क्रियावादी आयुष्य-मनुष्य और विमानिक का बांधे और तीन समी० वाले जीव आयुष्य चारों गति का बांधे. क्रियावादी नियमा भव्य होय बाकी तीनों समीसरण में भव्य अभव्य दोनों होय.

नारकी के पूर्वांक ३५ बोलों में कृष्णपक्षी १ अज्ञानी ४ और मिथ्यादृष्टि १ में समीसरण ३ पूर्ववत्. आयुष्य मनुष्य तीर्थेव का बांधे और भव्य अभव्य दोनों होय—ज्ञान ४ और सम्यकदृष्टि में समीसरण १ क्रियावादी आयुष्य मनुष्य का बांधे और निश्चय भव्य होय, मिथ्यादृष्टि समुद्ययवत् शेष तीर्थेव बोल में समीसरण चार और आयुष्य मनुष्य तीर्थेव दोनोंका बांधे । क्रियावादी नियमा भव्य-बाकी तीनों समीसरण के भव्य अभव्य दोनों होय इसी माफक देयताओं में नथप्रियेक तक पूर्वांक जो जो बोल कह आये है उन सब बोलों में समीसरण नारकीवत् लगा लेना

पाच अनुत्तरस्थिमान के बाल २६ में समीसरण १ क्रियावादी आयुष्य मनुष्य का बांधे और नियमा भव्य होय

पूर्वाकाय, अपकाय, प्रारि यनास्पतिकाय, में पूर्वांक २७ बोलों ४ बांध में दो समीसरण पावे अक्रियावादी, और अज्ञान-

छोड़कर शेष तीन समीसरण आयुष्य चारों गति का बांधे और भष्य अभष्य दोनों होय. चार ज्ञान और मध्यक-रति में समीसरण, क्रियावादी आयुष्य वैमानिक देवता का बांधे और नियमा भष्य हाय। मिश्ररतिमें समीसरण दो विनयवाद्, और अज्ञानवादी. आयुष्यका अर्थधक और नियमा भष्य होय.। मनःपर्यय ज्ञान और मो सेहा में समीसरण एक क्रियावादी आयुष्य वैमानिक देवता का बांधे और नियमा भष्य होय.। कृष्णादि ३ लेश्यामें समीसरण ४ पाँच जिसमें क्रियावादी आयुष्य का अर्थधक और नियमा भष्य होय। शेष तीनों समीसरण चारों गति का आयुष्य बांधे और भष्याभष्य दोनों होय तेजो आदि ३ लेश्या में समीसरण चारों पाँच जिसमें क्रियावादी आयुष्य वैमानिक का बांधे और नियमा भष्य होय। शेष तीनों समीसरण नरक गति छोड़कर तीनों गतिका आयुष्य बांधे और भष्याभष्य दोनों होय. अलेशी, केवली, अज्ञोगी, अवेदी, और अकगार में समीसरण क्रियावादी का आयुष्य अर्थधक और नियमा भष्य होय. शेष यादस धोको में समीसरण चारों पाँच जिसमें क्रिया-वादी आयुष्य वैमानिकका बांधे और नियमा भष्य होय। शेष तीनों समीसरण आयुष्य चारों गति का बांधे और भष्याभष्य दोनों होय

इति ताम्बा शतरुका प्रथम उद्देशा समाप्त ।

बाधी शतरुका २६ वा उद्देशा दूसरा अन्तर उषधप्रगा का पृथं कह भाये है उमा माफक चौबीस रूडको के ४७ वांउ इस उद्देश में भी लगा लेता और समीसरण का भागा प्रथम उद्देशावत् कहना परन्तु सब बीला म आयुष्य का अर्थधक है क्योंकि यह उद्देशा उत्पन्न होने के प्रथम समय की अपेक्षा से कहा गया है और प्रथम समय जोध आयुष्य का अर्थधक हाता है एवम् बाधी

भाग, नयमे भागं, सत्ताईसमेंभाग इक्यासीमें भाग, दोसौंतया लीसमेंभाग में जघन्य उत्कृष्ट समझना.

(७) लक्षणद्वार—कृष्णलेद्या का लक्षण पांच आधय क संयन करनेवाला, तीन गुत्तीसे अगुत्ती, छैकायका आरंभक, आरंभमें तीव्रपरिणामी मर्ष जीवोंका अहित अकार्य करनमें साहसिक इसलोक परलोक की संका रहित, निर्धर्म परिणामी जीव दणतां लूग रहित, अजितेन्द्रिय, ऐसे पाप व्यापार युक्त हो न कृष्णलेद्या के परिणाम वाला समझना.

नीललेद्याका लक्षण—इर्पायत् कदाग्रही, तपरहित भल विचारहित पर जीव को छलने में होमियार, अनाचारी, निर्लक्ष्य विषयलेपट, द्वेषभाषसहित, धूत, भाठों मदसहित, मनोहा स्याद का लेपट, सातागवेपी आरभ से न नियत सर्थ जीवों को अहितकारी, बिना सोचे कार्य करनेवाला ऐसे पाप व्यापार सहित होय उसको नीललेद्या वाला समझना.

कापोतलेद्या--घांका घोले, घांका कार्य करे, नियुक्त माया (कपटाइ) सरलपणारहित अपना हांप टांके, मिथ्यादृष्टि, अनार्य दूसरे को पीडाकारी बचन वाले, दुष्टबचन वाले, चोरी करे, दूसरे जाघांकी सुख सम्पत्ति दूख सके नहीं, ऐसे पापव्यापार युक्त का कापोत लेद्या के परिणामवाला समझना.

तजलेद्या - मान चपलता को नृहल और कपटाईरहित जिनयवान को का भक्ति करनेवाला, पाचिन्द्री दमनेवाला, धृष्टावान विद्वान भणे तपस्या (याग बहन) करे, प्रियधर्मी, दृढधर्मा पापस डरे माझका बाहुकरे धर्मव्यापार युक्त ऐसे परिणाम वाले का तजलेद्या समझना

पद्मलेद्या का लक्षण—साध मान माया लाभपनला कमन है आनमा को दमे राग द्वेष से ज्ञान हा मन बचन काया क



और जिन जीवों को छोड़कर गया था वे सब जीव वहीं मिले एक भी कम ज्यादा नहीं उसकी अनून्यकाल कहते हैं और कई जीव पहिलेके और कई जीव नये उत्पन्न हुये मिलें तो उसको मिश्रकाल कहते हैं। तीर्थचर्म संचिद्रणकाल दो प्रकारका है अनून्यकाल और मिश्रकाल. मनुष्य और देवताओं में तीनों प्रकारका नारकीषत् समझ लेना।

अल्पायुहृत्व नारकी में सबसे थोड़ा अनून्यकाल. उनसे मिश्रकाल अनंतगुणा और अनून्यकाल उनसे अनंतगुण. षष्ठम् मनुष्य देवता, तीर्थचर्म में सबसे थोड़ा अनून्यकाल उनसे मिश्रकाल अनंतगुणा.

चार प्रकार के संचिद्रणकाल में कौनसी गतिका भव ज्यादा कमती किया जिसका अल्पायुहृत्व सबसे थोड़ा मनुष्य संचिद्रणकाल उनसे नारकी संचिद्रणकाल असंख्यातगुणा उनसे देवता संचिद्रणकाल असंख्यातगुण और उनसे तीर्थचर्म संचिद्रणकाल अनंतगुणा।

तात्पर्य भूतकाल में जीवों ने चतुर्गति भ्रमण किया उसका हिसाब जीवों के हित के लिये परम इयालु परमात्मा ने कैसा समझाया है कि जो हमेशा ध्यान में रखने लायक है देखो, अनंत भव तीर्थचर्मके अमर्याते भव देवताओं के और अमर्याते भव नारकी के करन पर एक भव मनुष्यका मिला, ऐसे दुर्लभ और कठिनतासे मिले हुए मनुष्य भवकी है ' भव्यात्माओं ' प्रमादबद्ध बुद्धा मत खाती जहा तक हा मर्षे बहानव जागृत हाकर ऐसे कायीमें तत्पर हा कि जिससे चतुर्गति भ्रमण टले. इत्यन्तम्

सर्व भवे सर्वं भवे तमेव यजाम

- २४ असंज्ञी पंचेन्द्री अप० उ० स्थि० वि०
 २५ असंज्ञी पंचेन्द्री पर्या० उ० स्थि० वि०
 २६ संयती का उत्कृष्ट स्थि० सं० गु०
 २७ देशप्रतीका न० स्थि० सं० गु०
 २८ देशप्रतीकाका उ० स्थि० सं० गु०
 २९ सम्यक्त्वो पर्या० का जघन्यस्थि० सं० गु०
 ३० सम्यक्त्वो अप० जघन्यस्थि० सं० गु०
 ३१ सम्यक्त्वो अप० का उत्कृष्टस्थि० सं० गु०
 ३२ सम्यक्त्वो पर्या० का उ० स्थि० सं० गु०
 ३३ संज्ञी पंचेन्द्री पर्या० का न० स्थि० सं० गु०
 ३४ संज्ञी पंचेन्द्री अप० का न० स्थि० सं० गु०
 ३५ संज्ञी पंचेन्द्री अप० का उ० स्थि० सं० गु०
 ३६ संज्ञी पंचेन्द्री पर्या० का उ० स्थि० सं० गु०

मेवं भन्ते मेवं भन्ते तमेव सचम्.

इति शांख्यबोध भाग ५ वां समाप्तम्.



लिजिये अपूर्व लाभ.

- (१) शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५ वां रु. १॥)
- (२) शीघ्रबोध भाग ६-७-८-९-१०-११-१२
१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९ रु. ३॥)
- (३) शीघ्रबोध भाग १७-१८-१९-२०-२१-२२
जिस्में चारहा सत्रोंका हिन्दि भाषान्तर है रु. ४)

पुस्तकें मीलनेका पत्ता—

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला ।

मु० फलोधी — माण्डाड

श्री मुम्बसागर ज्ञानप्रचारक मन्ना ।

मु० लोहायट — माण्डाड

- ३ (१) श्रीयुक्त. मेम्बर अंगरघेदजी पारख
 ४ (२) श्रीयुक्त. मेम्बर वृध्दोराजजी घोपडा
 ५ (३) श्रीयुक्त. मेम्बर जीतमलजी भगसाली
 ६ (४) श्रीयुक्त. मेम्बर हस्तीमलजी पारख
 ७ (५) श्रीयुक्त. मेम्बर मेरुलालजी घोपडा
 ८ (६) श्रीयुक्त. मेम्बर जुगराजजी पारख
 ९ (७) श्रीयुक्त. मेम्बर मनसुखदासजी पारख
 १० (८) श्रीयुक्त. मेम्बर श्रीनजमलजी पारख
 ११ (९) श्रीयुक्त. मेम्बर कुनजमलजी कोषर
 १२ (१०) श्रीयुक्त. मेम्बर भमूतमलजी पारख
 १३ (११) श्रीयुक्त. मेम्बर हीरालालजी घोपडा
 १४ (१२) श्रीयुक्त. मेम्बर जमनालालजी पारख
 १५ (१३) श्रीयुक्त. मेम्बर रेखघेदजी पारख
 १६ (१४) श्रीयुक्त. मेम्बर भमूतमलजी पारख
 १७ (१५) श्रीयुक्त. मेम्बर सुखलालजी घोपडा
 १८ (१६) श्रीयुक्त. मेम्बर फूलघेदजी पारख
 १९ (१७) श्रीयुक्त. मेम्बर गंधरघेदजी गढीया
 २० (१८) श्रीयुक्त. मेम्बर जेटमलजी ढाकलीया
 २१ (१९) श्रीयुक्त. मेम्बर कुंनजमलजी पारख
 २२ (२०) श्रीयुक्त. मेम्बर जमनालालजी घोपडा

- आरदांगजी
 सुखघेदजी
 तुलसीदासजी
 रावलमलजी
 रेखघेदजी
 रावलमलजी
 दजारीमलजी
 हीरालालजी
 हीरालालजी
 श्रीघेदजी
 भोतीलालजी
 रावलमलजी
 मोतीलालजी
 करणीदांगजी
 हीरालालजी
 फूलखण्डजी
 जुहारमलजी
 मतापघेदजी
 साहजराजजी
 जलसीदासजी
 लोहापट
 मथाणीया
 लोहापट
 लोहापट

पुनमचंद्रजी
 मालचंद्रजी
 ताराचंद्रजी
 सेरचंद्रजी
 मीचलाळजी
 मीतीळाळजी
 मीराळाळजी
 पुनमचंद्रजी
 मीचलाळजी
 रेखचंद्रजी
 रायळमळजी
 जमनाळाळजी
 इय्दचंद्रजी
 मीराळाळजी
 यानणमळजी
 वस्तिमळजी
 मेपराजजी
 छोगमळजी
 यदनमळजी
 द्वाारीमळजी

३ (२५) श्रीयुक्त. मेम्बर नेमिचन्द्रजी घोषडा
 ४ ० श्रीयुक्त. मेम्बर कुंनणमळजी घोषडा
 ५ १ श्रीयुक्त. मेम्बर पूणराजजी घोषडा
 ६ २ श्रीयुक्त. मेम्बर कुंयरळाळजी पारस
 ७ ३ श्रीयुक्त. मेम्बर चुनिळाळजी पारस
 ८ ४ श्रीयुक्त. मेम्बर सुवळाळजी पारस
 ९ ५ श्रीयुक्त. मेम्बर मीमरयमळजी घोषडा
 १० ६ श्रीयुक्त. मेम्बर अळमीदामजी कोंपर
 ११ ७ श्रीयुक्त. मेम्बर इन्द्रचंद्रजी वैद
 १२ ८ श्रीयुक्त. मेम्बर ठाकुरळाळजी घोषडा
 १३ ९ श्रीयुक्त. मेम्बर चंवरचंद्रजी घोषडा
 १४ १० श्रीयुक्त. मेम्बर कल्याळाळजी पारस
 १५ ११ श्रीयुक्त. मेम्बर मंगतळाळजी पारस
 १६ १२ श्रीयुक्त. मेम्बर नेमिचंद्रजी पारस
 १७ १३ श्रीयुक्त. मेम्बर देमराजजी पारस
 १८ १४ श्रीयुक्त. मेम्बर भभूतमळजी कोंपर
 १९ १५ श्रीयुक्त. मेम्बर भीष्मचंद्रजी कोंपर
 २० १६ श्रीयुक्त. मेम्बर गोपुळाळजी सेठीया
 २१ १७ श्रीयुक्त. मेम्बर मोरारमळजी वैद
 २२ १८ श्रीयुक्त. मेम्बर जेतमळजी पारस

आपु

लोहावट

फलोधी

लोहावट

५०	श्रीयुक्त मेम्बर संपतलालजी पारख	हीरालालजी
५१	श्रीयुक्त मेम्बर सहस्रमलजी पारख	छोगमलजी
५२	श्रीयुक्त मेम्बर तनसुखदासजी कोषर	जेठमलजी
५३	श्रीयुक्त मेम्बर भीखमचंदजी पारख	मुलचंदजी
५४	श्रीयुक्त मेम्बर सुगनमलजी पारख	बुनिलालजी
५५	श्रीयुक्त मेम्बर जुगराजजी पारख	रानलालजी
५६	श्रीयुक्त मेम्बर जमनालालजी पारख	मुलचंदजी
५७	श्रीयुक्त मेम्बर जैतमलजी कोषर	प्रभुदांनजी
५८	श्रीयुक्त मेम्बर भाणकलालजी कोषर	दलीचंदजी
५९	श्रीयुक्त मेम्बर मीसरीयालजी कोषर	खेतमलजी
६०	श्रीयुक्त मेम्बर पेशरचंदजी कोषर	ज्ञानमलजी
६१	श्रीयुक्त मेम्बर नयमलजी पारख	दंसराजजी
६२	श्रीयुक्त मेम्बर नैमिचंदजी पारख	मनसुखदासजी

